ऋग्वेद द्वितीय मण्डल के इन्द्र सूक्तों का समालोचनात्मक अध्ययन

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल०
उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

निर्देशक
डॉ० हरिशङ्कर त्रिपाठी
रीडर
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अनुसंधानकर्ता
प्रकाश चन्द्र द्विवेदी
एम० ए०

संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

गङ्गा दशहरा १९९२

पुरोवाक्

विश्व में भारतवर्ष को गौरवमयी ख्याति में वैदिक एवम् संस्कृत वाङ्मय तथा भारतीय संस्कृति का विशेष योगदान रहा है । यह पूर्णत: सत्य है कि भारतीय साहित्य एवं संस्कृति के व्योमचुम्बी विकास में प्रयाग की पवित्र वसुन्धरा त्रिपथगा की अवर्णनीय महिमा एवं भरद्वाज मण्डनमिश्र, कुमारिलभट्ट प्रगति सारस्वत उपासकों का अद्वितीय योगदान सर्वातिशायी रहा है । विश्वविद्यालय छात्र-जीवन में प्रवेश करते ही विद्वान् प्राध्यापकों के व्याख्यानों एवं उनके साहचर्य के सारस्वत उपासना करने की सतत् प्रेरणा प्राप्त हो गयी और शनै: शनै: सारस्वत उपासना की भावना भी दृढ़ होती गयी तथा मेरे मन में शोध-कार्य सम्पन्न करने की उत्कण्ठा समुद्भूत हुई । परिणामत: स्नातकोत्तर उपाधि प्रथम श्रेणी में अर्जित करने के उपरान्त सारस्वत उपासना के अग्रिम चरण के रूप में चिरकाल से उच्छवसित तथा अध्ययन-काल से ही वैदिक वाङ्मय के अनुशीलन में विशेष रुचि जागृति होने के फलस्वरूप कान्तदर्शी, मंत्रद्रष्टा, ऋषियों ऋतम्भरा देवी वाक् की ज्योतिर्मयी ज्ञानराशि ऋग्वेद पर शोध-कार्य करने की उत्कण्ठा सहजत: मुखर हो उठी और श्रद्धेय पूज्य गुरुवर डॉ० हरिशङ्कर त्रिपाठी, रीडर, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के निर्देशन में "ऋग्वेद द्वितीय मण्डल के इन्द्र सूक्तों का समालोचनात्मक अध्ययन" पर शोध करने का निर्देश मिला ।

वैदिक देवशास्त्र में इन्द्र सर्वोच्च स्थान लब्ध करते हुए संहिताओं, ब्राह्मणों एवम् सूत्रग्रन्थों में इन्द्र देवाधिपति के रूप में एवम् वज्र धारण करने वाले शक्तिशाली देवता के रूप में विद्यमान हैं । ये मूलत: वर्षा के स्वामी हैं, वज्रधारक, वृत्रहन्ता तथा सोमरस के प्रिय होने के कारण शक्तिशाली देव हैं । इनके साथ अनेक देवता सहायक के रूप में इनके साथ युद्धों में आये हैं । ये वर्षा के स्वामी तथा विजय - कामना के वर्धक के रूप में विख्यात हैं । किन्तु कतिपय विद्वानों ने इन्हें राक्षसों से देवताओं की रक्षा करने के कारण देवशत्रु संहारक देव कहा है जो सत्य प्रतीत है ।

कुछ विद्वानों का यह मत है कि 'इन्द्र' शब्द इन्द् + र - इन्द् शब्द से निष्पन्न हुआ है जो सर्वथा उचित प्रतीत होता है । इन्द्र सूक्तों के अध्ययन से इनका सार्वभौमिक स्वरूप स्पष्ट होता है । इन्द्र को केवल देवपति या वर्षा का देवता स्वीकार करना उनके वास्तविक स्वरूप के सम्यक् ज्ञान का अभाव नहीं कहा जा सकता है फिर भी कतिपय अधुनातन विद्वानों ने उनके स्वतन्त्र स्वरूप में संदेह व्यक्त किया है । इन्द्र सम्बन्धी इन विभिन्न भ्रांतिमूलक धारणाओं का समाधान एवम् प्रमुखतया सूक्तों की समालोचना ही प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का ध्येय है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के लेखन में अद्यावधि पूज्यपाद गुरुवर्य डॉ० हरिशङ्कर त्रिपाठी के प्रति मैं श्रद्धावनत हूँ, जिन्होंने समय समय पर अहर्निश अपने वैदुष्यपूर्ण निर्देशन के द्वारा शोधकर्ता के मार्ग को प्रशस्त किया प्रत्युत शोध-प्रबन्ध में अपेक्षित संशोधन एवम् परिवर्धन करके सुयोग्य निर्देशक एवम् गुरु के महनीय दायित्व का पूर्ण-रूपेण निर्वाह किया एतदर्थ पूज्यतम गुरुदेव के पुनीत चरणों में अतीव कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ क्योंकि इसके अतिरिक्त अकिंचन शोधकर्ता के पास और है ही क्या ? वैदिक वाड्मय एवम् उच्च शिक्षा के प्रतिक्षण रुचि प्रादुर्भूत करने वाले एवम् अपने वैदुष्यपूर्ण निर्देशन से सतत प्रेरित कर्ता श्रद्धेय गुरुदेव डॉ० चन्द्रभूषण मिश्र, रीडर, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के प्रति भी हृदयेन अतीव ऋणी हूँ, जिनके वात्सल्यमयी प्रेरणा एवम् दर्शन से विद्यानुरागिता की सतत् प्रेरणा प्राप्त होती रही है ।

संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष परम श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ० सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव एवं प्रो० सुरेश चन्द्र पाण्डेय का भी अतीव आभारी हूँ जिनके शुभाशीर्ष एवम् महती कृपा से शोध-प्रबन्ध पूर्ण हो सका है तथा एक विनीत शिष्य के रूप में विनम्रभाव से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ ।

उच्च शिक्षा के प्रति शास्वत जागरूकता प्रादुर्भूत करने वाले पूज्य अग्रजों श्री केशवचन्द्र द्विवेदी, अधिवक्ता, इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश के अनिर्वच-

नीय असीम वात्सल्य का आजीवन ऋणी हूँ, जिन्होंने समुचित शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण दायित्व वहन किया जिनका स्नेह संवलित निर्देशन मुझे पदे-पदे प्राप्त होकर प्रेरणादायी रहा । पूज्य श्रेष्ठ अग्रज श्री कृष्णचन्द्र द्विवेदी, कार्यालय सहायक, पुस्तकालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के विशेषरूपेण हृदयेन कृतज्ञ हूँ, जिनके अप्रतिम महनीय स्नेहिल वात्सल्यपूर्ण प्रोत्साहन तथा पुस्तकीय सहायता के फलस्वरूप प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध पूर्णरूपेण सम्पादित हो सका अतएव उल्लि-खित दोनों अग्रजों के प्रति मैं विनम्रतापूर्वक श्रद्धावनत हूँ ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में जिन मनीषियों के ग्रन्थों का मैंने उपयोग किया उन सबके प्रति मैं हृदयेन विनत हूँ । कतिपय स्नेही मित्रों एवं आत्मीयजनों के सहज स्नेह भी मुझे शोधकार्य के लिए सतत् प्रेरणादायी रहे । उनके प्रति साधुवाद पूर्वक धन्यवाद ज्ञापित करना अपना परम कर्त्तव्य समझता हूँ ।

शोध-प्रबन्ध के स्वच्छ, सुन्दर एवं आकर्षक टंकण हेतु श्री रामबरन यादव को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ ।

अतः वैदिक वाङ्मय की अस्मिता को दृष्टिपथ में रखते हुए बौद्धिक, मौलिक आलोचना, भाषा की प्रगति के उद्देश्य का एक मूलभूत तत्त्व संस्कृत प्रेमीजनों की सेवा में सस्नेह सादर समर्पित कर रहा हूँ ।

विदुषां वंश वदः
प्रकाश चन्द्र द्विवेदी

पर्व - गङ्गा दशहरा, 1992.

प्रकाश चन्द्र द्विवेदी,
शोध-छात्र,
संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

शब्द संकेत

अ०	:	अदादिगण
अ०को०	:	अमरकोष
अग्नि०	:	अग्निपुराण
अथर्व०	:	अथर्ववेदसंहिता
अनु०	:	अनुवादक
अवे०	:	अवेस्ता
आ०	:	आत्मनेपद
आदि०	:	आदिपुराण
इण्डि०मा०	:	इण्डियन माइथालाजी
उ०पु०	:	उत्तम पुरुष, उभयपदी, उव्वट
उत्तर०	:	उत्तरकाण्ड, उत्तरपुराण
ऋ०	:	ऋग्वेद
ऋ०सं०	:	ऋग्वेद संहिता
ए०व०	:	एकवचन
ऐ०आ०	:	ऐतरेय आरण्यक
ऐ०ब्रा०	:	ऐतरेय ब्राह्मण
टे०	:	ओरिजिनल संस्कृत टैक्स्ट
कर्ण	:	कर्णपर्व
का०सं०	:	काण्व संहिता
कूर्म०	:	कूर्म पुराण
ग०उ०	:	गरुण उपनिषद्
गेल्ड०	:	के०एफ० गेल्डनर
गो०ब्रा०	:	गोपथ ब्राह्मण
ग्रि०	:	टी०एच० ग्रिफिथ
च०	:	चतुर्थी
छा०उ०	:	छान्दोग्योपनिषद्
ज०ज०ओ०सो०	:	जर्नल आफ द अमेरिकन सोसायटी
ज०बा०यू०	:	जर्नल आफ द बाम्बे यूनिवर्सिटी
जु०	:	जुहोत्यादिगण
जै०ब्रा०	:	जैमिनीय ब्राह्मण
जै०सू०	:	जैमिनीय सूत्र
तु०	:	तुदादिगण
तृ०	:	तृतीया
तै०आ०	:	तैत्तिरीय आरण्यक
तै०उ०	:	तैत्तिरीय उपनिषद्

शब्द संकेत

तै०सं०	:	तैत्तिरीय संहिता
द ऋ०ए०	:	द रिलीजन आफ द ऋग्वेद
द्वि	:	द्विवचन, द्वितीया
निघं०	:	निघण्टु
निरु०	:	निरुक्त
प०	:	पञ्चमी, परस्मैपद
पद्म०	:	पद्मपुराण
पा०धा०पा०	:	पाणिनि धातु पाठ
पा०सू०	:	पाणिनि सूत्र
पी०	:	पीटर्सन
पु०	:	पुल्लिंग
प्र०	:	प्रथमा, प्रश्नोपनिषद्
प्र०सं०	:	प्रथम संस्करण
पृ०	:	पृष्ठ संख्या
ब०ब०	:	बहुबचन
बृ०उ०	:	बृहदारण्यकोपनिषद्
भविष्य	:	भविष्यत् पुराण
भ्वा०	:	भ्वादिगण
म०पु०	:	मध्यम पुरुष
मत्स्य०	:	मत्स्यपुराण
मनु०	:	मनुस्मृति
महा०	:	महाभारत
मही०	:	महीधर
मु०	:	मुद्गल
मै०	:	ए०ए० मैकडोनेल
मै०उ०	:	मैत्रायणी उपनिषद्
मैक्स०	:	एफ० मैक्समूलर
मै०सं०	:	मैत्रायणी संहिता
मो०वि०	:	मोनियर विलियम्स
म्योर	:	जे० म्योर
यजु०	:	यजुर्वेद
यास्क०	:	यास्क

शब्द संकेत

रिली० फि०उ०	:	रिलीजन आफ द फिलासफी एण्ड उपनिषद्
ल०सा०लै०	:	लैक्चर्स आफ द साइंस आव लैंग्वेज
वा०सं०	:	वाजसनेयि संहिता
वाच०	:	वाचस्पत्यम शब्दकोष
वि०	:	एच०एच० विल्सन
विष्णु०	:	विष्णुपुराण
वें०	:	वेंकटमाधव
वै०दे०	:	वैदिक देवशास्त्र
वै०पु०	:	वैदिक पुराण
वै०मा०	:	वैदिक माइथालाजी
वै०री०	:	वैदिक रीडर
वै०व्या०	:	वैदिक व्याकरण
वै०श०को०	:	वैदिक शब्दकोष
द हि०ऋ०	:	द हिम्स आफ ऋग्वेद
श०ब्रा०	:	शतपथ ब्राह्मण
शल्य०	:	शल्य पर्व
शु०य०	:	शुक्ल यजुर्वेद
ष०	:	षष्ठी विभक्ति
स०	:	समास, सप्तमी
सम्बो०	:	सम्बोधन
सं०इ०डि०	:	संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी
सं०हि०को०	:	संस्कृत हिन्दी कोष
सा०	:	सायण
स्कन्द०	:	स्कन्दस्वामी
Av.	:	Avesta
ABORI	:	Annuals of the Bhandarker Oriental Research Institute Poona.
A. Up.	:	Aitraya Upanisad
Indo-Eur	:	Indo-European
Rv.	:	Rigveda
Skt. Gr.	:	Sanskrit Grammer

S.B.	:	Satpath Brahman
S.M.	:	Sama Veda
Trans.	:	Translation
Zd.	:	Zand
J.G.R.I.	:	Journal of Ganganath Jha Research Institute, Allahabad.

विषयानुक्रमणिका

अध्याय	:	विषय	पृष्ठ संख्या
	:	पुरोवाक्	
	:	शब्द सङ्केत	
	:	विषय-प्रवेश	
प्रथम	:	प्रस्तुत विषय पर शोध-कार्य करने की आवश्यकता तथा महत्त्व तथा ऋग्वेद द्वितीय मण्डल में इन्द्र का महत्त्व ।	
	:	वैदिक-देवताओं का वर्गीकरण । दिव्य देवता, अन्तरिक्ष देवता, पार्थिव देवता, अमूर्त देवता, युगल देवता, अवर देवता, देवियाँ, देवों के समूह ।	
द्वितीय	:	इन्द्र का वैशिष्ट्य सामवेद में इन्द्र, ऋग्वेद में इन्द्र, यजुर्वेद में इन्द्र, अथर्ववेद में इन्द्र पुराणों में इन्द्र, ब्राह्मण ग्रन्थों में इन्द्र, आरण्यक तथा उपनिषदों में इन्द्र, महाकाव्यों में इन्द्र	
	:	इन्द्र का अन्य देवों के साथ सम्बन्ध ।	
तृतीय	:	ऋग्वेद द्वितीय मण्डल में वर्णित इन्द्र सूक्तों का हिन्दी अनुवाद तथा प्रमुख पदों की व्याख्या ।	

ーーーーーーーーーーーーー::0::ーーーーーーーーーーー

विषय-प्रवेश

मनुष्य स्वभाव से ही चिन्तनशील तथा विवेकशील प्राणी है। विषय का विशाल वाङ्मय उसके अनेक युगों के अनवरत प्रगाढ़ चिन्तन की ही निधि है। समस्त वाङ्मय शास्त्र व काव्य के भेद दो भागों में विभक्त है[1] - शास्त्र वाङ्मय के अन्तर्गत अपौरुषेय वेदमंत्र ब्राह्मणयोर्वेदनाम धेयम् वेदांग तथा पौरुषेय पुराण आन्वीक्षिकीमीमांसा एवम् स्मृतितंत्र आदि विद्या स्थान आते हैं। जिनकी समवेत संज्ञा चतुर्दश विद्यास्थान है।[2] काव्य वाङ्मय के अन्तर्गत दृश्य और श्रव्य काव्यों के समस्त भेद स्वीकार किये गये हैं तथा इसे सकल विद्यास्थान का पतन मन्द्र हवा विद्यास्थान बताया गया है।[3] विद्यास्थान सम्पूर्ण त्रैलोक्य "भूर्भुवः स्वः" को परिव्याप्त किये हुए है।[4]

अपौरुषेय वेद प्रकृति सहचरी के सुरम्य अंचल में बसे हुए शम-प्रधान तपोवन में त्याग और संतोष का अक्षय पाथेय लेकर आजीवन तपस्या करने वाले परिणत प्रज्ञदृष्टा ऋषियों द्वारा तपः पूत सिद्धावस्था में प्रशान्त अन्तःकरण में साक्षातकृत ज्योतिःस्वरूप मंत्रों के पुण्यागार हैं, जिन्हें समस्त विद्यास्थानों का उद्गम स्थल बताया गया है वह तथ्य न केवल श्रुतीतर मनुस्मृति प्रभृति स्मृतियों से ही प्रमाणित होता है।[5] प्रत्युत

---

1. एहहि वाङ्मयमुभयथाशास्त्रं काव्येति - राजशेखर का0मी0 द्वि0अ0 पृ0 4.
2. सच्च द्विधा अपौरुषेयं पौरुषेयं च। अपौरुषेयं श्रुतिः। सा च मंत्र ब्राह्मणे। --- चत्वारो वेदाः। --- शिक्षा कल्पो व्याकरण निरुक्तं छन्दो --- इत्याचार्याः --- आन्वीक्षिकी मीमांसा, स्मृति तंत्रमिति चत्वारि शास्त्राणि। -------- वही, पृ0 4-6.
3. तानीमानि चतुर्दश विद्यास्थानानि यदुतपत्वारो वेदाः इत्याचार्याः सकलविद्या स्थानैकापतनं प चदशं काव्यं विद्यास्थाने। वही, पृ0 7-8.
4. तान्येतानि कृत्स्नामपि भूर्भुवः स्वस्मयीं व्यासज्यवर्तन्ते। वही, पृ0 7.
5. यः कश्चितकस्याचिद्धर्मो परिकीर्तितः।
   स सर्वोभिहितोवेदे सर्वज्ञानमयो हि सः॥ मनु0 पृ0 216.
   आदोवेद गिरोदिव्या यतः सर्वा प्रवृत्तयः। वही, पृ0 216.

श्रुतियों में ऋग्वेद के अन्तर्गत दैवी वाक्यत्व के इस व्योमभेदी उद्घोष से भी प्रमाणित हो रहा है । मैं स्वयं कह रही हूँ देव और मानव मेरी उपासना करते हैं - मैं जिसे चाहती हूँ उसे उग्र, ओजस्वी कर देती हूँ मैं वायुतुल्य सर्वत्र गतिशील हूँ - विद्यमान हूँ ।[1]

वेद विश्व का सबसे प्राचीन उपलब्ध रत्नग्रन्थ है और वेदों में बहुत ही पुरातन है । विभिन्न देवताओं के सदृश इन्द्र ऋग्वेद में देवाधिपति, वर्षा का स्वामी के रूप में विख्यात हैं । ऋग्वेद के अनेक सूक्तों में वर्णित है तथाकथित अनेक विशेषताओं अन्य देशों के साथ सम्बन्ध आदि का वर्णन है, जो निम्न है ।

<u>भारत यूरोप देववाद</u>

विश्व के मानव समुदायों में भारत यूरोपीयजन की कल्पना का श्रेय तुलनात्मक भाषा विज्ञान को है । भारत से आयरलैण्ड तक विस्तृत संस्कृत ईरानी, ग्रीक, लैटिन आदि भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन ने स्पष्ट कर दिया कि इन सभी भाषाओं का मूल एक ऐसी भाषा रही होगी जो आज विद्यमान नहीं है । न उनका कोई नमूना ही उपलब्ध है परन्तु इनकी तुलना से उसके रूप का अनुमान किया जा सकता है ।

भाषाशास्त्र के साथ ही पुराकथाशास्त्र तथा देवशास्त्र ने अपने तुलनात्मक अध्ययनों ने अभिहित कर दिया कि न केवल भाषा से ही प्रयुक्त देव परिकल्पना धार्मिक विश्वासों तथा सामाजिक रीति रिवाजों में भी इन भारत यूरोपीय जनों में अद्भुत साम्य है । स्वयं देव शब्द इन सभी भाषाओं में विद्यमान है सं० देव प्राचीन ईरानी दएव, अवेस्ता दत्य प्राचीन ग्रीक देउ आस् {परवर्ती रूप थेओउस्} लैटिन देह उस् ग्राथिकदीवुउस प्राचीन जर्मन ते वा आदि । कुछ देवों यथा द्यौस-पितर ग्रीक जेउस् पातेर लैटिन ज्यूपिटर आदि के नामों में भी अद्भुत साम्य प्रदर्शित है ।

---

1. अहमेव स्वमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुतमानुषेभिः ।
   परोदित्या पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूत ॥ ऋग्वेद 10.125.5, 8.

भारत ईरानी देववाद

भारत-यूरोपीय जन की दो शाखायें ईरान और भारत में ईरानी आर्य और भारतीय आर्य के रूप में प्रतिष्ठित हुई। विभाजन के पूर्व इन भारत ईरानी ने अपने भारत यूरोपीय मूल से प्राप्त देव-सम्बन्धी धारणाओं के विश्वास का अनुमान ऋग्वेद संहिता के साथ प्राचीन ईरानी का एकमात्र उपलब्ध कृति अवेस्ता के तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त होता है। ईरान में जरथुस्त्र 1660 से 583 ई0पू0 के धार्मिक सुधार के परिणामस्वरूप उनके द्वारा प्रवर्तित "मज्दयस्नी" धर्म ग्रन्थ अवेस्ता में पूर्ववर्ती देवों का लोप व अन्य देवों का स्वरूप कल्पना में मौलिक-परिवर्तन हो गया फिर भी अग्नि, वायु, आप मित्र आदि देव यहाँ समान रूप से विद्यमान हैं।

भारत में आर्यजन की देवकल्पना का विकास

भारत ईरानी परम्परा से अपने देव विषयक रिक्थ को भारतीय आर्यों ने अपने गहन चिन्तन से परिपुष्ट किया, जिनका प्राचीनतम विवरण ऋग्वेद संहिता में उपलब्ध है। इसमें संकलित ऋचाओं का संहितीकरण जब भी हुआ इतना तो सुनिश्चित है कि इसमें संकलित सामग्री अनेकानेक सदियों के चिन्तन की परिधायिका है। इसका स्थूल प्रमाण यह है कि बर्हिष् पर हविष् रखकर देवता का आवाहन कर देवता को हविष् निवेदन करने के साधारण ढंग से "सप्तहोता" तथा 16 ऋत्विजों द्वारा सम्पन्न होने वाले यज्ञ का सङ्केत हमें ऋग्वेद संहिता में मिल जाता है।

इस विकासक्रम में देवकल्पना का प्रचुर विकास हुआ। एक अग्नि ही बृहस्पति ब्रह्मणस्पति, नराशंस, तनूनापात, अज एकपाद जैसे विविध नामों से परिकल्पित हुआ यही बात अन्य देवों के साथ भी है। विकासक्रम का इससे भी अधिक रोचक क्रम यह है कि प्राचीन प्राधान्य देवों को धीरे धीरे लुप्तप्राय व प्रथमत: गौण रूप से स्मृतिदेवों को प्राधान्य प्राप्त करते देखते हैं। त्रित और आप्त्य ईरानी प्रतिरूप थ्रित और आथ्त्य से प्रकट होने वाले भारत ईरानी काव्य के देव हैं जो ऋक् संहिता में नाममात्र के रह गये हैं।

वैदिक देवताओं में इन्द्र

ऋग्वेद संहिता में वैदिक देवों के मध्य इन्द्र देवता का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये देवताओं के स्वामी है और वर्षा करते है और विजली गिराते हैं। इनकी पत्नी का नाम इन्द्राणी है और ये वज्र धारण करते हैं और दूसरी विशेषता यह है कि इन लगभग सभी देवों से सम्बन्ध रहता है और इनका जन्म देवताओं की रक्षा के लिए हुआ है।

ऋग्वेद संहिता में अनेक वेदसूक्तों तथा ऋचाओं में इनका यज्ञों में हविष् को ग्रहण करने के लिए आवाहन किया गया है और यजमानों द्वारा हविष् को धारण करते हैं तथा उनकी रक्षा करते हैं।

उपर्युक्त कथन के सम्बन्ध में इतना ही वक्तव्य है कि इन्द्रदेवता भारतीय मानवों में किसी न किसी रूप में सदैव विद्यमान रहते हैं। महाभारत, रामायण, पुराणों आदि इन्द्र सम्बन्धी अनेक प्रमाण हैं। आधुनिक काल तक में इन्द्र वर्षा के स्वामी देवाधिपति के रूप में आज भी परिकल्पित हैं। इन्द्र सदैव युद्ध में लगे रहते हैं यह देवशास्त्र के इतिहास का रोचक अंग है।

प्रस्तुत विषय की अध्ययन की रूपरेखा

वैदिक वाङ्मय के अन्तर्गत ऋग्वेद के सायण, मैक्समूलर, मोनियर विलियम, एच0एच0 विल्सन, ग्रिफिथ, कार्वे कैपलर, मैकडानल, वा0शि0 आप्टे आदि पाश्चात्य विद्वानों द्वारा उल्लिखित इन्द्र-सूक्तों पर प्राप्त सामग्री को ही अध्ययन का प्रमुख रूप से आधार बनाया प्रस्तुत अध्ययन में पूरे वैदिक वाङ्मय ऋग्वेद द्वितीय मण्डल के इन्द्र सूक्तों की समालोचनात्मक अध्ययन को लक्ष्य रखकर यह प्रयास किया गया है कि प्रस्तुत अध्ययन मनीषी विद्वज्जनों के साथसाथ सुधीजन पाठकों के लिए सदुपयोगी सिद्ध हो। तदनुसार इन्द्र सूक्तों का अवलम्बन सम्बन्धी सामग्री, पांच दृष्टिकोणों से इस शोध-विषय का अध्ययन किया गया जो अनुसंधान की दृष्टि से अपने ढंग का सर्वथा मौलिक

प्रयास है ।

प्रस्तुत विषय पर शोध-कार्य करने की आवश्यकता एवं महत्त्व तथा ऋग्वेद द्वितीय मण्डल में इन्द्र का महत्त्व :

1. वैदिक देवताओं का वर्गीकरण,
2. वैदिक संहिताओं, ब्राह्मणग्रन्थों, वैदिक कर्मकाण्डों एवम् इन्द्र देवता का अन्य देवों से सम्बन्ध का पुराकथा शास्त्रीय अध्ययन ।
3. भाषाबोध हेतु ऋग्वेद द्वितीय मण्डल के प्रमुख ऋग्वेदीय 12 सूक्तों तथा लगभग 120 इन्द्रविषयक मन्त्रों का पौरस्त्य तथा पाश्चात्य मनीषियों के मतानुसार अर्थ-निर्धारण तथा भाषाशास्त्रीय समालोचनात्मक अध्ययन ।
4. क्रमागत वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति ।
5. अन्त में उपर्युक्त सभी अध्ययनों में तथा सामग्री के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों से लेकर इन्द्र के स्वरूप का विकास का संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है और इसी प्रसंग में इन्द्र के सम्बन्ध में विद्वानों ने विभिन्न मतों का पर्यालोचन कर निष्कर्ष के तौर पर इन्द्र के रोचक इतिहास को तथ्यपरिपुष्ट तर्क-संगत ढंग से क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

अध्याय-प्रथम

क. प्रस्तुत विषय पर शोध कार्य करने की आवश्यकता एवं महत्त्व :,

ऋग्वेद द्वितीय मण्डल में इन्द्र का महत्त्व ।

ख. वैदिक देवताओं का वर्गीकरण ।

प्रस्तुत विषय पर शोध-कार्य करने की आवश्यकता एवं महत्त्व तथा ऋग्वेद द्वितीय मण्डल में इन्द्र का महत्त्व

ऋग्वेद द्वितीय मण्डल के इन्द्र सूक्तों पर शोध करने की आवश्यकता एवं महत्त्व :

सम्पूर्ण ऋग्वेद में वर्णित इन्द्र सूक्तों के आधार पर अधिकांश विद्वानों के मतानुसार अनेक शोधकर्ताओं ने शोध कार्य किया किन्तु ऋग्वेद द्वितीय मण्डल में वर्णित इन्द्र सूक्तों पर समालोचनात्मक व्याख्या पर नहीं किये हैं। ऋग्वेद के सम्पूर्ण (10 मण्डलों) में लगभग इन्द्र की ही व्याख्या अधिकतम दृष्टिगत होती है किन्तु ऋग्वेद द्वितीय मण्डल में अन्य मण्डलों की अपेक्षा इन्द्र के गुणों एवं विशेषताओं के विषय में सम्यक् जानकारी मिलती है। इन्द्र का उल्लेख शक्तिशाली एवं विशेष रूप से वर्षा का स्वामी होने का उल्लेख किया गया है तथा इनकी व्याख्या द्वितीय मण्डल में अनेक रूपों में सूक्तों की व्याख्या वर्णित है। इन्द्र को सोमरस का प्रेमी तथा वृत्र का हिंसक तथा 40 वें वर्ष में बल के बाड़े से गायों को निकालने तथा अनेक शक्ति का प्रमाण उपलब्ध है। ऋग्वेद द्वितीय मण्डल में सूक्त 2.12.1 में वर्णित किया गया हैं कि धैर्यवान् इन्द्र के जन्म लेते ही उसने अपने वैभव एवं पराक्रम से सभी देवताओं को अभिभूषित किया तथा उसके शक्ति तथा भय से आकाश तथा पृथ्वी कम्पित हो गयी[1]

---

1. यो जातः एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषित् ।
   यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेताम् नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः ॥

   ऋग्वेद 2.12.1

इस प्रकार ऋग्वेद द्वितीय मण्डल में इन्द्र सूक्तों पर शोध कार्य करने की आवश्यकता जागृत हुई । ऋग्वेद में वर्णित इन्द्र देवता का अन्य मण्डलों की अपेक्षा अधिक महत्त्व परिलक्षित होता है ।

<u>ऋग्वेद के सम्पूर्ण ।10 मण्डलों में। इन्द्र का स्थान</u>

ऋग्वेद के 10 मण्डलों में इन्द्र का वर्णन किया गया है किन्तु इन्द्र के व्यापक गुणों की समाभिव्यक्ति केवल द्वितीय मण्डल में वर्णित इन्द्र सूक्तों के अध्ययन से परिलक्षित होती है । प्रथम मण्डल में ।1. 32. 1। इन्द्र के शौर्य का वर्णन है जैसे कि इन्द्र ने नदियों को बहाया और अहि का वध किया । पर्वतों की ।जलवाहक। नदियों को प्रवाहित करने के लिए पर्वतों के खण्डों में छिद्र बनाया । सूक्त 1. 32. 1 के मन्त्र सं0 4 में अहिवृत्त बध किया तथा सूर्य, उषा तथा दिनों को उदित होने का मौका दिया । सूक्त 1. 32. 1 मन्त्र 6 में पैरों तथा हाथों के अभाव में भी वृत्र ने इन्द्र के साथ युद्ध जारी रक्खा । उन्मत्त वृषभ की बराबरी की इच्छा रखने वाला यह बधिया बैल टुकड़े टुकड़े में तितर-बितर हो गया । सूक्त नं0 1. 32. 1. 12 जिस समय

5---

1. इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रमानि वज्री ।
   अहन्नहिमन्वयस्तर्द प्र वक्षणा अभिनत पर्वतानाम् ॥

2. यदिन्द्राहन्प्रथमजाम हन्निमान्मायिनामहिना: प्रोतमाया: ।
   आत सूर्य जनयन् द्याम् उषासमें तादीत्ना शत्रून् किला विवित्से ॥

3. अपादहस्तो अपृतअन्यदिइन्द्रमास्यवज्रमधि सानौ जघान ।
   वृष्णो वध्रिः प्रतिमानं बुभूषन् पुरुत्रा वृत्रो अशयद्व्यस्त: ॥

4. अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र सृके यन्त्वा प्रत्यहन् देव एक: ।
   अजयो गा अजय: शूरसोममवासृज: सर्तवे सप्तसिन्धून् ॥

शत्रु तुम्हारे वज्र द्वारा वार करने पर उलटकर वार किया उसी समय इन्द्र अद्वितीय देव होकर एकदम घोड़े की पूँछ का रूप धारण किया । गायों तथा सोम को जीत कर लाया ।

हे सोम ! स्वामी इन्द्र तुम्हें लुभाने वाले इस सोमरस का पान करो और अश्वों को मुक्त किया ऋग्वेद 3.32.1 और इन्द्र का मरुद्गण ने वृत्र के वध पर गान किया तथा इन्द्र की प्रार्थना किया ऋग्वेद 3.32.1 मन्त्र 4. इन्द्र अपने आश्रयदाताओं की मदद किया करते थे । इन्द्र को देखकर पर्वत तथा सागर अपने आप रास्ता दे देते हैं । सूक्त 3.32.। मन्त्र 16. जिस दिन इन्द्र का जन्म हुआ उसी दिन पर्वतों पर सोमलता का रस में परिवर्तित होकर इन्द्र के लिए आयी - सूक्त 3.48.।

प्रस्तुत मण्डल में इन्द्र की महानता का वर्णन है और इसमें कहा गया है इन्द्र के बराबर कोई नहीं है और उसके सभी शत्रु उसके बराबर के नहीं है सूक्त 4.30.

---

1. इन्द्र सोमं सोमपते पिबेमं माध्यदिनं सवने चारु यत्ते ।
   प्र प्रथ्या शिप्रे मघवन्नृजीषिन् विमुच्या हरी इह मादयस्व ॥
2. त इन्नस्य मधुम द्विविप्र: इन्द्रस्य शर्धो मरुतों य आसना ।
   येभि वृत्रस्येषितो विवेदामर्मणो मन्यमानस्य मर्म ॥
3. न त्वा गभीर: पुरुहूत सिन्धुरद्रिय: परिषन्तो वरन्त ।
   इत्था सखिभ्य: इषितो यदिन्द्रा इळ्हं चिदरुजो गव्यमूर्वम् ॥
4. सद्यो ह जातो वृषभ: कनीन: प्रभर्तुमावदन्धस: सुतस्य ।
5. न किरिन्द्र: त्वदुत्तरो न ज्यायाँ अस्ति वृत्रहन् । न किरेवा यथा त्वम् ।
6. यत्रोत्र बाधितेभ्यश्चक्रं कुत्साय युध्यते । मुषाय इन्द्र सूर्यम् ।

इस मण्डल में कहा गया है कि इन्द्र लड़ाई में सूर्य से भी उसका बिम्ब चक्र जबरन ले लिया करता था तथा समस्त देवताओं को इन्द्र परास्त किया तथा शत्रु का विनाश कर दिया । इन्द्र ने दुष्ट स्त्री द्युदेव कन्या को मार डाला जो आकाश में अत्याचार किया करती थी तथा प्रत्येक के लिए घातक थी । यह कार्य करके इन्द्र ने महान् कर्म किया 4. 30. । तथा इन्द्र ने उषा द्युदेव की कन्या की गाड़ी तोड़कर उसे बहुत दूर भगा दिया । इस प्रकार उसके सारे घमण्ड को नष्ट कर दिया और उषा को अपने कब्जे में कर लिया ।

यज्ञ में इन्द्र के लिये गायें सोमरूप हव्य के साथ मानव के व्यावहारिक कल्या के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होती थी और सोमरस गाय का दूध होने के साथ इन्द्र के साथ गाय का वर्णन मिलता है । कौशिक गृह्यसूत्र में बांझ या बीमार गायों को दवा के रूप में नमक मिलाकर पिलाने का उल्लेख किया गया है । गायों का अतीव महिमा 8. 101. 15 में वर्णित है ।

पूषा के साथ भी इन्द्र का सम्बन्ध बताया गया है 6. 57. । मंत्र 6 में कहा गया है कि जिस प्रकार सारथी लगाम के सहारे घोड़ों को घुमता है उसी प्रकार हम अपने मंगल के लिए पूषा को इन्द्र की तरफ घुमाते हैं ।

---

1. एतद् घेदुत वीर्य9मिन्द्रं चकर्थ पौंस्यम् । स्त्रियं यद्दुर्हणायुववधर्दुंहितरं दिव: ।
2. अपोषा अनस: सरत् सपिष्टादहबिभ्युषी । निपत् सीं शिश्नथद्वृषा ।
3. आ गावो अग्मन्नुतं भद्रम् क्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे ।
   प्रजावती पुरुरूपा इह स्फुरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहाना: ॥
4. उत् पूषणं युवामहेऽभीशूँरिव सारथि: । मह्या इन्द्र स्वस्तये ।

अष्टम मण्डल में प्रस्तुत सूक्त मे अपाला एक रोगग्रस्त कन्या है, जो त्वचा रोग से पीड़ित रहती है और पति द्वारा परित्यक्ता महिला थी, अपने पिता के पास रहती थी व्याधि के कारण उसके पिता के सर पर एक भी बाल न रहा और बेचारे के पास अनुपजाऊ जमीन थी । वह कन्या इन्द्र से बड़ी श्रद्धा रखती थी । नदी में पानी लाने एक दिन अपाला जा रही थी कि रास्ते में सोमवल्ली का एक टुकड़ा मिला और उसी से सोम तैयार करके इन्द्र का आहावन किया । इन्द्र आवाहन सुनकर एक पुरुष का रूप धारण करके उसके घर पहुँचते हैं और अन्त में इन्द्र से वर माँगा । इसके पिता के सिर का बाल बढ़ाया तथा अपाला का रोग दूर कर दिया । इसी का वर्णन इस मण्डल में वर्णित है । सूक्त 8.91.। नं0 7. मं01.

नवम् एवं दशम्×मण्डल में प्राचीन परम्परानुसार प्रस्तुत सूक्त में इन उन ऋत्विजों के सामने अपना रूप प्रकट कर रहा है जिन्होंने लवा पक्षि का रूप धारण करके इन्द्र को सोमपान करते देखा । इसी तरह सोमरस पान कराने के लिए याजकों ने इन्द्र से कई बार प्रार्थना किया । इन्द्र सोम का आकण्ठ पान कर लेने के पश्चात् याजकों को बिना पारितोषिक के जाने नहीं देता था और याजक जो कुछ भी माँग लेता था उसे इन्द्र किसी भी तरह से देता था । इस प्रकार के प्रसंग का वर्णन प्रस्तुत है

---

1. कन्या ३ बार वायती सोममपि स्रुताविदत् ।
   अस्ते भरन्त्य ब्रवीदिन्द्राय सुनवै त्वा शक्राय सुनवै त्वा ॥

2. खे रथस्य खेऽनसः खे युगस्य शतक्रतो ।
   अपालामिन्द्र त्रिष्पूरव्यकृणोः सूर्यत्व चक्र ॥

<u>ऋग्वेद द्वितीय मण्डल में इन्द्र</u>

वैदिक देवगण किसी अन्य भारोपीय देवों की अपेक्षा उन भौतिक घटनाओं के ही अधिक निकट है जिनका यह प्रतिनिधित्व करते हैं । इसी कारण देवों की प्रकृति की चर्चा करते हुए प्राचीन वैदिक व्याख्याकार यास्क ‡निरुक्त 7.4‡ ने यह मत व्यक्त किया है कि इन देवों का जो रूप दिखाई पड़ता है उनमें मानव तत्वारोपण का लेशमात्र भी प्रयोग नहीं किया गया है जैसा कि सूर्य पृथ्वी अन्य उदाहरणों से यह स्पष्ट है अतः एक प्रारम्भिक वक्तव्य के रूप में हम यह कह सकते हैं कि वैदिक देवों के प्राकृतिक आधार में विशिष्ट चारित्रिक गुणों का तो अत्यल्प मात्रा में समावेश है कि उनके समान क्षेत्रों की कुछ घटनाओं के गुण उनमें आ गये हैं जबकि झंझावात के अन्तरिक्ष देवता इन्द्र अपने विद्युत से इसका वध करते हैं । इसलिए अग्नि को भी सोमपान कराने वाला, वृत्र का वध करने वाला तथा गायों और जल को तथा सूर्य और उषा को, विजित करने वाला कहा गया है । जबकि ये सभी प्रमुखतः इन्द्र के गुण है ।

इन्द्र ने गुफा में छिपे मायावी राक्षस को अपने ताकत से अहि को खोजकर मार डाला तथा जल को आकाश से लाया ।[1] इन्द्र महान् देव हैं जो पूछते हैं कि इन्द्र कैसा है और उसके पहचान के सम्बन्ध ऋग्वेद ।।.2.। में वर्णित है[2] जो पर्वतों

---

1. गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमप्स्व वीवृतं मायिनं क्षियन्तम् ।
   उत्तो अपो द्यां सप्तभ्वांसं महन्नहि शूर वीर्येण ॥ 2.1.।। ऋग्वेद ।
2. यं स्मा पृछन्ति कुहसेति घोर मुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येयम् ।
   सो अर्यः पुर्टीविज इवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जानस इन्द्रः ।।1.2.1.

में छिपे शम्बर को चालीसवें वर्ष में खोजकर मार डाला तथा मण्डी अहि का वध किया तथा शयन करने वालों दानु का वध किया वह इन्द्र है ।[1]

यजमानों के द्वारा इन्द्र का वर्णन ।।. 2. 2 में वर्णित है उमान लोग अपने लिये धन की कामना इन्द्र को प्रसन्न करके करते हैं तथा इन्द्र की प्रार्थना किया करते थे ।[2] अध्वर्यु इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए सोम एकत्र करते थे तथा उनको प्रसन्न करके अपनी कुशलता अपने लिए धन की प्रार्थना करते थे ।[3] स्वप्न में डराने वालों चुनुरि तथा धुनि आदि राक्षसों ॥दस्युओं॥ को इन्द्र मार कर समाप्त कर दिया । यह सब महान कार्य इन्द्र ने सोम के मद में किया । इससे स्पष्ट होता है कि इन्द्र इन सब महान कार्यों को सोमरस के पीने पर ही करता था और सोम एक महान् पेय पदार्थ है ।[4] यजमान लोग अ इन्द्र को हविष्य ग्रहण करने के लिए अनुष्ठान किया करते थे और इन्द्र की अपने पूरे परिवार समेत प्रार्थना ॥यज्ञ॥ किया करते थे ।[5]

---

1. यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरधन्व विन्दत् ।
   ओजयामानं यो अहि जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः ॥ ।।. 2. ।

2. अस्मभ्यं तद् वसो दानायराधः समर्थयस्व बहुते वसव्यम् ।
   इन्द्र यच्चित्र श्रवस्या अनु धून बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ॥ ।।. 2. 2

3. अध्वर्यवो यन्नरः कामयाध्वे श्रुष्टीवहन्तो नशथा तदिन्द्रे।
   गभस्तिपूते भरतश्रुतायेन्द्राय सोमं यज्यतो जुहोत ॥ ।।. 2. 3

4. स्वप्नेनाभ्युप्याचुमुरिं धुनिं च जघन्थ दस्युं प्र दभीतिभावः।
   रम्भी चिदत्र विविदे हिरण्यं सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार॥ ।।. 2. 4

5. प्र वः सतां ज्येष्ठतमाय सुष्टुतिमग्नाविव समिधानेहर्तिभरे ।
   इन्द्रमजुर्य जरयन्तमुक्षितं सनाद् युवानमवसे हवामेहे ॥ ।।. 2. 5

इन्द्र का सारथी अरुण तथा कुत्स को साथ बैठाकर जगत के समस्त शुभ और अशुभ कार्यों का निरीक्षण करता है और शम्बर के 90 और 9 प्राचीन नगरियों को गिरा देता है ।[1] विश्वजित् धनजित् स्वजित, सत्राजित, नृजित, उर्वराजित, अश्व-जित, गोजित को यजमान लोग हविष्य ग्रहण करने के लिए अनुष्ठान करते हैं ।[2]

इस प्रकार ऋग्वेद द्वितीय मण्डल में इन्द्र का अनेक मन्त्रों द्वारा अनेक प्रकार की स्तुतियों द्वारा अभ्यर्चना की गयी है । इन्द्र वास्तव में एक महान् देव है, जिसके अधीन समस्त देव हैं । इन्द्र अपनी इच्छा का मालिक है वह जैसा चाहता है वैसा करता है ।

---------::0::---------

---

1. स रन्धत सदिव: सारथये शुष्णम शुषं कुयवं कुत्साय ।
   दिवोदासाय नवतिं च नवे इन्द्र: पुरो व्यैरच्छम्बरस्य ॥ ।।. 2. 8

2. विश्वजिते धनजिते स्वजिते नृजिते उर्वराजिते ।
   अश्वाजिते गोजिते अजिते भरेन्द्राय सामं यजताय हर्यतम् ॥ ।।. 2. 10.

वैदिक देवताओं का वर्गीकरण

देवों से सम्बन्धित वैदिक धारणा में रूपरेखा की अनिश्चतता तथा वैयक्तिकता का अभाव प्राय: सर्वलक्षित होता है । ऐसा मुख्यत: इसी कारण हुआ है कि वैदिक देवगण किसी भी अन्य भारोपीय जाति के देवों की अपेक्षा उन भौतिक घटनाओं के ही अधिक निकट है जिनका यह प्रतिनिधित्व करते हैं। इसी कारण देवों के प्रकृति की चर्चा करते हुए प्राचीन वैदिक व्याख्याकार यास्क (निरुक्त 7,4) ने यह मत व्यक्त किया है कि इन देवों का जो रूप परिलक्षित होता है, उसमें मानव तत्त्वारोपण का लेशमात्र भी उल्लेख नहीं है । जैसा कि सूर्य पृथ्वी अथवा अन्य उदाहरणों द्वारा स्पष्ट भी है । वैदिक देवताओं का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है ।

ऋग्वेद तथा अथर्ववेद दोनों ही देवों की संख्या तैंतीस बताते हैं (3.6)[1] इत्यादि अथर्ववेद (10.7)[2] और इसकी संख्या अनेक स्थलों पर ग्यारह का तीन गुना के रूप में व्यक्त किया गया है (8.35) इत्यादि ।[3] एक स्थल पर (1.139) पर ग्यारह को स्वर्ग में, ग्यारह को पृथ्वी पर, ग्यारह को जल (=वायु) में रहने वालों के रूप में सम्बोधित किया गया है । इसी प्रकार अथर्ववेद (10.9)[4] में भी देवों का स्वर्ग अन्तरिक्ष, पृथ्वी, (र)रहने वाले के रूप में वर्गीकरण करता है, किन्तु इनकी संख्या का कोई निर्देश नहीं करता तैंतीस की संख्या के इस योग को सदैव

---

1. ओल्डेनबर्ग, Die Religion des Veda.

2. बर्गेन : रिलीजन ऑफ वैदिक ।

3. तैत्तिरीय संहिता ।

4. पूर्वोद्धृत, पाद टिप्पणी 1.

पर्याप्त नहीं माना जा सका है। कुछ स्थानों पर तैंतीस के अतिरिक्त भी अन्य देवों का उल्लेख मिलता है एक मंत्र {3.9} = 10[1], {52}[2] वाजसनेयि संहिता 33.6 में अकस्मात देवों की संख्या 33.39 बतायी गयी है। एक अधिक सामान्य आशय में तीन समूहों में विभाजित किया गया है। {6.51}[3] जहाँ देवों को स्वर्ग, पृथ्वी तथा जल से सम्बन्धित किया गया है।[4] ब्राह्मण ग्रन्थ में देवों की संख्या 33 बतायी गयी है - शतपथ ब्राह्मण तथा ऐतरेय ब्राह्मण इन वर्गों को 8 वसुगण, 11 रुद्रगण तथा 12 आदित्यगणं आदि बताया गया है।

वैदिक देवताओं का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया गया है :-

क. दिव्य देवता

यह शब्द 'दिव' {चमकना} धातु से बना है। इस प्रकार इसका अर्थ दिव्य तथा यह भी देवों {देव} के समान है।[5]

1. द्यौस् - द्यौस् शब्द आकाश तत्व की उपाधि के रूप में प्रयुक्त हुआ है। इसका आशय ऋग्वेद में कम से कम 500 बार आया है। 50 बार इसका अर्थ दिन भी आया है। जहाँ द्युलोकवासी देवता के रूप में मूर्तिकरण किया गया है।

---

1. हॉप्किन्स, रिलीजन ऑफ इण्डिया.
2. पूर्वोद्धृत, पादटिप्पणी 1. {पृष्ठ 1}
3. पूर्वोद्धृत, पृष्ठ 2, पादटिप्पणी 1.
4. ओरिजिनल संस्कृत टेक्स्ट्स,
   हॉप्किन्स, रिलीजन ऑफ इण्डिया।

5. Indogermanische For Schungen, 3, 301.

द्यौस् को बहुधा द्यावापृथ्वी के रूप में संयुक्त कर दिया गया है । द्वितीया विभक्ति में द्यौस् का अर्थ पृथ्वी के साथ आता है जहाँ एक बार विभेदात्मक रूप से अकेले आता है ‡1.74‡[1]

2. वरुण

सांख्यिक आधार पर यह तृतीय श्रेणी के देव सिद्ध होंगे । केवल एक दर्जन सूक्त ऐसे हैं जिसमें केवल इनकी प्रशस्ति एकमात्र है । इनके शरीर हाथ, पाँव, भुजायें, नेत्र, मुख तथा पैर की परिकल्पना की गयी है । ये अपनी भुजायें हिला डुला सकते हैं । यह भोजन-पान भी करते हैं तथा रथ भी हाँकते हैं । वरुण के मुख ‡अनीकम्‡ को कवि अग्नि के समान मानता है ।[2] तथा सहस्र नेत्र वाले हैं।[3] वरुण के पास सैकड़ों, हजारों उपचार हैं और यह पापों से मुक्ति करते हैं ।[4]

3. मित्र

प्रायः इस नाम की उत्पत्ति अनिश्चित है ।[5] फिर भी यह ऋग्वेद में अक्सर इस शब्द का अर्थ मित्र या साथी भी है । वेद में इस देव के दयालु स्वभाव का अक्सर ही उल्लेख है । यहाँ तक कि मित्र शांति-देवता के रूप में आते हैं ।[6] यह मित्रदेव मूलतः साथी या मित्र का ही वाचक और प्रकृति की एक हितकर शक्ति के रूप में सूर्य के लिए व्यवहृत हुआ होगा ।[7]

---

1. बर्जेन वर्गर : वी. 15.
2. Oldenburgs Die Religion of des the Veda, 286.
3. तु0की0 वेबर : वै0वी0 1994, पृ0 38.
4. तु0की0 तैत्तिरीय ब्राह्मण संहिता 1.7.10.
5. हिलेब्रांट, 113.
6. एग्गर्स, 60.
7. पूर्वोद्धृत, पादटिप्पणी 5.

4. सूर्य -

अवेस्ता में सूर्य या ह्वरे ॥=वैदिक "स्वर्" जिससे सूर्य[1] व्युत्पन्न हुआ और जिससे ही यूनानी 'इलियोस' भी सम्बद्ध है को भी वैदिक सूर्य की भाँति द्रुतगामी अश्वों वाला तथा 'अहुर मज्द॥ का नेत्र कहा गया है ।[2]

5. सवितृ -

अपनी आवृत्ति की लगभग आधी दशाओं में इस नाम के साथ "देव" संयुक्त है । यह शब्द जिसका अर्थ प्रेरित करने वाला होता है । दो स्थलों पर यह त्वष्ट्र की उपाधि ही प्रतीत होता है ओल्डेनबर्ग का यह विचार है कि सवितृ वास्तव में प्रेरणा की एक अमूर्त धारणा का प्रतिनिधित्व करता है ।[3]

6. पूषन् -

पृष् धातु से उत्पन्न पूषन् शब्द का अर्थ समृद्धि दायक है । सुरक्षा तथा समृद्धि प्रदान करने के लिए प्रायः इनका आवाहन किया जाता है ।[4] पूषन् चरित्र सम्बन्धी धारणा की पृष्ठभूमि में इन्द्र की उपकारी शक्ति ही है, जो मुख्यतः ग्रामीण देवता के रूप में वर्णित है ।

---

1. बर्गेन, ल०रि०वे० ।.6.

2. स्पीगल : डी०पी० ।

3. मैकडानल, ज०ए०सो० 26.

4. के०ब्र० नोट ।20.

7. विष्णु -

ऐतरेय ब्राह्मण(1.1) में स्थानगत आधार पर देवों में सर्वोच्च विष्णु का सबसे निम्नस्थ अग्नि के साथ विभेद किया गया है । अन्य सभी देवों को मध्य में स्थित किया गया है । ऋग्वेद के उद्धरण 1.156[1] में यह उल्लेख है कि मित्रों से युक्त होकर विष्णु गायों को खड़े होने का स्थान खोला ।

8. विवस्वत् -

विवस्वत् भी ऋग्वैदिक काल में विलीन हो चुका था । व्युत्पत्तिजन्य अर्थ अश्विनौ, अग्नि, सोम से सम्बद्ध तथा इस तथ्य को भी इसका स्थान यज्ञस्थल है ।[2] यजुर्वेद (वाजसनेयि संहिता 8.5) मैत्रायणी संहिता 1.6) तथा ब्राह्मणों में इसे आदित्य कहा है ।

9. आदित्यगण -

आदित्यों के साथ और एक (10.64) पर मित्र, अर्यमन तथा अरुण के साथ उल्लेख मिलता है और इसके जन्म के सम्बन्ध में अदिति की सम्भावना है । अदिति इन्हीं से उत्पन्न हुयी पुत्री है । एक अन्य मन्त्र में (10.5)[3] में जन्म स्थान अदिति के गर्भ से माना जाता है ।

10. उषस् -

वस् धातु से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ प्रकाशित होना है । यह मूलतः अरोरा और द्यौस् (HOS) का सजातीय है । यह इन्द्र के समान दिव्य और अमर है । यह विशेषतः उदार है ।[4] यह अति उज्ज्वल, दीप्यमान, अरुणिम,

---

1. फे०वे० 97-100,
2. बालेसेन : त्यसी०गे० 81-503
3. मैकडानल : ज०ए०सो० 27.
4. मूईर : स०टे० 191-193.

स्वर्णमयी प्रदीप्त तथा उदारता से परिपूर्ण है ।

11. अश्विन् द्वय -

अश्विन् द्वय को वास्तव में प्रातःकालीन तारे को सायंकालीन तारों के साथ सम्बद्ध होने का विचार किया गया है किन्तु यह दोनों सदैव पृथक पृथक् रहते हैं जबकि अश्विन् द्वय संयुक्त हैं फिर भी ऋग्वेद में अश्विन द्वय की दो स्थलों पर अलग अलग चर्चा की गयी है । वास्तव में वैदिकता में प्रातःकालीन उपासना का अधिक तथा सन्ध्याकालीन का कम महत्त्व है ।[1] अश्विनौ का प्रातः तथा सायं दोनों समय आवाहन किया जाता है ।[2]

ख। अन्तरिक्ष देवता

1. इन्द्र -

इन्द्र की व्युत्पत्ति संदिग्ध है किन्तु इसके धातु इन्दु ।विन्दु। से सम्बद्ध होना सम्भव प्रतीत होता है । यह विजय का द्योतक है और दैत्यों का वधकर्ता है ।[3] यह वर्षा का स्वामी तथा देवाधिपति के रूप में विख्यात है ।[4]

---

1. ब्रून हॉफर : बॉ०ग० पृ० 99.
2. पिशल : विदिशे स्टूडियन, 1, पृ० 8, 56.
3. त्सी०गे० 32.
4. ही०वे०मा० 1.44

2. त्रित आप्त्य -

हिलेब्रान्ट इन्हें उज्ज्वल भविष्य का द्योतक मानते हैं ।[1] कुछ विद्वान इन्हें जलों तथा वायु का द्योतक मानते हैं ।[2]

3. अपां नपात् -

अपां नपात् चन्द्रमा है, मैक्समूलर इन्हें विद्युत् मानते हैं ।[3] कुछ विद्वानों का विचार है कि इसका सम्बन्ध जल से है ।[4]

4. मातरिश्वन् -

मातरिश्वन् की ऋग्वेद के किसी भी सम्पूर्ण सूक्त में प्रख्याति नहीं है और इसका नाम केवल सत्ताईस बार ही आता है तीन स्थलों पर मातरिश्वन् एक अग्नि का नाम है ।[5] यास्क-[निरुक्त 7.26] जो मातरिश्वन् को वायु की उपाधि मानते हैं इस यौगिक शब्द "मातरि र = अन्तरिक्ष और श्वन् = "सांस लेना" के रूप में वर्णित करते हैं । इस प्रकार इसका अर्थ वह पवन जो हवा में सांस लेता है" हो जाता है ।

---

1. ज०आ०ओ०सो० 4.144.

2. अ०ए०सो० 24.

3. मैक्समूलर, नेचुरल रिलीजन, 500.

4. अवेस्ता का अनुवाद 3.

5. बेर्गेन, द रिलीजन आफ वेद ।

5. अहिर्बुध्न्य: -

अतल के अहि सर्प बुध्नय, जिसका नाम केवल 'देवस्' को अर्पित सूक्तों में ही वर्णित है । ऋग्वेद में केवल ग्यारह बार आता है । कदाचित् कहीं अकेले चर्चा हो तो नहीं कहा जा सकता नहीं तो यह किसी देव के साथ आता है । मैं जल में उत्पन्न उस सूर्य की स्तुति करता हूँ जो सून्य स्थलों में स्थित धाराओं के तल ॥बुध्ने॥ में बैठा है ।[1]

6. अजएकपाद: -

यह व्यक्ति ॥देवता॥ अहिर्बुध्न्य से घनिष्ठत: सम्बन्ध है । इसका नाम पाँच बार अहिर्बुध्न्य के सन्निकट होने के रूप में एक बार अकेले आता है ।[2]

7. रुद्र -

ऋग्वेद में इस देवता का एक महान स्थान है । केवल तीन सम्पूर्ण सूक्तों में अन्तश: एक अन्य में दूसरे सोम के साथ सम्मिलित रूप से इनकी प्रख्याति है जबकि इनका नाम 75 बार आया है । इनके धनुष, बाण, गदा आदि अक्सर उल्लेख हैं अथर्ववेद 1-28, शतपथ ब्राह्मण में 9.1.1 में वर्णित है ।[3] यह रुद्र धातु से उत्पन्न हुआ है । इसको क्रन्दन करने के रूप में कहा गया है ।[4]

---

1. Hardy : Vedisch Brahamanische Periode.
2. व०स्था० "अज" निरुक्त पर प्रस्तावना 6,164.
3. तु०की० ब्राडवे, घा-46.
4. हाप्किंस, प्रो०सी०, दिसम्बर 1994.

8. मरुद्गण -

ये लोग ऋग्वेद में प्रमुख स्थान रखते हैं । तैंतीस सूक्तों में अकेले आये हैं । इनको पृश्नि का पुत्र कहा गया है । पृश्निमातर: ﹝पृश्नि जिनकी माता हैं, उपाधि इनके लिए व्यवहृत है ।[1]

9. वायु-वात -

वायु एक देवता है वात एक तत्व है । वायु का इन्द्र के साथ तथा अनेक देवों के साथ कहा गया है । ये दोनों नाम कभी कभी एक ही मन्त्र में आते हैं।[2] हवा के नाम से वात भी अधिक स्थूल रूप में प्रख्यात है ।

10. पर्जन्य -

पर्जन्य शब्द से वर्षा मेघ का ही अभिधात्मक आशय हो सकता है । पर्जन्य को आज भी गर्जन देवता पर्कुंनस के साथ समीकृत किया जाता है ।[3]

11. आप: -

आप जल के लिए कहा गया है और अग्नि के रूप को जल का पुत्र कहा गया है ।[4] जल मातायें हैं[5]- जो लोकों की उत्पत्ति तथा वप की दृष्टि के समान हैं ।

---

1. वाहनेन वर्गर : उ0पु0 43-3.
2. स्टोक्स, वेजेनवर्ग 19.
3. वेनफे - आ0आ0 1-223.
4. उर्मस्टेटर : हा0ए0 73.
5. मूईर : स0टे0 4.

ग. पार्थिव देवता

1. नदियाँ -

दिव्य जल के अतिरिक्त दैवीकृत नदियाँ भी ऋग्वेद में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं । ऋग्वेद में सिन्धु आदि नदियों का आवाहन किया गया है ।

2. अग्नि -

एक प्रमुख पार्थिवदेव है । यह ऋग्वेद के 200 सूक्तों में प्रख्यात है । इन्द्र की भाँति इन्हें भी सहस्र मुष्क उपाधि से विभूषित किया गया है ।[1] यह शक्तिशाली ग्रीव वाले बलिष्ठ वृषभ हैं ।[2]

3. वृहस्पति -

यह ऋग्वेद में प्राय: 120 बार आया है । यह इन्द्र के साथ युगल रूप में भी आया है । वृहस्पति एक पारिवारिक पुरोहित है ।[3] ये सोम के पुरोहित हैं ।[4]

4. सोम -

व्युत्पत्ति की दृष्टि से सोम = हओम का अर्थ दबाया हुआ रस है और यह सु = हु (दबाना) धातु से उत्पन्न हुआ है । सोम एक पौधे का नाम है कहीं यह सशरीर देवता के रूप में आते हैं ।[5]

---

1. तु0की0 शायण रौथ : निरुक्त प्रस्तावना, 140.
2. मुण्डकोपनिषद 1.
3. ऐतरेयब्राह्मण 8, तैत्तिरीय संहिता 6.
4. शतपथ ब्राह्मण 4.
5. ओल्डेनबर्ग, रिलीजन आफ वेद, 176.

ग. पार्थिव देवता

1. नदियाँ -

दिव्य जल के अतिरिक्त दैवीकृत नदियाँ भी ऋग्वेद में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं । ऋग्वेद में सिन्धु आदि नदियों का आवाहन किया गया है ।

2. अग्नि -

एक प्रमुख पार्थिवदेव है । यह ऋग्वेद के 200 सूक्तों में प्रख्यात है । इन्द्र की भाँति इन्हें भी सहस्र मुष्क उपाधि से विभूषित किया गया है ।[1] यह शक्तिशाली ग्रीव वाले बलिष्ठ वृषभ हैं ।[2]

3. वृहस्पति -

यह ऋग्वेद में प्राय: 120 बार आया है । यह इन्द्र के साथ युगल रूप में भी आया है । वृहस्पति एक पारिवारिक पुरोहित है ।[3] ये सोम के पुरोहित हैं ।[4]

4. सोम -

व्युत्पत्ति की दृष्टि से सोम = हओम का अर्थ दबाया हुआ रस है और यह सु = हु (दबाना) धातु से उत्पन्न हुआ है । सोम एक पौधे का नाम है कहीं यह सशरीर देवता के रूप में आते हैं ।[5]

---

1. तु0की0 शायण रोथ : निरुक्त प्रस्तावना, 140.
2. मुण्डकोपनिषद 1.
3. ऐतरेयब्राह्मण 8, तैत्तिरीय संहिता 6.
4. शतपथ ब्राह्मण 4.
5. ओल्डेनबर्ग, रिलीजन आफ वेद, 176.

घ. अमूर्त देव

1. दो वर्ग -

ऋग्वेद में जिन देवों की प्रकृति अमूर्त है उन्हें दो भागों में रखा गया है। एक भाग में अमूर्त धारणायें जैसे कामादि का प्रत्यक्ष मूर्तिकरण आता है दूसरे जिनका नाम तृ प्रत्यय वाली धातु से उत्पन्न संज्ञा जैसे धातृ (सृष्टिकर्ता) आदि के रूप में-

क. विभिन्न कतृदेव

तृ प्रत्यय वाले जिन देवों के नाम कतृयों के द्योतक हैं उनमें सर्वप्रमुख सवितृ हैं।[1]

ख. त्वष्टृ -

यह एक ऐसा देवता है जिनमें सवितृ के अतिरिक्त औरों की अपेक्षा अधिक बार आया है। ऋग्वेद में इनका नाम 65 बार आया है।[2]

2. विश्वकर्मन-प्रजापति -

यह यौगिक उपाधियों से उत्पन्न हुए हैं।[3] इसके बाद न केवल प्रजापति ही वरन् इसे एक सर्वोच्च देवता का नाम दिया गया है।[4]

3. मन्यु, श्रद्धा आदि -

मन्यु अथवा क्रोध का जिसका इन्द्र से भयंकर क्रोध से उद्धृत हुआ[5] - श्रद्धा द्वारा सम्पत्ति प्राप्त होती है।[6]

---

1. सेन्ट पीटर्सबर्ग कोष, प्रजापति, 493.
2. मैक्समूलर ओ० रि० 273.
3. बेलब्रक - फे० ओ० 24.
4. ब्लूमफील्ड, अ० फा० 14.
5. गोल्डनर, उ० स्था० 100.
6. हा० इ० 141.

4. अदिति -

इसे अक्सर देवी कहा गया है, जिसका अनर्वा नाम मिलता है[1] अदिति मित्र और वरुण की माता है ।[2] शक्तिशाली पुत्रों की माता कहा जाता है ।[3]

5. दिति -

अथर्ववेद के अनुसार दैत्यगण इनके पुत्र हैं जो वैदिकोत्तर पुराकथाशास्त्र में देव के शत्रु बन गये ।[4] जो एक निश्चित आशय व्यक्त करने के लिए अदिति से दिति कहा जाता है जैसे सुर से असुर बने ।[5]

ङ. देवियां

महान् देवों की पत्नियों के रूप में देवियों का वेदों में इसी प्रकार नगण्य स्थान है जैसे इन्द्राणी का अर्थ केवल इन्द्र की पत्नी हैं ।[6] रुद्र की पत्नी रुद्राणी आदि व्याख्या के आधार पर इन्हें सूर्यकन्या - सूर्या अथवा उषस् से सम्बद्ध किया जाता है ।[7] संस्कृत में इसका अर्थ सरस् = गति ॥दौड़ना॥ है यु प्रत्यय लगाकर चरण अथवा अन्य देवों की भाँति बना लिया गया है ।

---

1. बर्गेन : ला०रि०वे० 3.94
2. वही ।
3. निरुक्त, प्रस्तावना ।40. ।
4. मैक्समूलर, से०बु०ई० 32.
5. बॉरिस, कौ०अ० 46.
6. औ०वे० ।72.
7. इण्डिसे स्टूडियन, 4-178.

च. युगल देवता

ऐसे देव जो विशेषकर द्विवाचक यौगिक शब्दों के रूप में संयुक्त कर दिया गया है जिनसे व्यक्त दोनों देव द्विवाचक स्वराघातों से युक्त कभी कभी परस्पर पृथक् भी हैं ।[1] ऋग्वेद में कम से कम साठ सूक्तों में प्राय: एक दर्जन देवों की इस प्रकार संयुक्त रूप से प्रख्याति मिलती है । ग्यारह - इन्द्राग्नि, नौ इन्द्र-वरुण, सात इन्द्र-वायु, छ: द्यावापृथ्वी, दो-दो इन्द्र-सोम, एक-एक इन्द्र-विष्णु, इन्द्र पूषणा, सोमा, इन्द्र वृहस्पति, अग्नि-सोम को समर्पित किया गया है ।[2] आकाश-पृथ्वी माता पिता हैं, इन्हें अक्सर, पितरा, मातरा, जनित्री कहा गया है ।[3]

छ. देवों के समूह

इसमें सबसे बड़ा समूह मरुतों का बताया गया है । 21 अथवा 180 बतायी गई है । इनकी माता अदिति तथा इनके प्रधान वरुण बताया गया है ।[4] वसुओं को अग्नि के साथ, आदित्य को वरुण के साथ, मरुतों को सोम के साथ, साध्यों को ब्रह्मा के साथ सम्बद्ध किया गया है ।[5] यह काल्पनिक यज्ञीय समूह है । इनका प्रयोजन सब देवों का प्रतिनिधित्व करना है, जिससे सब देवों के लिए उद्दिष्य स्तुतियों में कोई देव छूट न जाय ।[6]

---

1. कुन: हे0गौ0 161.
2. ऐतरेय ब्राह्मण का अनुवाद, भाग 2,
3. ओल्डेनवर्ग, ऋसी0गे0 40-63.
4. वाकरनागेल त्सी0कु0 24.
5. ओल्डेनवर्ग, त्से0तु0ई0 46-111.
6. ग्रासमैन हिन्दी अनुवाद, ऋग्वेद 1-103.

ज. अवर देवता

आरम्भ में इन्हें देवता नहीं माना गया था । इनके माता पिता, जिनका इतना अधिकतर उल्लेख मिलता है आकाश और पृथ्वी को ही व्यक्त करते हैं ।[1] सम्पूर्ण रूप से यह प्रतीत होता है कि ऋभुगण मूलत: पार्थिव और अन्तरिक्षीय शिल्पी माने गये हैं, जिनकी कुशलता ने क्रमश: अलौकिक दक्षता व्यक्त करने वाली अनेक पुराकथाओं को व्यक्त कर लिया है परन्तु जन्मभेद द्वारा प्रस्तुत प्रमाण किसी निश्चित निष्कर्ष की सम्भावना के लिए कदाचित् ही पर्याप्त हैं ।[2]

1. अप्सरस-

कुछ विद्वानों ने पुरूरवस् और उर्वसी को क्रमश: सूर्य और उषस् के रूप में अप्सरस् की व्याख्या की है ।[3] अथर्ववेद में तीन अप्सरा का नाम आता है । उग्रजित्, उग्रपश्या, राष्ट्रभृत् - वाजसनेयि संहिता में उर्वसी और मेनका का नाम आता है । शतपथ ब्राह्मण में शकुन्तला आदि के सप्सरस् की व्याख्या की गयी है ।

2. गन्धर्व -

कुछ लोग गन्धर्वों को वायवीय आत्मायें मानते हैं ।[4] दूसरा यह विचार है कि गन्धर्व इन्द्र धनुष का अथवा चन्द्रमा के एक दिव्य पुरुष का । अथवा सोम का अथवा सूर्य अथवा मेघ आत्मा का प्रतिनिधित्व करते हैं ।[5]

---

1. जर्म निशे मैथलाजी, 124.
2. श्रोडर, वी०मा० 9-243.
3. बार्थोलोमाइ : त्सी०गे० 42.
4. बेवर : वे०वी० 1894, पृ० 345
5. इण्डो०माइथेन. 64.

3. <u>रक्षक देवता</u>

इनके ख्याति प्रवेश को अनुकूल बनाने के लिए व्याधियों को दूर करने के लिए, मनुष्य तथा पशु को आशीर्वाद के लिए, पशुओं और अश्वों के रूप में समृद्धि प्रदान करने के लिए, सदैव रक्षा के लिए आवाहन किया गया है ।[1] पर यह साधारणतया उस कोटि के देवों में आते हैं जो पुरातन विश्वासों, वृक्षों तथा पर्वतों प्राकृतिक तत्वों के चेतन के रूप में निहित अव्यवस्थित अधिष्ठाता माने जाते हैं ।[2]

इस प्रकार वैदिक देवताओं का वर्गीकरण ऋग्वेद तथा अन्य पौराणिक तथा विदेशी विद्वानों के भारतीय वैदिक रचना के आधार पर उपरोक्त ढंग से किया गया है, जिसमें वेदों में वर्णित तथा चर्चित प्राय: सभी देवों का समावेश है और ये वैदिक देव ही भारतीय वैदिक पुराकथाशास्त्र के द्योतक हैं और मनुष्य पशुओं तथा अन्य जड़-चेतन के लिए एक उचित प्रक्रिया को प्रस्फुटित करते रहते हैं ।

---------::0::---------

---

1. ड्रिस्लर मेमोरियल 241.
2. तु0की0 ब्लूमफील्ड - से0तु0ई0 42.

अध्याय-द्वितीय

[क] इन्द्र का वैशिष्ट्य

1. सामवेद में इन्द्र
2. ऋग्वेद में इन्द्र
3. यजुर्वेद में इन्द्र
4. अथर्ववेद में इन्द्र
5. पुराणों में इन्द्र
6. ब्राह्मणग्रन्थों तथा आरण्यक में इन्द्र तथा उपनिषद में इन्द्र,
7. महाकाव्यों में इन्द्र

[ख] इन्द्र का अन्य देवों के साथ सम्बन्ध ।

सामवेद में इन्द्र

सामवेद में इन्द्र के जीवन से सम्बन्धित किसी नवीन घटना का उल्लेख नहीं मिलता है । वहाँ केवल उनके यौद्धिक पक्ष, दानवृत्ति एवं विश्वाधिपति का उल्लेख मिलता है ।[1] ऋग्वेद में से संग्रहीत मंत्रों को छोड़कर अवशेष मंत्रों में यह वर्णित है कि उनके ऐश्वर्यवर्द्धन में उनकी चारित्रिक महत्ता एवं सोमयाग की अर्चना ही प्रमुख थी ।

सामरिक दृष्टिकोण से पुरोहित वर्ग इनकी अद्भुत शक्ति एवं अदम्य उत्साह से अवगत थे । वे शक्तिसम्पन्न थे एवं प्रत्येक शक्तिदश्यक वस्तुओं के अधिपति थे ।[2] चारणगण सामगान के द्वारा इन्द्र को शत्रुओं से संग्राम करने के लिए प्रोत्साहित करते थे । वे विजय-प्राप्ति, शौर्य-प्रदर्शन एवं शत्रुओं के संहार करने और वृष्टि हेतु इन्द्र का आह्वान करते थे ।[3]

सोमयाग के याज्ञिक अवसरों पर उस युद्ध-देवता के यश से सम्बन्धित गानों का पुरोहित वर्ग गान करते थे[4] एवं उनकी महानता[5], दानशीलता एवं वीरता का

---

1. सामवेद 1/5/2/10. 2. सामवेद 1/3/1/4/4.

3. "यं वृत्रेषु क्षितय स्पर्धमाना यं युक्तेषु तुरयन्तो हवन्ते ।
य ऽ्शूरसातो यमपामुपज्मन्यं विप्र वाजयन्ते स इन्द्रः ॥"
सामवेद 1/4/1/5/6.

4. सामवेद, 1/3/1/2/6, 2/3/1/22/3.

5. सामवेद, 1/3/1/1/10.

गुणगान भी इसी अवसर पर किया जाता था ।[1] वे लोग वृत्रहन् , शत्रु संहारक, शक्तिसम्पन्न, युद्ध में अडिग एवं वज्रधर इन्द्र की स्तुति करते थे ।[2] इन्द्र ने दधीचि नामक ऋषि की अस्थियों से असुर वृत्र[3] एवं जल-फेन से नमुचि का संहार किया ।[4]

धार्मिक दृष्टिकोण से सोमयाग इन्द्र को पूर्णत: समर्पित किया जाता था ।[5] वे अपराधियों को दण्डित करते थे तथा अयाज्ञिकों को यज्ञस्थान से दूर भगाते थे ।[6] वे सन्देहवश विजातियों की पूजा एवं भेंट को स्वीकार नहीं करते थे।[7]

याज्ञिक अवसरों पर इन्द्र के अतिरिक्त अन्य देवताओं को भी सोमपान के लिए आमन्त्रित किया जाता था ।[8] पुरोहितवर्ग सोमपादप को शक्ति प्रदान हेतु भी इन्द्र से प्रार्थना करते थे ।[9] विष्णु, मित्र, वरुण एवं मरुत् इन्द्र की स्तुति

---

1. सामवेद, 1/3/1/4/4.

2. "मेडिं न त्वा वज्रिणं भृष्टिमन्तं पुरुधस्मानं वृषभ ँ स्थिरप्स्नुम् ।
   करोष्यर्यस्तरुषीर्दुवस्युरिन्द्र द्युक्षं वृत्रहणं गृणीषे ॥" - सामवेद 1/4/1/5/6

3. सामवेद, 1/2/2/10/5.

4. "अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः ।
   विश्वा यदजय स्पृधः ॥" सामवेद, 1/3/1/2/8.

5. सामवेद, 2/9/1/13/3.

6. "यदिन्द्र शासो अव्रतं च्यावया सदसस्परि ।
   अस्माकम् ँ शुं मघवन्पुरुस्पृहं वसव्ये अधि बर्हय ॥" सामवेद, 1/8/1/1/6.

7. सामवेद, 1/2/2/2/6.

8. सामवेद, 1/3/1/2/6, 1/4/1/10/4, 2/9/1/2/2.

9. सामवेद, 1/4/1/1/6.

करते एवं मरुतों का बल इन्हें आनन्दित करता था ।[1] विभिन्न प्रकार की सहायता हेतु इन्द्र का आह्वान सामों एवं स्तोत्रों के माध्यम से किया जाता था ।[2]

इन्द्र स्वभावतः महात्मा की तरह दयालु[3] एवं दानशील थे ।[4]

पुरोहितगण उनकी महानता का परिचय देते हुए कहते हैं कि वह ब्राह्मण जो सम्यान्तर्गत पदार्पण करता है वही 'इन्द्र' के नाम से विख्यात है[5] एवं उसी की प्रशंसा की जाती है ।[6] वह उदारहृदय, प्रसन्नचित एवं मित्रवत् व्यवहार करने वाले हैं ।[7] वे अधार्मिकों एवं दुर्जनों की किंचितमात्र भी चिन्ता नहीं करते हैं अपितु उनको दण्डित करके उनको पदच्युत कर देते हैं ।[8] वे शत्रुओं को पराजित करके सज्जनों को विजय दिलाने में सहायता करते हैं । वे ईप्सित धनदाता एवं शत्रुओं के संहारक हैं ।[9]

अतएव सामवेद में इन्द्र शक्तिसम्पन्न, ऐश्वर्ययुक्त, दानशील एवं सोमपायी देव के रूप में प्रतिष्ठित थे ।

---

1. "त्वां विष्णुर्बृहन्क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः ।
   त्वां शर्धो मदत्यनु मारुतम् ॥" सामवेद 2/8/1/11/3.
2. सामवेद, 1/4/1/6/9.
3. सामवेद, 2/3/1/22/1.
4. सामवेद, 1/4/2/10/6.
5. सामवेद, 2/9/1/2/1.
6. सामवेद, 2/3/1/22/1.
7. सामवेद, 2/8/1/14/1.
8. सामवेद, 1/4/1/1/6, 1/4/1/4/5.
9. "भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः ।
   वसु स्पार्हं तदा भर ॥" सामवेद, 2/4/1/9/1.

ऋग्वेद में इन्द्र

इन्द्र वैदिककालीन भारतीयों के लोकप्रिय एवं राष्ट्रीय देवता हैं। उनकी महत्ता इसी तथ्य से लक्षित है कि ऋग्वेद के एक चतुर्थांश - कुल 250 सूक्तों - में यह स्वतन्त्र रूप से स्तुत है। यदि ऐसे सूक्तों को सम्मिलित कर लिया जाय जिनमें इन्द्र की स्तुति आंशिक रूप से अथवा युग्म-देवता के रूप में हुई है तो उन्हें समर्पित सूक्तों की संख्या लगभग 300 से अधिक हो जाती है।

इन्द्र का वैदिक पुराकथाशास्त्र के क्षेत्र में पदार्पण ही उसके पूर्ण स्वरूप का प्रस्तुतीकरण है। ऋग्वेदीय मंत्र उसके जीवन एवं गतिविधियों के अनेक पहलुओं को प्रस्तुत करते हैं जिसमें यह निर्णय करना अति कठिन हो जाता है कि उनमें से कौन सा मन्त्र अत्यन्त प्राचीन है। कभी-कभी वह वृष्टिदेवता, सूर्यदेवता, प्रकाशदेवता, आकाश-देवता, उत्पादक-देवता, युद्ध-देवता, राष्ट्रीय-देवता और प्राचीन पुराण-शास्त्र सम्बन्धी अहि नामक सर्प को नाश करने वाले देवता के रूप में उपस्थित होते हैं। इसका यह तात्पर्य है कि इन्द्र का पुराणशास्त्र सम्बन्धी जीवन एक अचलायमान एवं अद्भुत व्यक्ति के समान नहीं था अपितु विभिन्न प्रकार से विकासशील था। समयान्तर से उनके व्यक्तित्व में अनेकों तत्वों का समावेश हो गया था जिसके फलस्वरूप ऋग्वेद में इनका व्यक्तित्व बहुमिश्रित एवं बहुमूर्तिदर्शी हो गया था और कभी-कभी स्वयं में ही विरोधाभासी हो गया था। प्राचीन एवं पाश्चात्य विद्वानों के लिए इन्द्र के नाम की व्युत्पत्ति एवं विश्लेषणात्मक उद्धरण को सिद्ध करना ही अत्यधिक कठिन था।[1]

---

1. "इन्द्र इरां दृणातीति वा। इरां ददातीति वा। इरां दधातीति वा। इरां दारयत इति वा। इरां धारयत इति वा। इन्दवे द्रवतीति वा। इन्दौ रमत इति वा। इन्धे भूतानीति वा। --- इदं करणादित्याग्रयणः। इदं दर्शनादित्यौपमन्यवः। इन्दतेवैश्वर्यकर्मणः। इन्द्र छत्रूणां दारयिता वा। द्रावयिता वा। आदरयिता च यजवनाम्॥" यास्कः निरुक्त 10/8; प्रो० फतेहसिंह, वैदिक एटिमालॉजी, 61-102, ऋ० 1/34; रॉथ : साम्वेद [इन्द्र], ए०ए० मैक्डोनेल : वै०मा० 66; वी०एम० आप्टे - जर्नल ऑव दि बाम्बे यूनिवर्सिटी, 19 [एन०एस०] 213-218.

इन्द्र के आवश्यक स्वरूप से सम्बन्धित बहुत से विवादास्पद सिद्धान्त प्रतिपादित हो गये थे । शिक्षाविदों के विचारों में इस प्रकार की विभिन्नता कोई आश्चर्य का विषय नहीं है लेकिन प्रमुखरूपेण हम इन्द्र के व्यक्तित्व की दो व्याख्यायें प्रस्तुत कर सकते हैं :-

अ. नैसर्गिक स्वरूप ; एवं

ब. मानवीय स्वरूप ।

अ. नैसर्गिक स्वरूप

वृष्टि-देवता के रूप में इन्द्र

नैसर्गिक व्याख्या का प्रतिपादन करने में यहाँ एक जटिल समस्या उत्पन्न हो जाती है कि इन्द्र के स्वरूप का प्रकृति की कौन-सी विशिष्ट शक्ति प्रतिनिधित्व करती है । इन्द्र के जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना इन्द्र-वृत्र युद्ध के विषय में सभी शिक्षाविद् एकमत हैं । प्राचीन भारतीय विद्वान् यास्क[1], शौनक[2] एवं सायण इन्द्र को आँधी एवं विद्युत् का स्वामी मानते हैं अर्थात् वृष्टि-देव । पाश्चात्य विद्वान् यथा - मैक्समूलर, रॉथ, लास्सेन, ओल्डेनबर्ग, म्योर, कीथ, मैक्डोनेल, ब्लूमफील्ड, लुडविग, पेरी सभी इसी तरह की विचारधारा रखते हैं ।[3] झंझावात् के सिद्धान्त को मानने वाले विद्वानों का ध्यान ऋग्वेद के उन

---

1. यास्क : निरु0 2/16.   2. शौनक : बृहद्देवता, 1/95-96.

3. एफ0 मैक्समूलर : लैक्चर्स ऑन द साइंस ऑव लैंग्वेज, 2/543, रॉथ - सा0वे0 टी ।इन्द्र। ; लास्सेन : 1/893, ओलडेनवर्ग : दी रिलीगियोग डेस वेद, 29/51; 134. जे0म्योर; ओरिजिनल संस्कृत टैक्स्ट्स, 5/95, कीथ : रिली0 फि030, 124; इण्डियन माइथालॉजी, 35; मैक्डोनेल : वै0मा0, 54; ब्लूमफील्ड : जर्नल ऑव द अमेरिकन ओरियेंटल सोसाइटी, 15/143; लुडविग : ऋग्वेद ट्रान्सलेसन, 3/317; पेरी : प0अ0ओ0सो0, 10/117-208; म्गाउन: द इयर्ली रिलीजन, 106.

अनुच्छेदों[1] की ओर आकृष्ट होता है जिनमें इन्द्र को तड़ित झंझावात की संज्ञा दी गयी है। इन्द्र-वृत्र-युद्ध को वृष्टि-शक्ति एवं अनावृष्टि शक्ति की संज्ञा दी गयी है। इनमें से कतिपय विद्वान इन्द्र को वृष्टि-देवता घोषित करने के प्रयास में व्युत्पत्तिमूलक प्रतिलोम का आश्रय लेते हैं।[2] रॉथ ने इन् अथवा इन्द् से; वेनफे ने स्यन्द् से एवं मैक्समूलर एवं मैक्डोनेल ने 'इन्दु' (बिन्दु) शब्द की जिस धातु से निष्पत्ति स्वीकृत की गयी है, उसी धातु से 'इन्द्र' शब्द को निष्पन्न मानते हैं।

इन्द्र के व्यक्तित्व में वृष्टि के देवता के बहुतत्वों के होते हुए भी यह मुक्त-कण्ठ से कहना अत्यन्त कठिन है कि ये तत्व उनके चरित्र के मूल तत्व हैं और इन्द्र का सम्पूर्ण व्यक्तित्व वृष्टि के इन्हीं तत्वों से निर्मित हुआ है। इसके अतिरिक्त इन्द्र का सम्बन्ध न केवल अन्तरिक्षीय (दिव्य) वर्षा से ही है अपितु पार्थिव जल-धाराओं से भी सम्बन्धित होने का उल्लेख प्राप्त होता है। वे विद्वान् जो इन्द्र को वृष्टि के देवता के रूप में मानने से अस्वीकार करते हैं, उनका कथन है कि बारम्बार प्रयुक्त वृत्र, वज्र, मेघ के स्थान पर पर्वत एवं पृथिवी आदि की वास्तविक नदियों जैसे - विपाश, शुतुद्री आदि एवं जलधाराओं का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। प्रवाहित की गयी नदियाँ निःसन्देह पार्थिव ही हैं।[3] ऋग्वेद में निःसन्देह जल और नदियों को प्राय: दिव्य अथवा अन्तरिक्षीय होने की कल्पना की गयी है।[4] बर्गेन[5] का कथन है कि इन्द्र वृष्टि-देवता हैं - ऐसा वर्णन ऋग्वेद में कहीं भी

---

1. ऋ0 1.32.1, 52.2, 54.10, 56.5, 80.5, 147.2,4, 2 30.3, आदि।
2. रॉथ : 1 802, बेनफे : Orient Und Occident, 1/49, मैक्समूलर : वही 2.473, नोट 35, मैक्डोनेल : वै0मा0, 66.
3. ओल्डेनवर्ग : रिली0 द0 वे0, 140, बर्गेन : La Religion Vedique, 2.184.
4. ऋ0 1.10.8, 2.20 8, 22.4, बर्गेन : वही 2.187.
5. बर्गेन : वही 2.185.

उल्लिखित नहीं है । हिलेब्राण्ट[1] छः उद्धरण प्रस्तुत करते हैं, जिनमें इन्द्र को जलों का स्वामी कहा गया है - अपि और धा, ग्रस, सध्, स्तभ्, परि स्था आदि धातुओं के द्वारा आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन के पश्चात् वह यह सिद्ध करते हैं कि ये शब्द विशेषरूपेण वर्षा के सूचक नहीं हैं । ग्रूप[2] को सन्देह है कि इन्द्र ही वह देवता थे जो वैदिक काल में लोगों को वृष्टि का जल प्रदान करते थे । कुछ विद्वान् वृत्र को मेघ-दैत्य मानने से अस्वीकार करते हैं और इस सम्बन्ध में वे ईरानी धर्म-शास्त्र अवेस्ता को संदर्भित करते हैं, जहाँ पर 'वृत्र' को न तो मेघ-दैत्य माना गया है न ही वेरेथ्रघ्न का वृष्टि से कोई सम्बन्ध स्थापित किया गया है । श्पीगेल[3] के मतानुसार ईरानियों को वृष्टि-देव 'विशतर' था । पुराकथाशास्त्र में इन्द्र को वृष्टि का एकाकी एवं मुख्य देवता नहीं माना गया है । प्राचीन वृष्टिदेव के रूप में त्रित, आप्त्य एवं पर्जन्य के नाम का उल्लेख प्राप्य है तथा इन्द्र का नाम बाद में जोड़ दिया गया है जैसा कि पूर्व साहित्य में उल्लिखित है । ऋग्वेद में ऐसे प्रमाण उपलब्ध होते हैं जिसमें त्रित को इन्द्र से पूर्ववर्ती एवं वृद्ध माना गया है । मैक्डोनेल के मतानुसार त्रित इन्द्र के पूर्व एक महत्त्वपूर्ण वृष्टि-देव के रूप में प्रतिष्ठित था किन्तु इन्द्र के उत्कर्ष के पश्चात् उसका महत्त्व कम हो गया । मूल आप्त्य के नाम के पश्चात् एक स्थल पर इन्द्र को भी 'आप्त्य'[4] नाम से सम्बोधित किया गया है । इन्द्र एवं त्रित दोनों ने ही अपने-अपने क्षेत्रों के वर्षा चोरों पर विजय प्राप्त की थी ।[5]

---

1. हिलेब्राण्ट : वै0मा0, 3. 165. 174-175.
2. ग्रूप : ज0अ0ओ0सो0, 36. 255.
3. श्पीगेल : Arische Periode, 197.
4. ऋ0 10. 120. 6
5. "अभि स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यतो रध्वीरिव प्रवणे सस्रुरूतयः ।
   इन्द्रो यद्वज्री धृषमाणो अन्धसा भिनद्वलस्य परिधीरिव त्रितः ॥"

   वही 1. 52. 5

अवेस्ता इस तथ्य का प्रतिपादन करता है कि ईरानी त्रित आप्त्य (थ्रित आप्थ्य) की चर्चा इन्द्र (अन्द्र) से पूर्व हुई है। ऋग्वेदीय वृष्टि के देवता के विषय में पुराकथाशास्त्र में 3 सोपानों का उल्लेख प्राप्त होता है।

1. प्रथम सोपान में त्रित आप्त्य को वैदिक जनों का मूलरूपेण वृष्टि-देवता कहा गया है। प्राचीन ईरानियों एवं वैदिक भारतीयों ने इनको अपने आर्य-पूर्वजों से परम्परागत प्राप्त किया था। इन्होंने विकास की अवधि में एक नवीन-वृष्टि-देवता की प्राप्ति की किन्तु आर्यों के मूल देवता उनके मस्तिष्क में आज भी चक्कर काट रहे हैं क्योंकि उनका कथन है कि इन्द्र ने वृष्टि-देवता के साथ वही व्यवहार किया जो त्रित ने किया था।[1]

2. द्वितीय सोपान में इन्द्र का महत्त्व त्रित की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गया था।[2]

3. तृतीय एवं अन्तिम सोपान में प्रभंजन एवं वृष्टि का मूल देवता, त्रित-कालान्तर में वृष्टि-देवता इन्द्र के समक्ष लुप्तप्राय सा हो गया।

सूर्य-देवता के रूप में इन्द्र

ऋग्वेद में इन्द्र को सूर्य-देवता के रूप में प्रतिस्थापन करने के लिए अनेकों साक्ष्य उपलब्ध होते हैं। उदाहरणार्थ - वह स्वर्णिम है[3], सप्तरश्मियुक्त[4] एवं

---

1. ऋ0 1.52.5, 5.86.1
2. ऋ0 2.11.19,20, 8.12.16, 10.8.7,8, 99.6
3. ऋ0 1.7 2, 8.61.6
4. "यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मानवासृजत्सर्तवे सप्त सिन्धून्।
   यो रौहिणमस्फुरद्वज्रबाहुर्द्यामारोहन्तं स जनास इन्द्रः॥"
   ऋ0 2.12.12.

रश्मियों का अधिपति है ।[1] वह सूर्य है[2] एवं सूर्य का सहचर है ।[3] वह सूर्य की रश्मियों को प्रज्वलित करता है ।[4] एक स्थल पर इन्द्र को सविता भी कहा गया है ।[5] इन्द्र स्वयं कहते हैं कि वे मनु एवं सूर्य थे ।[6]

ऋग्वेद के एक मन्त्र में इन्द्र एवं सूर्य का इस प्रकार आह्वान किया गया है मानों दोनों एक ही देवता हैं ।[7] मैक्समूलर का कथन है कि इन्द्र रूपी सूर्य ने अंधकार रूपी वृत्र पर विजय प्राप्त की थी ।[8] हिलेब्राण्ट, तिलक एवं दण्डेकर आदि प्रसिद्ध विद्वान् इन्द्र के स्वरूप के विषय में गम्भीरतापूर्वक विचार करके अपने-अपने मत को प्रतिष्ठित करते हुए कहते हैं कि इन्द्र सूर्य देवता हैं । हिलेब्राण्ट[9] की दृष्टिकोण में इन्द्र के स्वरूप में वृष्टि के तत्वों का इतना अधिक समावेश था, अतएव उन्होंने इस तथ्य का खुलकर विरोध नहीं किया कि इन्द्र वृष्टि-देव नहीं है । अत: मध्यम मार्ग का अनुसरण करते हुए कहते हैं कि प्रथमत: इन्द्र सूर्य थे लेकिन ऋग्वेद में न वह सूर्य हैं न वृष्टि-देव । इन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि वृत्र हिम का प्रतीक है । शीत ऋतु में समग्र नदियों का जल जम जाता है और उनकी धाराएँ अवरुद्ध हो जाती हैं । सूर्य इस हिमानी का विनाश कर जल धाराओं को प्रवाहित होने के लिए उन्मुक्त करता है । इन्द्र-वृत्र-युद्ध से यही संकेत मिलता है किन्तु इनका यह मत अन्य विद्वानों को अमान्य है । बी० जी० तिलक[10] ने "आर्कटिक होम इन द वेदाज" नामक पुस्तक में यह प्रतिपादित

---

1. ऋ० 3.31.4
2. ऋ० 10.89.2
3. ऋ० 8.93.4, 10.89.2
4. ऋ० 8.12.9
5. ऋ० 2.30.1
6. ऋ० 4.26.1
7. ऋ० 8.82.4
8. मैक्समूलर : कान्ट्रीब्यूशन टू द साइंस आॅव माइथालॉजी, 1.141-142.
9. हिलेब्राण्ट: वैदिशे मिथोलोगी, तृतीय भाग, 195-197.
10. बी०जी० तिलक : आर्कटिक होम इन द वेदाज, 255.

किया कि इन्द्र सूर्य देवता है जिन्होंने आर्यों के मूल निवासस्थान उत्तरी ध्रुव प्रदेश, जो तमोच्छादक दैत्य के द्वारा छः मास तक अन्धकारयुक्त रहता था उस पर विजय प्राप्त करके उसे अन्धकारमुक्त किया । यह अन्धकार 12 घण्टे का सामान्य अन्धकार नहीं था अपितु यह षट्मासिक अन्धकार था । इन्होंने यह भी संदर्भित किया है कि ऋग्वेद में इन्द्र को वृष्टि-देव कहा गया है किन्तु 'वृत्रहन्' के रूप में नहीं । आर० शर्मा शास्त्री[1] ज्योतिषशास्त्र के आधार पर इन्द्र का समीकरण सूर्य से करते हुए प्रस्तावित करते हैं कि इन्द्र ने सूर्य की भाँति ग्रहण-दैत्य से युद्ध किया । उनके विचार में पौराणिक राहु की भाँति शम्बर भी एक ग्रहण-दैत्य से था । युद्ध का प्रमुख कारण ग्रहण समाप्त करना था । बर्गेन[2] का कथन है कि इन्द्र वास्तव में सूर्य-देवता है । ऋग्वेद[3] के एक मंत्र में वर्णित है कि इन्द्र ने अपाला नामक स्त्री को 'सूर्यत्वर्च्' बनाया । वैदिक अनुष्ठान भी इन्द्र को सूर्य देव सिद्ध करते हैं ।

वैदिक पुराकथाशास्त्र के विकासक्रम में एक ऐसी स्थिति आती है जिसको हम विभिन्न वैदिक देवताओं के सूर्यीकरण की स्थिति से सम्बोधित करते हैं । इस विचार से प्रभावित होकर बहुत से विद्वानों ने इन्द्र को ग्रीष्म-देवता माना है। पी०सी० सेन गुप्त[4] अपने लेख 'वेन द इन्द्र बीकेम मघवन्' में लिखते हैं कि इन्द्र ग्रीष्म अयनान्त के देवता हैं । इन्द्र 'मघ' ।नक्षत्र। पर पहुँचे । इसी कारण इनका नाम 'मघवन्' पड़ा । प्लनकेट[5] इन्द्र को ग्रीष्म अयनान्त का स्वामी मानते हैं । आर०शर्मा शास्त्री[6] इन्द्र को ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार सूर्य-देवता मानते हैं ।

---

1. आर० शर्मा शास्त्री : B.C. Law Commn. Vol. I.277.281
2. बर्गेन : ल रिली०वे० 2.193.
3. पी०सी० सेन गुप्त : Journal of the Asiatic Society of Bengal, 4.445
4. प्लनकेट : Indo Iranian Religion, S.K. Halibul:135
5. आर० शर्मा शास्त्री : B.C. Law Comm. Vol. I, 2277-281.

प्रकाश-देवता के रूप में इन्द्र

इन्द्र को प्रकाश-देव निरूपित करने वाले विद्वान् उन लोगों की अपेक्षा जिन्होंने इन्द्र के मूल स्वरूप को सूर्य-देवता की अवधारणा में दर्शित किया है, अधिक प्रगतिशील विचारधारा रखते हैं। ये लोग प्रकाश के सम्पूर्ण स्वरूप को इन्द्र की संज्ञा देते हैं। इस सिद्धान्त को दृष्टिगत करते हुए इन्द्र को अग्नि-देवता भी कहा जा सकता है। बर्गेन[1] के विचार में इन्द्र सूर्य की अपेक्षा अग्नि के अधिक निकट हैं। इन्द्र के दीप्तिमान् स्वरूप ने ही उनको अग्नि देवता के रूप में अभिहित किया है। ऋग्वेद में वर्णित है कि इन्द्र आकाश को प्रकाशमान करते हैं।[2] द्युलोक में नक्षत्रों को प्रतिस्थापित करते हैं और उषा एवं सूर्य के साथ अन्धकार को दूर करते हैं।[3] सूर्य, उषा एवं अग्नि को प्रज्वलित करते हैं।[4] अन्धकार में प्रकाश को प्रसारित करते हैं।[5] वे प्रकाश के उद्गम हैं।[6] वे सूर्य के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं।[7] जो गायें प्रदान की जाती हैं उनको उषा की रश्मि के रूप में मानते हैं। प्रो० फतेहसिंह[8] इन्द्र को प्रकाश एवं ऊर्जा के देवता के रूप में स्वीकार करते हैं। इन्द्र के जन्म को उसकी माँ की इस घटना से ग्रहीत करते हैं जिसने विश्व में प्रथम उषा की प्रथम रश्मि प्रदान किया था। अरविन्द घोष[9] ने अपने लेख "इन्द्र गिवर ऑफ

---

1. बर्गेन : ल रिली० वे०, 2.193,
2. ऋ० 1.62.5
3. ऋ० 1.62.5,
4. "यस्याश्वास: प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथास: ।
   य: सूर्य य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास: इन्द्र: ॥
   ऋ० 2.12.7
5. ऋ० 3.34.4
6. ऋ० 10.54.4
7. ऋ० 10.3.3
8. प्रो० फतेह सिंह : जर्नल ऑव द बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, 5/1940.
9. अरविन्द घोष : इन्द्र गिवर ऑव लाइट, 1914.

लाइट" में इस सिद्धान्त को अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया है । वी०एन० आप्टे[1] व्युत्पत्तिमूलक आधार पर इन्द्र को प्रकाश का देवता मानने को सहर्ष तैयार हैं क्योंकि इन्द्र नाम इन्धृ अथवा इन्द् धातु से निष्पन्न है । इसका तात्पर्य है प्रकाश, ज्योति, तेजस्, ओजस् । डॉ० सूर्यकान्त[2] का कथन है कि इन्द्र प्रकाश का देवता है । इस सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए वे इन्द्र के स्वरूप से सम्बंधित तत्वों को 'प्रकाश', 'ज्योति', 'तेजस्' एवं 'ओजस्' नाम से सम्बोधित करते हैं ।

आकाश-देवता के रूप में इन्द्र

कतिपय विद्वान् इन्द्र को आकाश-देवता के रूप में निरूपित करते हैं । चाहे वह प्रकाशमान आकाश के देवता हों अथवा वर्षाकालीन आकाश का अथवा स्वच्छ आकाश का । रॉथ ने इन्द्र को स्वच्छ आकाश का देवता कहा है । इन्द्र शब्द की व्युत्पत्ति इद् एवं इन्धृ जिसका अर्थ है प्रकाशमान वस्तु । इस आधार पर भी उन्होंने स्वच्छ आकाश के देवता के रूप में माना है । परन्तु आगे चलकर इन्द्र की आश्चर्योत्पादक एवं अद्भुत शक्ति से अचम्भित होकर इन्द्र को सार्वभौमिक चरित्र का देवता स्वीकार किया है । मैक्समूलर[3] इन्द्र को प्रकाशमान एवं नील वर्ण का देवता मानते हैं । म्योर[4] महोदय ने भी इस मत का समर्थन किया है । माइरियनथेन[5] उसको 'ध्रुवद्' मानते हैं । लुडविग[6] इन्द्र को आकाश का देवता मानते हैं । ग्रासमान[7] इन्द्र को प्रकाशमान एवं स्वच्छ आकाश का देवता मानते हैं। बेनफे[8] के मतानुसार इन्द्र वर्षाकालीन आकाश का देवता है । इन्द्र को आकाश का

---

1. आप्टे : ज०बॉ०यू० 29/213-218.
2. डॉ० सूर्यकान्त : वैदिक धर्म और दर्शन, भाग 2, भूमिका 13.
3. मैक्समूलर : ले०सा०लै०, 2/470.
4. म्योर : ओ०सं०टे०, 5/77.
5. माइरियनथेन : द अश्विन्, 16.
6. लुडविग : द फिला०अ०, 33.
7. ग्रासमान : Woerter buch zum Rgveda, Sameveda, Indra.
8. बेनफे : Orient Und Occident, 48.

देवता मानने का यह कारण हो सकता है कि उसने आकाश के दैत्यों को उसी प्रकार जीता, यथा-यूनानी 'ज्यूज', इटेलियन 'जूपिटर', और भारतीय 'द्यौस्'। ये तीनों आकाश के देवता हैं ।

लेकिन इन्द्र के जीवन का यह स्वरूप व्याख्याकारों के मध्य में अमान्य रहा क्योंकि वे इन्द्र एवं आकाश के देवता के दो विभिन्न रूप में ऋग्वेद की ऋचाओं में प्राप्त होते हैं । एक स्थल पर यह उल्लेख मिलता है कि इन्द्र के समक्ष द्युलोक एवं पृथिवी लोक झुक गये थे ।[1] रॉथ, पेरी, मैकडोनेल, यास्क एवं उसके पूर्ववर्ती विद्वान् इन्द्र को आकाश का देवता नहीं अपितु मध्यस्थानीय अन्तरिक्ष के देवताओं में प्रथम स्थान प्रदान करते हैं ।[2]

उर्वरापति के रूप में इन्द्र

यह सिद्धान्त वृष्टि देवता एवं सूर्य-देवता से सम्बन्धित है क्योंकि प्रकृति के दोनों तत्व - वृष्टि-जल एवं सूर्य उर्वरा भूमि के लिए परम आवश्यक है । इन्द्र देवता में वृष्टि एवं सूर्य दोनों ही विशिष्टताओं की प्रचुरता है । अतएव शिक्षाविद् इस विचार की ओर आकृष्ट हुए जिससे इन्द्र के मूल स्वरूप की समुचित व्याख्या की जा सके । साक्ष्यों को दृष्टिगत करके उनको 'उर्वरापति' कहा गया है, जिसका तात्पर्य है 'उर्वर भूमि के स्वामी'।[3] वे जुताई से सम्बन्धित हैं एवं पादप तथा अन्न के देवता हैं । वह कोमल प्ररोहों को उत्पादित करते हैं । कृषि भूमि के उपजाऊ होने पर क्षेत्रों को पुष्पित करते हैं । पादपों के जीवनदाता हैं।[4]

---

1. द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते ।
   य सोमपा निचितो वज्रबाहुर्यो वज्रहस्तः स जनासः इन्द्रः ॥ ऋ0 2. 12. 13
2. तिस्र एव देवता ----- द्यु स्थानः । निरु0 7/5.
3. ऋ0 8/21/3.
4. ऋ0 2/13/6,7, 2/34/10.

अतएव उनका सम्बन्ध हल रेखा व उर्वरता से प्राय: वैदिक ऋषियों द्वारा वर्णित किया गया है । हाप्किन्स[1] ने अपने लेख "इन्द्र ऐज़ गॉड ऑव फरटिलिटी" इस सिद्धान्त को प्रतिपादित करने का भरसक प्रयत्न करते हुए कहते हैं कि 'उर्वरतापति' से हम लोग जो आशायें करते हैं वे उसी के अनुसार अपनी शक्तियों को मानवीय जगत् एवं वानस्पतिक जगत् दोनों में समानरूपेण सन्निहित करते हैं । वे अर्भकों एवं विभिन्न प्रकार के उपजों की उत्पत्ति करते हैं ।

युद्ध-देवता के रूप में इन्द्र

इन्द्र को युद्ध में इतनी अधिक रुचि थी कि उनके जीवन के प्रारम्भिक क्रिया-कलापों को दृष्टिगत करते हुए उनको सुगमता से युद्ध-देवता माना जा सकता है। प्रत्येक स्थान पर हम उनको युद्धरत देखते हैं चाहे द्युलोक हो अथवा अन्तरिक्ष लोक अथवा भूलोक । द्युलोक में उन्होंने देवताओं की ओर से राक्षसीय प्रवृत्ति वालों से युद्ध किया । अन्तरिक्ष लोक में प्राकृतिक एव उदार शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्होंने ईर्ष्यालु शक्तियों के विरुद्ध युद्ध किया । भूलोक में उन्होंने आर्यों की ओर से दस्युओं एवं पणियों के विरुद्ध युद्ध किया । ऋग्वेदीय ऋषिगण इस तथ्य से सन्तुष्ट थे कि इन्द्र अपने प्रारम्भिक जीवन से ही युद्ध-देवता थे ।

वृत्र संहारक इन्द्र ने जन्म लेते ही धनुष-बाण को धारण किया एवं अपनी

---

1. हाप्किन्स : जर्नल ऑव अमेरिकन ओरियेन्टल सोसाइटी, 36/242-244.

2. ऋ0 8/45/4, 5.

माता से प्रश्न किया कि कौन-कौन उग्रवादी [शत्रु] हैं और उनके नाम क्या हैं ?[1] उनकी माता शवसी ने तत्कालीन उग्रवादियों के नाम गिनाया और साथ ही साथ उसे यह भी बताया कि तुम उन पर विजय नहीं प्राप्त कर सकते किन्तु इन्द्र की माता इनकी शक्ति से भली-भाँति परिचित थीं। उन्होंने यह वाक्य पुत्र-मोहवश कहा था और अपने कनिष्ठ शिशु के विषय में अत्यन्त व्यग्र थीं कि वह अकेले भयंकर वृत्र से कैसे युद्ध कर सकेगा ? किन्तु अन्ततोगत्वा उनका भय निराधार सिद्ध हुआ।[2] ऋग्वेद में उल्लिखित है कि इन्द्र द्वारा विजित राज्यों का वरुण अधिकार, नियमों एवं व्यवस्था की स्थापना करके राज्य-संचालन करते थे।[3]

एच० लूमन[4] का कथन है कि इन्द्र आर्यों के युद्ध-देवता थे। एच० डी० ग्रिसवोल्ड[5], बर्गेन[6] एवं श्रोडर[7] ने भी कतिपय स्थलों पर इन्द्र को युद्ध-देवता की संज्ञा दी है। मैक्डोनेल, कीथ आदि पाश्चात्य विद्वान् इन्द्र को प्रथमत: वृष्टि-देव अन्तत: युद्ध-देवता मानते हैं। मैक्डोनेल का कथन है इन्द्रयुद्ध के देवता के रूप में आर्यों को भारतीय आदिवासियों पर विजय प्राप्त करने में सहायता प्रदान करते हैं। पीगॉट[8] ने इन्द्र को आर्यों के युद्ध-नेता के रूप में स्वीकार किया है। एम०ए० शर्टरी[9] ने इन्द्र को पर्सिया [फारस] रुस्तम का स्वरूप माना है। इन्द्र देवता के मूल स्वरूप को युद्ध-देवता एवं विजेता के रूप में निर्धारित करने के लिए के०चट्टोपाध्याय[10] अवेस्ता एवं पुराकथाशास्त्र को संदर्भित करते हैं। अवेस्ता में

---

1. आ बुन्दं वृत्रहा ददे जात: पृच्छद्वि मातरम् ।
   क उग्रा: के ह श्रृण्विरे ॥ ऋ० 8/45/4.

   पति त्वा शवसी वदद्गिरावप्सो न योधिषत् ।
   यस्ते शत्रुत्वमाचके ॥ ऋ०, 8/45/5.

2. ऋ० 8/77/1-3. 3. ऋ० 7/83/9, 85/3.

4. एच० लूमन : 'Der Arische Kriegegatt.

5. एच०डी० गिसवोल्ड : रिलीजन ऑव द ऋग्वेद, 177. 6. बर्गेन:ल रिली वे०17.

7. श्रोडर : Heraklas Und Indra, Wion. 1914.

8. पीगॉट : प्रीहिस्टॉरिकल इन्द्र, 260. 9. एम०ए०शर्टरी:Proc. III, AIOC., 109-112.

10. के०चट्टोपाध्याय : Proc. IV. AIOC., 11-14.

वर्णित वेरेथ्रघ्न जो इन्द्र के स्थान पर 'अन्द्र' से अधिक उचित जान पड़ते हैं और जिनका वृष्टि से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है, वे युद्ध एवं विजय के देवता जान पड़ते हैं। इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि इन्द्र का युद्ध एवं विजय पक्ष उसके वृष्टिदायक पक्ष से अधिक मौलिक है और इसीलिए पूर्वऋग्वैदिक इन्द्र को युद्ध और विजय का देवता कहा जा सकता है। इन्द्र इस क्षेत्र में अपनी ओजस्विता को प्रकट करते हैं। ऋग्वेद में इन्द्र की युद्धप्रियता एवं विजेता के रूप में क्रियाशीलता उसके पूर्ण मायावी रूप को प्रदर्शित करती है।

ख. मानवीय स्वरूप

इन्द्र का मानवीय स्वरूप अन्य देवताओं की अपेक्षा अधिक जीवन्त रूप में वर्णित है। इनके भौतिक तत्त्व कवि-कल्पित मानवाकृति को अभिभूत नहीं कर पाये हैं। फलतः इनके विषय में अनेकों आख्यानों का उल्लेख मिलता है। इन आख्यानों को इनके सामान्य नैसर्गिक स्वरूप से सम्बन्ध करना अनुचित एवं निरर्थक है।

यह मध्यस्थानीय (अन्तरिक्ष स्थानीय) प्रमुख देव हैं।[1] निघण्टु में इनकी गणना अन्तरिक्ष-देवों के अन्तर्गत होती है।[2]

ऋग्वेद में इन्द्र के अनेक मानवीय गुणों का वर्णन दृष्टिगोचर होता है।

---

1. "अमीषवन्वन्त्स्वभिष्टिमूतयो न्तरिक्षप्रां तविषीभिरावृतम् ।
   इन्द्रं दक्षास ऋभवो मदच्युतं शतक्रतुं जवनी सूनृतारुहत् ॥
   ऋ0 1/52/2.

2. निघ0 5/4.

इन्द्र के तनु, मूर्धा, हस्त, भुजाएं एवं एक प्रभूत उदर है, जिसे वे सोमरस से पूरित कर लेते हैं, फलत: इसकी तुलना ह्रद से की गयी है ।[1] उनके शिप्र का प्राय: वर्णन मिलता है । उनके श्मश्रु एवं मूछें भी हैं । उन्हें हरिकेश[2] एवं हरिश्मश्र कहा गया है ।[3] विशाल एवं सशक्त बाहु से युक्त होने एवं नित्य वज्रधारक होने के कारण इन्हें 'वज्रबाहु' की उपाधि से विभूषित किया गया है ।[4] उनका वर्ण हरित एवं कभी-कभी 'हिरण्यवर्ण' बताया गया है ।[5]

सामान्यरूपेण सभी देवता सोमाभिप्सित हैं किन्तु इन्द्र सोमरस के सर्वप्रथम व्यसनी हैं । सोम इन्द्र का प्रिय पेय है ।[6] माध्यन्दिन सवन में वह अकेले सोम पान करते हैं । वृत्र-वध जैसे दुष्कर एवं महान् कार्य करने का सामर्थ्य एवं उत्साह उन्हें सोमपान से ही प्राप्त होता है । इन्द्र को सोमरस के तीन ह्रदों का पान-कर्ता के रूप में भी वर्णित किया गया है ।[7] एक बार इन्द्र ने त्वष्टा के सोम की

---

1. "ह्रदा इव कुक्षय: सोमधाना: समी दिव्याच सवना पुरूणि ।
   अन्ना यदिन्द्र: प्रथमा व्याश वृत्रं जघन्वाँ अवृणीत सोमम् ॥" ऋ0 3/36/8.
2. "त्वंत्वमहर्यथा उपस्तुत: पूर्वेभिरिन्द्र हरिकेश यज्वभि: ।
   त्वं हर्यसि तव विश्वमुक्थ्य व मसामि राधो हरिजात हर्यतम्॥ ऋ010/96/5.

   "हरिश्मशारुर्हरिकेश आयसस्तुरस्पेये यो हरिपा अवर्धत ।
   अर्वद्भिर्यो हरिभिर्वाजिनीवसुरति विश्वा दुरिता पारिषद्धरी॥
   ऋ0 10/96.8.
3. ऋ0 10/23/4.
4. ऋ0 2/12/12.
5. "इन्द्रो वज्री हिरण्यय: ।" ऋ0 1/7/2.
6. "स्वयं चित् स मन्यते दाशुरिर्जनो यत्रा सोमस्य तृम्पसि ।
   इदं ते अन्नं युज्यं समुक्षितं तस्येहि प्र द्रवा पिब ॥" ऋ0 8/4/12.
7. ऋ0 8/66/4.

चोरी कर ली थी ।[1] सोम के प्रभाव से वह आत्म-श्लाघा करते हुए असम्भव कार्यों को करने में अभिरुचि रखते हैं ।[2] उन्होंने उत्पन्न होते ही सोमपान प्रारम्भ कर दिया था ।[3] भैंसे उनकी प्रिय भोजन-सामग्री के रूप में वर्णित हैं । कभी एक भैंस का, कभी बीस अथवा कभी सौ भैंसों का अथवा अग्नि द्वारा पकाये गये तीन सौ भैंसों को इन्द्र द्वारा डकार जाने का उल्लेख है ।[4] वह मधुमिश्रित दुग्ध[5] एवं यव मिश्रित सोम[6] का पान करते थे ।

इन्द्र का प्रमुख अस्त्र वज्र है तडित् एवं विद्युत्गर्जन का प्रतीक माना गया है । इन्द्र का वज्र त्वष्टा द्वारा निर्मित करने का उल्लेख मिलता है ।[7] किन्तु यह भी उल्लेख मिलता है कि इसको काव्य-उशना ने निर्मित करके इन्द्र को प्रदान किया था ।[8] कभी-कभी इसे हिरण्यमय[9], हरित[10] अथवा उज्ज्वल[11] भी कहा गया है । प्राय: इसे आयस अथवा धातु निर्मित बताया गया है ।[12] यह वज्र

---

1. "उग्रस्तुराषाळभिभूत्योजा यथायशं तन्वं चक्र एष: ।
   त्वष्टारमिन्द्रो जनुषाभिभूया मुष्या सोममपिबच्चमूषु ॥" ऋ0 3/48/4.
2. ऋ0 10/119.
3. ऋ0 3/32/10.
4. "सखा सख्ये अपचत् तूयमग्निरस्य क्रत्वा महिषा त्री शतानि ।
   त्री साकमिन्द्रो मनुष: सरांसि सुतं पिबद् वृत्रहत्याय सोमम् ॥" ऋ0 5/29.7
5. ऋ0 8/4/8
6. ऋ0 2/22/1.
7. "त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष ।" ऋ0 1/32/2.
8. "यं ते काव्य उशना मन्दिनं दाद् वृत्रहणं पार्यं ततक्ष वज्रम् ।" ऋ0 1/121/12.
   . "सवस्रभृष्टिरुशना वधं यमत् ।" ऋ0 5/34/2.
9. ऋ0 1/57/2
10. ऋ0 3/44/4, 10/93/3.
11. ऋ0 3/44/5.
12. ऋ0 1/52/8.

चतुष्कोणीय[1], शतकोणीय[2], सहस्रभृष्टि[3] एवं शतपर्वयुक्त[4] है । उनके अन्य शास्त्रास्त्रों में धनुष-बाण[5] एवं अंकुश[6] आदि भी हैं । ये अपने अंकुश द्वारा विजित असीम धन को याचकों को दान में दे देते थे ।

इन्द्र का वाहन स्वर्णिम[7] रथ है जिसकी गति मनस से भी तीव्र है ।[8] इनका रथ अश्वद्वय द्वारा खींचा जाता है ।[9] कुछ स्थलों पर इनकी संख्या दो से लेकर शत, सहस्र अथवा ग्यारह शत तक बतायी गयी है ।[10] अश्वों की यह संख्या इनकी अत्यधिक उत्कृष्टता दर्शित करने के कारण ऋषियों द्वारा वर्णित की गयी है। ये अश्व 'सूर्य-चक्षस: '[11] हैं । ये अपने जबड़ों को चपचापाते हैं एवं सामान्य अश्वों से भिन्न हिंकार करते हैं ।[12] इनके केश मयूर-पृच्छ सदृश हैं ।[13] ये अश्व स्तुतिके द्वारा ही योजित होते हैं ।[14] जिसका नि:सन्देह तात्पर्य है कि स्तवन द्वारा ही इन्द्र यज्ञ-स्थल पर आगमन करते हैं ।[15] रथ पर आसीन वायु उनके मित्र हैं ।[16]

---

1. ऋ0 4/22/2.
2. ऋ0 4/17/10.
3. ऋ0 1/80/12, 1/85/9
4. ऋ0 8/6/6.
5. ऋ0 8/45/4, 66/9, 11, 10/103/2, 3.
6. ऋ0 6/82/3, 8/17/10
7. ऋ0 6/29/2.
8. ऋ0 10/112/2.
9. ऋ0 2/18/1-6.
10. ऋ0 2/18/4, 5, 6, 4/46/3, 6/47/10, 8/1/9, 24.
11. ऋ0 1/16/1.
12. "शश्वदिन्द्र:पोप्रुथद्भिर्जिगाय नानदद्भि: शाश्वसद्भिर्धनानि ।
   स नो हिरण्यरथं दंसनावान् त्स न: सनिता सनये स नोऽदात् ॥
   ऋ0 1/30/16.
13. ऋ0 3/45/1, 8/1/25
14. ऋ0 8/62/6.
15. "हरी नु कं रथ इन्द्रस्य योजमायै सूक्तेन वचसा नवेन ।
   मो षु त्वामत्र बहवो हि विप्रा नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ॥"
   ऋ0 2/18/3.
16. "या वां शतं नियुतो या: सहस्रमिन्द्रवायू विश्ववारा: सचन्ते ।
   आभिर्यातं सुविदत्राभिरर्वाक् पातं नरा प्रतिभृतस्य मध्व: ॥
   ऋ0 7/91/6.

महामानवों की भाँति इन्द्र का जन्म भी एक अद्भुत घटना है । दो सम्पूर्ण सूक्तों में उनके जन्म के विवरण का उल्लेख मिलता है ।[1] उनकी इच्छा थी कि वे माता के पार्श्वभाग से अप्राकृतिक रूप से जनित हों ।[2] इसे मेघों के मध्य चमकती हुई विद्युत् माना जा सकता है अथवा अनोखे ढंग से हुई उत्पत्ति।[3]

जिस प्रकार ऋग्वेद के काल में भारतीय युद्धप्रिय एवं कलहप्रिय थे, उसी प्रकार इन्द्र भी एक साहसी योद्धा एवं आश्चर्योत्पादक कर्त्ता के रूप में बहुशः उल्लिखित है । इन्द्र शक्तिसम्पन्न[4], शत्रुरहित एवं विजेता के रूप में उत्पन्न हुए हैं । उत्पन्न होते ही अजेय योद्धा बन गये[5] एवं जन्म से ही दुर्जेय हैं ।[6] सभी देवता भयभीत हो गये[7] एवं देवताओं को अपने आश्चर्योत्पादक एवं महान् कार्यों के द्वारा इन्द्र ने इन्हें अभिभूत कर दिया ।[8]

---

1. ऋ0 3/48, 4/18.
2. "नाहमतो निरया दुर्गहैतत् तिरश्चता पार्श्वान्निर्गमाणि ।
   बहूनि मे अकृता कर्त्वानि युध्यै त्वेन सं त्वेन पृच्छै ॥"
   ऋ0 4/18/2.
3. मैक्डोनेल, वे0मा0, पृ0 56, ओल्डेनबर्ग : रिलि0 देस वेद पृ0 132, हिलेब्राण्ट वै0मि0 III. 409
4. ऋ0 10/153/2.
5. ऋ0 3/51/8, 5/30/5, 8/45/4, 66/1, 10/113/4.
6. ऋ0 1/102/8, 10/133/2.
7. ऋ0 5/30/5.
8. ऋ0 2/12/1.

ऋग्वेद[1] में 'द्यौस्' को इन्द्र का पिता बताया गया है। एक स्थल पर इन्द्र की माता को 'गृष्टि' अथवा 'गौ' बताया गया है।[2] अतः इन्हें 'गाष्टेय' कहा गया है।[3] एक स्थल[4] पर इनकी माता को 'निष्टिग्री' कहा गया है, जिसे सायणाचार्य ने अदिति का तादात्म्य रूप बताया है एवं दो बार शवसी[5] कहा गया है। इन्द्र के यमज भ्राता अग्नि हैं। पूषा को भी उनका भ्राता बताया गया है। उनकी पत्नी इन्द्राणी[6], पिशेल के मतानुसार 'शची' हैं किन्तु मैक्डोनेल के अनुसार शची का अर्थ शक्ति है क्योंकि यह ऋग्वेद में बहुधा बहुवचन में प्रयुक्त हुआ है। इन्द्र को शक्तिशाली होने के कारण ही 'शचीपति' कहा गया है। ये देवतागण जिनके साथ इन्द्र की संयुक्त रूप से स्तुति की गयी है, निम्न हैं :- अग्नि, सोम, वरुण, पूषन्, बृहस्पति, पर्वत, कुत्स, विष्णु, वायु आदि। उनके परमप्रिय मित्र एवं सहायक मरुद्गण हैं।[7]

---

1. "सुवीरस्ते जनिता मन्यत द्यौरिन्द्रस्य कर्ता स्वपस्तमो भूत्।
   य ईं जजान स्वर्यं सुवज्रमनपच्युतं सदसो न भूम ॥" ऋ० 4/17/4.
2. "गृष्टिः ससव स्थविरं तवागामनाधृष्यं वृषभं तुम्रमिन्द्रम्।
   अरीळ्हं वत्सं चरथाय माता स्वयं गातुं तन्व इच्छमानम् ॥ ऋ० 4/18/10.
3. ऋ० 10/111/2.
4. "कमून्नरः कपृथमुद्धातन चोदयत खुदत वाजसातये।
   निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाध इह सोमपीतये॥ ऋ० 10/101/12.
5. ऋ० 8/45/5, 77/2.
6. ऋ० 1/22/12, 2/32/8, 10/86/9, 10, 11 आदि।
7. "अथैतानीन्द्रभक्तीनि। अन्तरिक्षलोकः। माध्यंदिनं सवनम्। ---------
   अथास्य संस्तविका देवाः। अग्निः। सोमः। वरुणः। पूषा। बृहस्पतिः
   ब्रह्मणस्पतिः। पर्वतः। कुत्सः। विष्णुः। वायुः ----------------।"
   निघं० 7/10.

इन्द्र लोकाधिपति एवं विश्वपालक हैं। इन्द्र का प्रमुख शत्रु वृत्र था, जो दुर्भिक्ष-पति था। यह राक्षस जल को सर्वत: आवृत्त करके अथवा अन्तरिक्ष का आच्छादन करके जलों अथवा जलवृष्टि को अवरुद्ध कर देता था। इन्द्र ने इस वृष्ट्याच्छादक दैत्य के मर्मांगों पर वज्र से प्रहार करके[1] उसका वध कर दिया।[2] वध के पश्चात् वृष्टि होने लगती है एवं सरिताओं का जल स्वत: स्वच्छन्द रूप से प्रवाहित होने लगता है।[3] कतिपय विद्वान् इन्द्र-वृत्र-युद्ध को ऐतिहासिक घटना मानते हैं किन्तु यास्क इस युद्ध को एक मन्त्र में व्याख्यापित करते हैं - मेघस्थ जल के साथ विद्युत् का योग होने से वृष्टि होती है। यह जगत् में सदैव होने वाली वृष्टि है। अत: यह घटना ऐतिहासिक नहीं बल्कि औपमिक है।[4] जब इन्द्र वज्र से वृत्र पर प्रहार करते हैं तो आकाश एवं पृथिवी भय से प्रकम्पित हो उठते हैं।[5] स्वयं वज्रनिर्माता त्वष्टा भी इन्द्र के क्रोध से कम्पित होने लगते हैं।[6] इन्द्र अपने वज्र से वृत्र को छिन्न-भिन्न कर देते हैं।[7] इन्द्र पर्वतों का भेदन करके जलधाराओं को प्रवाहित करते हैं अथवा गायों को मुक्त करते हैं[8]जो मेघ रूपी पर्वतों की गुफाओं में निरुद्ध थीं।[9] ऋग्वेद में अनेक स्थलों पर पर्वतों में असुरों द्वारा निरुद्ध गायों

---

1. ऋ0 1/80/5; 3/32/4.
2. ऋ0 2/11/5, 4/19/2, 6/20/2.
3. ऋ0 1/57/6, 85/9;

"स सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मानवासृजत् सर्तवे सप्त सिन्धून्।
यो रौहिणमस्फुरद् वज्रबाहुर्द्यामारोहन्तं स जनास इन्द्र:॥ ऋ0 2/12/12.

4. निरु0 2/16.
5. ऋ0 1/180/11; 2/11/9. 6/17/9.
6. ऋ0 1/80/14.
7. ऋ0 1/32/5, 61/10, 10/89/7.
8. ऋ0 1/57/9, 10/89/7.

9. "यस्य गा अन्तरश्मनो मदे दृळ्हा अवासृज:।
अयं स सोम इन्द्र ते सुत: पिब॥" ऋ0 6/43/3.

का इन्द्र के द्वारा विमुक्त किये जाने का उल्लेख मिलता है ।[1] 'गौ' शब्द निरुक्त[2] में 'किरणों' का वाची है । एक स्थल पर इन्द्र के उत्पन्न होने पर गायों के गर्जन का भी उल्लेख मिलता है ।[3] ऋग्वेद में इन्द्र को एक साथ प्रकाश एवं जल-प्रापक के रूप में वर्णित किया गया है ।[4] गायों के गर्जन का तात्पर्य मेघों के गर्जन से लगाया जा सकता है । वृत्र-वध करने के अनन्तर इन्द्र ने रँभाती हुई गायों की भाँति जल-धाराओं को समुद्र की ओर जाने के लिए उन्मुक्त कर दिया।[5] उन्होंने रश्मियों [गायों] एवं सोम को जीता एवं सप्त-सिन्धुओं को प्रवाहित किया ।[6] उन्होंने बन्दी जलों[7] एवं अवरुद्ध जल-धाराओं को मुक्त किया ।[8] जल-धाराओं के प्रवाहित होने के लिए अपने वज्र से पथों को निर्मित किया ।[9] बाढ़ के जल को समुद्र में बहाया ।[10] ऋग्वेद में वृत्र-वध के साथ ही अवरुद्ध जलों को मुक्त करके प्रवाहित करने का संदर्भ अनेकधा उल्लिखित हैं । एक सम्पूर्ण सूक्त[11] में आद्योपान्त इस पुराकथा के विभिन्न परिवर्तनों का उल्लेख है तथा अनेकों बार रँभाती हुई गायों की तुलना जल से की गयी है

---

1. ऋ0 6/17/5; 8/45/3, 10/112/8 आदि ।
2. "सर्वे पि रश्मयो गाव उच्यन्ते ।" निरु0 2/5.
3. ऋ0 8/59/4.
4. ऋ0 3/34/8.
5. ऋ0 1/32/2.
7. ऋ0 1/57/9, 103/2.
6. ऋ0 1/32/12, 2/12/12.
8. "सृजो महीरिन्द्र या अपिन्व: परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वी: ।
   अमर्त्यं चिद् दासं मन्यमान मवाभिनदुक्थैर्वावृधान: ।। ऋ0 2/11/2.
9. ऋ0 2/15/9.
10. "स माहिन इन्द्रो अर्णो अपां प्रैरयदहिहाच्छा समुद्रम् ।
    अजनयत् सूर्यं विदद् गा अक्तुनाह्ना वयुनानि साधत् ।।" ऋ0 2/19/3
11. ऋ0 1/80.

इन्द्र ने वृत्र के अतिरिक्त शंकर, शुष्ण, नमुचि, व्यंश, भेद, इलीबिश, पिपु, धुमुरि, धुनि, वल, उरण, अर्बुद, रौहिण एवं विश्वरूप आदि अन्य अनेक असुरों का भी वध किया । पर्वतों में रहकर इन्द्र को उत्पीड़ित करने वाले शम्बर को चालीसवें शरद (वर्ष) में[1] और बी० जी० तिलक के अनुसार शरद् ऋतु की चालीसवीं तिथि को खोज निकाला एवं उसका वध कर दिया । इन्होंने नमुचि का वध जल के फेन द्वारा किया था ।[2] इन्द्र ने रोहिण पुत्र राहु[3] का एवं दानु-पुत्र अहि का वध किया ।[4] शम्बर आदि असुरों के नब्बे, निन्यानबे या सौ दुर्ग हैं ।[5] ये सभी गढ़ गतिशील[6] तथा पाषाण-निर्मित[7] एवं धातुनिर्मित[8] थे जिनको इन्द्र ने विध्वंस किया था । इन्द्र ने चलायमान पर्वतों को अचल एवं कम्पित पृथिवी को स्थिर किया ।[9] ऋग्वेद में एक स्थल पर पर्वतों के पंख होने का उल्लेख मिलता है ।[10] इन्द्र को पर्वतों का पंख काटने वाला कहा गया है । अनुवर्ती संहिताओं में भी इसका उल्लेख मिलता है । इन्द्र द्यावापृथिवी के जनक एवं अधिपति हैं ।[11] वे आर्यों एवं पूजकों के रक्षक एवं कृष्ण-वर्णों (दस्यु जातियों) के हिंसक हैं ।[12] ऋग्वेद के एक सम्पूर्ण सूक्त[13] में

---

1. ऋ० 2/12/11.
2. "अपां फेनेन नमुचे: शिर इन्द्रोदवर्तय: ------ ।" ऋ० 8/14/13.
3. ऋ० 2/12/12
4. ऋ० 2/12/11
5. ऋ० 2/14/9, 19/9, 8/17/14, 87/9.
6. ऋ० 8/1/28.
7. ऋ० 4/30/20.
8. ऋ० 2/20/8.
9. "य: पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् य: पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात् ।
ऋ० 2/12/2.
10. "यथा यथा पतयन्तो वियेमिर ------- ।" वही, 4/54/5.
11. ऋ० 6/47/4, 8/36/7
12. ऋ० 1/130/8.
13. ऋ० 10/100.

सरमा-पणि की कथा का उल्लेख है । पणियों ने इन्द्र की गायों का अपहरण कर लिया था । इन्द्र ने सरमा नामक शुनी को उनका पता लगाने के लिए नियुक्त किया पर वह कृतघ्नी पणियों से मिल जाती है । इसके पश्चात् इन्द्र स्वयं पणियों का पता लगाकर उनका हनन करते हैं ।[1]

कतिपय स्थलों पर उनकी अदम्य शक्ति एवं अपने सहायकों एवं सहचरों को दी जाने वाली सहायता का उल्लेख मिलता है । उसे तुर्वसु एवं यदु जैसे ऐतिहासिक राजाओं का मान-मर्दन करने वाला भी कहा गया है तथा उसने राजा सुदास् की सहायता के लिए 'भेद' को, कुत्स के लिए 'शुष्ण' को तथा अतिथिग्व या दिवोदास एवं ऋजिश्वन् के लिए शम्बर को परास्त किया था ।

ऋग्वेद में इन्द्र को सोमपान करने के कारण 'सोमपा', जलों के विजेता होने के कारण 'अप्सुजित्', दैत्यों के पुरों को नष्ट करने के कारण 'पुरभिद् या पुर्भिद्', मरुत्गण इन्द्र के सहायक एवं सहचर होने के कारण 'मरुत्वान्', मरुत्वत्', सैकड़ों कर्म करने एवं प्रज्ञा के स्वामी होने के कारण 'शतक्रतु', शक्तिसम्पन्न होने के कारण 'शचीपति', वृत्र को मारने के कारण 'वृत्रहन्' या 'वृत्रहा', वज्रधारक होनेके कारण 'वज्रिन्', 'वज्रहस्त', 'वज्रबाहु', 'वज्रभृत्' एवं 'वज्रिवत्' धनवान् एवं उदारता के कारण 'मघवन्', सुकपोल वाला अथवा सुन्दर अधरों वाला अथवा सुन्दर जबड़ों वाला होने के कारण 'सुशिप्र' या 'शिप्री', गायों को मुक्त करने के कारण 'गोजित्' तथा गोत्रभिद्' सज्जनों के पति होने के कारण 'सत्पति', बहुत बार आह्वान किये जाने के कारण 'पुरुहूत' आदि उपाधियों से अनुभूषित हैं ।

---

1. "अयमुशानः पर्यद्रिमुस्रा ऋतधीतिभिर्ऋतयुग्युजानः ।
रुजदरुग्णं वि वलस्य सानुं पणींर्वचोभिरभि योधदिन्द्रः ।।"

ऋ० 6/39/2.

अतएव इन्द्र प्रथमत: वृष्टि-देवता तथा अन्तत: युद्ध-देवता थे एवं शौर्ययुक्त, शक्तिसम्पन्न, उदार, स्तोताओं के विरोधियों के मान-भंगक, विपत्तियों में सदैव सहायक, बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न एवं युद्ध-कुशल होने के कारण राष्ट्रीय देवता थे ।

3. अन्य देवता तथा इन्द्र

ऋग्वेद में इन्द्र की स्तुति अन्य देवताओं के साथ हुई है, जिनमें प्रमुख देव निम्नांकित हैं :-

मरुद्गण, वरुण, विष्णु, अग्नि, बृहस्पति, सोम, वायु एवं पूषन् आदि ।

मरुद्गण वृष्टि-देवता इन्द्र के अनुचर एवं सहायक हैं[1] जो वृत्र-वध जैसे महान् संकट में भी इन्द्र का साथ नहीं छोड़ते हैं किन्तु एक बार वे भी उनका साथ छोड़ते हुए वर्णित किये गये हैं । इन्द्र के गुणों का कीर्तन करके एवं गानादि के द्वारा वे इन्द्र के उत्साह एवं शक्ति का वर्द्धन करते हैं । इन्द्र जो भी पराक्रम के कार्य करते हैं उन सब में मरुतों का सहयोग अवश्य रहता है ।[3] एक स्थल पर मरुद्गण अपने को इन्द्र का भाई बताते हुए उससे अपने को न मारने की प्रार्थना करते हैं ।[4] मरुद्गण के दर्शनमात्र से ही इन्द्र का बोध हो जाना स्वाभाविक-सा है ।[5]

---

1. ऋ0 3/35/9.
2. ऋ0 1/165/11
3. ऋ0 1/102/1.
4. "किं न इन्द्र जिघांससि भ्रातरो मरुतस्तव ।
   तेभि: कल्पस्व साधुया मा न: समरणे वधी: ॥"
   ऋ0 1/170/2.
5. ऋ0 8/62.

इन्द्र को छोड़कर वरुण अन्य सभी देवों में महान् हैं । ये दोनों देव युग्म देवता के रूप में ऋग्वेद के सूक्त [4/41,42; 6/68, 7/82, 8/11] में आये हैं । इन सूक्तों में दोनों देवताओं को यज्ञ में आगमन हेतु आह्वान एवं शत्रुओं के वधके लिए प्रार्थना किया गया है । सोमपान करने के लिए दोनों देवताओं को आमंत्रित किया गया है । जब इन्द्र विजय करता हुआ आगे बढ़ता था तो वरुण विजितक्षेत्रों में नियमों एवं व्यवस्था की स्थापना करता था । ऋषि दयानन्द का कथन है कि इन्द्र के इस रूप की यह कल्पना धार्मिक जगत् की आलंकारिक कल्पना है । इन्द्र प्राण है और वरुण इन्द्रियाँ हैं ।

इन्द्र के परममित्र विष्णु भी थे । वृत्र-हनन एवं दैत्यों को नष्ट करने में अनेकों बार ये इन्द्र के सहयोगी बनते हैं । इस तथ्य के स्पष्टीकरण हेतु वे एक सम्पूर्ण सूक्त[6/69] दोनों देवताओं के लिए संवलित रूप से कहा गया है । विष्णु के निमित्त कहे गये सूक्तों में इन्द्र ही एक ऐसे देवता हैं जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से यदा-कदा उपस्थित होते हैं ।[1] विष्णु ने अपने तीन पदों का क्रमण इन्द्र की शक्ति के द्वारा किया था ।[2] वृत्र-हनन के पूर्व इन्द्र कहते हैं कि हे सखा विष्णु ! लम्बे लम्बे डग धरो ।[3] इन्द्र एवं विष्णु सोमपान करते हैं ।[4] विष्णु के साथ इन्द्र ने भी वृत्र-हनन एवं शम्बर के दुर्गों को विध्वंस किया ।

इन्द्र युग्म-देवता के रूप में अन्य देवताओं की अपेक्षा अग्नि के साथ बहुधा आये हैं ।[5] इन्द्र ने दो पाषाणों के मध्य से अग्नि उत्पन्न की[6] एवं अग्नि को जलों में निगूढ़ रखा ।[7]

---

1. ऋ० 1/155/1,2; 7/99/4-6.
2. ऋ० 8/12/27
3. ऋ० 4/18/11
4. ऋ० 8/3/8, 8/12/16
5. ऋ० 3/12, 5/86, 6/59, 8/38, 7/93, 8/40.
6. ऋ० 2/12/3
7. ऋ० 10/32/6.

इन्द्र एवं बृहस्पति के दो युगल सूक्त ऋग्वेद (4/49, 7/97) में आये हैं जिनमें दोनों को एक साथ सोम पान करने के लिए आमन्त्रित किया गया है एवं गायों, अश्वों एवं ऐश्वर्य के लिए याचना भी की गयी है । ये दोनों देव स्तुति एवं अन्नपति हैं ।[1] शत्रुओं से रक्षा एवं प्रचुर मात्रा में धन प्रदान करने के लिए प्रार्थना की गयी है ।[2]

इन्द्र एवं सोम की युग्म-रूप में ऋग्वेद के सूक्त (10/89) में उल्लेख है। सोम मादक वनस्पति में सदैव उभरा रहता है । इन दोनों दयालु देवों का सहज कर्म था - शत्रुओं को ध्वस्त करना, अद्रि में निगूढ़ वस्तु को अनावृत करना, अन्धकार अपसारित करना, सूर्य एवं प्रकाश को प्राप्त करना एवं द्युलोक का स्कम्भन तथा पृथिवी को प्रथित करना ।

इन्द्र की वायु देवता के साथ युग्म-देवता के रूप में स्तुति मिलती है । एक स्थल पर दोनों को सोमपान करने के लिए आह्वान किया गया है ।[3] वे सहस्रचक्षु एवं धियस्पति हैं ।[4] वे स्तोताओं को अश्व, गाय आदि पशुधन एवं स्वर्ण इत्यादि प्रदान करते हैं ।[5]

इन्द्र एवं पूषन् का एक साथ आह्वान ऋग्वेद के सूक्त (6/57) में वर्णित है। जब इन्द्र ने जलों को प्रवाहित किया तब पूषन् कन्धा से कन्धा मिलाकर चल रहे थे। वृत्र-संहार में इन्द्र पूषन् की सहायता लेते हैं ।[6] एक स्थल पर इन्द्र एवं पूषन् के आवास का उल्लेख मिलता है ।[7]

---

1. ऋ0 7/97/3.
2. ऋ0 7/97/9-10
3. ऋ0 1/23/1
4. ऋ0 1/23/3.
5. ऋ0 7/90/6.
6. ऋ0 6/56/2.
7. ऋ0 1/162/2.

परवर्ती साहित्य में इन्द्र

क. यजुर्वेद में इन्द्र

यजुर्वेद में इन्द्र के स्वरूप का वर्णन याज्ञिक दृष्टिकोण से किया गया है। इनके स्वरूप में जो कुछ परिवर्तन एवं रूपान्तर है वे उनके आवश्यक स्वभाव के अनुरूप एवं तात्कालिक वातावरण के अनुकूल है।

यजुर्वेद में इन्द्र के नैसर्गिक पक्ष की उपेक्षा याज्ञिक पक्ष का सविस्तार वर्णन उपलब्ध होता है। इसमें न केवल उनको वैयक्तिक देवता के रूप में उनके यौद्धिक शक्ति का दिग्दर्शन ही कराया गया है अपितु एक या दो बार सूर्य की संज्ञा दी गयी है अथवा सूर्य से तादात्म्य स्थापित किया गया है[1] और कभी-कभी सामयिक वृष्टि करने हेतु एवं धनधान्य की वृद्धि हेतु स्तुति की गयी है।[2]

इन्द्र के महत्व का मूल आधार उनकी सामरिक शक्ति थी। पुरोहितों को अपने यज्ञीय कार्य पद्धति में आने वाली पैशाचिक एवं अन्य बाधाओं को दूर करने के लिए एक शक्ति एवं शौर्यसम्पन्न युद्ध-देवता की नितान्त आवश्यकता थी। इन्द्र इस कार्य को सम्पन्न करने में सक्षम थे।[3] अतएव यज्ञ वेदी एवं सोम की रक्षा हेतु उनकी स्तुति की गयी है। इन्द्र ने समय-समय पर अपने शौर्य एवं शक्ति को उनकी रक्षा हेतु समर्पित किया। वे मरुत् के सखा, यजमान के रक्षक, वृष्टिकारक, धनधान्यवर्द्धक,

---

1. "यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य्य। सर्व तदिन्द्र ते वशे ॥" यजु0 33/35.

2. यजु0 7/40.

3. "विराडसि दक्षिणा दिगुद्रास्ते देवा अधिपतय इन्द्रो हेतीनां प्रतिधर्ता प चदशस्त्वा स्तोमः पृथिव्यां श्रयतु ------- स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु ॥"
यजु0 15/11.

प्रमादरहित, बलदाता एवं वज्री हैं ।[1] वे बल, पराक्रम तथा धन के धाता हैं ।[2]

यजुर्वेद में इन्द्र-वृत्र युद्ध का वर्णन उपलब्ध है एवं अन्य युद्धों का वर्णन कल्पनातीत है । इन्द्र ने वज्र से[3] उषा के पूर्व वृत्र का वध किया और इस कार्य में 33 देवता उनके सहायक थे ।[4] युद्ध में इन्द्र का पराक्रम सर्वमान्य है अतएव विजय के लिए स्थान-स्थान पर उनका आह्वान किया गया है ।[5] सदैव विजेता होने के कारण वे 'जयन्त' हैं ।[6] किन्तु परवर्ती देवशास्त्र में यह उनके पुत्र का नाम है ।

---

1. यजु0 3/46, 7/36 2. वा0सं0 2/10.

3. "प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत ।
वृत्रँ हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा ॥" यजु0 33/96.

4. "समिद्ध इन्द्र उषसामनीके पुरोरुचा पूर्वकृद्वावृधानः ।
त्रिभिर्देवैस्त्रिँशता वज्रबाहुर्जघान वृत्रं वि दुरो ववार ॥" यजु0 20/36.

5. यजु0 17/42-43.

6. "गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा ।
इमँ सजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रँ सखायो अनु सँ रभध्वम् ॥"

- यजु0 17/38.

यहीं पर इन्द्र को 'गोत्रभिद्' एवं 'गोविद्' की उपाधि से विभूषित किया गया है क्योंकि गायों (रश्मियों अथवा जलों) को निरुद्ध करने के कारण मेघ ही गोत्र हैं एवं इन्द्र इस गोत्ररूपी मेघ के भेदक हैं ।

यजुर्वेद में एक स्थल पर इन्द्र अश्विनौ तथा सरस्वती के समीप अपने (जीवन) रक्षा हेतु उपस्थित होते हैं एवं उनके द्वारा उत्पन्न जल-फेन से ही वे नमुचि के शीर्षभाग का भेदन करते हैं । अश्विनौ एवं सरस्वती ने समय-समय पर इन्द्र की सहायता की ।[1]

यजुर्वेद में याज्ञिक महत्ता के समक्ष सामरिक महत्ता गौण हो गयी थी । अतएव इन्द्र भी इसके अपवाद नहीं थे । यज्ञ में प्रयुक्त सामग्री 'स्फ्या' सहस्रों शत्रुओं एवं पैशाचिकों के संहार करने का प्रमुख अस्त्र था तथा अश्वमेध यज्ञ का रथ ही इन्द्र का वज्र था ।[2] एक स्थल पर ऐसा वर्णन किया गया है कि युद्ध-दुंदुभि इन्द्र की मुष्टि थी ।[3] भूत-प्रेत-पिशाच आदि दानवी शक्तियों को दूर करने का

---

1. "पातं नो अश्विना दिवा पाहि नक्तं सरस्वति ।
   दैव्या होतारा भिषजा पातमिन्द्रं सचा सुते ।।" यजु0 20/62.

   "युवं सुराममश्विना नमुचावासुरे सचा ।
   विपिपाना: सरस्वतीन्द्रं कर्मस्वावत ।।" यजु0 20/76.

2. यजु0 29/53-54.

3. "आ क्रन्दय बलमोजो न आधा निष्टनिहि दुरिता बाधमान:
   अप प्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इत इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व
   - यजु0 29/56.

कार्य बलि-वेदी की दक्षिण परिधि में दण्ड को निहित करके किया जाता था ।[1] यज्ञाग्नि की पवित्र ज्वाला राक्षसों एवं मित्रगणों को पहचानने एवं ढूढ़ने में पर्याप्त थी । दैवीय अवतारों के द्वारा भी भूत-प्रेतों का निवारण किया जाता था ।[2] इन्द्र की स्वयं की शक्ति 'पयो भूतं मधु' से निर्मित होने के कारण पुरोहित लोग विभिन्न प्रकार के विघ्नों के निवारण के लिए इन्द्र पर पूर्णतः आश्रित नहीं थे अपितु यज्ञानुष्ठान का आश्रय लेते थे । इन्द्र की शक्ति एवं सामर्थ्य के सम्मुख सवितृ, वरुण एवं अश्विन् आदि देवताओं एवं सरस्वती, भारती तथा इडा आदि देवियों ने आत्मसमर्पण कर दिया था । एक स्थल पर इन्द्र को लघु-बछड़ा कहा गया है ।[3] गो-माता को रात्रि एवं उषा के रूप में संदर्भित किया गया है ।[4]

इन्द्र के जन्म के विषय में यजुर्वेद में यह उल्लेख मिलता है कि वरुण, अश्विनौ एवं सरस्वती ने विभिन्न अङ्गयकृत, गुदा[5] नासिका और केश[6], श्वास, दृष्टि एवं वाणी[7] आदि को प्रदान कर इन्द्र की सृष्टि की । सरस्वती ने अश्विनौ की पत्नी बनकर इन्द्र को गर्भ में धारण किया[8] एवं जन्म दिया ।[9] उपरोक्त उद्धरणों को दृष्टिगत करते हुए विदित होता है कि इन्द्र के माता-पिता सरस्वती एवं अश्विन् थे । अश्विनौ एवं सरस्वती द्वारा इन्द्र के विभिन्न अङ्गों, संवेदन, शौर्य, सौन्दर्य एवं बुद्धि आदि को प्रदान करने का सम्पूर्ण विवरण यजुर्वेद के विंश एवं एकोविंश अध्याय में उल्लिखित है । इसके अतिरिक्त वरुण, रुद्र, आदित्य, ऋभु, मरुत् और

---

1. यजु० 2/3
2. यजु० 1/26.
3. यजु० 29/57.
4. "होता यक्षद्दुधे इन्द्रस्य धेनू सुदुधे मातरा मही ।
   सवातरौ न तेजसा वत्सामिन्द्रमवर्द्धतां वीतामाज्यस्य होतर्यज ॥" यजु०, 28/6.
5. यजु० 19/85.
6. यजु० 19/90.
7. यजु० 20/80.
8. यजु० 19/94.
9. यजु० 19/95.

अन्य देवताओं ने इन्द्र को आशीर्वाद एवं शक्ति प्रदान करके उन्हें ऐश्वर्य से विभूषित किया ।

इन्द्र शक्तिसम्पन्न[1] एवं सुकर्मण[2] देव थे । संग्राम में शक्ति के संचय एवं शौर्य-प्रदर्शन हेतु सोमपान करते थे ।[3] अन्ततः अधिकांश मात्रा में सोम-पान इनके ह्रास का प्रमुख कारण बना । एक स्थल पर इन्द्र को 'अर्जुन' कहा गया है ।[4] किन्तु परवर्ती साहित्य में इन्द्र के पुत्र का नाम है ।

यजुर्वेद में इन्द्र को 'सम्राट्' एवं वरुण को 'नृप' की संज्ञा से विभूषित किया गया है ।[5] मित्र एवं वरुण को इन्द्र का पूर्वज कहा गया है । देवताओं ने इन्द्र की सहायता से चमत्कारिक कार्यों को सम्पन्न करके उनकी सार्वभौमिकता स्वीकार की थी ।[6] जब राजसत्तावाद का प्रादुर्भाव हुआ तब इन्द्र को अधिपति का गौरव प्रदान किया गया और उन्हें 'क्षत्रम्' कहा गया ।[7] इन्द्र के आधिपत्य में त्रयलोक अर्थात् द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक एवं पृथिवीलोक थे ।[8] एवं वह देवाधिपति भी बन गये थे । राजसूय, अश्वमेध तथा वाजपेय आदि राजसी यज्ञों में इन्द्र को विशेष महत्व प्रदान किया जाता था ।

---

1. यजु0 37/35
2. यजु0 8/45
3. यजु0 8/38
4. यजु0 10/21
5. "इन्द्रश्च सम्राड्वरुणश्च राजा ॥" - यजु0 8/37
6. यजु0 14/6
7. "होता यक्षत् स्वाहाकृतीरग्निं गृहपतिं पृथग्वरुणं भेषजं कविं क्षत्रमिन्द्रं वयोधसम् ॥"

   यजु0 28/34.
8. यजु0 7/5.

यजुर्वेद में अनेकों यज्ञों का वर्णन किया गया है :-

1. श्रौत कर्मकाण्ड-यज्ञ, एवं 2. गृह्यकर्मकाण्ड-यज्ञ ।

1. श्रौत कर्मकाण्ड-यज्ञ

1. अग्नि होत्र
2. चातुर्मास्य या ऋतु-सम्बन्धी यज्ञ
3. दर्श तथा पौर्णमास
4. नवान्नेष्टि
5. पशु याग
6. सोम याग
7. प्रवर्ग्य अथवा उष्ण दुग्ध यज्ञ
8. ऐकादशिन् पशुयाग
9. ज्योतिष्टोम
10. वाजपेय
11. राजसूय यज्ञ
12. अश्वमेध यज्ञ
13. पुरुषमेध यज्ञ
14. अन्य अहीन याग
15. सौत्रामणी
16. अग्नि-चयन

2. गृह्य कर्मकाण्ड-यज्ञ

1. गृह्य यज्ञों का सामान्य रूप
2. विविध यज्ञ
3. जात कर्म एवं संस्कार
4. ब्रह्मचर्य
5. विवाह

इनमें से कुछ यज्ञ इन्द्र को विशेष रूप से सम्मानित करने के लिए सम्पादित किये जाते थे ।

3. यज्ञों में इन्द्र का भाग

1. चातुर्मास्य या ऋतु सम्बन्धी यज्ञ

इस यज्ञ में इन्द्र, अग्नि, वरुण, मरुद्गण एवं (प्रजापति) को बलियाँ अर्पित की जाती थी जिसमें एक मेढ़ा एवं एक भेड़ जौ के बनाये जाते थे ।

2. दर्श तथा पौर्णमास यज्ञ

दर्श याग में अग्नि एवं इन्द्र के लिये एक पूप प्रदान किया जाता है । पौर्णमास यज्ञ में इन्द्र अथवा महेन्द्र को दुग्ध एवं दधि से बने दुग्धान्न प्रदान किया जाता है ।

3. नवान्नेष्टि

इस यज्ञ में इन्द्र एवं अग्नि का नवान्नों का पुरोडाश अर्पित किया जाता है ।

4. पशुयाग

इस यज्ञ में इन्द्र तथा अग्नि या सूर्य या प्रजापति के लिये पूर्ण बकरे की बलि दी जाती है ।

5. सोमयाग

सोमयाग में इन्द्र प्रमुख एवं प्रतिनिधित्व प्राप्त देव हैं ।[1] याज्ञिक उपकरणों यथा - उवरव[2] कुश निर्मित आसन[3], रज्जु[4] आदि को इन्द्र की सेवा के लिए प्रस्तुत किया जाता है ।[5] इस यज्ञ में बहुसंख्यक चषक इन्द्र एवं अन्य देवताओं मित्र, वरुण, वायु एवं अश्विनौ आदि को अर्पित किये जाते हैं ।[6] वैयक्तिक रूप से उसे 'मरुत्वान्' एवं 'महेन्द्र'[7] की पदसंज्ञा में प्राप्त होते हैं । अन्य देवताओं की अपेक्षा इन्द्र की पूजा पर विशेष ध्यान दिया गया है ।[8] सोम-बलि का माध्यन्दिन सवन तो सम्पूर्ण इन्द्र का है ।

---

1. यजु० 4/19
2. यजु० 5/22
3. यजु० 5/22
4. यजु० 5/30, 33.
5. यजु० 4/27; 5/7.
6. यजु० 7/8, 31/32.
7. यजु० 7/35-40.
8. मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्राय त्वा ------------- ------- यज्ञस्यायुषे गृह्णामि ॥" यजु० 7/23.

6. ज्योतिष्टोम याग

इस यज्ञ में इन्द्र एवं वरुण, इन्द्र एवं बृहस्पति तथा इन्द्र एवं विष्णु के लिए सोम, पुरोडाश चढ़ाने का विधान है ।

7. राजसूय यज्ञ

राजसूय यज्ञ में देवताओं के अधिपति होने के कारण इन्द्र को विशेष सम्मान प्राप्त है ।[1] इन्द्र तथा विष्णु को एक विशेष प्रकार की आहुति दी जाती है ।

8. वाजपेय यज्ञ

इस यज्ञ में पाँच चषक में प्रथम सोम चषक इन्द्र को समर्पित किया जाता है ।[2] इन्द्र एवं बृहस्पति वाजपेय यज्ञ के प्रथम विजेता घोषित हुए ।[3]

9. अश्वमेध यज्ञ

ओल्डेनबर्ग[4] के मतानुसार इस यज्ञ का अर्थ योद्धाओं के द्वारा इन्द्र देवता के लिए एक तेजस्वी एवं शक्तियुक्त अश्व की बलि चढ़ाना था जो गाय अपने बछड़े का गर्भपात करती थी वह इन्द्र हेतु[5] एवं जो पशुशृंग युक्त होते थे महेन्द्र हेतु समर्पित किये जाते थे ।[6] इस प्रकार विशेष प्रकृति के पशु इन्द्र, विष्णु, बृहस्पति एवं अग्नि आदि देवताओं को समर्पित किये जाते थे ।

---

1. "सोमस्य त्विषिरसि तवेव मे त्विषिर्भूयात् । ------- इन्द्राय स्वाहा ---- भगाय स्वाहार्यम्णे स्वाहा ॥" यजु0 10/5.
2. यजु0 9/12.
3. यजु0 8/38, 44.
4. यजु0 24/1.
5. ओल्डेनबर्ग - रिली दे0वे0 1/306, 356, 473.
6. यजु0 24/17.

10. <u>सर्वमेध यज्ञ</u>

इस यज्ञ में इन्द्र की शोभा की वृद्धि के लिए ऋग्वेद से बारह मंत्रों का गान ग्रहीत किया गया है ।[1]

11. <u>सौत्रामणी यज्ञ</u>

यह हविर्यज्ञ है । इसका अनुष्ठान अश्विन्, सरस्वती एवं इन्द्र के लिए एक सम्मान में सम्पादित होता है ।[2] इसमें इन्द्र के लिए एक भेड़ एवं अश्विनों के लिए एक बकरा सुरा के प्रयोग के साथ बलि चढ़ायी जाती है । मित्र एवं वरुण के लिए दुग्ध की आहुति एवं इन्द्र वयोधस् के लिए एक वृषभ की बलि के साथ कृत्य की समाप्ति का विधान है ।

12. <u>अग्नि-चयन</u>

इसमें यज्ञ-वेदी निर्माण करते समय पुरोहितगण पग-पग पर इन्द्र को सम्बोधित करते हैं एवं अन्य देवता मूल-पाठ का उच्चारण करते हैं ।

गृह्य कर्मकाण्ड-यज्ञ

<u>विविध यज्ञ</u>

इसमें प्रातः एवं सायंकाल अग्नि, विष्णु, भरद्वाज, विश्वेदेवा, प्रजापति, अदिति, अग्नि, सोम एवं इन्द्र को आहुति समर्पित की जाती है । इसमें क्रमानुसार क्षितिज के विभिन्न दिग्भागों के प्रधान देवता इन्द्र, यम, वरुण, सोम तथा बृहस्पति को अपने से सम्बद्ध देवताओं के साथ बलि का वितरण किया जाता है । प्रौष्ठपद की पूर्णिमा को एक सूत्र इन्द्र, इन्द्राणी, अजएकपाद, अहिर्बुध्न्य तथा प्रौष्ठपदों के हेतु एक बलि का विधान है ।

---

1. यजु० 33/18-29.   2. यजु० 10/31-34.

कृषि-सम्बन्धी पर्व में भी अनुष्ठानों का प्रबन्ध होता है । इसमें अग्नि, पूषन् एवं इन्द्र आदि को मृदु आहार समर्पित किया जाता है ।

नवान्न यज्ञों का सम्बन्ध गृह कर्मकाण्ड यज्ञ से भी है । इसमें भिन्न-भिन्न समयों पर चावल, जौ, ज्वार, बाजरे की बलियाँ दी जाती हैं और इन बलियों पर इन्द्र, ब्रह्मा तथा वासुकि हवि प्राप्त करते हैं ।

अथर्ववेद में इन्द्र

अथर्ववेद में सम्पूर्ण वातावरण में परिवर्तन होने पर भी इन्द्र का महत्त्व पूर्णतः सुरक्षित था । जीवन के समस्त क्षेत्रों में रहस्यवादी [झाड़फूँक], जादू-टोना आदि जीवन की अग्रिम पंक्ति में आ गया था । अथर्ववैदिक जनसाधारण भूत-प्रेत आदि निम्नकोटि की शक्तियों में अन्धविश्वास करते थे । आथर्वणिक पुरोहित अपने संरक्षकों के स्वस्थ एवं सुखमय जीवनयापन हेतु ऐन्द्रजालिक अनुष्ठानों एवं कतिपय सीमा तक उनसे सम्बन्धित देवताओं की पूजा-पाठ आदि के द्वारा उत्तरदायित्व निभाने में प्रयत्नशील थे । वे इन्द्र एवं अन्य देवताओं की दैवी शक्ति से भी अधिकाधिक लाभान्वित होने में संलग्न थे । परवर्ती संहिताओं में लोगों के मध्य इन्द्र की ख्याति सम्भवतः उसके सामरिक गुणों के कारण थी । अतएव इन्द्र का पुराकथा-शास्त्रीय वर्णन उसके नैसर्गिक पक्ष की अपेक्षा सामरिक योजनाओं के दृष्टिकोण से अतिविस्तृत किया गया है ।

अन्य वेदों की भाँति अथर्ववेद में भी इन्द्र को समय-समय पर वृष्टि-देव, एवं सूर्य-देव के रूप में वर्णन किया गया है । इन्द्र ने सर्वोत्पादक पृथिवी की रक्षा की ।[1] इन्द्र को 'जनन-देव' भी कहा जाता है । अथर्ववेद[2] में इन्द्र को 'हल

---

1. "गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तो ऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु ।
   बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमिं पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम् ।
   अजीतो ऽहतो अक्षतो ऽध्यष्ठां पृथिवीमहम् ॥" अथर्व0 12/1/11.

   "महत् सधस्थं वहती बभूविथ ------ द्विक्षतकश्चन ॥" वही, 12/1/18.

2. "देवा इमं मधुना संयुतं यवं सरस्वत्यामधिमणावचर्कृषुः ।
   इन्द्र आसीत् सीरपति शतक्रतुः कीनाशा आसन् मरुतः सदानवः ॥"

का स्वामी' एवं मरुतों को 'हलवाहक' के रूप में कल्पित किया गया है । इन्द्र को औषधीय पादपों को जीवन एवं शक्ति प्रदाता के रूप में वर्णित किया गया है ।

आथर्वणिक पुरोहित के प्रारम्भिक गान के अनुसार इन्द्र ने कुछ दूसरे नवीन अस्त्रों एवं विधियों का दुष्ट कृमियों के संहार करने में प्रयोग किया । उन्होंने प्राक्त्यमणि से वृत्र एवं असुरों का वध किया । वे शक्ति के सर्वोत्कृष्ट निदर्शन हैं।[1] इन्द्र स्वरक्षार्थ त्रिषन्धि[2], असुरों एवं शालावृकों के संहार हेतु पट्टाबन्ध[3], एवं शत्रुओं को चतुर्दिक घेरकर वध हेतु इन्द्रजाल[4] का प्रयोग करते थे । येंवाष, कष्कष, एजत्क एवं शिपवित्नुक नामक रोगकृमियों का नाश सूर्य की किरणों से भी होता था ।[5] इन्द्र युद्ध-कला एवं युद्ध-योजना में अत्यन्त निपुण थे । वे मृत्यु एवं अमरता से अत्यन्त शक्तिशाली एवं महान् थे ।[6] इन्द्र ने पृथ्वी, अन्तरिक्ष एवं षट् दिशाओं को धारण किया ।[7] वे पूर्व, पश्चिम आदि सभी दिशाओं के स्वामी थे[8] और देवों

---

1. अथर्व० 1/35/3.
2. " --- त्रिषंधिं देवा अभजन्तोजसे च बलाय च ।" अथर्व० 11/10/11.
3. अथर्व० 2/27/3, 4. 4. अथर्व० 8/5/7.
5. "मरुत: पर्वतानामधिपतयस्ते मावन्तु । अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्यामाकूत्याग स्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥" अथर्व० 5/24/6.
6. अथर्व० 13/4/46, 8/47.
7. अनड्वान् दाधार पृथिवीमुत धामनड्वान् दाधारोर्वन्तरिक्षम् ।
   अनड्वान् दाधार प्रदिश: षड्वीरनड्वान् विश्वं भुवनमा विवेश ॥"
   अथर्व०, 4/11/1.
8. अथर्व० 6/98/2,3.

के अधिपति थे । युद्ध में विजय प्राप्त करने एवं अपना शौर्य-प्रदर्शन करने हेतु देवगण इन्द्र से शत्रुओं की घेराबन्दी की याचना करते थे[1] और सहस्रों की संख्या में सेना का निर्माण करके अपने शत्रुओं का संहार करने के लिए प्रार्थना करते थे ।[2] इन्द्र उनके लिए अन्त:प्रेरणा के स्रोत थे । अत: पुरोहितगण अपने सहचरों एवं योद्धाओं को इन्द्र का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करते थे[3] पर ये लोग इन्द्र-दिवस पर युद्ध, बाणवृष्टि एवं रक्तपात की इच्छा नहीं रखते थे । नवीन देवताओं में अर्बुदि एवं न्यर्बुदि इन्द्र के सहायक के रूप में ख्याति प्राप्त कर रहे थे ।[4]

पुरोहितगण इन्द्र एवं अन्य दैवी शक्तियों के अतिरिक्त अपनी विजय पताका फहराने में आथर्वणिक साधनों का भी प्रयोग करते थे । उदाहरणार्थ-मंत्रोच्चारण[5], स्राक्त्यमणि[6], इन्द्राग्नी के अस्त्र[7], ताबीज[8], अश्वत्थवृक्ष[9], त्रिजन्धी[10], दुंदभी हेतु एक मन्त्र का उच्चारण[11] आदि । पुरोहितगण स्वयं शत्रुओं को अपने जाल में फंसाने के लिए 'इन्द्रजाल' का प्रयोग करते थे ।[12]

---

1. अथर्व0 2/29/3, 7/93/1.
2. अथर्व0 6/98/3.
3. अथर्व0 7/52/2.
4. "अधि नो ब्रूतं पृतनासूग्रौ सं वज्रेण सृजतं य: किमीदी ।
   स्तौमि भवाशर्वौ नाथितो जोहवीमि तौ नो मु चतमंहस: ॥"
   अथर्व0 4/28/7.
5. अथर्व0, 1/16/2, 11.
6. अथर्व0, 8/5/14.
7. अथर्व0 8/5/19.
8. "स्वस्तिदा विशां पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी । इन्द्रो बध्नातु ते मणिं जिगीवां अपराजित: सोमपा अभयंकरो वृषा । स त्वा रक्षतु सर्वतो दिवा नक्तं च विश्वत: ॥"
   अथर्व0 8/5/22.
9. तानश्वत्थ नि: शृणीहि शत्रून् वैबाध दोधत: ।
   इन्द्रेण वृत्रघ्ना मेदी मित्रेण वरुणेन च ॥" - अथर्व0 3/6/2.
10. अथर्व0 11/10/9.
11. अथर्व0 5/20/2.
12. अथर्व0 8/8/7

अथर्ववेद में इन्द्र की माता का नाम एकाष्टका था, जो प्रजापति की पुत्री थी जिसने इन्द्र को पुत्र रूप में प्राप्त करने के लिए तप किया था ।[1] अन्य उद्धरणों में इन्द्र देवता के 'तूष्य' से उत्पन्न हुए वर्णित हैं ।[2] आथर्वणिक पुरोहित स्पष्टरूप से कहते हैं कि इन्द्र यशस्वी पैदा हुए थे ।

अथर्ववेद में इन्द्र सर्वाधिक लोकप्रिय देव नहीं माने गये हैं । वे देवगणों में से एक थे । इन्द्र एवं वरुण के मध्य पुरानी प्रतिस्पर्धा दीख पड़ती है क्योंकि 'नृप' की उपाधि इन्द्र की अपेक्षा वरुण के साथ अधिकाधिक प्रयुक्त हुई है ।[3] लेकिन इन्द्र को देवताओं के मध्य एक विशिष्ट नृप माना गया है ।[4] सोम बलि में इन्द्र का स्थान निर्विवाद था ।[5] आथर्वणिक पुरोहितों की ऐसी धारणा थी कि वे अपने मंत्रों के द्वारा इन्द्र एवं अन्य देवताओं को ईप्सित कार्य करने को बाध्य कर सकते थे । लेकिन इन्द्र सामान्यजन के मध्य यशस्वी देव थे और वे लोगों को धनधान्य सम्पन्न, स्वस्थ एवं सुखमय जीवन-यापन करने के लिए आशान्वित करते थे ।

---

1. "एकाष्टका तपसा तप्यमाना जजान गर्भं महिमानमिन्द्रम् ।
   तेन देवा व्य सहन्त शत्रून् हन्ता दस्यूनामभवच्छचीपतिः ।।- अथर्व0 3/10/12.
2. अथर्व0, 6/38/1-4.   3. अथर्व0 4/16/19.
4. "इन्द्रो जयाति न परा जयाता अधिराजो राजसु राजयाते ।
   चर्कृत्य ईड्यो वन्यश्चोपसद्यो नमस्यो भवेह ।।" अथर्व0 6/98/1.

   "त्वमिन्द्राधिराजः श्रवस्युस्त्वं भूरभिभूतिर्जनानाम् ।
   त्वं दैवीर्विश इमा वि राजायुष्मत् क्षत्रमजरं ते अस्तु ।।" अथर्व0 6/98/2.

   "प्राच्या दिशस्त्वमिन्द्रासि --- वृषभ एषि हव्यः ।।" अथर्व0 6/98/3.

5. अथर्व0 9/1/12, 12/1/38.

इसके अतिरिक्त दीर्घायु होने[1], मृत्यु जैसे संकटों से बचने[2], गृह-रक्षा, दुर्भाग्य एवं अभिशापों से बचने[3] आदि के लिए भी इन्द्र की पूजा की जाती थी । इन्द्र क्षत्रिय-वर्ग के सर्वाधिक सहायक थे । ऐसा उल्लेख मिलता है कि इन्द्र से ही 'क्षत्र' की उत्पत्ति हुई है[4] और अधिकांशत: सभी राज्य-सम्बन्धी मंत्रों में इन्द्र का प्रभाव दीख पड़ता है । नवनिर्वाचित राजा की राजसी समृद्धि हेतु इन्द्र उसको पर्णवृक्ष से निर्मित एक ताबीज प्रदान करते थे ।[5] वे लोग राजा एवं राज्य की समुन्नति हेतु इन्द्र की स्तुति करते थे । शत्रुओं के संहारक होने के कारण क्षत्रियों को इन्द्र का मित्र कहा गया है ।

व्यापारी-वर्ग के लिए इन्द्र एक (वणिक्) व्यापारी थे । वे व्यवसाय में सुरक्षा एवं सम्पन्नता प्रदान करते थे तथा उनकी यात्रा को निर्विघ्न समाप्त होने में सहायता प्रदान करते थे । एक व्यापारी 'वणिक्' इन्द्र से सफल यात्रा एवं प्रचुर धनराशि के लिए प्रार्थना करता है ।[6] इन्द्र का स्त्री-वर्ग के प्रति भी अतीव नम्र एवं सौहार्द्रपूर्ण दृष्टिकोण था । राक्षस के द्वारा उत्पीड़ित एक गर्भवती स्त्री के उदर-पीड़ा का निवारण इन्द्र ने ही किया ।[7] स्त्रियाँ इन्द्र से प्रार्थना करती हैं कि व्यभिचारी प्रेमी चक्की में पिसकर नष्ट हो जाय ।[8]

अत: हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ऋग्वैदिक इन्द्र एक लोकप्रिय देव के रूप में अथर्ववेद में वर्णित हैं ।

---

1. अथर्व0 3/11/3, 4. 2. अथर्व0 2/1/16. 3. अथर्व0 6/45/3, 11/6/1.
4. "अतो वै बृहस्पतिमेव ब्रह्म प्राविशात्विन्द्रं क्षत्रं तथा वा इति ॥"
अथर्व0 15/10/4.
5. "सोमस्य पर्ण: सह उग्रमागन्निन्द्रेण दत्तो वरुणेन शिष्ट: ।
तं प्रियासं बहु रोचमानो दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ॥" अथर्व0 3/5/4.
6. अथर्व0 3/15/9. 7. अथर्व0 8/6/3.
8. "क्लीबं कृध्योपशिनमथो कुरीरिणं कृधि ।
अथास्येन्द्रो ग्रावभ्यामुभे भिनत्त्वाण्डयौ ॥" अथर्व0 6/138/2.

पुराणों में इन्द्र

पुराणों में इन्द्र-विषयक जो साक्ष्य उपलब्ध होते हैं, उनसे विदित होता है कि इन्द्र की सामरिक शक्ति के क्षीणोन्मुख होने पर भी वे ब्रह्मा-विष्णु-महेश की पौराणिक त्रयी के समय भी भारतीय धारणानुरूप द्युलोक के देवाधिपति पद पर सुशोभित रहे। यद्यपि यह देव-त्रयी के अधीनस्थ ही माने गये हैं। कहना न होगा कि कभी-कभी शक्ति की अधिष्ठात्री देवी दुर्गा के सम्मुख इन्द्र की कीर्ति धूमिल पड़ जाती थी। पौराणिकों ने इन्द्र के जीवन से सम्बन्धित सामान्य घटनाओं को भी दन्तकथाओं से अनुबन्धित करके तथा महान् रूप देकर अत्यन्त प्रभावोत्पादक ढंग से व्यक्त किया है।

पुराणों में इन्द्र को मुक्तकण्ठ से वृष्टि-देव कहा गया है। उदाहरणार्थ-दानपति के द्वारकापुरी में प्रविष्ट होते ही इन्द्र ने द्वारका में मूसलाधार जल-वृष्टि की।[1] दानव एवं नरसिंह के साथ युद्ध में दानवों द्वारा मायाकृत अग्नि का शमन महेन्द्र ने जल-वृष्टि द्वारा किया।[2] सत्यव्रत नामक राजकुमार के द्वारा कन्या-अपहरण अभियोग से अप्रसन्न होकर इन्द्र ने उनके पिता के राज्य में द्वादश वर्षों तक जल-वृष्टि नहीं की।[3] इन्द्र ने ईर्ष्यावश जब ऋषभ के राज्य में वृष्टि नहीं की तब योगेश्वर ने अपनी योगमाया के प्रभाव से अपने वर्ष अंजनाभूखण्ड में मूसलाधार जल-वृष्टि की।[4] क्षीरोद-मन्थन के समय जब देव एवं दैत्य अत्यन्त श्रान्त हो गये तब देवेन्द्र ने मेघ बनकर अमृत के समान जल-सीकरों की वृष्टि की।[5] कृष्ण द्वारा इन्द्र-

---

1. वायु0, 58/90.
2. मत्स्य0, द्वि0, 63/26.
3. श्री हरिवंश0, 15/19.
4. "तस्य हीन्द्रः स्पर्धमानो भगवान् वर्षे न ववर्ष तदवधार्य भगवानृषभदेवो योगेश्वरः प्रहस्यात्मयोग मायया स्ववर्षमजनाभं नामाभ्यवर्षत् ॥" श्रीमद्भाग0 5/4/3.
5. मत्स्य0, द्वि0, 1/55.

पूजा का विरोध करने के कारण इन्द्र ने ब्रज को पूर्णतः नष्ट करने की इच्छा से प्रलयकारी वृष्टि की ।[1]

पुराणों में इन्द्र की माता प्रजापति दक्ष-पुत्री अदिति[2], पिता कश्यप[3], पत्नी शची[4], पुत्र जयन्त[5] एवं पुत्री जयन्ती[6] का नामोल्लेख मिलता है । कतिपय पुराणकार इन्द्राणी को इन्द्र की पत्नी के रूप में वर्णित करते हैं ।[7] ऐसा उल्लेख मिलता है कि कश्यप की दो पत्नियाँ थी - अदिति एवं दिति । अदिति देवताओं की माता थी एवं दिति दैत्यों की ।[8] मत्स्य पुराण में दिति-पुत्र हिरण्यकशिपु तथा हिरयाक्ष का उल्लेख मिलता है ।[9] श्रीमद्भागवतमहापुराण[10] में देवराज

---

1. विष्णु० 5/11; श्रीमद्भागवत० 10वाँ स्कन्ध, 24वाँ अध्याय.
2. वामन० 3/10-13; कलिका० 34/38; हरिवंश०, द्वि० 7/59-61.
3. मत्स्य०,पु०, 6/1-5.
4. भविष्य०, द्वि०, 17/65; 21/73.
5. भविष्य०, द्वि०, 2/15×18; पद्म० 12/223-225; हरिवंश० 68/14, श्रीमद्भागवत० 5/4/8.
6. भविष्य०, 29-39वाँ अध्याय ।
7. पद्म०,पु०, 3/173; हरिवंश० 68-59-62; आदि० 12/65; 13/17.
8. "आसीद्रिंद्रादिदेवानां जनकः कश्यपोः मुनिः ।
   दक्षात्मजे तस्य भार्ये दितिश्चादितिरेव च ॥

   अदितिर्देवमातारिव दैत्यानां जननी दितिः ।
   ते तयोरात्मजा विप्र परस्परज्यैषिणः ॥

   नारद०,पु०, 10/3-4.
9. मत्स्य०,पु०, 6/7-47.
10. श्रीमद्भागवत०, 6/18/7.

इन्द्र की पत्नी पुलोमनन्दिनी शची के तीन पुत्रों का नामोल्लेख मिलता है - जयन्त, ऋषभ एवं मीढ्वान ।

देवासुर सङ्ग्राम में इन्द्र देवों का नेतृत्व करते हैं । सामरिक शक्ति एवं सामर्थ्य के क्षीण होने के फलस्वरूप वे अनेकों बार असुरों द्वारा पराजित होकर पद-च्युत हो गये । बल एवं जम्भ नामक दैत्यों से पराजित होकर इन्द्र अग्नि के सम्मुख अहंभाव का परित्याग करके याचना करते हैं एवं अग्नि द्वारा प्रदत्त यमदण्डतुल्य शक्ति से उसका वध कर देते हैं ।[1] प्रह्लाद-सुत विरोचन ने इन्द्रादि देवों को जीतकर बहुत वर्षों तक धर्म से इस चराचर त्रैलोक्य का पालन किया ।[2] महापराक्रमी दानवाधिपति महिषासुर ने इन्द्र को पराजित करके इन्द्र-पद को प्राप्त कर लिया किन्तु शक्ति की अधिष्ठात्री दुर्गा ने उसका वध करके इन्द्र को पुनः इन्द्रपद पर प्रतिष्ठित किया ।[3] हिरण्याक्ष ने इन्द्र को अपनी माया-शक्ति से स्तम्भित करके समस्त देवों को युद्ध में पराजित किया किन्तु वाराह देव ने अपनी तेजोमयशक्ति से उसको धराशायी कर दिया ।[4] पृथिवी-पुत्र नरकासुर से उत्पीड़ित होकर देवाधिपति इन्द्र ने कृष्ण को उसके निन्दनीय एवं अप्रिय कार्यों की सूचना दी फलस्वरूप कृष्ण ने उसका वध कर दिया ।[5] तारकासुर ने इन्द्र को अभिबाधित किया ।[6]

---

1. अग्नि० 113/17-18.
2. कूर्म० 17/2.
3. मार्कण्डेय० 74/1-70, देवीभागवत० 35/37.
4. हरिवंश० 38 एवं 39वाँ अध्याय ।
5. कालिका०, द्वि०, 2/85x106.
6. कालिका०, 4/65.

मयासुर का हनन करके[1] इन्द्र युद्ध-भूमि में कालनेमि को देखकर व्यथित हो गये पर विष्णु ने कालनेमि का संहार करके इन्द्र को भयमुक्त किया ।[2]

महेन्द्र ने शुम्भ, पाक तथा सुदर्शन का भी वध कर दिया ।[3] शुम्भ एवं निशुम्भ नामक दैत्यों ने पृथिवी के सभी राज्यों को जीतकर स्वर्ग पर आक्रमण कर दिया, परन्तु इन्द्र ने निशुम्भ को धराशायी कर दिया । शुम्भ ने अपने भ्राता निशुम्भ को इस दशा में प्राप्त हुआ देखकर इन्द्र तथा लोकपालों सहित समस्त देवताओं को पराजित कर दिया ।[4] प्रह्लाद आदि दैत्यों एवं इन्द्र में घोर संग्राम हुआ । दैत्यों द्वारा पराजित होकर इन्द्र ने गुरु बृहस्पति की प्रेरणा से दुर्गा की स्तुति की जिससे प्रसन्न होकर उन्होंने महिषासुर एवं चण्डमुण्ड का संहार किया और अपने वक्रदृष्टि से मधु-कैटभ का भी वध किया तथा भयातुर होकर नमुचि एवं प्रह्लाद आदि रसातल को चले गये ।[5]

इन्द्र ने ब्रह्मा की सहमति से त्वष्टा-पुत्र विश्वरूप को अपना पुरोहित नियुक्त किया ।[6] किन्तु असुरों के प्रति उसकी सहानुभूति देखकर उसका शिरोच्छेदन कर दिया ।[7] पुत्र-निधन-शोक से संतप्त त्वष्टा ने कुपित होकर यज्ञकुण्ड से वृत्र नामक असुर को प्रादुर्भूत किया ।[8] तैत्तिरीय संहिता में यज्ञकुण्ड में हविष्

---

1. वामन0, 45/13-14.
2. मत्स्य0, 68-70वाँ अध्याय ।
3. वामन0, 47/9
4. देवीभागवत0 56/35.
5. देवीभागवत0 37/1-41.
6. श्रीमद्भागवत0 6/7/37,38.
7. श्रीमद्भागवत0 6/9/4.
8. श्रीमद्भागवत0 6/9/12.

आदि यज्ञ-सामग्री के प्रज्वलन से उत्पन्न धूम वृत्र का प्रतीक है । यह सोम, हविष्य आदि यज्ञ-सामग्री एवं अग्नि को आत्मसात् करके वर्द्धित होता, वही यज्ञ-धूम मेघ बनकर आकाशाच्छादित करके वृष्ट्यारोधन करता है । जब वायु से मेघ टकराते हैं तभी वृष्टि होती है । देवीभागवत पुराण में विश्वरूप एक तपस्वी ऋषि है ।[1] इन्द्र विश्वरूप का हनन करके पापमुक्ति हेतु ब्रह्महत्या को पृथिवी, जल, वृक्ष तथा स्त्री-जाति में विभक्त कर दिया ।[2]

देवासुर-संग्राम में वृत्र के भयंकर रूप को देखकर देवगण भय-त्रस्त होकर यत्र-तत्र पलायित होने लगे[3] किन्तु वृत्र ने इन्द्र को निगल लिया पुनरपि इन्द्र ने उदर-भेदन कर बहिर्गमन किया ।[4] यह उल्लेख श्रीमद्भागवतमहापुराण[5] में मिलता है कि सूर्यादि ग्रहों की उत्तरायण-दक्षिणायनरूप गति में जितना समय लगता है उतने समय में वृत्र-वध-योग के समुपस्थित होने पर घूमते हुए वज्र से उसकी ग्रीवा को काटकर भूमि पर गिरा दिया । उपरोक्त उद्धरण से यह विदित होता है कि सूर्य की गर्मी से जल के परमाणु सूक्ष्म भापरूप होकर ऊँचे जाते हैं एवं वह शीतल वायु के परमाण से मिश्रित होकर मेघ बन जाते हैं । वायु की प्रेरणा से मेघ जल-वृष्टि करते हैं । निश्चित रूप से इन्द्र द्वारा वृत्र-वध प्रतिवर्ष होने वाली जलवृष्टि की ओर संकेत करता है ।

---

1. श्रीमद्भागवत0, 6/1/30; 2/27
2. श्रीमद्भागवत0, 6/9/6-10.
3. श्रीमद्भागवत0, 6/9/17.
4. श्रीमद्भागवत0, 6/12/32.
5. "वज्रस्तु तत्कन्धरमाशुवेगः कृन्तन् समन्तात् परिवर्तमानः ।
   न्यपातयत् तावदहर्गणेन यो ज्योतिषामयने वार्त्रहत्ये ॥" -

   श्रीमद्भागवत0, 6/12/33.

त्रिलोकी इन्द्र ने अहंकार के वशीभूत होकर अपने गुरू बृहस्पति का भरी सभा में अनादर किया। जब उन्हें अपने गुरुदेव की अवहेलना का बोध हुआ तब वे सभासदों के मध्य पश्चात्ताप करने लगे। लोभ एवं मोह के वशीभूत होकर इन्द्र द्वारा किये गये त्रिशिरावध जैसे जघन्य कार्य की निन्दा बृहस्पति ने भी की है।[1]

राजा पृथु की शक्ति को देखकर छद्मवेषी इन्द्र जब यज्ञ-अश्व को लेकर पलायित होते हैं तब पृथु की अधिरोपित प्रत्यंचा से भयभीत होकर अश्व को तत्काल लौटा देते हैं।[2] इन्द्र सगर के अश्वमेध यज्ञ का अश्व अपहरण करके पाताल लोक में प्रेषित कर देते हैं।[3] इन्द्र ने अपनी विमाता दिति के गर्भस्थ बालक जो इनका विनाशक था, वध कर दिया। कहीं-कहीं उल्लेख मिलता है कि उस निर्दोष बालक के टुकड़े-टुकड़े कर दिया जो मरुद्गण बनकर इनके सहायक एवं अनुचर बन गये।[4]

दधीचि ने देवताओं के निवेदन पर लोक हितार्थ योग-बल से अपना स्थूल शरीर त्याग दिया। देवताओं ने उनकी अस्थियों से शस्त्रों का निर्माण करवाया[5] ब्रह्म पुराण की कथा इस प्रकार है : प्रश्न यह उठता है कि देवों ने दधीचि की ही अस्थियाँ क्यों ली ? देवों ने एक बार उपयोग की आवश्यकता न जानकर अपने सभी शस्त्रास्त्रों को दधीचि के आश्रम में रख दिया। इस बात का पता जब राक्षसों को चला तब वे सदैव उस शस्त्रास्त्रों को लेने में प्रयत्नशील थे। अतएव दधीचि ने

---

1. देवीभागवत 71/19-21.   2. श्रीमद्भागवत० 4/19/2-10.

3. नारद० 8/83-96.

4. ब्रह्म० 124वाँ अध्याय, विष्णु० 1/21/30-40, मत्स्य० 7/50-65; वायु० 65वाँ अध्याय, श्रीमद्भागवत० 6/18/55-64 आदि।

5. ब्रह्म० 110वाँ अध्याय, पद्म० 19वाँ अध्याय, श्रीमद्भागवत० 6/9/10.

ने अभिमंत्रित जल से उन शस्त्रास्त्रों का प्रक्षालन करके उस जल का पान कर लिया जिसके फलस्वरूप उन्होंने शस्त्रास्त्रों की शक्ति एवं प्रभाव को आत्मसात् किया ।[1]

इन्द्र याग के अवसर पर कृष्ण गोपों द्वारा किये जाने वाले पौर्वापयी कर्मकाण्डीय इन्द्र-पूजा का घोर विरोध करते हैं । यह विद्रोहक-भावना एक ऐसी विद्रोहमूलक प्रतिक्रिया का द्योतक है जिसमें वैदिक यज्ञ-सम्बन्धी कर्मकाण्ड का बलपूर्वक विरोध हो रहा है । इस विरोध का मूल आधार कर्मफल में विश्वास एवं पुनर्जन्म की धारणा है ।

प्रत्येक प्राणी को अपने पूर्वजन्म में किये हुए कर्मों के अनुसार ही उत्कर्षापकर्ष एवं सुख-दु:ख आदि का भागी होना पड़ता है । कृष्ण के कथनानुसार इन्द्र-पूजा की अपेक्षा तो जड़ गोवर्धन-पर्वत की पूजा करना अधिक उचित है । कम से कम वह गौओं को कन्द, मूल फलादि से तृप्त करके परिपुष्ट करता है । उपरोक्त कारणों से इन्द्र अप्रसन्न होकर सम्पूर्ण व्रज को नष्ट करने पर तुल गये । तत्काल प्रलयकारी वृष्टि होने लगी । सम्पूर्ण वज्र में हाहाकार मच गया । ब्रजवासी कृष्ण की ओर जीवन रक्षा हेतु देखने लगे किन्तु कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को कनिष्ठा पर उठाकर सम्पूर्ण व्रज की रक्षा की । सामान्यरूपेण यह विदित होता है कि यह कथानक एक ऐसे युग का द्योतक है जब इन्द्र जैसे कर्मकाण्डीय देवताओं का महत्त्व समाप्तप्राय हो रहा था तथा उसका स्थान ईश्वरभक्ति एवं नैतिक नियम ले रहे थे ।[2]

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में वृष्टि का जो महत्त्व है उसके परिप्रेक्ष्य में इन्द्र-पूजा स्वाभाविक ही थी । प्राचीन काल में वर्षा-ऋतु के आरम्भ में इन्द्रध्वज

---

1. ब्रह्म0 110/38-39.

2. विष्णु0 5/11; श्रीमद्भागवत0 10वाँ स्कन्ध 24वाँ अध्याय ।

या इन्द्रमह नामक उत्सव के रूप में इन्द्र की देशव्यापी पूजा होती थी । उस उत्सव में उत्तुंग वृक्ष के दण्ड को विभिन्नप्रकारेण अलंकृत करके सार्वजनिक स्थल पर संस्थापित कर दिया जाता था । इस अवसर पर इन्द्र का आह्वान एवं पूजन होता था । जनसामान्य इस उत्सव में इन्द्रध्वज के चारों ओर नृत्यगीतादि द्वारा हर्षो-ल्लासमय उत्सव मनाते थे । आज भी वृष्टि-देव के रूप में इन्द्र की पूजा विभिन्न देशों में होती है । इन्द्र-पूजा का विवरण इन्द्रमह के नाम से जैन साहित्य में प्राप्त होता है ।[1] जो आषाढ़ पूर्णिमा को सम्पन्न किया जाता था । काम्पिल्यपुर में इन्द्र महोत्सव हेतु राजा दुर्मुख ने नागरिकों से इन्द्र केतु को विभिन्नप्रकारेण सुसज्जित करके स्थापित करवाया ।[2] वृहत्कल्प[3] भाष्यानुसार हेमपुर में इन्द्रमह नामक उत्सव का आयोजन होता था जिसमें कुमारियाँ अपने सौभाग्य हेतु बलि, पुष्प, दीप आदि से इन्द्र की अर्चना करती थीं । अत: वृद्दशा[4] के अनुसार पोलासपुर में भी इन्द्र महोत्सव का आयोजन होता था ।

इन्द्र के प्राय: सभी वैदिक विशेषण पुराणों में सुरक्षित हैं । यथा-वृत्रहा, पुरुहूत, गोत्रभिद्, सुत्रामा, वासव, मघवा, विडौजा, शतक्रतु एवं शतमन्यु आदि। किन्तु पौराणिक पुराकथाशास्त्रीय शतक्रतु का अर्थ 'सौ अश्वमेध यज्ञ करने वाला' मानते हैं । उनकी एक नवीन उपाधि 'सहस्राक्ष' भी है । ऋग्वेदीय सर्वशक्तिसम्पन्न देव इन्द्र के उत्तरोत्तर अपकर्ष का यह विस्तृत इतिहास धार्मिक मान्यताओं के विकासक्रम की दृष्टि से अत्यन्त रोचक एवं शिक्षाप्रद है ।

-------::0::-------

---

1. आवश्यक चूर्णि, पृ0 213.
2. ज्ञातृ धर्म कथा 1, पृ0 25.
3. वृहत्कल्पभाष्य 4/51-53.
4. अन्त:वृद्दशा 6, पृ0 40.

ब्राह्मणों में इन्द्र

ब्राह्मण साहित्य पूर्णरूपेण बुद्धिजीवियों के हाथ में होने पर भी कर्मकाण्डीय आवरण से आच्छादित था । पुरोहित वर्ग याज्ञिक अनुष्ठान की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित ढंग से प्रतिपादित करने एवं मानव-मनोमस्तिष्क पर उसका अमिट प्रभाव डालने में सदैव प्रयत्नशील था । कर्मकाण्डीय प्रक्रिया एवं महत्त्व से स्पष्टीकरण हेतु पौराणिक कथाओं एवं दन्द-कथाओं का आश्रय लिया गया था । इस युग का विशिष्ट लक्षण प्रजापति की संकल्पना 'देवासुर-संग्राम' था ।

यद्यपि इन्द्र एवं अन्य देवता इस याज्ञिक वातावरण में पुरोहितों के प्रमुख आकर्षण के केन्द्र नहीं थे तथापि उनके बिना यज्ञ की संभावना भी न थी । अतएव हम यह नहीं कह सकते कि इस समय इन्द्र का अस्तित्व पूर्णत: समाप्तप्राय हो गया था । याज्ञिक देव होने के कारण वे यज्ञ में अपने अंश को प्राप्त करते थे एवं अपने जीवन की प्रत्येक क्रियाकलाप को याज्ञिक वातावरण के अनुकूल ही व्यवस्थित करते थे । यह वही काल था जिसमें इन्द्र ने अपने पूर्ण पौराणिक विकास के साथ वैदिक साहित्य में प्रथमत: पदार्पण किया था ।

यौद्धिक अवधारणा के आधार पर ब्राह्मण-साहित्य में युद्ध-प्रणाली में विविध परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं । ब्राह्मण-साहित्यानुसार देवों एवं असुरों का दो शक्ति-शाली एवं समृद्धशाली दल था जो सदैव परस्पर अपने दल की महानता, प्रसिद्धि एवं प्रभुत्त्व हेतु युद्ध में संलग्न रहता था किन्तु असुरगण अनेकों बार देवताओं से अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुए । देवगण प्राय: उनसे आतंकित रहते थे एवं अनेक बार युद्ध में पराजित भी हो गये थे ।[2] ब्राह्मणों में बहुधा वर्णित

---

1. "श०ब्रा० 2/3/4/12; 3/4/2/15; 8/5/3/3

'य: स इन्द्रो सौ स आदित्य:' तै०ब्रा० 2/5/8/30, 31.

देवासुर-संग्राम का प्रमुख कारण यह प्रतीत होता है कि असुर लोग देवताओं के याज्ञिक अनुष्ठानों को अपवित्र एवं नष्ट करने में विविध प्रकारेण विघ्न उत्पन्न करने में सदैव तत्पर थे।[1] इन्द्र ही ऐसे शक्तिशाली देव थे जो याज्ञिक विध्वंसकों का अपनी सैन्य-शक्ति एवं अन्य देवताओं की सहायता से वध करने में सक्षम थे। यज्ञों में सामान्यजन इन्द्र का आह्वान करते थे एवं देवता भी अपनी सुरक्षा हेतु इन्द्र पर निर्भर ही रहते थे[2] एवं इन्द्र उनको रक्षात्मक आश्वासन देते थे।

अनेक स्थलों पर यह दृष्टिगत होता है कि यज्ञानुष्ठान में प्रयुक्त होने वाली ऋक्, सामन्, चन्द्रमस्, वर्ष, प्रवचन एवं घृत आदि इन्द्र के वज्र से अत्यधिक प्रभावशाली थे। ब्राह्मणों में वृत्र के हनन की प्रक्रिया एवं उपकरण के विषय में कोई निश्चित धारणा उपलब्ध नहीं होती है। ब्राह्मणों में वर्णित है कि इन्द्र ने आज्य रूपी वज्र से[3], पौर्णमास यज्ञ से परिपुष्ट होकर[4] एवं महानाम्नी सूक्तों[5] द्वारा वृत्र वध किया।

---

1. ऐ0ब्रा0 2/2/6.
2. "ते देवा इन्द्रमब्रुवन्। त्वं वै नः श्रेष्ठो बलिष्ठो वीर्यवत्तमो सि त्व मिमानि रक्षा सि प्रतियतस्वेति तस्य वै मे ब्रह्म द्वितीयमस्त्विति तथेति तस्मै वै बृहस्पतिं द्वितीयमकुर्वन्ब्रह्म वै बृहस्पतिस्त इन्द्रेण चैव बृहस्पतिना च दक्षिणतो सुरान्रक्षा सि नाष्ट्रा अपहत्याभये नाष्ट्र एतं यज्ञमतन्वत॥"

   श0ब्रा0 9/2/3/3.
3. ऐ0ब्रा0 4/1/9
4. कौ0ब्रा0 3/4, श0ब्रा0 11/1/3/5.
5. कौ0ब्रा0 23/2.

इन्द्र तथा त्वष्टा-पुत्र

ब्राह्मण ग्रन्थों से केवल यही विदित होता है कि इन्द्र ने वृत्र नामक भयंकर असुर का वध किया। त्वष्टा-पुत्र-विश्वरूप का वध करने के कारण त्वष्टा ने कुपित होकर इन्द्र को सोमपान से वंचित कर दिया किन्तु इन्द्र ने बलात् सोमपान किया किन्तु वह सोम मुख को छोड़कर सभी प्राणों से बहिर्गमन करने लगा। तदनन्तर अश्विनौ एवं सरस्वती ने सौत्रामणी इष्टि से उनको स्वस्थ किया। पुत्र-निधन-शोक से क्रुद्ध हुए त्वष्टा ने उच्छिष्ट सोम को यज्ञकुण्ड में डालकर वृत्र नामक असुर को उत्पन्न किया।[1] गोपथ ब्राह्मण में इन्द्र बलात् सोमपान करके मूर्च्छित हो गये, ऐसा उल्लेख मिलता है।[2] इन्द्र ने जब द्यावापृथिव्याच्छादक वृत्र का वध किया तब तब उसके शरीर से जलधारायें फूट पड़ी।[3] यहाँ पर वृत्र को मेघ रूप में वर्णित किया गया है। इन्द्र के माहात्म्य एवं उत्कर्ष का एकमात्र प्रमुख कारण वृत्र-वध बताया गया है। वृत्र-वध एवं शत्रु-वध के कारण ही देवताओं ने उनकी महत्ता एवं प्रभुता स्वीकार की थी।[4] जिसके फलस्वरूप उनका नाम 'महेन्द्र' हो गया।[5] ऐतरेयकार के मतानुसार बृहस्पति द्वारा द्वादशाह यज्ञ कार्य सम्पन्न होने पर ही देवताओं ने इन्द्र को ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ माना।[6]

---

3. "वृत्रो ह वा इद सर्वं वृत्वा शिश्ये।
   यदिदमन्तरेण द्यावापृथिवी स यदिद ँ सर्वं वृत्वा शिश्ये तस्माद्वृत्रो नाम ॥ 4 ॥
   तमिन्द्रो जघान।
   स हत. पूतिः सर्वत एवापो भिप्रसुस्राव --- ॥ 5 ॥ श0ब्रा0 1/1/3/4-5.

1. श0ब्रा0 1/6/3/1-8, 12/8/3/1, 2. 2. गो0ब्रा0 (उ0) 5/6.

4. श0ब्रा0 4/6/6/3.

5. "इन्द्रो वा एष पुरा वृत्रस्य वधात्।
   अथ वृत्रं हत्वा यथा महाराजो विजिग्यानः एवं महेन्द्रो अभवत् ॥"
   श0ब्रा0 9/2/4/9

6. ऐ0ब्रा0 4/25.

शतपथ ब्राह्मण में एक प्रकरण में ऐसा उल्लेख मिलता है कि जब असुरों ने जादू एवं विष के द्वारा पादपों को विषाक्त एवं दूषित कर दिया तो इन्द्रादि देवताओं ने असुरों को यज्ञ द्वारा ही विनष्ट किया ।[1] असुरों की माया से प्रभावित होकर इन्द्र ने प्रजापति से प्राप्त विधन ज्ञान के द्वारा ही असुरों को मार भगाया ।[2] असुरों से देवताओं की सुरक्षा के लिए इन्द्र ने चतुर्वेद होकर क्रमशः पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण दिशा बन गये ।[3]

ब्राह्मण वर्ग कभी कभी इन्द्र को अशक्त समझने लगते थे क्योंकि एकदा प्रजापति ने पुत्र-मोह के वशीभूत होकर युद्ध होने के ठीक समय पर इन्द्र को छिपा लिया था और कहा कि सेनापति के अभाव में युद्ध नहीं हो सकता । इस प्रकार प्रजापति ने इन्द्र को संकट-मुक्त किया ।[4] ऐसा बहुतायत प्रमाण दृष्टिगत होता है कि निर्बल व्यक्ति सबल व्यक्ति का शारीरिक बल के द्वारा नहीं अपितु मानसिक बल एवं कूटनीति के द्वारा ही सामना कर सकता है । यथा - रौहिण के स्वर्गारोहण[5] की कथा एवं सर्पिणी को[6] सुमित्र की सहायतासेवध करने में इन्द्र की

---

1. श0ब्रा0 2/4/3/2-3.
2. पं0ब्रा0 19/18/1, 19/1.
3. गो0ब्रा0 (पू0) 2/19.
4. "प्रजापतिरिन्द्रं ज्येष्ठं पुत्रमपन्यधत्त ।
   नेदेनमसुरा बलीया सोहनन्निति ॥" तै0ब्रा0 1/5/9/4.
5. "चित्रायामग्नी आदधीत । --- ततो सुरा रौहिणमित्याग्नं चिक्थिरे नेनामुं लोक समारोक्ष्याम इति ॥ ---- स तो एपेष्टका व्वज्रान्कृत्वा, ग्रीवा. प्रचिच्छेद ॥" - श0ब्रा0 2/1/2/13-16.

6 पं0ब्रा0 13/6/9.

कूटनीतिज्ञता दृष्टिगत होती है एवं इन्द्र बलशाली शत्रुओं को कूटनीति से ही पराजित करते हैं ।[1]

समस्त देवों में इन्द्र की स्थिति सुदृढ थी क्योंकि अन्य देवता स्वार्थयुक्त प्रवृत्ति के थे । देवासुर-संग्राम में सामान्य कल्याण का हित निहित था, न कि केवल इन्द्र का । परन्तु देवताओं ने यह घोषणा की कि यदि उन्हें यज्ञ एवं यश में अंश मिलेगा तभी वे युद्ध में सम्मिलित होंगे । अग्नि एवं सोम को अपनी तरफ मिलाने के लिए इन्द्र ने उनको यज्ञ में पुरस्कृत करने का वचन दिया ।[2] इन्द्र ने इन दोनों की सहायता से वृत्र आदि असुरों का संहार किया । द्यावापृथिवी ने वृत्र-वध हेतु इन्द्र को रोका किन्तु इन्द्र ने अपना यज्ञांश देकर उनको सन्तुष्ट किया ।[3] इन्द्र, अग्नि, विष्णु, वरुण एवं बृहस्पति ने मिलकर गोधूलि में असुरों का हनन किया ।[4] देवासुर युद्ध में जब समस्त देव इन्द्र को छोड़कर पलायित हो गये तब मरुद्गण ही अन्तिम क्षण तक रणभूमि में युद्धरत रहे । इन्द्र के युद्ध-प्रस्थान के समय मरुतों ने उनकी उत्साहवर्द्धक स्तुति की ।[5] इन्द्र के साथ रात्रि में कोई देवता चलने को तैयार नहीं हुए अन्ततः छन्दों ने उनका साथ दिया ।[6] ऐतरेयकार के मतानुसार अन्धकारपूर्ण रात्रि में अग्नि ने इन्द्र का साथ दिया ।[7] वसिष्ठ एवं कण्वादि ऋषियों ने मंत्रोच्चारण एवं साम-गायन के द्वारा इन्द्र की शक्ति को वर्द्धित किया ।[8]

---

1. ऐ0ब्रा0 1/4/7, तै0ब्रा0 1/1/2/4-6.
2. श0ब्रा0 1/6/3/14.
3. तै0ब्रा0 2/7/1/8.
4. गो0 ब्रा0 (उ0) 4/11; श0ब्रा0 11/1/3/2, ऐ0ब्रा0 3/50, 6/15.
5. श0ब्रा0 2/5/3/20
6. गो0ब्रा0 (उ0) 5/1.
7. ऐ0ब्रा0 6/2/1.
8. तै0ब्रा0 2/4/3/1, जै0ब्रा0 3/189.

ब्राह्मण साहित्य में दूसरा नवीन तथ्य यह दृष्टिगत होता है कि प्रत्येक ब्राह्मण किसी एक विषयवस्तु पर अपने विचारों को विभिन्न ढंग से प्रतिपादित करते हैं। इन्द्र ने वृत्र का घृत रूपी वज्र से संहार किया।[1] शौनक ब्राह्मण में शक्वरी छन्द[2] एवं शतपथ ब्राह्मण में पुरोकाश द्वारा वृत्र-वध का उल्लेख मिलता है।[3] वहीं एक स्थल पर उल्लेख मिलता है कि इन्द्र ने यज्ञ के द्वारा मायावी ढंग से वृत्र का हनन किया।[4] तैत्तिरीय ब्राह्मणानुसार इन्द्र ने वृत्र-वध दधीचि के अस्थि निर्मित अस्त्र से किया।[5] इन्द्र ने वज्र फेंककर 'वषट्' से वृत्र का वध किया[6] एवं 'ककुभ्' पर स्थित होकर 'उष्णिक्' छन्द के द्वारा वृत्र को उठाकर फेंक दिया।[7] इन्द्र ने 'ककुभ्' एवं 'उष्णिक्' की सहायता से वृत्र का संहार किया।[8] इन्द्र ने 'बृहत्' के द्वारा वृत्र पर वज्र का प्रहार किया तथा 'परमेष्ठिन्' के द्वारा उसको धराशायी कर दिया।[9] इन्द्र ने विशिष्ट छन्दों[10] अथवा पद-स्तोम-सामन्[11] अथवा कण्व-सामन्[12] एवंप्रजापति द्वारा प्रदत्त 'अनुष्टुभ्' एवं 'सप्त होताओं' द्वारा वृत्र-हनन किया।[13]

---

1. "घृतेन हि वज्रेणेन्द्रो वृत्रमहन्निति।" ऐ०ब्रा० 2/3/5.
2. "इन्द्रो वृत्रमशकद्धन्तुमाभिस्तस्माद् शक्वर्यः।" शौ०ब्रा० 23/2.
3. श०ब्रा० 2/4/4/15
4. श०ब्रा० 5/2/3/7.
5. तै०ब्रा० 1/5/8/1.
6. पं०ब्रा० 8/1/2.
7. पं०ब्रा० 8/5/2.
8. "उष्णिक्ककुब्भ्यां वा इन्द्रो वृत्राय वज्रम् उदयच्छद गायत्र्योस् तिष्ठन्। --- स उष्णिक्ककुभोस् तिष्ठन् समपौष्कले बाहू कृत्वा प्राहरत्। तम् अहन्।" जै०ब्रा० 1/158.
9. पं०ब्रा० 12/6/8.
10. पं०ब्रा० 12/13/23.
11. पं०ब्रा० 13/5/22-23.
12. पं०ब्रा० 14/4/5.
13. पं०ब्रा० 12/12/4-6.

इन्द्र का तृतीय प्रमुख एवं शक्तिशाली शत्रु 'नमुचि' था । 'नमुचि' ने छलपूर्वक अपनी शक्ति से इन्द्र का पराक्रम, अन्न एवं सोम का हरण कर लिया, जिसके फलस्वरूप इन्द्र सरस्वती एवं अश्विनौ के समीप याचना करते हैं कि मैंने नमुचि से प्रतिज्ञा की है कि न तुझे दिन में, न रात्रि में, न डण्डे से, न धनुष से, न थप्पड़ से, न मुक्के से, न सूखी चीज से एवं न गीली चीज से मारूँगा । इन्द्र ने सरस्वती एवं अश्विनौ की सहायता से गोधूलि के समय समुद्र-फेन से उसका शिरोच्छेदन कर दिया । यह कहा हुआ शीर्षभाग इन्द्र के पीछे मानव-वधिक का अभियोग लगाकर दौड़ने लगा ।[1] एक स्थल पर उल्लिखित है कि जब इन्द्र ने उस असुर के सिर को अपने चरणकमलों से रौंद दिया तब एक अन्य राक्षस प्रादुर्भूत हुआ ।[2] उसको फेन से मारकर इन्द्र 'मित्रध्रुक' बने गये ।[3] वह शीर्षभाग इन्द्र पर मानव-वधिक अभियोग का आरोपण करके इन्द्र का अनुगमन करते हुए लुढ़कने लगा ।[4] हरिवर्ण सामन् के द्वारा ही इन्द्र ने मुक्ति प्राप्त की ।[5] अतएव इन्द्र को यह सौदा बहुत मँहगा पड़ा, क्योंकि नमुचि ने इनके साथ छल किया ।

---

1. श0ब्रा0 12/7/3/1-3. 2. श0ब्रा0 5/4/1/9-10.

3. "न दिवा न नक्तमिति । स एतमदां फेनमसिंचत् । न वा एष शुष्को ना द्रों व्युष्टासीत्। अनुदित: सूर्य: न वा एतद्दिवा न नक्तम् । तस्यैतस्मिमल्लोके । अपां फेनेन शिर उदवर्तयत् । तदेनमन्यवर्तत । मित्रधुगिति ।।" तै0 ब्रा0 1/7/1/7.

4. श0ब्रा0 12/7/3/1-4.

इन्द्र को सभी देवता एवं प्रजापति समस्त देवों में अत्यधिक शक्तिशाली, सर्वकार्यक्षम एवं रक्षक स्वीकार करते हैं। इतना ही नहीं अपितु समस्त देव सद्कर्मों के द्वारा उच्चपद की प्राप्ति करते हैं। इन्द्र ने वृत्र-वध करके 'विश्वकर्मा'[1] एवं राक्षसों का संहार करके 'विमृध्'[2] की उपाधि धारण की। इन्द्र ने माभिषेक से सबको जीत लिया एवं सब लोकों पर स्वत्व प्राप्त करके सब देवों में श्रेष्ठ एवं प्रतिष्ठित हो गये।[3] प्रजापति ने इन्द्र को महेन्द्र की उपाधि से सुशोभित किया[4] किन्तु इन्द्र ने उनको 'क' नाम से सम्बोधित किया।

पुरोहित वर्ग ने सामान्यतया इन्द्र एवं अन्य देवताओं तथा उनके साहसिक कर्मों को यज्ञ में स्तोत्रिय एवं उक्थों द्वारा सम्मानित किया। असुर एवं राक्षसगण याज्ञिक कर्मों में जानबूझकर तरह-तरह के विघ्न उत्पन्न करते थे[5] - वे कभी यज्ञ-सामग्री में प्रविष्ट हो जाते थे तथा कभी-कभी यज्ञ-सामग्री को लेकर भाग जाते थे।[6] ब्राह्मण साहित्य में इन्द्र की विजयश्री पर पुरोहित वर्ग उच्च स्वर से मन्त्रोच्चारण करता हुआ वर्णित किया गया है।

इन्द्र के महान् कार्यों से प्रभावित होकर प्रतर्दन-पुत्र देश नृपों से युद्ध करता हुआ अपने पक्ष में इन्द्र की सहायता का इतना अधिक इच्छुक था कि इन्द्र के द्वारा आघात पहुँचाये जाने के पश्चात् भी वह इन्द्र की सहायता एवं दया की भिक्षा माँग रहा था।[7] इन्द्र उदारचित्त वाले थे तथा प्रसन्न होकर भक्तों को स्वर्ण-रथ आदि प्रदान कर देते थे।[8]

---

1. ऐ0ब्रा0 4/22.
2. श0ब्रा0 11/1/3/2.
3. ऐ0ब्रा0 8/24.
4. ऐ0ब्रा0 3/1-10.
5. ऐ0ब्रा0 6/2/1, श0ब्रा0 1/1/2/3, 3/1/6, 4/4/8.
6. ऐ0ब्रा0 2/2/6.
7. जै0ब्रा0 3/245-247
8. ऐ0ब्रा0 7/16.

इन्द्र का वर्णन पौरोहित्य एवं दार्शनिक ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में लिया जाता है । उन्होंने वसिष्ठ ऋषि से विराज् छन्द का ज्ञान प्राप्त किया और उसके बदले में सम्पूर्ण बलि से प्रायश्चित करना सिखाया जिससे कोई भी इस संसार मे द्युलोक को प्राप्त कर सकता था ।[1] गोपथ ब्राह्मण में इन्द्र ओंकार के विषय में पूर्णज्ञान के लिए प्रजापति के सम्मुख उपस्थित हुए एवं ज्ञान प्राप्त किया ।[2] तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार इन्द्र ने पुरुषायुष की समाप्ति पर भरद्वाज को वेद की अनन्तता का उपदेश दिया था ।[3]

ब्राह्मणों में इन्द्र को वाक्[4], वायु[5], प्राण[6], गोप[7], वरुण[8], मनु[9], रेतस्[10] आदि कहा गया है । शतपथ ब्राह्मण में इन्द्र का गुप्त नाम अर्जुन है ।[11] वे

---

1. श०ब्रा० 12/6/1/38-41.   2. गो०ब्रा० [उ०] 1/25.

3. "भरद्वाजो ह वा त्रीभिरायुभिर्ब्रह्मचर्यमुवास । तं जीर्णि स्थविरं शयानमिन्द्र उपव्रज्योवाच भरद्वाज । यत्ते यतुर्थ्यायुर्दधाम किं तेन कुर्या: +-------- । तै०ब्रा० 3/10/11.

4. कौ०ब्रा० 2/7, 13/5.

5. "अयं वा इन्द्रो य एष पवते ।" श०ब्रा० 14/2/2/6.

6. श०ब्रा० 6/1/2/28.

7. "इन्द्र वै गोपा:" गो०ब्रा० [उ०] 2/20.

8. इन्द्र वै वरुण: गो०ब्रा० [उ०] 1/22.

9. गो०ब्रा० 4/11.   10. श०ब्रा० 12/9/1/17.

11. "अर्जुनो ह वै नामेन्द्रो यदस्य गुह्यं नाम ।" श०ब्रा० 5/4/3/7.

सागर के समान विशाल हैं । देवता भी इन्द्र की महत्ता स्वीकार करते हैं ।[1] उत्तम रक्षक होने के कारण उन्हें 'सुत्रामा'[2] एवं विश् (प्रजा) ही जिसकी शक्ति है ऐसे वे 'विडौजा'[3] विशेषण से अभिहित किये जाते हैं ।

अत: उपर्युक्त विवरण के आधार पर यह सुनिश्चित है कि ब्राह्मण साहित्य में कर्मकाण्डीय याज्ञिक वातावरण होने के फलस्वरूप भी इन्द्र का महत्त्व सुरक्षित था । यज्ञों में इनका आह्वाहन होता था तथा यज्ञानुष्ठानों के द्वारा इनकी शक्ति वर्द्धित की जाती थी । इतना ही नहीं अपितु माध्यन्दिन सवन पर भी इनका एकच्छत्र अधिकार था । वे समस्त देवों में श्रेष्ठ एवं शक्तिशाली थे । अतएव पुरोहितों द्वारा इनका गुणगान भी किया जाता था ।

---

1. "इन्द्रो वै नो वीर्यवत्तम: ।" श0ब्रा0 4/6/6/3.

2. श0ब्रा0 5/4/4/24.

3. श0ब्रा0 5/4/4/11.

आरण्यकों एवं उपनिषदों में इन्द्र देवता

आरण्यकों एवं उपनिषदों में मानवीय विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए । जिसने मनुष्यों को ब्रह्म-आत्मा, जीवन-मरण, सत्य-असत्य, पाप-पुण्य, एकत्व-अनेकत्व, संभूति-असंभूति, विद्या-अविद्या, द्वैत-अद्वैत आदि मौलिक प्रश्नों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया । वैदिक इन्द्रादि देवता अपनी महत्ता को सुरक्षित रखने में असक्षम सिद्ध हुए । इतना ही नहीं, अपितु ब्रह्मज्ञान के समक्ष इन्द्र के आश्चर्योत्पादक महनीय कार्य नगण्य एवं गौण हो गये ।

शौनकोपनिषद्[1] में उल्लिखित है कि देवासुर संग्राम देवताओं के द्वारा 'ओम्' की सहायता से जीता गया था । इन्द्र 'ओम्' की महत्ता से भिज्ञ था अतएव 'ओम्' नामक शस्त्र को खोजकर उसका प्रयोग असुरों पर किया । इन्द्र ने प्रातः, मध्याह्न एवं अन्तिम तर्पण में क्रमशः 'वसु' 'रुद्र' आदित्यों को युद्ध सेनानाय नियुक्त किया किन्तु 'ओम्' को प्रत्येक बार प्रथमतः रखा । अतएव इन्द्र की बुद्धिमत्ता के द्वारा असुरों को त्रिबारन् पराजय का मुख देखना पड़ा । इसी प्रकार का द्वितीय संग्राम बृहदारण्यक[2] एवं छान्दोग्योपनिषद्[3] में वर्णित है । जिसमें इन्द्रादि अन्य देवताओं ने असुरों पर विजय प्राप्त करने के लिए मुख्य प्राण का अवलम्बन लिया था क्योंकि देवताओं के द्वारा प्रयुक्त इन्द्रियों-नासिका, वाणी

---

1. शौ०उ० 1-50   2. बृ०उ० 1/3/1-7.

3. देवासुरा ह वै यत्र संयेतिर उभये प्राजापत्यास्तद्ध देवा उद्गीथमाजहुरनेनैनानभिभविष्याम इति ॥ ते ह नासिक्यं प्राणमुद्गीथमुपासांचक्रिरे तं हासुराः पाप्मना विविधुस्तस्मात्तेनोभयं जिघ्रति सुरभि च दुर्गन्धि च पाप्मना ह्येष विद्धः । ---- अथ ह य एवायं मुख्यः प्राणस्तमुद्गीथमुपासांचक्रिरे तं हासुरा ऋत्वा विदध्वंसुर्यथा श्मान-मास्वणृत्वा विध्वंसेत ॥ छा०उ० 1/2/1-7.

चक्षु, कर्ण एवं मानस को क्रमशः असुरों ने पाप के द्वारा निष्क्रिय बना दिया था ।

नैतिक रूप से औपनिषदिक इन्द्र का चरित्र निष्कलंक एवं बुराईयों से अछूता था । उन्होंने सूक्ष्मज्ञान एवं तपश्चर्या के द्वारा अपने चरित्र को उच्चकोटि का बना लिया था । इन्द्र औपनिषदिक ज्ञान से अत्यन्त प्रभावित हो एवं अपने उच्चतम आत्मिक ज्ञान को वर्द्धित करने के सम्बन्ध में गम्भीर थे । इन्द्र एवं अन्य देवताओं से यह आशा नहीं की जा सकती थी कि वे दैवी शक्ति से युक्त होने के फलस्वरूप भी त्रिकालदर्शी एवं सर्वज्ञ हैं । ब्रह्मात्म ज्ञान के गहनतम विचार हेतु एवं उनको अपनी आत्मा को विशुद्ध करने के लिए अधिकाधिक कष्टों को वहन करना पड़ा था ।

ऐतरेय आरण्यक[1] में उन्होंने विश्वामित्र एवं भरद्वाज के साथ प्राण-विद्या पर प्रकाश डालने का उल्लेख मिलता है । ब्रह्मज्ञान के साथ ही इन्द्र को चतुर्वेदों का सर्वाधिक ज्ञाता माना गया था ।

याज्ञवल्क्य ऋषि ने शतपथ ब्राह्मण में देवताओं को जो महत्त्व प्रदान किया था उसका अनुमोदन बृहदारण्यक[2] ने किया है । बृहदारण्यक 3306 देवताओं की बृहत् संख्या में 33 महान् देवताओं की कोटि में इन्द्र की गणना करता है । इन्द्र का कार्यकलाप प्रजापति की तुलना में निम्न था । परन्तु इन्द्र देवों के अधिपति थे । बृहस्पति इनके गुरू थे । इन्द्र एवं अन्य देवताओं के आशीर्वाद उन ऋषियों के तुल्य थे जो वेदज्ञ एवं इच्छा विमुक्त थे । ब्रह्मोपनिषद्[3] का यहाँ तक कथन है कि इन्द्रादि देवों की प्रसन्नता परमयोगी से न्यून है । उपनिषदों में वे

कभी-कभी इन्द्रियों के पीठासीन् देवता एवं कभी-कभी दिक्पालों और दस दिशाओं के स्वामी के रूप में वर्णित हैं। बृहदारण्यक[1] में दिक्पालों के नाम वर्णित हैं। किन्तु उन पाँच दिक्पालों में इन्द्र का नाम सम्मिलित नहीं है।

धार्मिक लेखों के उपदेश एवं तथ्यों से विदित होता है कि परब्रह्म ही सर्वस्व है एवं वे ही अणुओं में, तीनों लोकों में सम्पूर्ण जगत् एवं सर्वथा, सर्वदा सभी जीवों में अनुस्यूत हैं। वह सर्वजगत्कारणस्वरूप जगद्बीज, समस्त प्राणिसमष्टिरूप, ब्रह्माण्ड देह सच्चिद् आनन्दघन दिक्काल विराट् पुरुष हैं। इन्द्र आदि अन्य देवता प्रकारान्तर से ब्रह्म के विभिन्न रूप हैं।[2] ये व्यक्तिगत देवता विश्व-संचालन में अपने धर्म का निर्वाह प्रकाशनमात्र के लिए करते हैं।[3] इस तथ्य को उमा हेमवती ने इन्द्र से बतलाया था कि सभी पवित्र एवं प्रशंसनीय कार्य जो इन्द्रादि देवों के नाम पर हुए हैं उसमें ब्रह्म का पूर्ण हाथ है।[4] ब्रह्म ही सर्वज्ञ, सर्वव्यापी एवं सर्वशक्तिमान् है। तो यह कहना उचित है कि विश्व का सम्पूर्ण कार्य ब्रह्म के भयवश हुआ है।[5]

इन्द्र देवाधिपति[6] के रूप में अपना अलग लोक स्थापित किये थे। एक योगी अपनी नासिका के द्वारा प्राणायाम करके इन्द्रलोक का दर्शन कर सकता था। एक याज्ञिक यज्ञ में बलि के द्वारा इन्द्रलोक में पहुँच सकता था। एक बलिष्ठ योद्धा

---

1. बृ0उ0 3/9/20, 24.
2. प0उ0 2/5, मै0उ0 4/12-13, 5/8.
3. प0उ0 2/9.
4. के0उ0 3/12, 4/1.
5. बृ0उ0 3/8/9, के0उ0 2/3/3

   ' ----- भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पंचमः ॥"

6. मै0उ0 5/9.

   ' ---------------- सम्राडिन्द्रः ।

अपने युद्ध कौशल एवं नीति एवं शक्ति के द्वारा उस लोक पर आधिपत्य स्थापित कर सकता था जैसा-प्रतर्दन ने किया था । लोकों के क्रम में इन्द्र लोक का पंचम स्थान था । वैदिक देवताओं के मध्य ब्रह्मज्ञानियों के उत्कर्ष एवं प्रजापति, इन्द्रादि अन्य देवताओं का पलायन ही ब्रह्मज्ञान का महत्त्व दर्शित करता है । अतएव ब्रह्मलोक के दो द्वारपालों[1] इन्द्र एवं प्रजापति का मानभंग ब्रह्मलोक की महत्ता प्रकट करता है ।

मुख्यत: देवों की ऐसी धारणा बन गयी थी कि ब्रह्मज्ञान के द्वारा ही लोगों का ध्यान यज्ञानुष्ठान एवं दैनिक पूजा से हटकर ब्रह्म प्राप्ति की ओर प्रेरित हुआ है ।[2] तदनन्तर बुद्धिमान् ऋषियों ने देवताओं की पूजा एवं विचार-मग्नता हेतु इन्द्र और अन्य देवताओं के स्थान पर 'ओम्' शब्द ढूँढ निकाला एवं आदित्य, उद्गीथ, प्राण एवं विज्ञान इत्यादि को शोध किया । इन्द्र भी उद्गीथ एवं आदित्य के विचारमग्नता से सम्बन्धित थे ।[3] उद्गीथ उपासना में वह स्वरों का प्रभारी समझा जाता था क्योंकि छान्दोग्योपनिषद्[4] भक्तों को

---

1. "स आगच्छतील्यं वृक्षं ----- स आगच्छतीन्द्र प्रजापती द्वारगोयौ तावस्यादपद्रक्त: स आगच्छति ----------- ।" कौ०उ० 1/5.

2. "ब्रह्म वा इदमग्र आसीत्तदात्मानमेवावेदहं ब्रह्मास्मीति । तस्मातत्सर्वमभवत् तद्यो यो देवानां प्रत्यबुध्यत स एव तदभवत्तथर्षीणां तथा मनुष्याणां ------ तस्मादेषां तन्न प्रियं यदेतन्मनुष्या विद्यु: ॥ बृ०उ० 1/4/10.

3. छा०उ० 3/7/1, 3.

4. "सर्वे स्वरा इन्द्रस्यात्मान: सर्व ऊष्माण: प्रजापतेरात्मान: सर्वे स्पर्शा मृत्यो-रात्मानस्तं यदि स्वरेषूपालभेतेन्द्रं शरणं प्रपन्नो भूवं स त्वा प्रति वक्ष्यती-त्येनं ब्रूयात् ॥" छा०उ० 2/22/3.

ऐसी सम्पत्ति देता है यदि वे स्वरोच्चारण में त्रुटि करते हैं तो ये इन्द्र के शरण में जाय । उद्गीथ में अनेकों उद्गान हैं जिसमें एक उद्गान इन्द्र को समर्पित किया गया है ।[1] अन्ततोगत्वा इन्द्र को ब्रह्मन् होने का गौरव प्राप्त है ।[2] व्युत्पत्तिमूलक दशा में भी इन्द्र को ब्रह्मन् सिद्ध किया गया है ।[3] तथा उस सन्दर्भ में एक दृष्टान्त प्रस्तुत किया जाता है जिसमें इन्द्र को अन्य देवताओं की अपेक्षा उच्च स्थान प्राप्त हैं । समस्त सृष्टि एवं देवताओं में जैसे - अग्नि, वायु, आदित्य जो इन्द्रिय ज्ञान प्रधान देवताओं के शासक है उनके मध्य ब्रह्मन् उस मानव समाज में जीवात्मा की भाँति प्रविष्ट हुआ । व्यक्तिगत आत्मा ने अपने श्रम की आत्मा का बोध करते हुए इसे ब्रह्म कहकर चिल्लायी "मैंने उसे देख लिया है ।"[4] अतएव उसका नाम 'इदन्द्र' पड़ा । जिसका शाब्दिक अर्थ है देखा गया है । मानवजन इसे परोक्ष नाम प्रायोगिक दृष्टिकोण से प्रार्थना एवं पूजा में इन्द्र कहते हैं ।

अत: बृहदारण्यक भी पुरुष (जीवात्मा) के आध्यात्मिक वर्णन करता है अर्थात् इन्द्र अपनी स्त्री संज्ञी के साथ शरीर में व्याप्त होकर पारिवारिक जीवन यापन करते हैं । इसी जीवात्मा को 'इन्ध' कहते हैं । उसका प्रत्यक्ष नाम

---

1. छा0उ0 2/22/1.
2. "तदा इदं बृहतीसहस्रं संपन्नं तद्यश: स इन्द्र: स भूतानामधिपति: । स य एतमेतमिन्द्रं भूतानामधिपति' वेद विस्रसा हैवास्माल्लोकात्प्रैतीति स्माह महिदास ऐतरेय: प्रत्येन्द्रो भूत्वैषु लोकेषु राजति ।' -------------------- -------------------- लोकमाभवति ॥" ऐ0आ0 2/3/7.
3. स ईक्षतेमे नु लोकाश्च लोकपालाश्चान्नमेभ्य: सृजा इति । सो पो भ्यतपत्ताभ्यो भितप्ताभ्यो मूर्तिरजायत ----- स एतमेव पुरुषं ब्रह्मततममपश्यत्। इदमदर्शमिती । --- परोक्षप्रिया इव हि देवा: ॥
ऐ0आ0 2/4/3, ऐ0उ0 1/3/11-14.
4. स एतमेव ब्रह्मततममपश्यत् । इदमदर्शमिती । ऐ0उ0 1/3/13, ऐ0आ02/4/3.

'इन्ध' एवं परोक्ष नाम 'इन्द्र' है ।[1] इन्द्र स्वयं ही अपने को विश्वामित्र के रूप में दर्शित करता है जो 'प्राण' अथवा 'ब्रह्म' की भाँति लोक में विख्यात है ।[2] उसने प्रतर्दन को अपना सामान्य परिचय देते समय पौराणिक चरित्र अर्थात् विशिष्ट देव इन्द्र ही का जो पौराणिक क्रियाकलापों के लिए प्रसिद्ध है बतलाया था । तदनन्तर उसने अपने को ब्रह्म का परिचय देते हुए एवं सम्पूर्ण सिद्धान्तों का निरूपण करते हुए परिचय दिया है ।[3] उसी प्रकार वाष्कल उपनिषद् में मेधातिथि एवं इन्द्र के मध्य कवित्वपूर्ण तथा दार्शनिक संवाद का वर्णन मिलता है । इनमें इन्द्र के साहसिक कार्यों की गणना भी सम्मिलित है । इन्द्र मेधाविधि से अपने वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहते हैं मैं सर्वव्यापी, दयालु, सर्वस्व एवं सर्वज्ञ हूँ ।[4]

अतएव पौराणिक व्यक्तित्व को छोड़कर इन्द्र भी सर्वोच्च दार्शनिक विचार अर्थात् ब्रह्म में ही समाहित हो गये ।

---

1. इन्धो ह वै नामैष यो यं दक्षिणेऽक्षन्पुरुषस्तं वा एतमिन्ध सन्तमिन्द्र इत्याचक्षते परोक्षेणैव परोक्षप्रिया इव हि देवा: प्रत्यक्षद्विष: ॥
   अथैतद्वामेऽक्षणि पुरुषमैषास्य --- भत्यस्माच्छारीरादात्मन: ॥
   बृ०उ० 4/2/2; 3.

2. ऐ०आ० 2/2/3, शां०आ० 1/6.

3. शां०आ० 5/1/2;
   'प्रतर्दनो ह दैवोदासिरिन्द्रस्य प्रियं धामोपजगाम । --- मुखान्नीलं वेतीति । स होवाच प्राणोऽस्मि प्रज्ञात्मा तं मामायुरमृतमित्युपास्स्व अस्ति त्वेव प्राणानां नि:श्रेयसमिति ॥' कौ०उ० 3/1/1-2.

4. अहमस्मि जरिता सर्वतोमुख: पर्यारण: परमेष्ठी: नृचक्षा. ।
   अहं विष्वङ् हमस्मि प्रसत्वानहमेकोऽस्मि यदिदं नु किं च ॥
   बा०म०उ० - 25.

महाकाव्यों में इन्द्र

ऋग्वेदीय एकच्छत्र सम्राट् इन्द्र का महत्त्व महाकाव्यों में उत्तरोत्तर ह्रसित होने लगा था और उनकी सामरिक शक्ति भी शनैः शनैः क्षीण होती जा रही थी। उसका जीवन श्रृंगारिक एवं विलासी हो गया था पुनरपि अपनी लोकप्रियता के कारण ये भारतीय धारणा के द्युलोक के देवाधिपति बन गये।

प्राकृतिक अवधारणा के आधार पर पर्यावलोकन करने से विदित होता है कि ऋग्वेद में इन्द्र का वृष्टि-देव, सूर्य-देव, आकाश-देव, प्रकाश-देव एवं युद्ध-देव आदि के रूप में बहुप्रयुक्त नैसर्गिक व्यक्तित्व महाकाव्यों में केवल वृष्टि-देव के रूप तक ही सीमित है। इन्द्र के उक्त स्वरूप के विषय में महाकाव्यों में पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध है।

वृष्टि-देव के रूप में इन्द्र कभी स्वयं प्रसन्न होकर, कभी जनसामान्य की प्रार्थना पर एवं कभी ऋषियों एवं मुनियों के तपोबल से प्रभावित होकर मेघों को वृष्टि करने का आदेश देते हुए महाकाव्यों में वर्णित किये गये हैं। उदाहरणार्थ जब राजा कुवलाश्व मधुकैटभ-पुत्र धुन्ध के वध के लिए प्रस्थान किया तब इन्द्र ने मेघों को वृष्टि हेतु आदेश दिया।[1]

इन्द्र कभी-कभी अप्रसन्न होकर अकाल वृष्टि एवं अनावृष्टि कर देते थे। अङ्ग देश के राजा लोमपाद से अप्रसन्न होकर इन्द्र ने उनके राज्य में वृष्टि नहीं किया किन्तु काश्यप मुनि-पुत्र ऋष्यशृङ्ग के तपोबल से प्रभावित होकर उन्होंने अकाल

---

1. "शीतश्च वायुः प्रववौ प्रयाणे तस्य धीमतः ।
   विपांसुलां महीं कुर्वन् ववर्ष च सुरेश्वरः ॥"
   वेदव्यास महाभारत, आरण्यक०, 204/16.

में भी वृष्टि कर दी ।[1] त्रेता एवं द्वापर-युग के सन्धि-काल में जगत् में दैवेच्छा से ॥बारह॥ द्वादश वर्षों तक घोर अनावृष्टि थी । त्रेता के अन्त एवं द्वापर के आरम्भ में वृष्टि अवरुद्ध होने पर प्रत्ययकाल उपस्थित हो गया क्योंकि देवराज इन्द्र ने जल-वृष्टि नहीं की ।[2] ऐसा विश्वास किया जाता है कि कलियुग में वह समय पर वृष्टि नहीं होने देंगे एवं सर्वत्र पाप का प्रकोप दृष्टिगत होगा।[3] इन्द्र ने सर्वभूतहितैषी अगस्त्य मुनि के द्वादशवर्षीय यज्ञ में अनावृष्टि कर दी । अतएव मुनि ने अप्रसन्न होकर तप किया और उनके तप के प्रभाव से इन्द्र ने यज्ञकालीन अवधि तक यथेष्ट जलवृष्टि की ।[4] विश्रवा मुनि एवं कैकसी के संयोग से पुत्रोत्पन्न होने पर उन्होंने रुधिर की वृष्टि की[5] एवं अपशकुन के समय धृतराष्ट्र के पुत्रों के पराजित होने पर इन्द्र ने रक्त एवं धूलकणों की वृष्टि की ।[6] एक बार मान्धाता के राज्य में द्वादश वर्षों तक अनावृष्टि रही किन्तु ये शस्य की वृद्धि हेतु इन्द्र के

---

1. "तपसो य: प्रभावेण वर्षयामास वासवम् ।
   अनावृष्टयां भयाद्यस्य ववर्ष वलवृत्रहा ॥"
   - महा०, आरण्यक०, 110/3, 21-23.

2. महा०, शान्ति० 139/15-13.

3. "यथर्तुवर्षी भगवान्न तथा पाकशासन: ।
   च चापि सर्वबीजानि सम्यग्रोहन्ति भारत॥"
   - महा०, आरण्यक०, 186/44, 188/76.

4 महा०, आश्वमेधिक 92/14-22; 23.

5. शमा०, उत्तर०, 9/19-32

6. महा०, शल्य०, 58/51, 52.

ऊपर आश्रित नहीं रहे अपितु अपनी शक्ति से उन्होंने वृष्टि की ।[1] जिस प्रकार प्रजापति प्रजा की रक्षा करते हैं वैसे ही बार-बार अनावृष्टि के समय भूतभावन वसिष्ठ देव ने समस्त जीवों को तपोबल से जीवित रखा ।[2] समुद्र-मन्थन के समय वृक्षों के घर्षण से उत्पन्न अग्नि एवं नाग वासुकि के फन से निःश्वसित श्वास रूपी अग्निज्वाला का इन्द्र ने ही शमन किया था ।[3]

इन्द्र प्रत्येक देव-संग्राम का नेतृत्व करते थे तथापि वे सदैव इन्द्र-पद हेतु सशंकित होकर उनके तपोभंग का विविध प्रकार से उपाय करते थे यथा - विश्वामित्र का तपोभंग मेनका के द्वारा किया[4] तथा इन्द्र ने त्रिशिरा के तपोभंग हेतु अनेकों अप्सराओं को प्रेषित किया और विफल होने पर त्रिशिरा का वध कर दिया पुनरपि इन्द्र ने भयवश तक्षक से उसके शीर्षभाग के तीन टुकड़े करवा दिये । उस कटे हुए शीर्षभाग से कपिंजल, तीतर एवं गौरय्या पक्षी बाहर निकले । पुत्र-शोक से ग्रसित त्वष्टा ने इन्द्र के बधार्थ वृत्रासुर की सृष्टि की ।[5]

---

1. "तेन द्वादशवार्षिक्यामनावृष्ट्यां महात्मना ।
   वृष्टं सस्यविवृद्ध्यर्थं मिषतो वज्रपाणिनः ॥"
   - महा०, आरण्यक०, 126/39.

2. महा०, शान्ति०, 226/27.

3. महा०, आदि०,- 16/24.

4. महा०, आरण्यक०, 71/29-36

5. महा०, उद्योग०, 9वाँ एवं 10वाँ अध्याय ।

इन्द्र - वृत्र - सङ्ग्राम का वर्णन महाकाव्यों में बहुचर्चित घटना के रूप में उल्लिखित है । वृत्र के पराक्रम से संतप्त एवं व्याकुल देवता दधीचि ही अस्थि हेतु उनके समीप उपस्थित होकर अपना फरियाद कहते हैं । दधीचि लोककल्याणार्थ के योग-बल से अपना शरीर त्याग देते हैं ।[1] महाभारत में वृत्र को परम ज्ञानी एवं धर्मज्ञ के रूप में वर्णित किया गया है । एक बार यह त्रयलोक को जीतने की इच्छा से तप करता है एवं युद्ध के अवसर पर विष्णु के दर्शन भी करता है ।[2] वृत्र के तपोबल से सशंकित होकर इन्द्र ने उसका वध कर दिया एवं ब्रह्महत्या के आक्षेप के भय से इन्द्र जल में छिप गया ।[3] एवं ब्रह्महत्या से मुक्ति हेतु इन्द्र ने मंत्रपूत जल से स्नान किया ।[4] रामायण में उल्लिखित है कि ब्रह्महत्या से मुक्ति हेतु बृहस्पति आदि देवों ने देवेश्वर को आगे करके अश्वमेध यज्ञ किया ।[5]

---

1 महा०, आरण्यक०, 100/21, शल्य० 51/29,30, शान्ति० 242/40.

2. महा०, शान्ति०, 279/13-31.

"युयुत्सुना महेन्द्रेण पुंसा सार्धं महात्मना ।
ततो मे भगवान् दृष्टो हरिर्नारायणःप्रभुः ॥"
- महा०, शान्ति०, 279/28.

3. महा०, शान्ति, 282/10-18;
उद्योग०, 10/38-43.

4. रामा०, बाल०, 24/18-20.

5. रामा०, उत्तर०, 86/7-8.

इन्द्र का द्वितीय प्रमुख शत्रु नमुचि था । जिसका वर्णन महाभारत में 3 स्थलों पर उल्लिखित है ।[1] शल्यपर्व की कथा इस प्रकार है : एक बार नमुचि इन्द्र के भय से सूर्य-रश्मियों में समा गया किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इन्द्र ने उसके साथ एक संविदा की थी, जिसके अनुसार वे उसे किसी भी शस्त्र से - चाहे भीगा हो अथवा सूखा दिन अथवा रात्रि में नहीं मार सकते थे । आश्वासित होकर वह सूर्य-रश्मियों से बाहर निकल आया किन्तु इन्द्र ने विश्वासघात करके समुद्र के फेन से उसका शिरोच्छेद कर दिया । वह शीर्षभाग इन्द्र पर अभियोग लगाते हुए अनुगमन करने लगा । तदनन्तर इन्द्र अरुण नदी में स्नान करके कल्मष-मुक्त हुए महाभारत में वृत्र एवं नमुचि के वध की कथा में समानता दृष्टिगत होती है ।[2]

अपने दर्प में किये गये दुर्व्यवहार के कारण इन्द्र को अनेकों बार ऋषियों का कोपभाजन बनना पड़ा । इन्द्र के निषेध करने पर भी च्यवन ऋषि ने वैद्यराज अश्विनौ को सोमपान कराया । क्रुद्ध होकर इन्द्र ने उनका वध करने के लिए वज्र उठाया किन्तु तपोबल से उनकी दाहिनी भुजा स्तम्भित हो गयी एवं ऋषि ने इन्द्र के भक्षणार्थ मद नामक दैत्य की सृष्टि की ।[3] अन्ततोगत्वा विवश होकर इन्द्र को च्यवन ऋषि की शरण में जाना पड़ा ।

---

1. महा०, आरण्यक०, 25/10; 292/4;

"चिच्छेदास्य शिरोराजन्नपां फेनेन वासवः ।
तच्छिरो नमुचेश्छिन्नं पृष्ठतः शक्रमन्वियात् ॥"

"भो भो मित्रहन्पापेति ब्रुवाणं शक्रमन्तिकात् ।
एवं स शिरसा तेन चोद्यमानः पुनः पुनः ॥"

महा०, शल्य०, 43/37-38

2. महा०, उद्योग०, 10/1-39.

3. महा०, आरण्यक०, 124/13-21; अनुशासन०, 141/27.

सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में अहल्या के साथ इन्द्र के समागम का उल्लेख मिलता है किन्तु इस कथा को रामायण मेंराम के साथ संयोजित करके अत्यधिक रोचक बना दिया गया है। रामायण के बालकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड की ही कथा में कतिपय परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं। बालकाण्ड[1] में देवाधिराज इन्द्र गौतमऋषि का वेष धारण करके अहल्या के साथ समागम की याचना करते हैं। अतएव अहल्या स्वेच्छा से अभिगमन करती है। जब ऋषि को उन दोनों के कुकृत्यों का पता अदृश्य रूप से आश्रम में निवास करने का शाप देते हैं किन्तु साथ ही यह विधान कर देते हैं कि राम के इस आश्रम में प्रवेश लेते ही दर्शनमात्र से उसे अपना स्त्रीरूप पुन:प्राप्त हो जाएगा। उत्तरकाण्ड[2] में अहल्या छद्मवेषधारी इन्द्र को अपना पति गौतम समझकर ही आत्मसमर्पण करती है। देवशर्मा इन्द्र को परस्त्रीगामी कहते हैं।[3] क्योंकि उनकी पत्नी रुचि के साथ भी इन्होंने असंयत व्यवहार किया था।

महाकाव्यों में इन्द्र के मानवीय स्वरूप का प्रभावोत्पादक वर्णन किया गया है। कुन्ती के गर्भ से अर्जुन के जन्म के यहीं कारण बने एवं उनके जीवन-रक्षा

---

1. रामा०, बाल०, 48/18-33.

"वायुभक्षा निराहारा तप्यन्ती भस्मशायिनी।
अदृश्या सर्वभूतानामाश्रमे स्मिन् वसिष्यति ॥

यदा चैतद् वनं घोरे रामो दशरथात्मज:।
आगमिष्यति दुर्धर्षस्तदा पूता भविष्यसि ॥"

— रामा०, बाल० 50/30-31.

2. "अज्ञानाद् धर्षिता नाथ त्वद्रूपेण दिवौकसा।
न कामकाराद् विप्रर्षे प्रसादं कर्तुमर्हसि ॥"

— रामा०, उत्तर० 30/42.

3. महा०, अनुशासन०, 40/19.

हेतु ब्राह्मण वेष-धारण कर कर्ण से कवच एवं कुण्डल की प्राप्ति की ।[1] रावण-पुत्र मेघनाद ने इन्द्र को पराजित करके 'इन्द्रजित्' की उपाधि धारण की ।[2] खाण्डव दाह में अर्जुन ने इन्द्र को बुरी तरह परास्त किया ।[3] कार्त्तिकेय की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर इन्द्र ईर्ष्या के वशीभूत होकर उनकी शक्ति समाप्त करने के लिए युद्ध करते हैं, किन्तु विफल होने पर उसकी महत्ता स्वीकार करते हैं ।[4] इन्द्र निवात एवं कवच नामक असुर का वध करने के लिए पृथिवी-लोक से अर्जुन को बुलाते हैं ।[5]

महाभारत में एक विचारणीय प्रसङ्ग सोम का है । ऋग्वेद में इन्द्र श्येन नामक पक्षी के द्वारा द्युलोक से सोम मँगवाते हैं किन्तु इन्द्र यहाँ पर सोम लेने के लिए आये हुए गरुड़ का यथाशक्ति विरोध करते हुए सोम-रक्षक के रूप में वर्णित हैं।[6] वे अमृत-वृष्टि से कौरवों के द्वारा बाधित गन्धर्वों को जीवनदान देते हैं ।[7] राजा युवनाश्व के मातृविहीन पुत्र का पालन-पोषण अपनी अमृतवर्षिणी तर्जनी अंगुली को पिलाकर करते हैं ।[8] रामायण में ऐसा उल्लेख मिलता है कि पर्वतों के पंख हुआ करते थे । एक बार कुपित होकर इन्द्र ने वज्र से लाखों पर्वतों को पंखविहीन कर दिया[9]।

---

1. महा०, आरण्यक०, 293/23, 294/1-40.
2. रामा०, उत्तर०, 30/1-5.
3. महा०, आदि०, 226वाँ एवं 228वाँ अध्याय ।
4. महा०, आरण्यक०, 227वाँ अध्याय ।
5. महा०, 43/8-15.
6. महा०, आदि०, 33/18-25.
7. महा०, आरण्यक०, 245वाँ अध्याय ।
8. महा०, 126/27-29.
9. रामा०, सुन्दर०, 1/122-125.

महाकाव्यों में मानव-स्वभाव की परीक्षा लेना इन्द्र का महत्त्वपूर्ण एवं विशेष कार्य था । इसी सन्दर्भ में इन्द्र ने भारद्वाज-कन्या श्रुतावती[1], राजा शिवि[2] एवं कर्ण[3] की परीक्षा ली । एक स्थल पर इन्द्र शुक की परीक्षा लेते हुए वर्णित किये गये हैं, जो अपने शुष्क वृक्ष का परित्याग करके अन्यत्र कहीं भी जाने का इच्छुक नहीं है ।[4]

उपरोक्त जिन तथ्यों का प्रतिपादन किया गया है उनसे स्पष्ट होता है कि इन्द्र के गुणों में प्रमुखतः द्युलोक का प्रभुत्व और उनका प्राकृतिक रूप-वृष्टि-देव का भाव ही लक्षित होता है । इनकी प्रकृति से सम्बन्धित सर्वाधिक गहन मूर्तीकरण का कारण निश्चितरूप से कुछ वासनात्मक, विलासात्मक एवं अनैतिक प्रवृत्तियाँ ही हैं ।

---

1. महा०, शल्य०, 48/2-58.

2. महा०, आरण्यक०, 131वाँ अध्याय ।

3. महा०, आरण्यक०, 293/23, 294/1-40.

छ. इन्द्र का अन्य देवों से सम्बन्ध

इन्द्र का अन्य देवताओं के साथ सम्बन्ध किया गया है । दैत्यों के विनाश के लिए इन्हें देवों द्वारा उत्पन्न किया गया है ।[1] किन्तु यहाँ पर निश्चित रूप से 'जन्' क्रिया केवल 'निर्मित करने' के लाक्षणिक आशय में ही प्रयुक्त हुई है ।[2] इन्द्र तथा कुछ देवों को उत्पन्न करने वाले के रूप में एक बार सोम का उल्लेख है ।[3] पुरुष सूक्त में कहा गया है कि इन्द्र और अग्नि ब्रह्मा के मुख से निकले हैं ।[4] शतपथ ब्राह्मण के अनुसार इन्द्र के साथ ही साथ, अग्नि, सोम, परिमेष्ठिन् का प्रजापति से सृजन हुआ ।[5] तैत्तिरीय ब्राह्मण संहिता में यह व्यक्त किया गया है कि देवों में अन्तिम इन्द्र की रचना प्रजापति ने की ।[6]

---

1. Zeitschrift der Deutschen Morgenlandischen, Gesellschaft - 32.

2. Hiller brandt : Vedische Mythologie 1-2-13, पिशेल वेदिशे स्टूडियन, 3/51.

3. F.N. 1.

4. तु0की0 वही, 2/38.

5. ब्लूम फील्ड, फुट नोट नं0 । 2/38.

6. F.N. 1.

इनके प्रमुख मित्र तथा सहायक मरुद्गण हैं जिनका असंख्य स्थानों पर इन्द्र के युद्ध अभियानों में इनकी सहायता करने वाले के रूप में उल्लेख है । इन देवों में [मरुतों] से इन्द्र का घनिष्ठ सम्बन्ध है कि "मरुत्वत्" उपाधि जो यद्यपि कभी कभी कुछ अन्य देवों के लिए भी प्रयुक्त है इन्द्र की विशेषता है और इनका साथ ही "मरुद्गण" का प्रयोग मात्र ही इन्द्र का बोध कराने के लिए पर्याप्त है ।[1]

अग्नि के साथ इन्द्र को एक युगल देव के रूप में किसी अन्य देव की अपेक्षा कहीं अधिक बार संयुक्त किया गया है ।[2] यह स्वाभाविक भी है कि विद्युत अग्नि का एक रूप है यह भी कहा गया है कि इन्द्र ने दो पत्थरों के बीच से अग्नि को उत्पन्न किया ।[3] अग्नि को जल में छिपा हुआ पाया ।[4] इन्द्र को कभी कभी वरुण और वायु के साथ और कुत कुछ कम वार सोम, बृहस्पति, पूषन् और विष्णु के साथ सम्बद्ध किया गया है । इन देवों में विष्णु इन्द्र के विश्वासपात्र मित्र हैं और कभी कभी दैत्यों के साथ युद्ध में इन्द्र की सहायता भी करते हैं ।[5]

---

1. शतपथ ब्राह्मण 4/5-42.
   Journal of the Royal Asiatic Society, 9.65.

2. यास्क : निरुक्त 10.

3. Zeiterchrift der Deutschen Morgenlandischen, Gresellschaft - 1.

तीन या चार स्थलों पर इन्द्र का सम्बन्ध सूर्य के साथ हुआ है[1] प्रथम पुरुष में बोलते हुए इन्द्र यह कहते हैं कि एक समय में हम मनु और सूर्य के इन्द्र को एक बार प्रत्यक्ष रूप से सूर्य कहा भी गया है ।[2] और एक दूसरे मन्त्र में सूर्य और इन्द्र का एक इस प्रकार का आवाहन किया गया है मानों यह दोनों ही व्यक्ति हों[3] - एक स्थल पर इन्द्र को सवृत् के रूप में समाहित किया गया है । इन्द्र ही सूर्य तथा साथ ही साथ उषा को भी उत्पन्न किया है इन्होंने ही उषाओं और सूर्य को प्रकाशित किया[4] - यह सूर्य सहित उषा को चुराते हैं ।[5]

गायों और सूर्य के साथ विजय में सोम को भी सम्बद्ध किया गया है, जब इन्द्र ने अन्तरिक्ष में दैत्य को भगाया तब अग्नि, सूर्य और सोम रूपी इन्द्र का रस प्रकाशित हुआ[6] - दैत्य पर अपनी विजय के पश्चात् सोम को अपना पेय पदार्थ चुना[7]।

---

1. Hopkins : Religions of India, 92.

2. Hillebrandt Vedieche Mythologie 10-89.

3. Zeitchrift der Deutschen Morgenlandischen Gesellschft 32.

4. F.N. 2. 3/44.

5. रॉथ : निरुक्त 5.

6. F.N. 2, 8/3

7. पिशल : विदिशे स्टूडियन 3/36.

इन्द्र के सम्बन्ध में यह कहा गया है कि वह विष्णु, त्रित अथवा मरुतों के साथ बैठकर सोमपान करते हैं ।[1] त्रित की कन्यायें इन्द्र के पीने के लिए हरे रंग वाले सोमबिन्दुओं को पाषाण से निकालती हैं ।[2]

इन्द्र का साथी और मित्र होने के कारण वृहस्पति का अक्सर इन्द्र के साथ आवाहन किया गया है ।[3] इन्द्र के साथ सोम-पान करते हैं ।[4] इन्द्र की भाँति वृहस्पति को भी "मघवन्" कहा गया है ।[5] इन्द्र और वृहस्पति दोनों देवता युगल रूप में आते हैं ।[6]

इसके अतिरिक्त चार या पाँच सूक्तांशों में तथा 6 अन्य में इन्द्र, अग्नि, पूषन तथा रुद्र के साथ साथ युगल देव के रूप में आते हैं ।

---

1. Journal of the Royal Asiatic Society - Macdonell.

2. Gottinger Gelehrte Anzeigen, 1894, p. 427.

3. Zeitschrift der Deutschen Morgenlandischn Gesellschaft-1.

4. Oldenburg : die Religion desveda-p. 382.

5. Original Sanskrit Text, pp. 1-72.

6. Kuhn : Zeitschrift - Moir-77.

अङ्गिरसों को इन्द्र के साथ घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध किया गया है । इन लोगों ने इन्द्र के लिए गायों को प्रकट किया ।[1] इन लोगों के नेता के रूप में इन्द्र को दो बार अङ्गिरस्तम् अथवा प्रधान अङ्गिरस कहा गया है ।[2]

ऋग्वेद के अनेक स्थलों पर विवस्वत् के साथ सम्बद्ध किया गया है । इन्द्र विवस्वत् की स्तुति में आनन्द का अनुभव करते हैं और इन्होंने अपना समस्त धन कोष विवस्वत् के बगल में रख दिया था ।[3] विवस्वत् की दस ॥अङ्गुलियाँ॥ द्वारा इन्द्र द्युलोक से पात्रों के जल को नीचे गिराते हैं ।[4] विवस्वत् के निवास स्थान पर सम्बद्ध होने के कारण सोम को यहीं होने की सम्भावना पायी गयी है[5] और वास्तव में नवम् मण्डल में सोम को भी इन्द्र तथा विवस्वत् के साथ सम्बद्ध किया गया है ।

---

1. Crassmann : Worterbuch (Rigveda dexicon.

2. Kuhn : Herabkunft des Feuers end des Gottertranks -10.

3. Die Arische Periode, p. 248.

4. Oldenburg : Die Religion des Veda-122.

5. सेण्ट पीट वर्ग कोष - बर्गेन : La Religion Vedique,
   पृष्ठ संख्या 1-87.

इन्द्र विष्णु के साथ मित्रता है वृत्र के विरुद्ध लड़ाई में अक्सर विष्णु को इन्द्र के साथ दिखाया गया है । यहाँ इस तथ्य द्वारा प्रकट होता है कि एक सम्पूर्ण सूक्त {6-69} इन दोनों देवों को संयुक्त रूप से दिखाया गया है । इन्द्र का नाम विष्णु के साथ युगल देवता में प्राय: उतनी बार संयुक्त किया गया है, जितनी बार सोम के साथ इन्द्र आता है । यद्यपि यह बाद का देव {सोम} ऋग्वेद में विष्णु की अपेक्षा अधिक बार आता है । इन दोनों की घनिष्ठता का प्राय: इस बात द्वारा स्पष्ट होता है कि अकेले विष्णु की प्रशस्ति करने वाले सूक्तों में केवल इन्द्र ही एक ऐसा देव है जिसे इनके साथ अक्सर स्पष्टत: 7.99.1-155} अथवा उपलक्षणात्मक रूप से {7.99.1-154, 155} सम्बद्ध किया गया है ।[1] विष्णु ने अपने तीनों पग इन्द्र के ओज् {ओजसा} से युक्त होकर ही रखे थे ।[2]

इन्द्र ने सूर्य को उत्पन्न किया और इसे प्रकाशमान बनाया[3] इसे आकाश में उठाया । इन्द्र सोम के प्रकाश में सूर्य का पोषण किया । इन्द्र वरुण ने इसे आकाश में उठाया ।[4]

---

1. Festschrift an weber (Gurupuja Kaumudi) 97-100.

2. मूईर - Original Sanskrit Texts 4.

3. बर्गेन : La Riligion Vedic, pp. 1-6.

4. Zeitschrift der Deutschen Morgenlandihen, Gesellschft, pp. 2-223.

अत:उपरोक्त विद्वानों ने इन्द्र का सम्बन्ध रुद्र, अग्नि, पूषन्, वरुण, सवितृ बृहस्पति, सोम, विवस्वत्, आदि अनेक देवताओं के साथ बताया है और इन सब देवताओं के साथ इन्द्र का प्रभावशाली सम्बन्ध और आधिपत्य से यह प्रमाणित होता है कि इन्द्र एक प्रभावशाली और देवताओं का स्वामी था तथा उसका उस समय में प्रचलित या वर्णित सभी देवताओं में विशेष स्थान था । इस प्रकार हम इन्द्र को देवराज की उपाधि से विभूषित करते हैं ।

--------::0::--------

अध्याय तृतीय

ऋग्वेद द्वितीय मण्डल का हिन्दी अनुवाद
तथा प्रमुख पदों की व्याख्या

श्रुधी हवमिन्द्र मा रिषण्यः स्याम ते दावने वसूनाम् ।

इमा हि त्वामूर्जो वर्धयन्ति वसूयवः सिन्धवो न क्षरन्तः ॥ । ॥

अन्वय - इन्द्रः हवं श्रुधी मा रिषण्यः, ते वसूनाम् दावने स्याम ।
इमाः वसूयवः सिन्धव हि ऊर्जः क्षरन्तः त्वां वर्धयन्ति ॥

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! आह्वाहन को सुनो । हिंसा मत करो । तुम्हारे धनों के दान के सन्दर्भ में पात्र हो जावें । यजमान को धन प्रदान करने की इच्छा वाली वहती हुई नदियों के सदृश्य [हविष्य] सचमुच तुझे प्रबुद्ध करें ।

इन्द्र - [इन्द् + रन् , इन्दतीति इन्द्रः, इदि ऐश्वर्ये - मल्लि0] 1. देवों का स्वामी, 2. वर्षा का स्वामी, वृष्टि, स्वामी या शासक [मनुष्यादिक का] प्रथम, श्रेष्ठ, [पदार्थों के किसी वर्ग का] सदैव के अन्तिम पद के रूप में - नरेन्द्रः - मनुष्यों का स्वामी अर्थात् राजा इसी प्रकार मृगेन्द्र - गजेन्द्र, योगन्द्रि, वेदों में प्रथम देवता के रूप में इन्द्र का वर्णन मिलता है । परन्तु पुराणों में द्वितीय श्रेणी में माने जाते हैं, ये कश्यप और अदिति के पुत्र हैं । ब्रह्मा, विष्णु, महेश के जिक्र से निरन्तर हैं । परन्तु यह दूसरे देवताओं में प्रमुख हैं । सम्भवतः इन्हें देवेन्द्र, सुरेन्द्र माना जाता है इनका लोक स्वर्गलोक माना जाता है । यह वज्र धारण करते हैं और विजली भेजते हैं । वर्षा करते हैं और असुरों के प्रायः युद्ध में लगे रहते हैं और भयभीत करते रहते हैं । परन्तु कई बार उनसे परास्त भी हो जाते हैं । पुराणों में वर्णित इन्द्र कामकता तथा व्यभिचार के लिए विख्यात है । इसका सबसे बड़ा उदाहरण गौतम ऋषि की नारी अहिल्या या सतीत्वहरण है रावण को पुत्र/इन्हें हराकर लंका ले गया और इसीलिए अपने पुत्र का नाम इन्द्रजीत रखा और बाद में देवताओं के अनुनय विनय पर इन्द्र को छोड़ दिया । वह [इन्द्र] देवताओं को प्रायः 100 यज्ञ करने से रोकता था उसका विचार था कि जो 100 यज्ञ पूरा कर लेगा वह इन्द्र की कुर्सी को प्राप्त कर लेगा । - वामन शिवराम आप्टे ।

Indra chief of the Vedic gods, Highest, Chief, Prience, Indras blow, rain bow, girim. of a mountain, Magican, वेद में मनुष्य देवता इन्द्र है । महान्, मुख्य, राजा, वर्षा का स्वामी, वृष्टि, पर्वतों का जादूगर - मैकडानल ।

Of the national gods of the Indoaryans, later also chief frist the best of ones, भारतीय आर्यों में इन्द्र विख्यात या व्याप्त देवता है इनका स्थान देवताओं में प्रथम स्थान पर है । - का० कापलर ।

इन्द्र व्यक्ति-विशेष का नाम नहीं होता, यह देवराज की उपाधि है । इन्द्र वर्षा का स्वामी है यह अर्थ अत्यधिक उचित प्रतीत होता है ।

<u>श्रुधी</u> - श्रुधी - श्रृणु - शायण । hear - सुनो, विल्सन ।

call - पुकारो - ग्रिफिथ । hear - सुनो - एम०एन० दत्त ।

hear - मैकडानल । hearing - पी०के० गोड्से, सी०जी० कार्वे ।

hear - सुनो - मोनियर विलियम । अतएव सुनो शब्द यहाँ पर अत्यधिक उचित प्रतीत होता है ।

<u>मा रिषण्य:</u> - क्रिया पद क्षति न पहुँचाओ, नष्ट मत करो, लोट लकार म०पु०ए०व० । सा०मु० मा हिंसी । वा० शि०आ०

disregard it not, नष्ट न करो - विल्सन ।

be not headless - ग्रिफिथ । disregard it not - मैक्समूलर,

disregard it not - एम०एन० दत्त । अतएव क्षति मत पहुँचाओं यह अर्थ अर्थ अत्यधिक समीचीन होगा ।

<u>वसूनाम्</u> - {मू} क: {वसु + कै + क} धन, दौलत, स्वयम् प्रदुग्धे स्य गुणैरूपैस्नुना वसूय-मानस्य वसूय मे दिनी कि० 1-18, रघु० 8-31. वा० शि०आ० ।

Good, beneficiant, of various gods and of gods in general, the vasus a class of gods, Indra in their chief - मैकडानल

Of a gods or a class of gods, n. of sev men :- का० कैपलर ।

To obtain wealth - एम०एन० दत्त ।

To obtain wealth - विल्सन । यहाँ पर धन अर्थ अत्यधिक उचित होगा ।

<u>दानवे स्याम</u> - {दुनाति दु + ष} दव: - सम० अग्नि: - अनल दहन दावाग्नि - वा० शि०आ० ।

To be stablished -		का० कैपलर
Of the gift of thy tressures -		एम०एन० दत्त
May be perhaps -		मैक्डानल

यहाँ पर अग्नि अर्थ अत्यधिक समीचीन होगा ।

सिन्धव: - इव घृतक्षरणोपेतानि - सा०भु० ।

Like rivers -	नदियों जैसा	एम०एन० दत्त
Like rivers -	नदियों के सदृश	का० कैपलर
Like rivers -	नदियों के सदृश	विल्सन
Like streams -	झरनों के सदृश	ग्रिफिथ
Like streams -	झरनों के सदृश	मैक्डानल

प्राय: सभी विद्वानों ने सिन्धव: शब्द की व्याख्या नदियों के सदृश ही किया है।

वर्धयन्ति - वृध - वर्धन् - विस्तृत करने वाला, बढ़ाने वाला, मु०सा० वर्धयन्ति - वा०शि०आ०

To increase,	बढ़ाने वाला	मैक्डानल
To growing -	विस्तृत करने वाला	का० कैपलर
Strengthaning -	शक्तिवर्द्धक	मो०वि०
To exhiterting stowing -		एम०एन० दत्त
increase thy -	बढ़ाने वाला	ग्रिफिथ
Stowing -	प्रदत्त करने वाला	विल्सन

अतएव विस्तृत अर्थ अत्यधिक उचित होगा ।

सृजो महीरिन्द्र या अपिन्वः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वीः ।

अमर्त्य चिद्दासं मन्यमानमवाभिनदुक्थैर्वावृधानः ॥ 2 ॥

अन्वय - इन्द्र याः महीः सृजः अपिन्वः शूरपूर्वीः अहिनापरि स्थिताः उक्थैः ववृधानः अव अभिनत अमर्त्यम् चित् दासम् मन्य मानम् ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! तुम जिन विशाल जल राशियों को उन्मुक्त किया हे शूर ! पूर्वकालीन अहि के द्वारा परिष्ठित उन जलराशियों तुमने बढ़ाया । उक्थौ को प्रबुद्ध होते हुए इन्द्र ने अपने को आमरण धर्मी समझने वाल हिंसक को मार डाला ।

महीः - महीः महतीरपः   शायण

महि ॥वि0॥ महान, बड़ा 1/116/6 ऋक् सू0 वैजंतीमाला । Hero - एम0एन0 दत्त । Great - बड़ा, Greatly - महान्, Much - अधिक, का0कैपलर । Ground soil - भू-क्षेत्र, Land - भूमि Country - देश, Kingdom - राज्य, Earth - भूमि विल्सन, Great and many - ग्रिफिथ । यहाँ पर महान् शब्द अत्यधिक उचित प्रतीत होगा ।

सृजः - सृजः व्यसृजः -   शायण

Emitting,hurling,casting,creating,produing -

॥तुदा0पर0 सृजति सृष्टि॥ रचना करना, पैदा करना, जन्म देना, अर्धनारी तस्या स विराजमसृजत प्रभुः मनु0 9/32   वा0शि0आ0

discharing , emitting, shedding, creating, Produing ,

- उन्मुक्त किया - मैक्डानल thou nest free - विल्सन । यहाँ पर रचना करना अर्थ अत्यधिक समीचीन होगा ।

अपिन्वः फैलाया, बढ़ाया, विस्तृत किया, वर्धन किया, सा0मु0 अवर्धन् ।

Were formly , avrested - विल्सन setted free - ग्रिफिथ, To away from away from exsp - मैक्डानल ।

Set free - मो० वि० । a draught - मैक्स मू० ।
यहाँ पर विस्तृत किया अर्थ अत्यधिक समीचीन है ।
उक्थैः- वच् + थक् - वाक्य के द्वारा, कथन के द्वारा, स्त्रोत के द्वारा - वा० शि० आ०

Praise - प्रार्थना - मैकडानल, Invocation - याचना - मो० वि०, Saying - विनती किया ‖प्रार्थना‖ - का० कैप०, Invigorated - विनती के द्वारा बुलाया - एम० एन० दत्त, विनती ‖स्त्रोत‖ स्तुति - विल्सन - Invigoted ; Of Praise - विनती - ग्रिफिथ, उक्थैः सत्रैः - शायण । प्रार्थना शब्द यहाँ पर अत्यधिक उचित प्रतीत होता है ।

अमर्त्यम् - ‖वि०‖ ‖न० त०‖ जो मरण धर्मा न हो, दिव्य, अविनाशी, भावे पि -

रघु० 6/83, भुवनम् स्वर्ग वा अनिश्वरतार्त्यः देवता सम० अपगा - देवनदी, गंगा की उपाधि विक्र० 18/104 वा० शि० आ० । Immortal, Neectarlikeor, consisting of neectar - का० कैप० । Immortal - जो अमर हो - एम० एन० दत्त । Immortal - जो मरणशील न हो - विल्सन, Immortal - जो आमरणधर्मी - ग्रिफिथ । यहाँ पर अविनाशी शब्द अत्यधिक समीचीन होगा ।

अवाभिनत - भिदिर विदारणे लिङ्गशिपि रूपम्, अवाङ्गमुखम् यथा भवति तथा-शायण,

Hast cast down	-	एम० एन० दत्त ।
Facing down ward	-	मैकडानल ।
Down ward	-	का० कैपलर ।
Pentest Pieelmeal	-	ग्रिफिथ ।
Cast down headlong	-	विल्सन ।
Though hast cast down headlong	-	मैक्स मू०

यहाँ पर नीचे की ओर उन्मुक्त अर्थ अत्यधिक उचित प्रतीत होता है ।

उक्थेष्विन्नु शूर येषु चाकन्स्तोमेष्विन्द्र रुद्रियेषु च ।

तुभ्येदेता यासु मन्दसानः प्र वायवे सिस्रते न शुभ्राः ॥ 3 ॥

अन्वय - शूर इन्द्र ! रुद्रियेषु येषु उक्थेषु स्तोमेषुवः च येषु नु चाकन् इव् यासु एसः मन्दसानः प्र वायवे एता शुभ्राः न सिस्रते ।

हिन्दी अनुवाद - हे शूर ﴾इन्द्र﴿ ! रुद्र से सम्बन्धित जिन स्तुतियों मेंतुम अब भी कामना करते हो तुम्हारे लिए ही हैं जिनके ऊपर तुम प्रसन्न रहते हो गतिशील इन्द्र के लिए दीप्तिपूर्ण धवलवर्ण वाली स्तुतियाँ तुम्हारे पास जाती हैं ।

रुद्रियेषु - ﴾पु० एक देवता का नाम﴿ वि० ﴾रोदति - रुद् + रक्﴿ भयानक, भीषण, भयंकर, देवसमूह, विशेष ﴾गिनती में ग्यारह﴿ ऐसा माना जाता है । कि शिव के ही अपकृष्ट रूप हैं शिव स्वयं में ही एक मुखिया है - रुद्राणां शंकरश्चास्मि भग० 10/23 रुद्राणाम पि मूर्धानः क्षतहुंकारसंशिन - कुमा० 2/26.

2. शिव का नाम है समः अक्षः एक प्रकार का वृक्ष ﴾अक्षम﴿ इस वृक्ष के फल के बीज जिनसे रुद्राक्ष की माला बनायी जाती है । भस्मोद्धूलन भद्रमस्तु भवते रुद्राक्षमाले शुभम् - काव्य० ।

rud - ra - a - roaring, terrific, storնged (Chief of the Maruts) Rudra is sts in Br. regarded as a from of agni but is later identified with shiva - मैक्डानल ।

a.e. of sev gods (as the red or howling) m.n of the god of tempests (later identid w. shivaO suder of the Maruts Pl. his sons the rudra or maruts - कार्वे कैपलर ।

Sons of Rudra - ग्रिफिथ ।

The Praises attered by the worshippers - एम०एन० दत्त ।

स्तोम - ॥पु० /स्तु - स्तुति, स्त्रोत - 1.48.18 ॥स्तु + मन्॥ स०ब०व० - प्रशस्ति, स्तुति, सूक्त, यज्ञ, आहुति, जैसा कि ज्योतिष्टोम, अग्निष्टोम् में, भस्म-स्तोम पवित्र ला छनमुरो धके त्वचं रौरवीम् उत्तर० 4.20 - वा०शि०आ० । Praise - प्रार्थना - मैक्डानल । In the praise - विनती से - मैक्समूलर With praise - प्रार्थना द्वारा - का०कैपलर, In (that of) Praise - एम०एन० दत्त । स्तुति अर्थ अत्यधिक उचित है ।

मन्दसान: - मन्द + शानच् अग्नि, जीवन, निद्रा ॥मन्द सानु भी लिखा जाता है॥ वा०शि०आ० । मन्दसान: हृष्यन भवसि - शायण । मन्दसान: ॥वि० / मन्द॥ अत्युत्कृष्ट, आनन्दयुक्त - 4.40.10 ऋक् सू०वै०मा० । Joyous, glad, exhilaration, in toxicated - आनन्दयुक्त, प्रसन्न, स्वस्थचित - मैक्डानल । enjoiying, pleased, glad, intoxicated - आनन्दित, विनम्र, प्रसन्न, मौजी - का०कै० । Delightest - प्रमोदित-विल्सन । Delight approaches - प्रसन्न रहना - ग्रिफिथ । आनन्दयुक्त अर्थ उचित है ।

वायवे - ॥वि०॥ ॥स्त्री० + वी॥ वायु + अण् - वायु से - सम्बद्ध या प्राप्त 2. हवाई, - वा०शि०आ० । वायवे अस्मदीयम् यज्ञं प्रत्यागच्छते - शायण । Relating, belonging, sacred to, sprung from the wind, air, god of wind - मैक्डानल । Relating the the wind - वायु से सम्बद्ध - का०कैप० । वायु अर्थ अत्यधिक समीचीन है ।

शुभ्रा: - ॥शुभ्र + टाप्॥ गंगा, स्फटिक, वंश लोचन - वा०शि०आप्टे । शुभ्रा दीप्य-माना: स्तुतय: - शायण । Beautiful, White, Pure, Clear - - सुन्दर, सफेद - का०कैपलर । ॥वि० / शुभ्॥ सुशोभित, सुन्दर, ऋक् सू०वै० । Radiant, splended, beautiful, handsome - सुन्दर, अच्छा, ताजा, मैक्डानल । यहाँ पर स्फटिक के सदृश सफेद अर्थ अत्यधिक समीचीन प्रतीत होगा ।

शुभ्रं नु ते शुष्मं वर्धयन्तः शुभ्रं वज्रं बाह्वोर्दधानाः ।

शुभ्रस्त्वमिन्द्र वावृधानो अस्मे दासीर्विशः सूर्येण सह्याः ॥ 4 ॥

अन्वय - इन्द्रः ते शुभ्रं शुष्मं वर्धयन्तः (ते) शुभ्रं वज्रं बाह्वोर्दधानाः वावृधानः शुभ्रं त्वं अस्मे दासीः विशः सूर्येणा सह्याः ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! हम लोग तुम्हारे उज्ज्वल शक्ति को प्रबुद्ध करते हुए तुम्हारे शुभ्र वज्र को तुम्हारे बाहुओं पर रखते हैं । हे इन्द्र प्रबुद्ध होते हुए दस्युओं की प्रजा को हमारे लिए वज्र के द्वारा पराजित कर दो ।

शुभ्रं शुष्मम् - शुभ्रं (वि०) शुभ् + रक् चमकीला, उज्ज्वल, देदीप्यमान, शुष्मम् - शुष् + मन्, किच, पराक्रम, सामर्थ्य, प्रकाश, कान्ति, - वा० शि० आप्टे । Brilliant strenght - देदीप्यमान सामर्थ्य - विल्सन । addestrength उज्ज्वल कान्ति - ग्रिफिथ । deinenbaken - उज्ज्वल प्रकाश - एम० एन० दत्त । brilliantstrength - देदीप्यमान सामर्थ्य - मो० विल्सन । Shining splashing - का० कैग० । Radiant Gushing - प्रकाशयुक्त - मैक्डानल । यहाँ पर देदीप्यमान अर्थ ही उचित है ।

बाह्वोर्दधाना - बाहु (बाध् + कु, धस्य हः) भुजा । दधाना - / दा, दधते - पकड़ना, धारण करना पास रखना, उपहार देना, मु० सा० - निदधाना (स्तूयमानो हि इन्द्रः असुरवधाय वज्रमादत्त इतीध्मस्येषु आयुधं निदधाना भवामः - वा० शि० आप्टे । Placing the thunder bolt in the hands; असुर संहार हेतु वज्र को हाथ में धारण करने वाला - विल्सन । Vigour laying with in thine arms the splinded thunderbolt - हाथ में वज्र को शत्रु संहार हेतु धारण करना - एम० एन० दत्त । Draps from the arms - मैक्डानल । Laying the strong in the arms - हाथ में वज्र धारण करना - का० कैगलर । Placing the thunder bolt in the hands - हाथ में वज्र धारण करना - मैक्समूलर । यहाँ पर भुजा में वज्र धारण करना अर्थ अधिक समीचीन होगा ।

वज्र. - जम [वज् + रन्] वज्र, विजली, इन्द्र का शस्त्र [कहते हैं कि इन्द्र का वज्र दधीचि की हड्डी से बना था। आशंसन्ते समिति षु, सुरा, सक्त वैरा: हि दैत्येरस्या धिज्ये धनुषि विजयम् पौरधते च वज्रे - श0 2.15 - वा0शि0 आप्टे।

वज्र आयुधं - शायण। वज्र [पु0] इन्द्र के शस्त्र का नाम -1-32-2- ऋक् सू0वै0मा0

thunder bolt - वज्र - का0कैम0। thunder bold - इन्द्र का हथियार वज्र - मैकडानल। Speendid thunder - कठोर अस्त्र - ग्रिफिथ। The thunder bolt - वज्र - विल्सन। इन्द्र का शस्त्र अर्थ ही उचित है।

दासी: - [दास + ङषि] सेविका, नौकरानी, शूद्र की पत्नी, वेश्या - सम0 पुत्र, सुत, सेविका, गुलाम स्त्री का पुत्र [जिस समय सं0व0ए0व0 दास्या शब्द समास के अन्त में प्रयुक्त होता है उसका शाब्दिक अर्थ नष्ट हो जाता है उदाहरण - दास्या पुत्रै: छिनाल का बेटा [हराम का बेटा एक प्रका का अशब्द] - वा0शि0आप्टे

daryah Putra m. Son of slave - सेविका-शूद्र का पुत्र - मैकडानल। evil deman, or an unifidel - का0 कैम0। दासी: उपक्षयित्री: - सायण। Servaile people - सेवक लोग - विल्सन। the dosaroces- ग्रिफिथ। दासी दास [वि / दस्] दास सम्बन्धी 2.12.4 ऋक् सू0 वै0मा0 यहाँ पर शूद्र की पत्नी अर्थ अत्यधिक समीचीन होगा।

विश:- [पु0 विश + क्विप्] तीसरे वर्ण का मनुष्य, वैश्य, मनुष्य, राष्ट स्त्री0 राष्ट प्रजा, पुत्री, सम0 - प चम सामान व्यापारिक माल - पीत: [विशापति भी राजा प्रजा का स्वामी - वा0शि0 आप्टे। विश: [स्त्री] प्रजा लोग गृह विश्वपति 1.24.। ऋक् सू0वै0मा0। incorrfor - मैकडानल। dwelling, community, trilbe people third caste - का0 कैम0। राजा प्रजा का स्वामी अर्थ अत्यधिक उचित प्रतीत होता है।

गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमप्स्वपीवृतं मायिनं क्षियन्तम् ।

उतो अपो द्यां तस्तभ्वांसमहन्नहि शूर वीर्येण ॥ 5 ॥

अन्वय - शूर गुहा हितं गुह्यम् गूळ्हं अपीवृतं मायिनं क्षियन्तं उतो अपो द्यां तस्तभ्यांसं अहिम् वीर्येण अहन् ॥

हिन्दी अनुवाद - हे शूर ! गुफाओं में स्थित छिपाने योग्य जलों में छिपे हुए मायावी राक्षसों से निवास करते हुए जलों तथा आकाश को भी स्तब्ध किये हुए अपने ॥पराक्रम॥ से अहि को मार डाला ।

शूर - ॥चुरा०उभ० शूरपतिते॥ शौर्य के लिए कार्य, ताकतवर शक्तिशाली होना, प्रबल उद्योग करना । ॥वि०॥ ॥शूर + अच्॥ बहादुर वीर, पराक्रमी, ताकतवर, शूरा: न के काव्य 6 शूरमा योद्धा, पराक्रमी, तिरस्करीय योद्धा सिंह, सूअर, सूर्य, साल का पेड़, कृष्ण का दादा एक यादव महावीर 6/32 - वा०शि० आप्टे । Heroic, warlike, valiant, brave, heroism - मैक्डानल । Mighty, warrior, heroamuns, name - का०कैपलर। शूर शक्तिशाली 1.32.12. ऋक्.सू०वै०मा० । यहाँ पर पराक्रमी अर्थ अत्यधिक उचित है ।

गुहा - गुह + टाप् - गुफा, कन्दरा, छिपने का स्थान, गुहा निबद्ध, प्रनि शब्द दीर्घम् रघु०महा० 2.28.2 धर्मस्य तत्वम् निहितम् गुहायाम - छिपाना - ढकना - गढ़ा बिल हृदय सम० अहित ॥वि०॥ हृदय में रखा परम ब्रह्म मुख ॥वि०॥ गुफा जैसे मुख वाला, चौड़े मुख का चूहा, शेर - परमात्मा - वा०शि० आप्टे । Cave, Pit, Mine, heart, Inter - गुफा, गढ़ा, खदान, हृदय, अन्दर की, in creat, secretly - गोपनीय, का०कै० ॥अ /गुह, / कृ / धा - नष्ट प्राप्त करना छिपाकर रखना 2.12.8 ऋक्.सू०वै०मा० । hiding Please, cave, in most heart, in creat, in guha, in hiding, remove - मैक्डानल । यहाँ पर कन्दरा अर्थ उचित प्रतीत होता है ।

गुह्यम् : ।सं0 + कृ0। ।गुह + क्यप्। छिपाने के योग्य, गोपनीय, गुप्त, रखने के योग्य, निजी, गुह्यम् च गूहति भतृ0 12.111.2, गुप्त, एकान्तवासी, विरक्त, ।सेवा निवृत्त। रहस्यपूर्ण भग0 18.63, ह्य: - पाखण्ड, कछुआ, भेद, रहस्य, मौन, चैवास्मि, गुह्यानाम् - मनु0 12.11.2.

गुप्त इन्द्रिय पुरुष या स्त्री के जनीन्द्रिय समा0 गुरु शिव का विशेषण दीपक:, जुगम् - निष्पन्द: मूत्र: - भाषितम् - गुप्तवार्ता भेद, हरहस्य की बात भय: कीर्ति का विशेषण - ; वा0शि0 आप्टे ।

गुह्यं ।वि0। गुप्त, अदृष्ट - 6.10.3 ऋक् सू0 वै0 ।

Hidden or caverred, sacret, secretly - का0कैम0 ।

to be concealed,hidden,or,kept secret,mosterious - मैक्डा0 ।

mysterious - ग्रिफिथ, hidden - विल्सन ।

द्याम् - ।स्त्री0। ।कतृ + एक0ब0 द्यौ0। ।द्युहा + डो। स्वर्ग वैकुण्ठ आकाश द्यौर्भूमिरायो हृदयं यमश्च - पंच0 1.82 ।द्वन्द समास द्यौ को बदलकर द्यावा हो जाता है - उदा0 द्यावा पृथ्वीयौ द्यावा भूमि ।द्युलोक और भूलोक। समा0 भूमि पक्षी सद् ।द्यौषद्। देवता - वा0शि0आप्टे । Sky - का0कैम0 ।

in the sky - विल्सन ।

वीर्येण - ।वीर + तृतीय ए0व0। ।वीर + यत्। शूरवीरता, पराक्रम, बहादुरी, वीर्यावदानेषु कृतावमर्षा: - कि0 3.43, रघु0 बल, सामर्थ्य, पुरुषत्व, साहस, वा0शि0 आप्टे । manliness, courage, strength, heroic, deep, semen, Virile - का0कैम0 ।

manliness, Valour, Power, Potency, efficacy, heroic, deep, manly vigour, - मैक्डानेल । Deep - ग्रिफिथ,

मायिनम् - ॥वि॥ ॥माया + इनि॥ दे0 मायाविन पु0 1. बाजीगर, 2. धूर्त,
3. ठग, 3. ब्रह्मा या काम का नामान्तर । वामन शिवराम
आप्टे - जादू की शक्ति रखने वाला - a passessing magical/ power कलाकार - artful - चतुर - wise - धूर्त - cunning, diceitful; m. magician juggler; n. magic. magical art - का0कैप0 ।
acting decietfully, intent on deceit and fraud, abounding in magic art, skilled in witch craft, Trickness, Versatility, Prince of the Sabaras.
मैकडानल । Dwelling envelbped - ग्रिफिथ । Lasking in Conclalment - विल्सन ।

अप: - ॥स्त्री0॥ ॥आप + क्विप्॥ हूस्वश्च ।॥परिनिरिधतभाषा में केवल ब0व0 में ही रूप होते हैं । यथा आप: , अप:, अद्भि:, अद्भ्य:, अपाम्, अप्सु परन्तु वेद में एकवचन और बहुवचन में भी होते हैं । पानी खानि चैव स्पृशेदद्भि: - मनु0 2.60 पानी बहुधा सृष्टि के पाँच तत्वों में सबसे पहला तत्व समझा जाता है ।वा0शि0 आप्टे । अप: 1. be active work; 2. (also sg. in V.) water; 3. ad, off, away (o); PrP away from except (ab) .
मैकडोनल 1(F. work 2. f. Pl. (Sgl.only in V.)Water, Waters - का0कैप0 in the water ; ग्रिफिथ । Water - विल्सन ।

अहिम - ।वि0॥न0त0॥, जो ठंडा न हो, अंशु, कर:, तेजस् , द्युति, रुचि, सूर्य । आप्टे - शि0। Not Cold जो ठंडा न हो, Warm - गर्मयुक्त। का0कैप0 । Rasmi - किरण - मैकडोनल ।

अह्न् - ॥नपुं0॥ ॥न जहाति, त्यजति सर्वथा परिवर्तनम् , न + हा + कनिन् न0त0॥ ॥कतृ0 अह:, अहनी - अहनी, अहानि - अह्न अहोभ्याम् आदि॥ 1. दिन

और रात दोनों को मिलाकर। अघाहानि - मनु0 4.84.2, दिन का समय सव्यापारामहनि न तथा पीडयेन्मद्वियोग: मेघ0 90 - यदहनाकुरुते पापम् - दिन में - वामन शिवराम आप्टे । अहन् day अहन्य इति and अहरहस् Every day प्रत्येक दिन , Daily; उभे अहनी, day अहन्य a daily - का0कैप0 । अहन् - ahan n. day, ahani ahani, day by day ubhe ahani, day and night, ahabhis every day - मैकडानल ।

स्तवा नु त इन्द्र पूर्व्या महान्युत स्तवाम नूतना कृतानि ।

स्तवा वज्रं बाह्वोरुशन्तं स्तवा हरी सूर्यस्य केतू ॥ 6 ॥

अन्वय - इन्द्र ते पूर्व्या महानि उत नु स्तवा नूतना कृतानि स्तवाम ।
वज्रम् वाहो: उशन्तम् स्तव सूर्यस्य केतू इति हरी इति स्तव ॥

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! हम (तुम्हारे) पूर्वकालीन महान् कार्यों की स्तुति करें और हम (तुम्हारे) नूतन कर्मों की भी स्तुति करें ।
तुम्हारे दोनों भुजाओं पर चमकते हुए वज्र की स्तुति करें और तुम्हारे पराक्रम के सूचक स्वरूप दोनों अश्वों की स्तुति करें ।

स्तव: - (स्तु + आप) प्रसंशा करना, विख्यात करना, स्तुति करना, 2. प्रशंसा, स्तुति, स्तोत्र - वामन शि0 आप्टे । Praise, प्रार्थना, hymn.
song - गान करना, का0कैप0 । Stav-a, m(stu) Praise, eulogy, Panegyric, Song of Praise - मैकडानेल ।
Praise - प्रार्थना यथोचित प्रतीत होता है ।

पूर्व्या -(वि0) (पूर्व + अच्) जब काल दिशा की दृष्टि से सापेक्ष स्थिति प्रकट की जाती है तो इस शब्द के रूप में सर्वनाम की भांति होते हैं परन्तु वह भी कर्तृ0ब0व0 तथा अपादान ब0व0, अधिकरण ए0व0 में विकल्प से) सामने होने वाला प्रथम, प्रमुख, 2. पूर्वी पूर्व दिशा में स्थित के पूर्व में ग्रामात्पर्वत: पूर्व:' 3. पहले क से पहला 4. पुराना, प्राचीन पूर्व सुरिभि: रघु0 1.4,5. पूर्वोक्त विगत पिछला पहला पूर्वगामी (विप0 उत्तर) इस अर्थ में प्राय: समास के अन्त क्रमें पूर्ववर्ती से युक्त वा0शि0 आप्टे - of farmer time ; का0कैप0 Purvaya (or common: Purvya) farmer, ancient, Preceding, First next, most excellent

मैकडानल, of old- प्राचीन - विल्सन, a fore time- पूर्वनिर्धारित - ग्रिफिथ। Ancient - प्राचीन शब्द अधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

महा नि - [कर्म०स० और ब०स० में प्रथम पद के रूप में तथा कुछ अन्य अनियमित शब्दों के आरम्भ में प्रयुक्त "महत् का स्थानापन्न रूप] [विशे० उन समस्त शब्दों की संख्या जिनका आदि पद महा है बहुत अधिक है तथा और अनेक शब्द बन सकते हैं । उनमें से अपेक्षाकृत कुछ विशिष्ट शब्द युक्त हैं स्थूल काल, महाकाय, एक पहाड़ का नाम है अप्रत्यय: संकट का भारी खतरा अध्वर: बड़ा यज्ञ अनसम् भारी गाडी के अनुभाव महाप्रतापी इत्यादि - वामन शिवराम आप्टे । great - महान्, big- बड़ा, large - विशाल, tall- लम्बा, extensive विस्तृत, long - अधिक, protected - सुरक्षित, for advance-विशेष, high - अधिक, much - अनेक, abundant - प्रचुरता, numberous- गणमान्य, entènsive - आकर्षक, Thicktense- धनापन्न, mighty - महान्, important - महत्त्वपूर्ण, high - उच्च, noble - योग्य, eminent - वरिष्ठ, Distinguised- श्रेष्ठ - का०कै०प० । Maha great (occurs as an independent adjective only in the R.V. ac maham) This word is very frequent - मैकडानल । Great - महान् - ग्रिफिथ, mighty - महान् - विल्सन । अतएव Great महान् अर्थ अधिक उपयुक्त है ।

नूतना - [वि०] [नव + तनप् [त्नवा] नू आदेश] 1. नया नूतनोराजा समाज्ञपयति उत्तर । रघु 8. 15, 2. ताजा बच्चा, 3. भेंट उपहार 4. तात्कालिक 5. हाल का आधुनिक, 6. कुतूहलपूर्ण अजीब - वामन, शिवराम आप्टे । nu-tana a new, ताजा, young - नवीन, Fresh- ताजा, youthfull- शक्तिशाली, (age) recent - आधुनिक, Present - वर्तमान, novel - अपूर्व strange - शक्ति, tna, a. id, future - भविष्य - मैकडानल।

a new recent - नवनिर्मित, fresh - ताजा, young - नवीन ।
का0कै0 । recent - आधुनिक - विल्सन । Present -वर्तमान अर्थ
अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

वाहुवो - {=वाहु पृषो वह् + णिच् + अच् , वाक्योरभेद:} 1. भुजा, 2. घोड़ा-
सप्तमी द्वि0व0 । - वामन शिवराम आप्टे । m. arm - भुजा, esp.
fore - arms - चतुर्भुज (of feasts) fore leg-चतुष्पाद, esp. its
upper part - अपर भाग, a cert.measure of/ मापनी, - का0कै0 ।
bhu-u(strong:bah arm esp. {चार भुजा, fore - armm, fore foot of
an animal -
पशुओं के तरह चार पैर - मैक्डानेल, armliess - भुजायुक्त - ग्रिफिथ ।
thin arms - दुर्बल भुजाएँ + विल्सन । वाह्योरन्तम् दीप्यमानम् - शायण।
fore arms - चार भुजा वाले अर्थ अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

हरी - {वि0} {हृ + इन्} हरा, पीला 2. खाकी, लाल रंग का, लालीयुक्त
भूरा, कपिल - हरिं युग्मं रथं तस्मै प्राजिधाय पुरन्दर: रघु0 12. 84
3.43.3 पीला, रि 1. विष्णु का नाम - हरियै थक: पुरुषोत्तम: स्मृत: रघु0
3.49.2 - इन्द्र का नाम 3. शिव का नाम, ब्रह्मा का नाम, यम का नाम,
चन्द्रमा, प्रकाश की किरण, अग्नि, पवन, सिंह, घोड़ा, इन्द्र का घोड़ा - वामन
शिवराम आप्टे । a. fallow - भूरा,Yellowish-पीला, greeish -
------------- हरित, m.horse esp.- घोड़ा Steeds of Indra इन्द्र का
घोड़ा, Lion epe.सिंह, the Sun-सूर्य, fire -अग्नि, wind-वायु E. of
Vishnu, Indraa etc. का0कै0 । Hir-i (3. hari be yellow) tawny
yellow - पीला, greenish - हरा, Lion - सिंह, N. of Indra,
Vishnu, Krishna - मैक्डानल । the horse - घोड़ा - विल्सन । two by
steedss-- दो घोड़ों के द्वारा - ग्रिफिथ । with two horses दो घोड़ों
से युक्त अर्थ अधिक उपयुक्त है ।

सूर्यस्य - ।सरति आकाशे सूर्यः यद्वा सुवति कर्मणि लोकं प्रेरयति - सृ + क्यप्, नि० । 1. सूरज, सूर्ये तपत्या वरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा रघु० 8.13, पुराणों के अनुसार सूर्य को कश्यप और अदिति का पुत्र माना जाता है - तु०श० 6 में उसका वर्णन किया जाता है । वह अपने सात घोड़ों के रथ पर बैठकर घूमता है । अरुण इस रथ का सारथी है सूर्य भगवान रथ पर बैठकर सब लोकों की शुभाशुभ कर्मों को देखता है ।छया या अश्वनि। उसकी प्रधान पत्नी का नाम है इससे यम और यमुना पैदा हुए । दो अश्विनी कुमारों तथा शनि का जन्म भी इसी से हुआ । सूर्यकान्तमणि ० सूर्य का घोड़ा अस्त-सूर्य का छिपना आतप-सूर्य की गरमी अमर० उत्थानम् उदयः - सूर्य का निकलना - वामन शिवराम आप्टे । सूर्य m. the sun or its deity सूर्य या देवता, सूर्या the sun Personified as a female, a cert hymn of the Rigveda - कार्वे कैप० Surya m. (savar) sun; sun-god; N (c)) - ka. m. n. Kara, m. sunbeam, kanta m. (beloved of sun. Sun stone, sun crystal, sunshine sunbright, sunbeam - मैकडानल, (Indra as) Sun - विल्सन, heralds of surya - ग्रिफिथ । सूर्य का सात घोड़ों के रथ पर बैठकर घूमना अर्थ अत्यधिक समीचीन है ।

केतुः - चाय् + तु, की आदेशः। 1. पताका, झंडा - चीनां - शुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य - श० 1/34।2। मुख्य, प्रधान, नेता, प्रमुख व्यक्ति ।बहुधा समास के अन्त में। मनुष्यवाचा मनुवंशकेतुं रघु० 2/33 कुलस्य केतुः स्फीतस्य राघवः। राम० ।3। पुच्छल तारा धूमकेतु मनु 1/38।4। चिन्ह, अंक ।5। उज्जवलता, स्वच्छता ।6। प्रकाश की किरणा ।7। सारभ मण्डल का नवाग्रह जो पुराणों के अनुसार सैंहिकेय राक्षस का कबंध है उसका सिर राहु है - क्रूर ग्रहः सकेतुश्चन्द्रसं पूर्णमण्डलीमदानभि मुद्रा० 1.6, वामन शिवराम आप्टे ।

m. brightness - चमकीला, light - प्रकाश (Pl. beanas);
apparition from, shape, sign, mark, flag, banner, chief
chief - मुख्य, leader - नेता, - का0कै0प0 । Ket - u m. light
(Pl. rays) shape, from, taken of recognition banner, reader,
chief metoor, compt, mat, a, brought, light, clear,
मैकडानल । Steeds hearalds of - ग्रिफिथ । Signs - विल्सन ।
Flag झंडा ।चिह्न। अर्थ यहाँ पर अत्यधिक समीचीन होगा ।

हरी नु त इन्द्र वाजयन्ता धृतश्चुतं स्वारमस्वाष्टाम् ।

वि समना भूमिरप्रथिष्टारंस्त पर्वतश्चित्सरिष्यन् ॥ 7 ॥

अन्वय - इन्द्र नु ते वाजयन्ता धृत श्चुतम् हरी इति अस्वाष्टाम् स्वारम् ।
वि समना भूमि: अप्रथिष्ट पर्वत: अरंस्त चित् सरिष्यन् ॥ 7 ॥

हिन्दी अनुवाद - तीव्रता से गमन करते हुए या यजमान के लिए धन की कामना करते हुए जल वृष्टि करने वाले दोनों घोड़ों ने शब्द किया ।
समतल भूमि विशेषरूप से फैल गयी मेघ भी फैलता हुआ स्थिर बना दिया गया ।

इति - [अव्यय] [ई + क्तिन्] 1. यह अव्यय प्राय: किसी के द्वारा बोले गये या बोले समझे गये शब्दों को वैसा का वैसा रख देने के लिए प्रयुक्त किया जाता है जिनको हम अंग्रेजी में अवतरणांश चिन्हों द्वारा प्रकट करते हैं । इस प्रकार की बात हो सकती है [क] एक अकेला शब्द जो शब्द के स्वरूप को दर्शाने के लिए प्रयुक्त किया गया हो । [शब्दस्वरूप द्योतक] राम:रामेति कूजन्तं मधुराक्षरम् रामा० - वामन शिवराम आप्टे । adv. thus, so, it refer to something said or thought, which it follows (rarely Predeces) and in often which these words here endeth[ef अथ] at this thought as you know etc. often not to be translate all. A num before इति may have the mg. of an acc. का० कैप० I-ad. so thou (quti my words of thought, generately of the end, sts. at beg, or near the end serving the purpose of inverted commos and supplying the place of oratio oblique. it is also used to conclude an enumeration with or without ka) मैकडानल । thy ग्रिफिथ । thy विल्सन ।

भूमि: - ‡स्त्री0‡ ‡भवन्त्यस्मिन भूतानि - भू + मि किच वा ड.पि‡ पृथ्वी ‡विप0 स्वर्ग, गमन या पाताल‡ द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च - पंच0 1. 1. 82, रघु0 2. 74 2. मिट्टी भूमि उत्खातिमि भूमि श0 1 कु0 1. 24. 3. प्रदेश जिला, देश भू विदर्भ भूमि 4. स्थान, जगह, जमीन, भूखण्ड, प्रमदवनभूमय: श0 6 वामन शिवराम आप्टे । the earth, ground, soil, land, country, siteabode, floor or story of a house, step, degree (fig.) Position, Part or character. कार्वे कैपलर । Earth, ground, soil, territory, country, land, district, earth, spot, site, place, storey, floor, position, office, part, stage, degree, extent, मैकडानल । The earth - ग्रिफिथ । The lavel earth - विल्सन. The earth भूमि शब्द यहाँ पर अत्यधिक यथोचित होगा ।

पर्वत: - ‡पर्व + अचच्‡ पहाड़, गिरि परगुण परमाणुन्पर्वती कृत्य नित्यम् - भर्तृ 2. 78, न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति 2. चट्टान 3. कृत्रिम पहाड़ या ढेर, 4. सात की संख्या 5. वृक्ष समअरि: इन्द्र का विशेषण आत्मज मैनाक पर्वत का विशेषण आत्मजा: पार्वती का विशेषण आधारा पृथ्वी आशय: बादल आशय: शरमं नामक काल्पनिक जन्तु काक: कौआ जा नदी आदि - वामन शिव राम आप्टे - Parvat-a, consisting of knots or ragged masses (with adrior giri) m. mountain, hill rock, boulder, cloud, Kndra mountain cave, मैकडानल । Knotty, rugged (of a mountain m. mountain, height, hill, rock, stone, का0कैप0 । Mountain पर्वत अर्थ अधिक उचित है ।

चित्_- (स्त्री0) (चित् + क्विप्) 1. विचार, प्रत्यक्ष ज्ञान 2 प्रज्ञा बुद्धि ।
भर्तृ0 2. 13 । 3. हृदय, मन, 4. आत्मा, जीव, जीवन में सजीवता सिद्धान्त 5. ब्रह्म समo आत्मन् (पुं0) चिन्तन् सिद्धान्त या शक्ति 2. केवल प्रज्ञा परमात्मा आत्मकम् चैतन्य आभास जीव उल्लास जीवों का हर्ष धन:परमात्मा या ब्रह्म (वा0शि0 आप्टे) Bercive, observe, mark (ac. g.) untend (d) desire, under, stand, 2. चित् intellect, mind 3. चित् Piling (o), Piled & Forming - मैक्डानल । चित् - चेतति0 ते PP. चित (q.v.) Perceve, observe, attend, to (gen or acc) aim at intend (dat) strive after desire (acc) take care of (acc) conceive, under stand know intr. apper be conspicuous or known, का0कैप0 । यहाँ पर प्रज्ञा बुद्धि अधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

नि पर्वत: साद्यप्रयुच्छन्त्सं मातृभिर्वावशानो अक्रान् ।

दूरे पारे वाणीं वर्धयन्त इन्द्रेषितां धमनिं पप्रथन्नि॥ 8 ॥

अन्वय - अप्रयुच्छन् पर्वत: नि षादि मातृ भि: वावशान: अक्रान् ।
दूरे पारे इन्द्र इषिताम् वर्धयन्त: वाणीम् धमनिम् प्रप्रथन् नि ॥ 8 ॥

हिन्दी अनुवाद - प्रमाद न करता हुआ मेघ भी स्थिर कर दिया । माध्यमिक बाध के साथ-साथ शब्द करता हुआ ॥मेघ॥ संचरित हुआ ।
स्तोताओं ने दूरस्थ इन्द्र के द्वारा प्रेरित अत्यधिक शब्दमयी वाणी को प्रबुद्ध करते हुए अत्यधिक प्रथित किया ।

सादि - ॥सद् + इण्॥ सारथि, रथवान, योद्धा - वा0शि0 आप्टे । षादि नभसि निषण्ण आसीत् । सायण Sad - i riding m. rider on (o)
मैकडानल - सादि, सादिन m rider (lit sitter) ; का0कैम0 ।

वाणीम् - ॥वग् + इण् + ङीप्॥ भाषण, वचन, भाषा, वाण्येकासमलं करोति पुरुषं या संस्कृता धीयते भर्तृ0 2/192 - बोलने की शक्ति 3. ध्वनि, आवाज, 'केका वाणी मयूरस्य - अमर0 । इसी प्रकार आकाशवाणी 4. साहित्यिक कृति या रचना मद्वाणि मा कुरु विषादमनादरेण मात्सर्यमग्नमनसां सहसा खलानाम भामि0 4/41 उत्तर0 6/21 ॥5॥ प्रशंसा 6. विद्या की देवी सरस्वती - वा0शि0आ0
f. reed, du. the two spring bars on a carriage; 2. f. music (Pl. choir of singers or musicians) sound, voice, speech, words, eloquence or the goddess sarasvati - का0 कैम0 । वाणीं माध्यमिकां वाचं -सा0मु0 Vani f. RV. music (Pl. Choir) C. voice, sound, note speech, word, eloquent, words, fine, diction (rare) goddess, of speech, sarasvati (rare) मैकडानल । swelling the roor in the for distents limits ग्रिफिथ । - any menting the sound. विल्सन ।यहाँ पर वचन ॥भाषा॥ अर्थ उपयुक्त है ।

इन्द्र इष्टीताम् - इन्द्र - इन्द् + रन् इन्दताति इन्दु: 'इदि ऐश्वर्ये - मल्लि०

देवों का स्वामी - वर्षा का स्वामी, वृष्टि, स्वामी या शासक, मनुष्यादि - मनुष्यों का स्वामी अर्थात् राजा । इसी प्रकार मृगेन्द्र, शेर, गजेन्द्र, योगेन्द्र, कपीन्द्र, इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी ।अन्तरिक्ष का देवता इन्द्र। भारतीय आर्यों का वृष्टि देवता है । वेदों में प्रथम श्रेणी के देवताओं में इनका वर्णन मिलता है । परन्तु पुराण में द्वितीय श्रेणी में माने जाते हैं । यह कश्यप और अदिति के पुत्र हैं । ब्रह्मा, विष्णु, महेश के जिक्र से निरन्तर हैं । परन्तु यह दूसरे दूवताओं में प्रमुख हैं । सम्भवत: इन्हें सुरेन्द्र या देवेन्द्र के नाम से पुकारे जाते हैं जैसे वे वर्णित हैं वैसे पुराणों में भी यह अन्तरिक्ष और पूर्व दिशा में प्रतिष्ठित हैं । इनका लोक स्वर्गलोक माना जाता है यह वज्र धारण करते हैं और बिजली भेजकर वर्षा करते हैं । परन्तु कई बार उनसे परास्त भी हो जाते हैं । पुराणों में वर्णित इन्द्र कामुकता तथा व्यभिचार के लिए विख्यात हैं । इनका सबसे बड़ा उदाहरण गौतम की नारी अहल्या का सतीत्व हरण है । रावण के पुत्र इन्हें हराकर लंका ले गया और रावण इसीलिए अपने पुत्र का नाम मेघनाद रखा । वह देवताओं को प्राय: 100 यज्ञ करने से रोकता था उसका विचार था कि जो 100 यज्ञ पूरा कर लेगा वह इन्द्र की कुर्सी पा जायेगा । इसीलिए वह जिस देवता को जानता था कि 100 यज्ञ पूरा कर लेगा उसके यज्ञ को ध्वस्त कर देता था सम० अनुज विष्णु और नारायण की उपाधि वलि: मन्दर पर्वत का नाम है । कुन्ज: इन्द्र का हाथी, कूट एक हाथी का नाम है । छक - कौंच, शोभा समतल बना चबूतरा गिरि: महेन्द्र: आदि वा०शि०आप्टे । Indra m. Indra chief of the Vedic gods. highest, chief, prince, of Kananuka n. Indras blow rain, bow, giri m. of a mountain, guru, m. Indra, teacher gopa, heavening Indra as a bow gala n. Indras, net mytical weapon, of a arguna magic, Purusha, human, phantom. gatika - magican, galin mid. git m. Indra, vanquisher .

मैकडानल m.n. of the national god of the Indo-Aryans. Later also chief first the best of ones. kind. - का० कै०प० ।

इषीताम् - ‡अव्यय‡ ईष् + ईषन् + तल् + टाप् त्वल् वा‡ जरा कुछ सीमा तक थोड़ा सा ईषत् चुम्बितानि श०ब्रा० 1-13, सम + उष्ण ‡वि०‡ गुनागुनाकर ‡वि०‡ थोड़ा करने वाला जलम् अथवा पानी । पाण्ड - हलका पीला सफेद पुरुष-अधम, नीच व्यक्ति - वा०शि० आप्टे । ishi - tam. move away depart from. मैकडानल । इन्द्रेण प्रेरिताम् - सायण । यहाँ पर इन्द्र इषिताम् शब्द का अर्थ इन्द्र के द्वारा प्रेरित होना अत्यधिक उपयुक्त है ।

धमनिम् - नी ‡धम् + अनि‡ धमनि ‡ङीष्‡ 1. नरकुल नै ‡शरीर की नाड़ी, शिरा, गला, दर्शन, वा०शि०आ० । शब्दं कुर्वाणां तां वाचं नितरां - सा०भू० । dham-ani-blow menting m. reed n. smelting ani, whisting tula pipe vessel (in the body) vein (also-i) f. piping, read pipe, tube or canal of the human, body vessel, vein, nerue etc. - मैकडानल । spreads wide the blost sent forth - ग्रिफिथ । Have pramulgated vice attered - विल्सन । निरन्तुरशब्द करता हुआ अर्थ यहाँ पर यथोचित है ।

पप्रथन् - ‡अ + प्रथ् + ल्युट‡ फैलाना, विस्तार करना, बिखेरना, आगे की ओर प्रस्थान करना, बतलाना, प्रकाशित करना, प्रदर्शन करना, वह चीज जहाँ कोई चीज फैलायी जाय - वा०शि०आ० । Spread, larger, extend, wricter increase, appear, grow, arise, become, famous, or celebrated broaden, extend, augment, proclaim, celebrate, अनु - spread along अभि stretch before आ, spread, प्रति round, वि,

expond, का0कैप0 । A Pra-thana breadening, extension, place c extension, (Br.) manifestation of (o C) मैकडानल । प्रथन् अप्रथयन् - सा0मू0 । sent forth - ग्रिफिथ । voice cettered विल्सन । यहाँ पर विस्तार करना अर्थ अत्यधिक समीचीन है ।

इन्द्रो महा सिन्धुमाशयानं मायाविनं वृत्रमस्फुरन्निः ।
अरेजेतां रोदसी भियाने कनिक्रदतो वृष्णो अस्य वज्रात् ॥ 9 ॥

अन्वय - इन्द्रः महाम् सिन्धुम् आ शयानम् । माया विनम् वृत्रम् निःअस्फुरत् ।
कनिक्रदतः वृष्णः अस्य वज्रात् इति भियाने इति रोदसी अरेजिताम् ॥

हिन्दी अनुवाद - इन्द्र ने विशाल जलराशि को आवृत्त कर लेटे हुए मायावी वृत्र को मार डाला । शब्द करते हुए शक्तिशाली इसके ॥इन्द्र॥ के वज्र से भयभीत छाया पृथ्वी ॥रोदसी॥ काँप उठी ।

सिन्धुम् - स्पन्दः + उद् संप्रसारणं यस्य धः॥ समुद्र, सागर 2. सिन्धु नदी के किनारे का देश । मालवा में बहने वाली नदी का नाम मल्लि० का टि० सिन्धु नाम नदी तु कुत्रा पि नास्ति, निरर्थक है॥ हाथी के सूड से निकला पानी - वा०शि०आ० । स्पन्दते इतस्ततः संचरतीति सिन्धुर्मेधः - सा०मु० ।
m. f. stream, esp. the Indus pl.m. the land on the Indus and its inhabitants, m. also flood sea, ocean, water, -
Sindh - u - m. f. (moving to a goel) 2. sidh) stream, region, river, Indus, m. flood ocean, region, of the Indus Sindh, people of the Indus ganga tsesury built by a sindhu, Dvipa. nadi, datta, natha piba, - मैकडानल । river - ग्रिफिथ । shattered - विल्सन । यहाँ पर इधर-उधर फैलते हुए बादल अर्थ उचित है ।

महाम् - यह महत् का स्थापन्न रूप है ॥विशे० उन समस्त शब्दों की संख्या जिनका आदि पद महा है । बहुत आदि है तथा अनेक शब्द बन सकते हैं । उनमें से अपेक्षाकृत आवश्यक या जो कोई विशिष्ट अर्थयुक्त हैं नीचे दिये गये हैं । सम० अक्ष शिव का विशेषण, अंग स्थूलकाय या विशालकाय । अंजनः एक पहाड़ का नाम

है । अध्वनि = दूर तक फैला, महाप्रपात, अध्वर. बड़ा यज्ञ, अनसम् = भारी गाडी अनुभाव, महा, उदात्त, अंतक: - मृत्यु शिव का विशेषण । अभिजन = उत्तमकुल, अभिषव, सोम का अत्यन्त खींचा हुआ रस । अमात्य = मुख्य या प्रधान, अरण्यम् = विशाल जंगल, आकार, विशाल, बड़ा, आनन्द: = बड़ा हर्ष आपगा - बड़ी दरिया - वा0शि0 आप्टे । maha-m. a great, an adverb mahat, with few exceptions being used thus only in the sense, of a substantive - मैकडानल, महा (only and, महाम् महन्त, का0कै0 । The mighty - ग्रिफिथ । The Mighty - विल्सन । महाम् महान्तं - सा0भु0 । यहाँ पर महान् अर्थ उचित प्रतीत होता है ।

आश्यानम् - भू0का0 कृ0 (आ + श्यै + क्त) जमा हुआ संगठित कि0 16. 10. 2 कुछ सूखा हुआ, धुँए के सहारे सुखाये हुए, वा0शि0आ0 । तम् छिद्राय श्यानं हतम् - सा0भु0 । f. stting - का0कै0 । megic ian-Vitram - ग्रिफिथ । guileful Vitra - विल्सन । यहाँ पर जमा हुआ अर्थ अत्यधिक उचित है ।

मायाविन: - (वि0) माया अस्त्यर्थे विनि । धोखेबाजी या चाल से काम लेने वाला, कूटयुक्ति का प्रयोग, इन्द्रजाल की कला में कुशल, जादू की शक्ति लगाने वाला - वा0शि0आ0 । mayavin, skilled is art or enchentment full of guile wily cunning possessed by delusion m. magical, art deceitfulness - मैकडानल । Super matural or wonderful power, wile, trick, illusion, pahantom, unreality (Ph.) being only in appearance a feigned or phantom - का0कै0 । Megician, - ग्रिफिथ । guileful - विल्सन । यहाँ पर मायाविन शब्द का अर्थ धोखेबाज उचित है, जो मायावी वृत्र के लिए प्रयुक्त है ।

वृत्रम्_- ॥वृत्र शब्द द्वितीया ए०व०॥ ॥वृत् + रक्॥ एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था ॥वह अन्धकार का मूर्तरूप माना जाता है । शत्रु, ध्वनि, पर्वत, इन्द्र के विशेषण, क्रुद्धे पि पक्षिच्छिदि वृत्रशत्रौ कु० 1/20, वाचा हरिं वृत्र-हणं स्मितेन 7/46 - वा०शि०आ० वृत्र वृ एक दास का नाम, इन्द्र का विरोधी 1/32/6 ऋ०सू०वै०मा० । वृत्रम् असुरम् - सा०भ० । Vri-tra-encloser, invester, Vri, hurasser, froe, hostile host, (R.V.) mid, (T.S.) m. of a demon pernification of the malign power of drought slain by Indra, son of the tvashtri imprisoner, of the, celestial waters, often called Ahi thunder cloud (rare V) मैकडानल । m. coverer, besetter, endloser, Name of a demon of the chief enemey of Indra n.(m.) i.g. for or host of foes, का०कैप० । Vritra - ग्रिफिथ । Vritra - विल्सन । यहाँ पर वृत्र शब्द का कोई अर्थ नहीं है, वृत्र इन्द्र के शत्रु के लिए प्रयुक्त किया गया है, जो इन्द्र का शत्रु है ।

अरोरवीद्वृष्णो अस्य वज्रोऽमानुषं यन्मानुषो निजूर्वात् ।

नि मायिनो दानवस्य माया अपादयत्पपिवान्त्सुतस्य ॥ 10 ॥

अन्वय - वृष्ण: अस्य यत मानुष: अरोरवीत् अमानुषम् वज्र: नि जूर्वात् ।
मायिन: दानवस्य माया नि अपादयत् पपि वान् सुतस्य ॥

॥इन्द्र॥

हिन्दी अनुवाद - मानव हितकारी/होकर जब अमानवीय ॥वृत्र॥ को मार डाला ॥तब॥ शक्तिशाली इस ॥इन्द्र॥ के बज्र ने अत्यधिक क्रन्दन किया। मायावी दानव के छल प्रपंचों को धराशायी कर दिया और निचोड़े गये सोम को दिया ।

अमानुषम् - ॥वि0॥ स्त्री0-षी॥ ॥न0त0॥ अमनुष्योचित् अपौरुषेय आदि, अमानवीय मनुष्य से सम्बन्ध न रखने वाला - वा0शि0आ0 । अमानुषं मनुष्याणां रहितम् यद्वा मानुषो हं न भवामित्येवं मन्यमानं सम्सुरं - सा0मु0 । f. not human, a female animal - का0कै0 । Super human, divine, m. celestial world - मैक्डानल । Enemey of mankind - विल्सन । यहाँ पर अमानवीय अर्थ अति उपयुक्त है ।

वृष्ण: - ॥वि0॥ वृषे: नि: किच॥ 1. धर्मभ्रष्ट, पाखण्डी, 2. क्रुद्ध, कोपाविष्ट ॥पु0॥ - वा0शि0आ0 - ॥न वृष्न॥ पराक्रम दे0 वृष्ण्यवत् - ऋक् सू0वै0मा0 । Vrishn-a manly, maghty (R.V.) manly, power, might (V.) (Vrishna) V. at a Possessed of manly mighty, V. मैक्डानल or manly potent, strong, - का0कै0 । might - ग्रिफिथ । thunderbolt - विल्सन । यहाँ पर काम का वर्षक अर्थ अधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

मानुषः ॥वि0॥ स्त्री की ॥स्त्री + वी॥ मनोरयम् अण् सुक् च॥ मनुष्य की मानवी

इंसानी, तनुः वाक् रघु0 1/60, स्त्री का विशेषण स्त्री + षम, मानव-

प्रयत्न या कर्म, वा0शि0आ0 । मानुषः मनुष्याणाम् हितकारी यदा मतिमानिन्द्रः

- सा0मु0 । human, or humane. Pl. the (s) tribes of men f.

मानुषी a women; n. seq. का0कै0प0 । Manusha human, kind,

मैकडानल । friend of man. - विल्सन ।Sriend of man - ग्रिफिथ ।

दानवस्य - दानव षष्ठी एकवचन 5 दनोः अपत्यम् दनुः + अण् राक्षस, पिशाच,

वा0शि0आप्टे । दानुर्नाम् वृत्रमाता, 'दानुः शये' इत्यादिषु ।

दृष्टत्वात् । सा0मु0 । daughter of danu a demon or enemey of the

gods. Danava m. f. demon, in represented as the

offspring of danu and Kasyapa and as irreconcilable foes of
the gods, a relating to the Danavas.

मायाः -॥मीयते अनया मा + य + टाप् वा0 नेत्वम्॥ धोखा, जालसाजी, चाल,

पंच0 1/159. 2. वा0शि0आ0 । sorcry illusion, phantom ,

unrealty (Ph., being only inappearance a pe igned or phantom.

- का0कै0प0 । fraud, jugglery, witchcraft illusory image

phantom, illusion. - मैकडानल । guildful - विल्सन, ग्रिफिथ ।

उक्त शब्द मायाः का अर्थ जादूगर यहाँ पर उचित प्रतीत होता है ।

सुतस्य - ॥भू + क + कृ॥ ॥सु + क्त॥ उड़ेला गया, निकाला गया, निचोड़ा गया ।

2. सात पुत्रों की माता - वा0शि0आ0 । सुतस्य अभि षुतं सोमं -

सा0मु0 । expressed or extracted - का0कै0प0 । mention of soma,

मैकडानेल । flweing Soma baffled - विल्सन । The Soma Juice-

ग्रिफिथ । पुत्रों के द्वारा सोमरस को निचोड़ना अर्थ अत्यधिक समीचीन होगा ।

पिबा पिबेदिन्द्र शूर सोमं मन्दन्तु त्वा मन्दिनः सुतासः ।

पृणन्तस्ते कुक्षी वर्धयन्त्वित्था सुतः पौर इन्द्रमाव ॥ 11 ॥

अन्वय - शूर, इन्द्र सुतासः पिब पिब सोमं मन्दन्तु त्वा मन्दिनः ।
ते कुक्षी इति वर्धयन्तु पृणन्तः इत्था पौरः इन्द्रम् सुतः आव ॥

हिन्दी अनुवाद - हे शूर इन्द्र । अभिषुत सोम को पियो । सोम तुझे हर्षित करें पूरित होते हुए तुम्हारे उदर पाश्वों को बढ़ा देवे ।
इस प्रकार से अभिषुत आपूरित होने वाले सोम ने इन्द्र को तृप्त किया ।

मन्दन्तु - ¦वि0¦ ¦मन्द + अच् + न्तु ¦ धीमा, विलम्बकारी, अकर्मण्य, सुस्त, भिन्दन्ति मंदा गतिमवमुख्यः कु0 1/11 तत्चरिते गोविन्दे मनसिज् मन्दे सखी प्राह गीत0 6¦2¦ निरूत्साही तटस्थ, उदासीन, मन्द, बुद्धि मूढ, अज्ञानी, निर्बल मस्तिष्क, मन्दी कृ - ढीलढाल करना, मन्दी भू - ढील होना - वा0शि0आ0 । मन्दन्तु त्वां मादयन्तु - सा0मु0 । Marry gay- मन्दचेतसा, slow, lazy, trady, dull, ineter, weak. stupid slowly tordily gradually softly - का0कैम0 । यहाँ पर मन्दबुद्धि अर्थ उपयुक्त है ।

सोमम् - ¦षु + मन्¦ एक पौधे का नाम प्राचीन काल के यज्ञों में आहुति देने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण औषधि ¦2¦ सोम नामक पौधे का रस जैसा कि सोमया तथा सोम पीथिन् शब्दों में 3. अमृत देवताओं का पेय पदार्थ 4. चन्द्रमा, समुद्रमंथन से से[illegible]मिला, उद्मा नर्वदा नदी, कान्तः चन्द्रकान्त, क्षयः - चन्द्रमा ग्रह, सोमरस का पात्र, धारा - आकाश, पतिः इन्द्र का नाम, विक्रयिन सोमरस विक्रेता, वासरः सोमवार, वल्लरी - सोम का पौधा, सुत् सोमरस खींचने वाला, वामन शि0 आप्टे । सोम अर्पण करने वाला - ऋ0सू0वै0मा0 ।

सोमम् पिबैव । आदराथैभा वीरसा - सा०मु० । So-ma-m. extracted juice soma, soma plant. soma sacrifice, moon, momegod, accounted son of the Atri, one of the eight vasus identified with Vishnu and Siva reputed another of a law book monday - मैकडानल । plant or juice aften personified as a god) the moon or the god. the moon - का०कैप० । Drink the Soma - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर सोम एक पौधा है, प्राय: सभी विद्वानों का मत है । वास्तव में सोम का प्रयोग एक पौधे के रूप अधिक स्थानों पर पाया गया है, यही उचित प्रतीत होता है ।

कुक्षि - [कुष् + क्सि] 1. जिह्मता हमात कुक्षि: [भुजगपति:] मृच्छ० 9/12 गर्भाशय पेट का वह भाग जिसमें भ्रूण रहता है कुम्भीनस्याश्च कुक्षिज: - रघु० 15/15 किसी चीज का भीतरी भाग 4. गर्त 5. गुफा, कन्दरा, तलवार का म्यान - वा०शि०आ० । कुक्षि: m. belly, w-omb (also kushi cave valley) - का०कैप० । Kukshi f. = kushi - मैकडानल । They filling both they blands - ग्रिफिथ । यहाँ पर भीतरी भाग अधिक उचित है ।

त्वे इन्द्राप्यभूम विप्रा धियं वनेम ऋतया सपन्तः ।

अवस्यवो धीमहि प्रशस्ति सद्यस्ते रायो दावने स्याम ।। 12 ।।

अन्वय - इन्द्रः विप्राः त्वे इति अभूम अपि ऋत या धियं सपन्तः वनेम ।
अवस्यवः प्र शस्तिम् धीमहि ते रायः दानवे सद्यः स्याम ।।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! मेधावी सतोता हम लोग भी तुम्हारे संरक्षण में हो जावें ऋत् ॥यज्ञ॥ को करने की इच्छा करते हुए कर्म से संयुक्त हो रक्षा की कामना से युक्त ॥हम॥ शाोभन स्तुति को प्राप्त करें ॥और॥ शीघ्र ही तुम्हारे दान के विषय में पात्र हो जावें ।

विप्रः - ॥वप् + रन् पृषो अत इत्वम्॥ 1. ब्राह्मण उद्धरण, दे0 ब्राह्मण के अन्तर्गत बुद्धिमान् मुनि पुरुष, पीपल का पेड़ । सम0 ऋषिः ब्रह्मर्षि दे0 काष्ठ रुई का पौधा, विप्रः पलाश का वृक्ष ढाक समागम ब्राह्मण का जमाव या धर्म परिषद् स्वयम् ब्राह्मणों की सम्पत्ति । वा0शि0आप्टे । a stirred inw ard-ly, inspired, wise, learned, clever, m. seer, poet, singer, priest, a Brahman - का0कैप0॥वि0॥ उत्स्फूर्त कविः, प्रतिभासम्पन्न , कवि, ऋक् सू0 वै0 मा0 3/33/8. Vip-ra, a (v) inwardly, stirred, sagacious wise (often of the gods) learned, misinger , poet, Brahman, woman - मैकडानल । विप्राः मेधाविनो वयम् - सा0मु0 । Singer - ग्रिफिथ । may we (worshippers) - विल्सन । प्रस्तुत शब्द में बुद्धिमान् अर्थ अधिक समीचीन है ।

ऋतया - ॥वि0॥ ऋत + क्त॥ ऋत तृतीया एकवचन । उचित सही ईमानदार सच्चा भा0 10/18 3. पूजित, सम, सही ढंग से सम् 1. स्थिर 2. पावन

जल, सच्चाई, खेतों में उच्छवृत्ति द्वारा जीविका सम0 धामन - सच्चे या पवित्र स्वभाव वाला, विष्णु, वा0शि0आप्टे । ऋतया ऋतम् कर्मफलं - सा0मु0 ।
rita-ya- in ad. rightly yag - a rightly yoked well allied via. t a having or speaking truth - sup a practising piaty stubha. rightly praising - मैकडानल । (inster. adv.) in the right way - का0कैप0 । यहाँ पर कर्मफल के विना अर्थ सही प्रतीत होता है ।

<u>सद्य:</u> - ।नपुं0। सीदत्यस्मिन् सद् + मनिन् ।. घर, मकान, आवासस्थल, चकित-
नवनताड्गी सद्य: सद्यो विवेश भामि 2/32. 2. स्थान, जगह, मन्दिर, वेदी, जल - वा0शि0आ0 । sitter, dweller, seat, place, dwelling place, fuilding, house, temple, du, heaven, and earth - का0कैप0 । Sad man seat, place, abode, dwelling place of sacrifice, house stall, shed temple, heaven the earth stand, table - मैकडानल । यहाँ पर उपयुक्त अर्थों में से वेदी अर्थ अत्यधिक उचित प्रतीत होता है ।

स्याम ते त इन्द्र ये त ऊती अवस्यव ऊर्ज वर्धयन्तः ।
शुष्मिन्तमं यं चाकनाम देवास्मे रयिं रासि वीरवन्तम् ॥ 13 ॥

अन्वय - इन्द्र ते ऊती ये अवस्यवः ऊर्जम् वर्धयन्तः ते स्याम । यम
देव शुष्मिन् तमम् रयिम् चाकनाम वीर वन्तम् अस्मे रासि ॥

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! जो हम तुम्हारी सहायता से शक्ति को प्रबुद्ध करते
हुए सहायता की कामना वाले हैं तुम्हारे आश्रय में हो जावें
हमारे लिए उस धन को प्रदान करें जिसे अत्यधिक बलशाली हम चाहते हैं ।

ऊती -(स्त्री०) (अव + क्तिन्) बुनना, सीना, संरक्षा, उपयोग, क्रीडा, खेल,
वा०शि०आ० । ऊती ऊत्या प्रणयनेन - सा०भु० । furtherness, help, aid, refreshment helper furtherer protector - का० कैप० । fertherance, help, x favour, blessing helper, comfort, cordal, enjoyment, - मैक्डानल । Such by the help - ग्रिफिथ । favour - विल्सन । यहाँ पर उपभोग अर्थ अधिक उचित है ।

ऊर्जः - (ऊर्ज् + असुन्) बल, स्फूर्ति, भोजन, वा०शि०आ० । ऊर्ज हविर्लक्षणमन्नं-सा०भु० । f. sap-food, vigour, strength - का०कैप० । nourishment, invigoration manly vigour, vigourous vigour, - मैक्डानल । The vigourous while - ग्रिफिथ । be such as these are who desciricus - विल्सन । यहाँ पर ऊर्जः शब्द का अर्थ स्फूर्ति, अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

वीरवन्तम - ॥वि0॥ वीर + मतुप्॥ शूरों से भरा हुआ वन्तम् उस वीर के जिसको पुत्र, पौत्र जीवित हों अर्थात् जहाँ वीरों का कुटुम्ब हो । वा0शि0 आ0 । वीरवन्तम् पुत्र पौत्रै सहितं तादृशं - सा0मु0 । manly, doing, seeking adventures grass - का0कैप0 । fragrant gress (Andrapogan muricatu s. - मैकडानल । great power and of (numberial) progency - विल्सन । most powerful with star of noble children - ग्रिफिथ । यहाँ परशूरों से भरा हुआ अर्थ अत्यधिक उचित प्रतीत होता है ।

राशिः - अश्नुते व्यापनोति अश + इञ् धातोरहागमश्च, ढेर, अम्बार, संग्रह, परिमाण, समुदाय, धनराशि, तोपराशिः आदि । अंक या संख्यायें, अधिपः घर का स्वामी । त्रयः त्रैराशिक गणित, चक्रम् तारागणित, भोग - सूर्य - चन्द्रमा आदि - वा0शि0आप्टे । राशि देहि - सा0मु0 । m. heap, mass, multitude - का0कैप0 । heap, pile, mass, quantity, multitude number- मैकडानल । with store - ग्रिफिथ । and of (numberous) - विल्सन । प्रस्तुत शब्द का अर्थ संग्रह यथोचित है ।

रासि क्षयं रासि मित्रमस्मे रासि शर्ध इन्द्र मारुतं न: ।
सजोषसो ये च मन्दसाना: प्र वायव: पान्त्यग्रणीतिम् ॥ 14 ॥

अन्वय - इन्द्र क्षयम् रासि मित्रं अस्मे अस्मभ्यं रासि मारुतं शर्ध: न: रासि ।
ये सजोषस: मन्दसाना: वायव: यज्ञं अग्रणीतिम् प्र पान्ति ॥

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! (घर) निवास को देते हो और हमें मित्र प्रदान करते हो । हे इन्द्र मरुतों से सम्बद्ध गण को हमारे लिए देते हो । एक साथ प्रसन्न होने वाले जो हर्षित होते हुए, वायु के समान गति वाले प्रथमत: आहृत सोम को पीते हैं ।

मारुतं - (वि0) (स्त्री + ती) (मरुत + अण्) मरुत, सम्बन्धी या मरुत से उत्पन्न होने वाला, वायु से सम्बन्ध रखने वाला, हवाई, 2. वायु का देवता, 3. स्वास लेना, 4. प्राण, शरीर के तीन मूल (कफ, पित, वात) 5. हाथी का सूंड तम - स्वाति नाम का नक्षत्र समo अशन: सांप सूनु: हनुमान का विशेषण, भीम का विशेषण, वा0शि0आ0, मारुत, ई. relating to the Maruts, of the wind, air, the god of wind, (adj. f. आ) E. of Vishnu, and Rudra, f. . आ N. of a woman F. ई the north west, - का0कै0 । relating or belonging to the Maruts or storm, gods relating to or derived, from the wind, air, god of wwind vital air, breath, - मैकडानल । Give us the company of Maruts, - ग्रिफिथ । Strength of the maruts - विल्सन । यहाँ पर मरुत एक देवता का नाम है, और उसका सम्बन्ध वायु से है, यह अर्थ अत्यधिक समीचीन होगा ।

मित्रम् - सूर्य, अदिति, (इसका वर्णन प्रायः अदिति के साथ मिलता है)। क्रम
दोस्त - तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यत् भर्तृ० 2/68. मित्रराष्ट्र
पड़ोसी देश, आचार: मित्र के साथ व्यवहार, उदय: सूरज का उगना, कर्मन् नपुं०
कार्यम् - कृत्यम् मित्र का कार्य, मित्रतापूर्ण कार्य या सेवा हन् विश्वासघाती
दोहिन - मित्र से घृणा, वत्सल, मित्र के प्रति दयालु - वा०शि०आ० । - मित्र
frend, comrade, mostly, frdendship - का०कै०प० । behave us a
friend - मैकडानल । Give us a friend - ग्रिफिथ । Thou
great its us ~~x~~ friends - विल्सन । यहाँ पर मित्र शब्द का अर्थ मित्रता-
पूर्ण कार्य उचित होगा ।

शर्धः - (शृध् + घञ्) अपानतापु का त्याग, अफारा (इस अर्थ में नपुं० भी होता
है। दल, समूह, सामर्थ्य, शक्ति - वा०शि०आ० । शर्धः-वलम् - सा०मु०।

a leading the host शर्धनीति a leading the host(of the
maruts) or acting boldly शर्धम् । (only compare - क शर्धस्तर)
- का०कै०प० । ; (sarada-a-containing be stowing etc. -
- मैकडानल company - ग्रिफिथ । The strength - विल्सन । यहाँ
पर उक्त शब्द का अर्थ अपान वायु उचित है ।

व्यन्त्विन्नु येषु मन्दसानस्तृपत्सोमं पाहि द्रह्यदिन्द्र ।

अस्मान्त्सु पृत्स्वा तरुत्रावर्धयो द्यां बृहद्भिरर्कैः ॥ 15 ॥

अन्वय - इन्द्र येषु तृपद् मन्दसानः सोमम् पाहि द्रह्यत् इद् व्यन्तु ।
अस्मान् सु पृद् सु आ तरुत्र अवर्धयः द्याम् बृहद् भिः अर्कैः ॥

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र । खूब तृप्त होते हुए और शक्तिशाली होते हुए जिनके ऊपर आप प्रसन्न रहते हैं वे मरुद् ।सोम को। पिये ।भक्षण करें। और तुम भी सोम को पियो । हम लोगों को भलीभांति संग्रामों में पार लगाने वाले तुमने वृहद् स्तुतियों के द्वारा अथवा विशाल मरुतगण के साथ द्युलोक को बढ़ाया ।

अर्कैः - ।अर्च् + घञ् + कुत्वम्।।प्रकाश।किरण, विजली की किरण, सूर्य, आविष्कृता रुग्मुख: सर: एकतो र्कः - श0 4/1, 3. अग्नि स्फटिक, तांबा, रविवार, आक का पौधा, मदार, अर्कस्योपरि शिथिलं च्युत मिव नवमल्लिकाकुसुमम् । श0 2/9, यमाश्रित्य न विश्राम क्षुधार्ता यान्ति सेवकाः सो र्कवन्नृपतिस्त्याज्यः सदा पुष्पफलो भिः सन पंच0 1/5/8 इन्द्र 9. आहार: बारह की संख्या सम. अश्मन् पु0 उपलः सूर्य कान्तामणि सूर्यपत्नीचन्दन एक प्रकार का रक्त सवर्ग के वैद्य अश्वनीकुमार - वी0शि0आप्टे । वृहद्भः बलदिम अर्कैः अर्चनीयैर्भमद्भिः - सा0भु0 m. beam ray. the sun. fire, praise, son of sound, roar, singer n. of a plant. - का0कैप0 ark a.m. ray, sun. god, hymn singer, kind of tree or shrub, nandana, m. planet saturn. pattru n. leaf of the Arts - मैकडानल । and (that of) hialeen - विल्सन । hymons that praise the - ग्रिफिथ । यहाँ पर उक्त शब्द एक प्रकार का पौधा है जो मदार वृक्ष के नाम से विख्यात है यही अर्थ वस्तुतः सही होगा ।

तृपत्_- ॥वि0॥ ॥तृप + क्त॥ संतृप्त, संतुष्ट, परितुष्ट, ॥दिवा0तुदा0परo तृप्यति
तृप्नोति, तृपति, तृपत, संतुष्ट होना, प्रसन्न होना, परितुष्ट होना,
अध: तर्प्स्यन्ति मासादा: भट्टि ॥16/29॥ प्रासीन्न चातृपत् क्रूर 15/29 ॥प्राय:
अभिकरण के साथ परन्तु कभी कभी सम0 या अधिक के साथ भी॥ को न तृपति
वित्तेन हि 2/168 तृपस्तप्ति शितेन भतृ0 2/38 नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां नाप-
गानां महोदधि: नातड्क सर्वभूतानां न पुंसां वाम लोचना पंच0 1/136 तस्मिन्हि
ततृपुर्देवास्तते यज्ञे महा0 2 प्रसन्न करना - वा0शि0आ0 । आत्मानं दृढीकुर्वन् त्वम्
तृपति तर्पन्त मिमम् - सा0मु0 । Tri-pad (or tri-strong st. pad) a
(1) three footed, taking three steps 1. P. kind of gait in
the elephant pada a having three feet. haveny three padas,
- मैक्डानल । Thou art digth tripat urn (to the liberation)
- विल्सन । injoy in whom thou art deldghted - ग्रिफिथ । यहाँ
पर सन्तुष्ट होना अर्थ उचित प्रतीत होता है ।

पृत्सु - पृ + तनन् + टाप् ॥सेना॥ पहले पाँच वचनों में इसका कोई रूप नहीं होता
दि0वि0द्वि0व0 के पश्चात् - पृतना के स्थान पर विकल्प पृत् का आदेश
हो जाता है । पृ + तनन् + टाप् सेना, सेना का एक प्रभाग जिसमें 24 हाथी
243 उरथ, 729 घोड़े जिसमें 1215 पैदल होते थे युद्ध संग्राम मुठभेड़ सम0 साह्
इन्द्र का विशेष त्सु का वत्सु से होता है जिसका अर्थ पुत्र, पौत्र आदि से इस प्रकार
इसका अर्थ 425 आदि के पुत्र आदि -वा0शि0आ0 ।पृत्सु पशु पुत्रादिभि: -सा0मु0
m.f. hostile attack - का0कै0 । combat, battle, hostile host,
contest battle hostile host, army division of an army-मैक्डानल
adruble (maruts) augment prosperity -विल्सन thou host exalted
us to heaven - ग्रिफिथ । यहाँ पर पुत्र पुत्रादि से युक्त अर्थ अत्यधिक समीचीन
होगा ।

बृहन्त इन्नु ये ते तरुत्रोक्थेभिर्वा सुम्नमा विवासान् ।

स्तृणानासो बर्हिः पस्त्यावत्त्वोता इदिन्द्र वाजमग्मन् ॥ 16 ॥

अन्वय - इन्द्र तरुत्र ये सुम्नम् आ विवासान् वा ते नु इत् बृहन्त उक्थेभिः ।
स्तृणानासः बर्हिः त्वा ऊताः पस्त्य वत् इत् वाजम् अग्मन् ॥

हिन्दी अनुवाद - हे तारक ! वे सचमुच महान है जो उक्थों के द्वारा सुखकर तुम्हारी परिचर्या करते हैं । कुशा को फैलाते हुए अथवा यज्ञ को करते हुए तुम्हारे ही द्वारा रक्षित व्यक्तियों ने ही धन को प्राप्त किया ।

स्तृणानासः - स्तृ, स्तृणाति, स्तृणीत, स्तृणुते, (स्तरति) P.P. - स्तृत strew (esp the sacrifical straw, spread out, strew over cover, throw, overthrow. Wish to throw down, strew cover, spread, day or pous over, from a coating with the sacrificul, butter cover, strew, expond, Nast - Loss, ruin, destruction, death - का0कै0 । Strina in bhu strina a kind of grass - Nas - nostrils nose - मैक्डानल । The who strew spread grass - ग्रिफिथ । The who strew sacred grass - विल्सन । स्तृणानासः वेद्यां बर्हिराच्छादयन्तो ये त्वां परिचरन्ति ते - सा0मु0 । स्तृणा - स्वा0 उत्तर0 स्तृणोति, स्तृणुते, स्तृत कर्म वाच्य स्तर्यते - फैलाना, छितराना, ढकना, बिछाना (मही) तस्वार सरधाव्यते: स क्षौद्रं पटलैरिव रघु0 4/63, फैलाना, प्रसार करना नासः (नस् + घञ्) नष्ट करना, गतानासम् तारा उपकृतमसाधा विवजने मृच्छ0 4/24, भग्ना साहवस बर्बादी हानि भग0 2/40, इसी प्रकार मृत्यु मुसीबत संकट, परिहार, पलायन - स्तृणानासः संकट मुक्ति, आच्छादन-युक्त संकटमुक्त, रक्षित आदि - वामन, शिवराम आप्टे । यहाँ पर संकटमुक्त अर्थ उपयुक्त है ।

सुम्नम् - सुम्नम् सुखकरं त्वामुक्थैः शास्त्रैः - सा0मु0 । good wishes full devotion or good wishes - का0कैप0 । gracious, favourable, well pleciseđ, joyfull - मैक्डानल । the given of hoppness - विल्सन । by their songs of praise - ग्रिफिथ । यहाँ पर सुम्नम् का अर्थ उक्थों के द्वारा प्रसन्न अर्थ अधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

वाजम् - ‡वज् + घञ्‡ वाजू - डैना, पंख, बाण का पंख, युद्ध, लड़ाई, ध्वनि, जम् - घी, श्राद्ध या और्ध्वदैहिक क्रिया के अवसर पर प्रदान किया गया पिण्ड, भोज्य सामग्री , जल , यज्ञ की पूर्ण आहुति का मन्त्र - सम0 पेयः यम् एकविशेष यज्ञ का नाम सन . शि का नाम सनि. सूर्य - वा0शि0आ0 । Swiftness strength, courage, race, struggle, context, its pize, booty gain, reward, treasure, good, offering meat runner, horse, - का0कैप0 । Spead, vigour, spirit, race, contest, prize, of battle, booty gain, reward, treasure, valuable, possession, swift or spirited steed; - मैक्डानल । obtaint (abundant) food - ग्रिफिथ ।strenghth - विल्सन । वाजम् शब्द का अर्थ कई विद्वानों ने अपने मतानुसार किया है किन्तु प्रस्तुत मन्त्र में लड़ाई अर्थ अत्यधिक उचित प्रतीत होता है ।

उग्रेष्विन्नु शूर मन्दसानस्त्रिकद्रुकेषु पाहि सोममिन्द्र ।

प्रदोधुवच्छ्मश्रुषु प्रीणानो याहि हरिभ्यां सुतस्य पीतिम् ॥ 17 ॥

अन्वय - शूर इन्द्र उग्रेषु त्रि कद्रुकेषु मन्दसानः सोमम् पाहि इत् नु ।

प्रीणानःश्मश्रुषु प्र दोधुवत् सुतस्य पीतिम् हरि भ्याम् याहि॥

हिन्दी अनुवाद - हे शूर इन्द्र ! विशाल त्रिकद्रुमों में ही प्रसन्न होते हुए सोम को पियोच्छमश्रु में लिपटे हुए सोम को बार-बार हिलाते हुए प्रसन्न होते हुए ॥तुम॥ निचोड़े गये सोम को पीने के लिए दो घोड़ों पर चढ़कर जाओ ।

उग्रेषु - ॥वि0॥ ॥उच् + रन्॥ गश्चान्तादेशः, भीषण, क्रूर, हिंस्र - जंगली, ॥ दृष्टि आदि से॥ दर्शन, प्रबल, डरावना, भयानक, मजबूत, दारुण, तीव्र, भयंकर सिंहनिपातमुग्रम् ॥रघु0 3/60॥ शक्तिशाली तीव्र, उभात्यों वेलाम् - अत्यन्त गर्म उग्रशोकाम् मेघ0 ।।3, तीक्ष्ण, प्रचण्ड, गर्म उग्राभद्र - वा0शि0आ0 । उग्रेषु उद्नर्णेषु बहुस्तोत्रशंस, वत्सु - सा0मु0 । mighty, strong, huge, fierce, dire, a mighty one - का0कैप0 । mighty, voilent, grim, dreadful, terrible, re मैक्डानल । the great - ग्रिफिथ । hero exulting in the spokmn - विल्सन । यहाँ पर उग्र शब्द का अर्थ प्रबल अत्यधिक उचित प्रतीत होता है ।

प्रीणानः ॥वि0॥॥प्री*क्त तस्य नः॥ प्रसन्न, सन्तुष्ट होते हुए, तृप्त होते हुए, पुराना, प्राचीन, पहला - वा0शि0आ0 । प्रीणानः सोमपानेन प्रीतोभवन् - सा0 मु0 । Pleasing, gratifying - का0कैप0 । Pleasing, Soothing, delectation, satisfaction, means, of satisfying - मैक्डानल । well pleased - ग्रिफिथ । Liberation - विल्सन । यहाँ पर संतुष्ट होते हुए अर्थ अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

<u>हरिभ्याम्</u> - हरि शब्द तृतीया द्वि०व० ।वि०। हृ + इन् - हरा, पीला, लाल, रंग का, खाकी, हरियुग्मं रथं तस्मै प्राजिधाय पुरन्दर: रघु० 12/14, रि: विष्णु का नाम हरिर्यथैक: पुरुषोत्तम: स्मृत: रघु० 3/49, इन्द्र का नाम, ब्रह्मा का नाम, यम का नाम, सूर्य, चन्द्रमा मनुष्य, प्रकाश की किरण अग्नि, पवन, सिंह, घोड़ा, इन्द्र का घोड़ा, सत्यमीत्य हरितो हरीश्च वर्तन्ते वाजिन: 6/6 लंगूर, बन्दर, कोयल, मेढक, तोता, सांप, मोर आदि - वा०शि० आ० । हरिभ्याम् अश्वाभ्याम् युक्त: सन् - सा०भु० । Tawney, yellow, greenish, steed, lion, monkey, horse, - मैकडानल । yellowish, fallow, greenish, horse, the steeds of Indra, lion ape, the sun, fire, wind, का०कैप० । the steeds - विल्सन । come with by steeds - ग्रिफिथ । यहाँ पर दो घोड़ों से युक्त अर्थ अत्यधिक समीचीन प्रतीता होता है ।

<u>सुतस्य</u> - ।भू + क० + कृ। ।सु + क्त। उड़ेला गया, निकाला गया, जन्म दिया गया, उत्पादित, पुत्र, राजा, पोता, पोती, पुत्र का जन्म, पुत्र की भांति, वस्करा, सात पुत्रों की माता - वा०शि०आ० । सुत् शब्द षष्ठी एक वचन, सुतस्य अभिषुतस्य - सा०भु० । Soma juice, son, mention of soma, sonship as a son, exactly like ones, own son - मैकडानल । expressed, or extracted, m. the expressed soma juida a som a liberation, son, daughter, - का०कैप० ।To drinking of our liberation - ग्रिफिथ its the drinking of our effused liberation. विल्सन । यहाँ पर सुतस्य शब्द का अर्थ कई विद्वानों ने अपने अपने मतानुसार किया है किन्तु निचोड़ा गया अर्थ अत्यधिक उचित होगा ।

धिष्वा शवः शूर येन वृत्रमवाभिनद्दानुमौर्णवाभम् ।

अपावृणोज्योतिरार्याय नि सव्यतः सादि दस्युरिन्द्र ॥ 18 ॥

अन्वय - शूर इन्द्र धिष्व येन दानुम् शवः वृत्रम् और्णवाभम् अव अभिनत् ।
आर्याय ज्योतिः अप अवृणोः दस्युः सव्यतः नि सादि ॥

हिन्दी अनुवाद - हे शूर इन्द्र ! उस बल को धारण करो जिस बल के द्वारा मकड़ी के सदृश्य बिल को टुकड़े टुकड़े कर दिया । आर्यजन के लिए प्रकाश को प्रकट किया । हे इन्द्र ! तुमने राक्षसों को बायीं तरफ कर दिया ।

ज्योतिः -[धातते द्युत्यते वा द्युत + इसुन् दस्य जादेशः] प्रकाश, प्रभा, चमक, दीप्ति, ज्योतिरेकं जगाम - श0 8/30, बिजली - ज्योतिर्मय [ज्यातिष + मयट्] तारों से युक्त ज्योति से भरा हुआ, द्युतिमय 15/59, ज्योतिष्मत् - ज्योतिस् + मतुप् आलोकमय, तेजस्वी, देदीप्यमान, ज्योतिर्मय - वा0शि0आ0 । ज्योतिः प्रकाशमानादित्यं - सा0मु0 । consisting of light cracting light jaminious - shining, celestial, the sun - का0कै0 । Light, radience, fire, light of the eye, world of light, light of life, star, - मैकडानल । the light to light - ग्रिफिथ । the light to - विल्सन । यहाँ पर ज्योतिर्मय अर्थ अत्यधिक उचित होगा ।

दानुम् - दानुः दानोः - सा0मु0 । Class of demons, any dripping fluid - का0कै0 । kind of demon - मैकडानल । dewest- ग्रिफिथ । Holdden - ग्रासमान । Horst crushed - विल्सन । यहाँ पर दानुम् एक राक्षस का नाम है ।

आर्याय - आर्य शब्द चतु०ए०व० ।वि०।।अ० + ण्यत्। आर्यन् या अर्य के योग्य,

आदरणीय, सम्माननीय, कुलीन उच्चपदस्थ, पदार्थम् स्यामभिलाषि मे मन: श० 1/22 - वा०शि०आ० । आर्याय कर्मणाम अनुष्ठात्रे जनाय कृत्साय राजर्षये - सा०मु० । belonging to the faithful or loyal, to ones own race, i.e., Aryan, noble, reverened, hunourable, man, का०कै०प० । belonging to the faithful of ones own, tribe honourable, moble, Aryan, - मैकडानल । To light the Aryan - ग्रिफिथ । To the Arya - विल्सन । यहाँ पर उपरोक्त शब्द आर्याय का अर्थ श्रेष्ठ व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हुआ है, यही उचित है ।

शव: शव ।शल् + वन्। वम् लाश, मुर्दा शरीर, मनु० 10/55, वम् , जल आच्छाद-

नम् मृतक शरीरं का आवरण, शबर शबल, शबर - वा०शि० आप्टे । शव: सादृशं बलं - सा०मु० । mighty, poweress, valour, - मैकडानल । The might - ग्रिफिथ Keep up the strength wher - विल्सन । m.n. dead body, corpes; शवस् superior power, strength, heroism, imstr, strong, mighty - का०कै०प० । उपरोक्त शब्द शवस् का अर्थ अनेक विद्वानों ने अनेक अर्थों में किया है किन्तु शवस् शब्द का अर्थ अधिक शक्तिशाली उचित प्रतीत होता है ।

सनेम ये त ऊतिभिस्तरन्तो विश्वाः स्पृध आर्येण दस्यून् ।

अस्मभ्यं तत्त्वाष्ट्रं विश्वरूपमरन्धयः साख्यस्य त्रिताय ॥ 19 ॥

अन्वय - सनेम ये ते ऊतिभिः विश्वाः सपृधः तरन्तः आर्येण दस्यून् ।
अस्मभ्यम् तत् त्वाष्ट्रम् विश्व रूपम् अरन्धयः साख्यस्य त्रिताय ॥

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र । हम लोग उस व्यक्ति की कोटि में पहुँच जायँ जो हम लोग तुम्हारी श्रेष्ठ सहायता से सम्पूर्ण स्पर्धियों और दस्युओं को पार करते हैं और तुमने हमारे लिए त्वष्टा के पुत्र विश्वरूप त्रित की मित्रता के लिए हिंसित किया ।

तरन्तः - [तृ + अच्] समुद्र, प्रचण्ड बौछार, मेढक, राक्षस - वा०शि०आ० ।

विश्वा - [सा०वि०] सारे, सारा, समस्त, सार्वलौकिक, प्रत्येक, हरेक, दस देवों का समूह [यह विश्वा के पुत्र समझे जाते हैं] इसके नाम है वस्तुः सत्यः क्रतुर्दक्षः कालकामो धृति/ कुरुः पुरूरवा, माद्रवाश्च विश्वे देवाः प्रकीर्तिता श्वम् - सम्पूर्ण सृष्टि, समस्त जगत इदं विश्वपाल्यम् उ० 3/30, विश्वभिन्न-धुनान्य कुलव्रतं पालयिष्यति कः भामिः 1/13 आदि - वा०शि०आ० ।
विश्वः [वि] सब, सब जगत 5.83.2 ऋक् सू०वै० माला । always, evermore - का०कै०प० । Vis-va a (Pervading) (Vis) every all whole, entire all pervading or all containing everyone, मैकडानल । यहाँ पर सम्पूर्ण जगत् [संसार] के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

ऊतिः - ऊतिभिः पालनैः - सा०मु० । Furtherance, help, aid, refreshment, helper, furtherer, protector - Weaving, sewing- का०कै०प० । Furtherance, enjoyment - मैकडानल । यहाँ पर पालनकर्त्ता अर्थ समीचीन होगा ।

त्वाष्ट्रम् - त्वाष्ट्रम् त्वष्टु: सुतम् - सा० मु० । belonging to tvostrim tvastri,s - son, - मैक्डानल । belonging to tvastr;m. his son, a patren name - का० कैप० । the one of twashtri- विल्सन thou gavest up tvoshters, son - ग्रिफिथ । Sohr des tvaschtar- ग्रासमन । unsgobst dudamaes den tvoshnsohn - गेल्डनर । यहाँ पर अपने पुत्रों के द्वारा ‖सोमरस‖ निचोड़ने के लिए अर्थ उपयुक्त है ।

साख्यस्य - सखि + ष्यञ्‖ मित्रता सौहार्द - वा० शि० आ० । साख्यस्य सखिभावस्यानुपालनाय - सा० मु० । association, party, friendship, offection - का० कैप० । Sakh-ya n. (sakhi) combination of freiends party - मैक्डानल । Through friendship for Trita- विल्सन । of our party - ग्रिफिथ। Des zur freunds chapt -गेल्डनर Dass du dem Freunde - ग्रासमन । यहाँ पर मित्रता अर्थ अधिक उचित है।

त्रिताय - ‖वि‖ ‖स्त्री + यी‖ ‖वयो वयवायस्य त्रि + तपम्‖ तीन भागों वाला तिगुना तीन तरह का यम - त्रिगड्डा तीन का समूह श्रद्धा क्तिं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम् श० 7/29 वा० शि० आ० । त्रिताय महर्षिये वनमानय: । - सा० मु० । beoring the triple staff, controlling thought, word, and deed m. bruhman arcetic - मैक्डानल । the three staves - का० कैप० । For Trita - विल्सन । To-trita - ग्रिफिथ । dem trita - गेल्डनर । trit a den - ग्रासमन । यहाँ पर तीन के लिए त्रिताय शब्द का प्रयोग हुआ है । यही उचित प्रतीत होता है ।

अस्य सुवानस्य मन्दिनस्त्रितस्य न्यर्बुदं वावृधानो अस्त: ।
अवर्तयत्सूर्यो न चक्रं भिनद्वलमिन्द्रो अङ्गिरस्वान् ॥ 20 ॥

अन्वय - मन्दिन: अस्य सुवानस्य त्रितस्य ववृधान: नि अस्तरित्यस्त: अर्बुदम् ।
इन्द्र: सूर्य: चक्रम् न अवर्तयत् अङ्गिरस्वान् वलम् भिनत् ॥

हिन्दी अनुवाद - इस मदकर चुआये जाते हुए त्रित के लिए प्रवृद्ध होते हुए तुमने अर्बुद को मार डाला । जैसे सूर्य उसी प्रकार से चक्र को घुमाया। अङ्गिरस से युक्त इन्द्र ने बल को हिंसित किया ।

सूर्य: - सरति आकाशे सूर्य यद्वा सुवति कर्मणि लोकप्रेरयति सू + क्यप् नि0। सूरज
सूर्य सेर्ये तपत्या वरणाय दृष्टे कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा ।रघु0 5/13.
पुराणों के अनुसार सूर्य को कश्यप और अदिति का पुत्र माना जाता है । वह अपने घोड़ों पर बैठकर घूमता है और अरुण उसका सारथी है और संसार के शुभाशुभ कार्यों को देखता है । अर्धम् सूर्य की पूजा के उपहार भेंट करना, अस्तम सूर्य को छिपाना । आवर्त: सूर्यमुखी का फूल तथा उदय: सूर्य का निकलना, ग्रह सूर्यग्रहण चन्द्रग्रहण तनय सुग्रीव से सम्बन्ध है । वा0शि0आ0 । Sun, sun god, sunbeam, sun stone, suncrystal, sunshine, sunbright, son of the sun, daughter of the sun, uma-ma-sprung of the sun, belonging of the surya prabha, - मैक्डानल । the sun of its deity
सूर्या the sun personified as a famale, or channels - का0कै0 ।
Surya - ग्रिफिथ । Sun - विल्सन । sonue - गेलडनर, ग्रासमान ।
यहाँ पर अनेक विद्वानों ने अपने अपने मतानुसार अनेक प्रकार से सूर्य की व्याख्या की है किन्तु यहाँ पर देदीप्यमान अर्थ अधिक समीचीन होगा ।

अङ्गिरस्वान् - पु0 ॥अङ्ग + अस् + इरु टाप्॥ ऋग्वेद के अनेक सूक्तों का द्रष्टा एक प्रसिद्ध ऋषि, ब0व0 ॥ अंगिरा ऋषि की संतानों के सहित - वा0 शि0आ0 । अङ्गिरस्वान् अङ्गिरोभि: सहित: - सा0मु0 । a kind of mythol, beings with Agni at their head, N. of an old Rishi Pl. his descendonts or their hymns, i.e. the Atharvaveda रस्तम् quite an a अङ्गिरस्वत् । adv. like an **a.** का0कैप0 । Messenger between gods and men (Agni being the chief them) N. of a Rishi a star in the great bear Pl. N. op the Atharvaveda and of a family of seers - मैकडानल । Beglutvny der Angiras -गेल्डनर। aided by the Angiras - विल्सन । der chbohste mit den Anyirus- ग्रासमान । and aided by the Angiras - ग्रिफिथ । यह एक वेद के द्रष्टा ऋषि का नाम है ।

चक्रम् - क्रियते अनेन कृ घ अर्थे कनि0 द्वित्वम् - तार0 - गाड़ी का पहिया । चक्रवत्परिवतन्ते दु:खानि च सुखानि च हि । .163 कुम्हार का चाक, एक तीक्ष्ण गोल अस्त्र, चक्र ॥विष्णु का॥ तेल पेरने का कोल्हू - कलापचक्रेषु नि वेशिता- ननम् ऋत, 2/14भ्रम: भूमि: आरोप्य चक्र भ्रमिमुष्णतेजास्त्वपद्रेषु पत्नोश्लल खितो विभाति रघु0 6/32 वा0शि0आ0 । चक्रम् भ्रामयति तद्वत् - सा0मु0 । Wheel, discuss, circle, troop multitude, army, circuit, district, Pravince, domain, m. a report of Proclamation, a station, of herdsmen, - का0कैप0 । Wheel, Potters discuss, ail press, circle, weilder, cicling multitute, circular, serpend, host frock troop splere मैकडानल । Turns round his wheel - विल्सन His whirling wheel like - ग्रिफिथ । Errollte wie die - गेल्डनर। यहाँ पर चक्रवत् गोलाकार ॥गोल॥ अर्थ उचित है ।

मित्रम् - सूर्य, अदिति, [इसका वर्णन प्राय: अदिति के साथ मिलता है] । क्रम
दोस्त - तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यत् भर्तृ० 2/68. मित्रराष्ट्र
पड़ोसी देश, आचार: मित्र के साथ व्यवहार, उदय: सूरज का उगना, कर्मन् नपुं०
कार्यम् - कृत्यम् मित्र का कार्य, मित्रतापूर्ण कार्य या सेवा हन् विश्वासघाती
दोहिन - मित्र से घृणा, वत्सल, मित्र के प्रति दयालु - वा०शि०आ० । - मित्र
frend, comrade, mostly, friendship - का०कैप० । behave us a
friend - मैकडानल । Give us a friend - ग्रिफिथ । Thou
great its us friends - विल्सन । यहाँ पर मित्रं शब्द का अर्थ मित्रता-
पूर्ण कार्य उचित होगा ।

शर्धः - [शृध् + घञ्] अपानतापु का त्याग, अफारा [इस अर्थ में नपुं० भी होता
है। दल, समूह, सामर्थ्य, शक्ति - वा०शि०आ० । शर्धः-वलम् - सा०मु०।
a leading the host शर्धनीति ... a leading the host (of the
maruts) or acting boldly शर्धम् । (only compare - शर्धस्तर)
- का०कैप० । ; (sarada-a-containing be stowing etc. -
- मैकडानल company - ग्रिफिथ । The strength - विल्सन । यहाँ
पर उक्त शब्द का अर्थ अपान वायु उचित है ।

नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।

शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीरा: ॥ 2। ॥

अन्वय - इन्द्र दक्षिणा मघोनी वरम् जरित्रे नूनम् प्रति दुहीयत् सा ।
स्तोतृ भ्य: शिक्षा मा धक् न: बृहत् वदेम मा अति विदथे सु वीरा: ॥

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! सचमुच तुम्हारी वह मघोनी दक्षिणा को स्तोता के दोहन कर दे । स्तोता को देने में समक्ष हो । मेरा अतिक्रमण करके मत जलाओ, सुन्दर सुतों से युक्त हम यज्ञ में अत्यधिक स्तुतियाँ करें ।

प्रति - ॥ती॥ कार: ॥प्रति + कृ + घञ्॥ पक्षे उपसर्गस्य दीर्घ: । प्रतिशोध, पुरस्कार, प्रतिदान, प्रतिहिंसा, प्रतिविधान विकारम् खलु परमार्थतो ज्ञात्वा नारम्भ: प्रतिकारस्य ॥श0 3॥ प्रतिकारो व्याधे: सुखमिति विपर्यस्यति जन: भर्तृ0 3/92. इलाज करना, सुधार करना, प्रतिकार विधानमायुष: सति शेषे हि फलाय कल्पते रघु0 8/40, वा0शि0आ0 । Towards against, back in return also at the time of, about, with regard to, in favour of, according to an account or in consequence of - का0कैप0 । With nouns against, towards to, upon, in the direction, before, about, near, on, in, at, at the time of, through for (to time) in favour, on account of - मैकडानल । of time - ग्रिफिथ from thee - विल्सन । यहाँ पर प्रति एक उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त हुआ है । जो यथास्थान शब्दों के साथ प्रयुक्त किया जाता है ।

नृम्णस्य - नृम्णस्य सेनालक्षणस्य बलस्य - सा0भा0 । manliness, courage, strength - का0कैप, मैकडानल । the greatness of his strenghth - विल्सन । greatness of this volour - ग्रिफिथ । यहाँ पर शक्तिशाली अर्थ सेना के लिए प्रयुक्त हुआ है जो उचित है।

दक्षिणा - दक्षिणामर्हति - दक्षिणा छयत् वा॥ यज्ञीय - उपहार को ग्रहण करने के योग्य या अधिकारी जैसा कि ब्राह्मण । वा०शि०आ० । Adr. on the right or on the south - का०कैप० । To the right south words (of ab.) मैकडानल । यहाँ पर यज्ञीय अन्न ग्रहण करने वाला ब्राह्मण अर्थ उचित है ।

शिक्षा - ॥शिक्ष भाव अ + टाप्॥ अधिगम, अध्ययन ज्ञानाभिग्रहण, रघु० 9/63 किसी कार्य के योग्य होने की इच्छा प्रशिक्षण -काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास: काव्य । अभूच्च नम्र प्रतिपात सिक्षया रघु० 3/24 - वा०शि०आ० । Ability, cleverness, skill, art, knowledge, instruction, the science of the grammatical elements - का०कैप० । Knowledge, art, skill, instruction, teaching, lesson, precept, science, of grammatical, elements - मैकडानल । Who art the object of adoration - विल्सन । Loud may we speak - ग्रिफिथ । यहाँ पर शिक्षा का अर्थ अध्ययन अत्यधिक समीचीन है ।

नूनम् - ॥अव्यय॥ ॥नू + ऊन् 5 अम्॥ असंदिग्ध रूप से, विश्वस्त रूप से, निश्चित रूप से, अवश्य नि:सन्देह, अद्यापि नूनं हरकोपवह्निस्त्वपि ज्वलत्यौर्व इवांबुराशौ शा० 3/3 अत्यधिक संभावना के साथ - वा०शि०आ० । Now, just immediately in future, then the refore, certainly indeed,- का०कैप० । How, just at present oforth with, henceforth then, therefore, most, मैकडानल ।. Now - ग्रिफिथ । Nun - गेल्डनर । Wohlan - ग्रासमान ।; phat - विल्सन । नूनम् एक प्रकार का अव्यय है । जो यथोचित स्थान पर प्रयुक्त होता है ।

यो जात एव प्रथमो मनस्वान्देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत् ।

यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः ॥ । ॥

अन्वय : यः प्रथमः मनस्वान् देवः जातः एव क्रतुना देवान् पर्यभूषत् यस्य शुष्मात् रोदसी अभ्यसेताम् , जनास ! नृम्णस्य मह्ना सः इन्द्रः ।

हिन्दी अनुवाद - जिस प्रमुख [एवं] मनस्वी देव ने उत्पन्न होते ही [अपने] पराक्रम से देवों को अभिभूत कर लिया [अथवा देवताओं का अतिक्रमण किया]; जिसकी शक्ति से द्युलोक और पृथिवीलोक काँप गये, हे लोगों ! महान् बल की महिमा से युक्त वह [ही] इन्द्र है ।

जातः - [भू0क0कृ0] [जन् + क्त] अस्तित्व में लाया गया, जन्म दिया गया, पैदा किया गया, उगा हुआ, निकला हुआ, प्रायः स्नेह या प्रेम द्योतक के अर्थ में प्रयुक्त, अपि जात कथपि तत्यं कथम् उत्तर0 4 - वा0शि0आ0, Born, begot, with by born ago old grown orisen, appeared, happened, passed become turned being, present, often, having born, grown or existing - का0कैप0 । ; creature, birth, race, kind, genus, all that is comprised by sum total of every kind of - मैक्डानल । just born - ग्रिफिथ । as soon as born - विल्सन । Der kaum gebornon - ग्रासमान । यहाँ पर उत्पन्न होते ही अर्थ उपयुक्त है ।

मनस्वान् - [वि0] मनस् + विनि] बुद्धिमान, प्रज्ञावान, चतुर ऊँचे मन वाला उच्चात्मा, स्थिरमना दृढ निश्चय दृढ संकल्प वाला नी - उदार मन की या अभिमानिनी स्त्री मनस्विनीमान विधाता दक्षम् कु0 3/32, वा0शि0आ0 ।

दक्षिणा - दक्षिणामर्हति - दक्षिणा छयत् वा। यज्ञीय - उपहार को ग्रहण करने के योग्य या अधिकारी जैसा कि ब्राह्मण । वा०शि०आ० । Adr. on the right or on the south - का०कै०प० । To the right south words (of Lab.) मैकडानल । यहाँ पर यज्ञीय अन्न ग्रहण करने वाला ब्राह्मण अर्थ उचित है ।

शिक्षा - [शिक्ष भाव अ + टाप्] अधिगम, अध्ययन ज्ञानाभिग्रहण, रघु० 9/63 किसी कार्य के योग्य होने की इच्छा प्रशिक्षण -काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास: काव्य । अभूच्च नम्र प्रतिपात शिक्षया रघु० 3/24 - वा०शि०आ० । Ability, cleverness, skill, art, knowledge, instruction, the science of the grammatical elements - का०कै०प० । Knowledge, art, skill, instruction, teaching, lesson, precept, science, of grammatical, elements - मैकडानल । Who art the object of adoration - विल्सन । Loud may we speak - ग्रिफिथ । यहाँ पर शिक्षा का अर्थ अध्ययन अत्यधिक समीचीन है ।

नूनम् - [अव्यय] [नू + ऊन् + अम्] असंदिग्ध रूप से, विश्वस्त रूप से, निश्चित रूप से, अवश्य नि:सन्देह, अद्यापि नूनं हरकोपवह्निस्त्वपि ज्वलत्यौर्क इवां बुराशौ श० 3/3 अत्यधिक संभावना के साथ - वा०शि०आ० । Now, just immediately in future, then the refore, certainly indeed,- का०कै०प० । How, just at present oforth with, henceforth then, therefore, most, मैकडानल । Now - ग्रिफिथ । Nun - गेल्डनर । Wohlan - ग्रासमान ।; phat - विल्सन । नूनम् एक प्रकार का अव्यय है । जो यथोचित स्थान पर प्रयुक्त होता है ।

य. पृथ्विीं व्यथमानामदृंहध: पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात् ।

यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात्स जनास इन्द्र: ॥ 2 ॥

अन्वय - य: व्यथमानां पृथ्विीम् अदृंहत, य: प्रकुपितान् पर्वतान् अरम्णात् ,
य: वरीय: अन्तरिक्षम् विममे, य: द्याम् अस्तभ्नात्, जनास: ! स:
इन्द्र: ।

अनुवाद : जिसने काँपती हुई {डगमगाती हुई} पृथ्वी को स्थिर किया; जिसने
उड़ने वाले पर्वतों को {अपने-अपने स्थान पर} स्थापित किया, जिसने
विस्तृत अन्तरिक्ष को मापा {अथवा विस्तृत अन्तरिक्ष का निर्माण किया}; जिसने
द्युलोक को {गिरने से} रोका {अथवा द्युलोक को थामा} हे लोगों ! वह इन्द्र
है ।

पृथ्विीम् - प्रथ् + षिवन्, संप्रसारण{ पृथ्वी {कई पृथ्विी} भी लिखा जाता है ।
समः इन्द्र: ईश: क्षित् पु० पाताल, पालक भुज् पु० भुज: शक्र: राजा-
तलम् धरातल, पति राजा मृत्यु का देवता मंडल लम् - भूमण्डल, रूह वृक्ष - पव-
मान: पृथ्विी महानिव रघ० 8/9 लोक: मार्त्यलोक भूलोक = वा०शि०आ० ।
the earth, (lit, the wide one, often person if) land, country
realm, का०कै०प० । earth, orbis, terrorum (three earths
spoken of) Earth land, realm, ground, मैकडानल । ; The earth-
ग्रिफिथ ; The moving earth - विल्सन । यहाँ पर प्रस्तुत शब्द पृथ्विीं
का अर्थ पृथ्वी को उचित प्रतीत होता है ।

व्यथमानाम् - भ्वा०आ० व्यथते व्यथित, शोकान्वित होना, पीड़ित होना, कष्ट-
ग्रस्त होना, विक्षुब्ध व अशान्त होना, विश्वंभरा पि नाम व्यथते

इति जितमपत्य स्नेहेन उ0 6, न विव्यथे तस्य मन. वि0 1/2 आंदोलित होना, दोलायमान होना, कांपना, भयभीत होना, सूखना, शुष्क होना - वा0 शि0 आ0 । waver, reel, stagger, be afraid, or pained, c. cause, to waver etc. bring to full, make afraid, or uneasy distress, pain, का0कैप0 ; rock, stumble, suffer, charm, tremble, be disquieted, agitaated of flicted - मैकडानल । Staggered - ग्रिफिथ । turn guilliged - विल्सन । यहाँ पर कांपती हुई अर्थ अन्य विद्वानों की अपेक्षा अत्यधिक उचित है ।

<u>पर्वतान्</u> - पर्व + अचच्, पहाड़ गिरि पर गुण परमाणुन्पर्वतीकृत्य नित्यम् भर्तृ0 2/6 न पर्वताग्रे नलिनी पुरोहति, चट्टान, कृत्रिम पहाड़ या ढेर, वा0 शि0 आ0 । Knotty ruggid, mountain, height, hill rock stones stone, का0कैप0 । ; consisting of konts or ragged, massees mountain, hill, rock, boulder, cloud, मैकडानल । agiteeted mountains - ग्रिफिथ । the inonsed mountain - विल्सन । यहाँ पर उपरोक्त शब्द पर्वतान् शब्द का अर्थ पर्वतों को उचित प्रतीत होता है ।

यो हत्वाहिमरिणात्सप्त सिन्धून्यो गा उदाजदपधा वलस्य ।

यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः ॥ 3 ॥

अन्वय - यः अहिं हत्वा सप्तसिन्धून् अरिणात्, यः वलस्य अपधा गाः उदाजत्,
यः अश्मनोः अन्तः अग्नि जजान, समत्सु संवृक् जनासः । सः इन्द्रः ।

हिन्दी अनुवाद - जिसने वृत्र को मार कर सात नदियों को प्रवाहित किया, जिसने वल नामक असुर की गुफा से गायों को बाहर निकाला, जिसने दो बादलों (अथवा पत्थरों) के मध्य में अग्नि को उत्पन्न किया, जो युद्धों में (शत्रु का) विनाश करने वाला है, हे लोगों ! वह इन्द्र है ।

हत्वा - वि० (हन् + क्त) हत् शब्द त्वा प्रत्यय से पीड़ित करके मार करके, घायल करके, भ्रष्ट किया हुआ, किल्बिष - जिसके पाप नष्ट हो गये हों, त्रप - निर्लज्ज, बेशर्म, जिसमें शिष्टता न हो, वेश्या, वा०शि०आ० । हत्वा मेघ हननं कृत्वा - सा०भू० । Smitten, beaten, struck, raised, hit, piersed, wounded, hurt, visited, or afficted, by cheated, killed, slain, ruined, lost, - का०कै० । afficted by, the adcursed, wretched, objected, in heart, bereft of charm star-less, might, bereft of understanding - मैक्डानल । Slew the dragon - ग्रिफिथ । Having des troyed - विल्सन । प्रस्तुत शब्द में मारकरके अर्थ उचित प्रतीत होता है ।

अग्निम् - (अंगति उर्ध्वं गच्छति अङ् ग + निलोपश्च) आग, कोप° चिता° आदि आग का देवता, तीन पकार की अग्नि आहर्पत्य - आवाहनपि और

दक्षिण, जठराग्नि पाचन शक्ति, पित्त पद में देवता का नाम या विशिष्ट शब्द हो तो अग्नि के स्थान पर अग्नी हो जाता है जैसे - विष्णु मरुतौ अग्नि के स्थान पर आग्नी भी हो जाता है । वा०शि०आ० । ag-ni-m-fire,conflagration - मैकडानल ; m. fire or Agni (the god of fire) - का०कै०प० । the fire - ग्रिफिथ । Fire - विल्सन । यहाँ पर आग अर्थ उचित प्रतीत होता है ।

अश्मनो - पु० ।अश् + मनिन्। पत्थर नाराचक्षेपणी यस्मिनि रूपेषोत्पत्तितानलम् रघु० 4/77, फलीता - चमकदार पत्थर, बादल, वज्र, सम० - उत्थम् गिराना, आंसुओं से भरा हुआ, रघु० 2/1, मुख - अचानक आँसू गिराने वाला - वा०शि०आ० । 1. m. eater, 2. rock, stone, thunderbold, sky-rock-thunderbolt, heven - का०कै०प० । made of stone - मैकडानल between two stone - ग्रिफिथ । in the clouds - विल्सन । प्रस्तुत शब्द अश्मनों का अर्थ यहाँ पर चमकदार पत्थर ही उचित है ।

सिन्धून् - ।स्पन्द + उद् संप्रसारणं दस्य धः। समुद्र सागर, सिन्धु नदी के तटवर्ती क्षेत्र, मालवा में प्रवाहित होने वाली नदी का नाम, मेघ 29 ।यहाँ पर मल्लि० का टिप्पणी - सिन्धुनाम नदी तु कुत्रा पिनअस्ति - निरर्थक है । 20 4/9, हाथी के सूंड़ से निकला पानी - वा०शि०आ० । Strum, esp. the Indus pl.m. the, land on the Indus, its inhabitents, m. also flood, sea, ocean water - का०कै०प० ।Streem, river, Indus, flood, ocean, region, of the Indus, Sindh, people of Sindh - मैकडानल । rivers - ग्रिफिथ, विल्सन । strome - ग्रासमान । यहाँ पर नदी अर्थ अनेक विद्वानों ने सिन्धून् शब्द का बताया है । नदी ही अर्थ उचित प्रतीत होता है ।

येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि यो दासं वर्णमधरं गुहाकः ।

श्वघ्नीव यो जिगीवां लक्षमाददर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः ॥ 4 ॥

अन्वय - येन इमा विश्वा च्यवना, कृतानि, यः अधरम् दासम् वर्णम् गुहा अकः,
यः श्वघ्नीव लक्षम् जिगीवान्, सः अयः पुष्टानि आदत्, जनासः ।
सः इन्द्रः ।

हिन्दी अनुवाद - जिसके द्वारा ये सम्पूर्ण [वस्तुयें] गतिशील कर दी गई हैं जिसने निकृष्ट दास वर्ण को गुफा [या नरक] में कर दिया, अपने शिकार को जीत लेने वाले शिकारी की भाँति [या दाँव को जीत लेने वाले जुआरी की भाँति] जिसने शत्रु के धनों को छीन लिया है, हे लोगों ! वह इन्द्र है ।

च्यवना [च्यु + ल्युट] चलना-फिरना, गति, वंचित होना, हानि, वंचना, भरना, टपकना, च्यवना नश्वराणि भुवनानि - सा०भा० । Mooving shaking N. of a demon, of disease, N. of a Rishi, N. motion, loss of Shaking or shaken, m. a mass name m. motion, shock, loss of. का०कैप० । च्यवन एक ऋषि का नाम है और उन्हीं के लिए यहाँ पर च्यवन का प्रयोग किया गया है ।

गुहा - [गुह् + टाप्] गुफा कन्दरा, छिपने का स्थान, गुहा निबद्धप्रतिशब्दधीर्घम् रघु 2/28, धर्मस्य तत्वम् निहितं गुहायाम् महा० छिपाना, ढकना, गड्ढा बिल, हृदय, वा०शि०आ० । गुहा गुहायाम् गूढस्थाने नर्के वा - सा०भा० । Hiding place, cave, in most heart, in hiding in scret, conceal, hide, remove, - मैक्डानल । Cave, Pit, mine, fig. heart, instr.

का0कै0 । यहाँ पर गुहा शब्द का अर्थ कन्दरा ।गुफा। अर्थ में लगाया गया है।

वर्णम् - ।वर्ण + घञ्। रंग, शूद्रस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्ण: मेघ0 49 रोमन रंग दे0 वर्ण रंगरूप सौन्दर्य त्वय्या दातुं जलभवनते शार्ङ्गिणो वनचौरो मेघ0 46 ; मनुष्यश्रेणी जनजाति या कबीला जाति ।ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र। वा0शि0आ0 । cover, lid, outside, external, appearance pattern, colour, dye, paint, complexion, sort, kind, sort, of men, caste, - का0कै0 ।cover, lid, exterior, appearance, Pigment, kind, Praise, renown विल्सन to the cover - ग्रिफिथ । broad - मैक्स0मू0 । यहाँ पर वर्ण शब्द का अर्थ चार वर्णों के अर्थ में लिया गया है ।

दासम् - ।दास + अच्। गुलाम, सेवक, गृहकर्मदाक्षा: भर्तृ0 I. I, गृह कर्म आदि मछुवा, शूद्र, चौथे वर्ण का पुरुष, तु0 गुप्त वा0शि0आ0 । दासं - दासवर्ण शूद्रा दिकमं यदा दासमुपक्षमयितारम् - सा0मू0 । an evil demon, or an infidel, servent, slave, son & daughter of a slave - का0कै0 । Foe, demon infidel, slave, servent मैक्डानल । the humble broad of demons - ग्रिफिथ । the base servent - विल्सन। यहाँ पर दास शब्द का अर्थ शूद्र अर्थ में लिया गया है ।

यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम् ।
सो अर्यः पुष्टीर्विजइवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः ॥ 5 ॥

अन्वय - यं घोरम् सः कुह इति पृच्छन्ति उत ईम् एनम् एषः न अस्ति इति आह
सः विजः इव अयः पुष्टीः आमिनाति अस्मै श्रत् धत्त, जनासः । सः
इन्द्रः ।

हिन्दी अनुवाद - जिस भयंकर ।देवता। के विषय में "वह कहाँ है ?" ऐसा ।लोग।
पूछते हैं, और जिसके विषय में "यह नहीं है" इस प्रकार ।भी।
लोग कहते हैं, वह ।देवता। विजेता की भाँति शत्रु के धन को पूर्णतः नष्ट कर देता
है बलपूर्वक छीन लेता है । हे लोगों । वह इन्द्र है । इसमें श्रद्धा धारण करो ।

कुह ।कुह् + स्तुंभ + क। विष्णु + समुद्र - वा0शि0आ0 । where (aslo, w.स्विद्
?? with, चिद् wherever, somewhere - का0मै0 । where (often
svid) kid, somewhere, wherever, मैकडानल । where - ग्रिफिथ ।
where is - विल्सन । यहाँ पर कुह शब्द का प्रयोग कहाँ के लिए प्रयुक्त हुआ
है ।

धत्त - दो ।धा ।पा। लोट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन, मध्यस्थ क्रिया निघात् ।
वा0शि0आप्टे ।

रध्रस्य - रध हिंसासंराद्ध्योः - सा0मु0 । the wreched - मैक्समूलर ।
warshipper - विल्सन । worshipper - ग्रिफिथ ।
प्रस्तुत शब्द रध्रस्य का अर्थ हिंसा अर्थ में ही उचित प्रतीत होता है ।

यम - ।यम् + घञ्। संयत करना, नियंत्रित करना, दमन करना, नियन्त्रण, संयम, आत्मनियंत्रण, कोई महान नैतिक या धर्म साधना ।विप0 नियम। तप्तं यमेन नियमेन तपो भवैव नै0 13/16, यम और नियम के निम्न प्रकार से विभन्नता दर्शायी गयी है - शरीर साधनापेक्षं नित्यमं क्र यत्कर्म तद्यमः नित्यमस्तु संयतकर्म नित्यमागन्तु साधनम् अम0दे0कि0 10/10 - वा0शि0आ0 । Suppression, restraint, self restraint, general, law of morality, paramount, duty, minor duty) observance, rule - मैक्डानल ; 1. Holder, restraint, self-control, any paramount, moral duty ;

2. Faired, twin, twin, of a god, either, the twin, the god of death, Pair, twin, letter - का0कै0 । यहाँ पर यम शब्द का अर्थ नियंत्रण करना अर्थ में उपयुक्त है ।

घोरम् - ।वि0। ।घुर् + अच्। भयंकर, डरावना, भीषण, भयानक, शिमाघोरस्वनां पश्चाद्बुबुधे, विकृतेति ताम रघु0 12/39, तत्किं कर्मणि घोरे मा नियोजयसि केशव महा0 घोरं लोके विततम यशः उत्तर0 7/6, हिंस्र, प्रचण्ड रः शिम, रा, रात, रस् । संत्रास, भीषणता - वा0शि0 आप्टे । घोर शत्रूणां घातकं - सा0मु0 । awful, terrific, horrilds, violent, owe, horror, magic, in constation, - का0कै0 । awful, sublim, terrible, dreadful, violent, horror, terror spell - मैक्डानल । the terrible - विल्सन, एवं ग्रिफिथ । प्रस्तुत घोर शब्द का अर्थ भयंकर या डरावना अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है ।

यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः ।

युक्तग्राव्णो यो विता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः ॥ 6 ॥

अन्वय - यः रध्रस्य चोदिता, यः कृशस्य, यः नाधमानस्य कीरेः ब्रह्मणः सुशिप्रः यः युक्तग्राव्णः सोमस्य अविता, जनासः ! सः इन्द्रः ।

हिन्दी अनुवाद - जो समृद्धिशाली व्यक्ति का प्रेरक है, जो निर्धन का ।प्रेरक है। जो याचना करने वाले तथा स्तुति करने वाले पुरोहित का ।प्रेरक। है, सुन्दर हनु वाला ।अथवा सुन्दर ओष्ठ वाला। जो ।सोम पीसने के लिये। पत्थरों को तैयार करने वाले तथा सोम रस को निचोड़ने वाले ।यजमान। का रक्षक है, हे लोगों ! वह इन्द्र है ।

चोदिता - ।भू०क०कृ०। ।चुद् + णिच् + क्त। भेजा, निर्दिष्ट, स्फूर्ति दिया गया। हाँका गया, उकसाया गया, प्रोत्साहित किया, उत्तेजित किया गया वा०शि०आ० । चोदिता धनानाम् प्रेरयिता भवति - सा०भा० । Summons , Prepect - का०कैप० । ; Urging, impelling, incitement, commond, Prescniption - मैक्डानल । यहाँ पर चोदिता शब्द का अर्थ धनों के प्रेरक उपयुक्त प्रतीत होता है ।

कृशस्य - ।वि०। ।म०य० क्रशीयस् उत्त० क्रशिष्ठ। ।कृश् + क्त नि०। कृश शब्द षष्ठी एकवचन - दुबला-पतला, दुर्बल, शक्तिहीन कृशतनुः कृशोदरी आदि, छोटा, थोड़ा, सूक्ष्म ।आकार या परिणाम में। सुहृद पि नपाच्यः कृश-धनः भर्तृ० 2/28, वा०शि०आ० । कृशस्य च दरिद्रस्य च - सा०भा० । Thin, slender, feeble, sickly, notfull, weak, insignificant, poor, thin cows, thinness slender means, poor, of weak, intellect,

have thin servants - मैकडानल । Lean, thin, slender, weak, feeble, in significant, poor - का0कैप0 । of the poor - ग्रिफिथ एवं विल्सन । प्रस्तुत शब्द कृशास्य ॥धनहीन का॥ उचित है ।

ब्रह्मण: ॥ब्रह्मन् + अण्॥ ब्रह्म वेद शुद्धं चैतन्यं वा वेत्त्य धीत्ये वा अण् ब्रह्मण,
के योग्य, ब्राह्मण द्वारा दिया गया, हिन्दू धर्म में माने गये चार वर्णों में सर्वप्रथम वर्ण का ॥पुरुष ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न ब्राह्मणाय मुखमासति ॠक्सू0 वै0मा0 10/90/12. मालवि0 1/31, ब्राह्मण जन्मना जायते शूद्र: संस्कारै द्विज: उच्यते विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभि श्रोत्रिय उच्यते या जात्या कुलेन वृत्तेन स्व-ध्यायेन क्षतेम च एअभिर्युक्तो हि यतिष्ठेन्नित्यं स द्विज: उच्यते॥ पुरोहित, धर्म - शास्त्री, ब्रह्मज्ञानी, अग्नि का विशेषण - वा0शि0आ0 । ब्राह्मण: ब्राह्मणस्य च धनानाम् प्रेरयिता - सा0मु0 । One who prays any devout person or a paiest, a knower of sacred knowledge a brahman of caste,or the priest so called,the supreme being,personfi.as the highest create or f. the world - का0 कैप0 । Devotion utterance , prayer, vedic verse or text speli sacred, syllable, om, holy scriptures, the vedas sacred, learning the osaphy, holy life, continence charity the supreme impersonlly spirit, class who are the repository of secred knowledge - मैकडानल। of supprient - ग्रिफिथ एवं विल्सन । उपर्युक्त शब्द ब्राह्मण का अर्थ यहाँ पर वेदों में वर्णित चार वर्णों में से प्रथम वर्ण का पुरुष है जो ब्रह्मा के मुख से अवतरित माना गया है, यहाँ उचित है ।

यस्याश्वास: प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथास: ।

य: सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्र: ॥ 7 ॥

अन्वय - यस्य प्रदिशि अश्वास:, यस्य गाव: यस्य ग्राम:, यस्य विश्वे रथास:,
य: सूर्यम् य: उषसम जजान, य: अपाम् नेता, जनास: ! स: इन्द्र: ।

हिन्दी अनुवाद - जिसके अनुशासन [आज्ञा] में घोड़े हैं, जिसके [अनुशासन में] गायें हैं, जिसके [अनुशासन में] ग्राम हैं, जिसके [अनुशासन में] सम्पूर्ण रथ हैं, जिसने सूर्य को [उत्पन्न किया है], जिसने उषा को उत्पन्न किया है, जो [बादलों में से] जलों को लाने वाला [बरसाने वाला] है, हे लोगों ! वह इन्द्र है ।

ग्रामा - ग्रस: + मन् आदंतादेश: ग्राम शब्द बहुवचन प्रथमम् गांव, पुरवा, पत्तने विद्यमाने पि ग्रामे रत्नपरीक्षा मालवि० त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्, ग्रामं जनपस्यार्थे पृथ्वीं त्यजेत् हि० 1/149, वंश, जाति, समुच्चय, संग्रह, उदा० गुणग्राम, इन्द्रियग्राम ग्रामया या सुरग्राम - वा०शि०आ० । ग्रामा: ग्रसन्ते त्रेति ग्रामा: जनपदा: - सा०मु० । Dwelling place, village (also n.) comunity pl. inhabitants, people, inhabited place, village का०कैप० । community, clean, host, multitude, aggregate, मैक्डानल । and the village ग्रिफिथ एवं विल्सन । प्रस्तुत शब्द ग्राम का अर्थ प्राय: सभी विद्वानों ने ग्राम अर्थ में व्याख्या किये हैं । ग्राम अर्थ ही यथोचित है ।

अश्वास: - [वि + सम् + स०] प्राप्त करना, घोड़ को प्राप्त करने वाला [अंश + क्वन्] घोड़ा, सात की संख्या, प्रगति करने वाला, घोड़े जैसा बल

रखने वाला । मनुष्य की दौड़ - काष्ठतुल्यवपुर्धृष्टो मिथ्याचार निर्भरा: द्वाद शांगुल मेदश्च दरिद्रस्तु हयोमता, श्वौ: - घोड़ा और घोड़ी - वा0शि0आ0 । Horse, a mans name, f. आ mare - का0कै0 ; Horse, mare skilled in horses horse loof - horse fodder, riding hall, best horse, mule - मैक्डानल ; Horses - ग्रिफिथ ; or horses - विल्सन । यहाँ पर घोड़े अर्थ उचित है ।

उषसम् - ।स्त्री। ।उष् + असि। पौ फटना, प्रभात, प्रदीप्राचिर्विोषसि, रघु0 ।2/। उषसि उत्थान - प्रभातकाल में उठकर, प्रात:कालीन प्रकाश - वा0शि0आ0 । Morning light down, (often personif) also evening light, du उषासौ morning and evening - मैक्डानल । Dawn, Aurora, morning evening red, du, night and morning - ग्रिफिथ ; and morning - का0कै0 ; and to the down - विल्सन ; Morgenro the - ग्रासमान।। यहाँ पर उषा को अर्थ अधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

अपाम् - ।अप् जल का संबं0 ब0ब0।।समास के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त। ज्योतिष् ।न0। ।बिजली। नपात् - अग्नि और सावित्री की उपाधि, नाथ:-पति: समुद्र, वरुण निधि: - समुद्र, प्राथम् नपुं0 भोजन, पित्तम्, अग्नि - वा0शि0आ0 । Water, sea, Varuna - मैक्डानल ; The ocean, The Varuna - का0कै0 । The waters - ग्रिफिथ ; of the waters - विल्सन । प्रस्तुत शब्द अपाम् का अर्थ प्राय: सभी विद्वानों ने जल के रूप में लिया है । अतएव जल ही अर्थ अत्यधिक उचित होगा ।

यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परे वर उभया अमित्रा: ।

समानं चिद्रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्र: ॥ 8 ॥

अन्वय - क्रन्दसी संयती यम् विह्वयेते, परे अवरे उभया: अमित्रा: समानम् रथम् आतस्थिवांसा नाना हवेते, जनास: । स: इन्द्र: ।

हिन्दी अनुवाद - सिंहनाद करती हुई तथा परस्पर युद्ध करती हुई ।शत्रुओं की सेनाएँ। जिस देवता को विविध प्रकार से पुकारती है, ।जिसको। बलवान् एवं निर्बल दोनों प्रकार के शत्रु ।अपनी सहायता के लिये। बुलाते हैं, जिसको एक ही प्रकार के रथ पर बैठे हुए ।दो योद्धा। ।अथवा एक ही रथ पर बैठे हुए सारथि तथा योद्धा। विभिन्न प्रकार से बुलाते हैं, हे लोगों । वह इन्द्र है ।

अवरे - ।वि०। ।न वर: इति अवर: न०त०वृ० + अप् बा०, आयु में छोटा ।
मासेनावर: = मासावा: सिद्धा० ।ख। बाद का पिछला पश्चवर्ती यद् वरम् कौशाम्ब्या: यद् वरमाग्रहायण्या: सिद्धा० अनुवर्ती, उत्तरवर्ती, नीचे, घटिया, नीच, सबसे बुरा, निम्नतम - वा०शि०आ० । अवरे अधमाश्च - सा०मु० । Lower, inferior, follower, later younger, nearer, preceding, western, vide, buse, mean - का०कै०प० । ;lower, inferior, low, mean, following, later, younger, nearer, western - मैक्डानल । weaker - ग्रिफिथ । low - विल्सन । यहाँ पर प्राय: सभी विद्वानों ने उपर्युक्त शब्द अवरे का अर्थ कमजोर ।निर्बल। अर्थ लिया है । अस्तु निर्बल अर्थ ही प्रस्तुत स्थान पर समीचीन प्रतीत होता है ।

अमित्रा: ।अम् + इत्र। जो मित्र न हो, विरोधी, वैरी, प्रतिद्वन्द्वी, विपक्षी, स्याताम् मित्रौ मित्रे च सहजप्राकृतावपि - शि० 2/36 तस्य मित्राण्ड

मित्रास्ते 10, प्रकृत्यमित्रा हि सताम साधवः कि0 14/21 - वा0 शि0 आप्टे । शत्रवः यमा हव्यन्ति - सा0 मु0 । Enemy, ad. वत + abstr. ता , den, का0 कै0 ; enemy - freiendless - मैकडानल । enemy - ग्रिफिथ । यहाँ पर शत्रु अर्थ अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

नाना - [अव्यय] "न् + नाञ्], अनेक स्थानों पर विभिन्न रीतिसे] विविध प्रकार से, तरह तरह से, स्पष्ट रूप से, पृथक रूप से, नाना नारीं निष्फला लोकयात्रा - वो0 [विश्व] न नाना शुभुना रामात् वर्येणा दोहजोवरः तदेवं - वा0 शि0 आ0 । Different, various, manifold, sundry, wind, difference, munifoldness - मैकडानल differently, variously, destinctly, separately - का0 कै0 । each for -ग्रिफिथ ।seaerally-विल्सन । यहाँ पर नाना शब्द का अर्थ 'अनेक प्रकार से' उचित है ।

रथम् - [रम्यते नेन अत्र वा रम् + कथन्] गाड़ी जलूसी गाड़ी, यान, वाहन, विशेषकर युद्धरथ, नायक [रथिन्], पैर, अवयव, भाग, अंग, शरीर, आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु कठ0, नरकुल - वा0 शि0 आ0 । War - chariot, also any vehicle of the gods charioteer, warrior, champion, hero, का0 कै0 ; cor (two wheeled) wor chariot, vehil, warrior hero - मैकडानल । the chariot -ग्रिफिथ । Cor - विल्सन । यहाँ रथ अर्थ ही अत्यधिक समीचीन होगा ।

समानम् - [वि0] सम् + अन् + अण् , तुल्य, सदृश, एक ही समान, एकरूप, भला, सामान्य - वा0 शि0 आ0 । like, some, similar - का0 कै0 । Indentical, same, equel, मैकडानल । the same -ग्रिफिथ ।like -विल्सन। प्रस्तुत शब्द समानम् का अर्थ प्रायः सभी विद्वानों में मतैक्यता है अस्तु सभी विद्वानों ने सदृश अर्थ ही लगाया है । वस्तुतः यही उचित है ।

यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते ।

यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत्स जनास इन्द्र. ॥ 9 ॥

अन्वय - यस्मात् ऋते जनासः न विजयन्ते, युध्यमानाः अवसे यं हवन्ते, यः विश्वस्य प्रतिमानम् बभूव, यः अच्युतच्युत् जनासः ! सः इन्द्रः ।

हिन्दी अनुवाद - जिसके विना (अर्थात् जिसकी सहायता के विना) लोग विजय नहीं प्राप्त करते हैं, युद्ध करते हुए (लोग) रक्षा के लिए जिसको बुलाते हैं, जो सम्पूर्ण लोगों का प्रतिनिधि (रक्षक, मार्ग-प्रदर्शक) है; जो अचल (पदार्थों) को चल बना देने वाला (अथवा जो स्थिर को भी अस्थिर कर देने वाला) है, हे लोगों ! वह इन्द्र है ।

ऋते - (अव्यय) सिवाय, विना, (अपा० के साथ) ऋते तुरङ्गमात् मटि 8/103 अवेहि मां प्रातिभृते 1/51 (कभी-कभी कर्मधारय के साथ) ऋते पि त्वां न भविष्यति सर्वे भग० 11/32 (करण के साथ विरल प्रयोग) - वा०शि०आ० ।
Apart from, without, except, when three is no (ac-ab)मैकडानल।
Except,besides,without (abl.-or acc) - का०कै०पा० ।without -ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर 'बिना' अर्थ उचित है ।

प्रतिमानम् - (प्रति + मा + ल्युट्) नमूना, प्रतिमूर्ति, प्रतिभा, मूर्ति, समानता, उपमा, समरूपता, दाँतों का मध्यवर्ती सिर का भाग, पृथु प्रतिमान भाग - शि० 4/36 परछाँई - वा०शि०आ० । Measure, weight, counter-part, match, model, pattern, likess, similarity, - का०कै०पा० । Counter, measure, well matched, apponent, Pattern, comparison, resemblance, equality weight - मैकडानल । यहाँ पर समरूपता अर्थ प्रायः सभी विद्वानों ने किया है और समरूपता अर्थ ही सर्वोचित है ।

विजयन्ते - ‡वि0 + जि + घञ् + इन् + क्त‡ जिसके ऊपर विजय न पाया जा सके अर्थात् इन्द्र देव । विजय: - वि + जि + घ॰ - जीतना, परास्त करना, फतह करना, विजया - विजय + टाप् दुर्गा का नाम, उसकी सेविकाओं में से एक, विजयिन् - ‡पु0‡ ‡वि0 + जि + इनि‡ जीतने वाला - वा0शि0आ0 । Victorious - का0कैप0 । यहाँ पर अविजित अर्थ सर्वोपरि है ।

युध्यमाना - ‡युध् + क्त + मन् + टाप्‡ = लड़ाई करने वाला, युद्ध करने वाला - वा0शि0या0 । युध्यमाना: युद्ध कर्वाणा: जना: - सा0मु0 । Fighter, warrior, conquering, in fight of a warrior - मैक्डानल of a warrior, war like, champion - का0कैप0 । do not conger - विल्सन । never canger - ग्रिफिथ । प्रस्तुत शब्द युध्यमाना यहाँ पर लड़ाई करने वाला उचित प्रतीत होता है ।

अवसे - अवसे स्वरक्षणाय - सा0मु0 । avase - help, favour, ad. down, PrP, down from blow - मैक्डानल । Fatour, aid, assistance, recreation, relief, comfort, joy inclimation, desire, down, down from, under, infreshment का0कैप0 Helpour - ग्रिफिथ । यह एक प्रकार का तुमर्थक वैदिक प्रत्यय है और यथोचित स्थान पर प्रयुक्त किया जाता है ‡अव + असेन‡ ।

य: शश्वतो मह्येनो दधानानमन्यमाना छर्वा जघान ।
य: शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्र. ॥ 10 ॥

अन्वय - य: महि एन: दधानान् अमन्यमानान् शश्वत: शर्वा जघान, य: शर्धते शृध्याम् न अनुददाति, य: दस्यो: हन्ता, जनास: ! स: इन्द्र: ।

हिन्दी अनुवाद - जिसने महान् पाप को धारण करने वाले तथा अपमान करने वाले बहुत से ﴾व्यक्तियों﴿ को वज्र से मार डाला, जो दर्पयुक्त ﴾व्यक्ति﴿ के दर्प को सहन नहीं करता है, जो असुर का वध करने वाला है, हे मनुष्यों ﴾लोगों﴿ ! वह इन्द्र है ।

शश्वत: - ﴾अव्यय﴿ ﴾शश् + वत् + वा﴿ लगातार, अनादि, काल से, सदा के लिए सतत, बार-बार, सदैव, बहुश: पुन: पुन: रघु 2/45﴿ समास के प्रयुक्त होने पर शश्वत का अर्थ होता टिकाऊ, नित्य या शश्वच्छान्ति अर्थात् नित्य शान्ति - वा0शि0आ0 । शश्वत: बहूनि - सा0मु0 । ever reparting,or renewing, itself, frequent, mnumberous, all every, adv; again and again, always frequently, once more, indee d of course, मैकडानल ; ever recurring in numerable, perpetually, endless, frequent, numberous, all every, का0कैप0 । उपरोक्त शब्द शश्वत का अर्थ अनेक सर्वोत्कृष्ट है ।

एन: ﴾नपुं0﴿ ﴾इ + अन + नुडागम:﴿ पाप, अपराध, दोष, शि0 14/35 कुचेष्टा जुर्म, खिन्नता, निन्दा, कलंक, - वा0शि0 आ0 । एन: पाप: - सा0मु0। Stem, of 33 Part (decr-only) sin, crime fault - का0 कैपलर ।

Sin. guilt, misfortune, sinful, wicked - मैकडानल ; sin - विल्सन ; siners - ग्रिफिथ ; यहाँ पर एन: शब्द का अर्थ पाप प्राय: सभी विद्वानों ने किया है और यही अर्थ सर्वोचित है ।

हन्ता . ॥हन् + त + टाप्॥ प्रहारकर्ता, वधकर्ता, मनु0 5/34 जो हटाता है नष्ट करता है । प्रतिकार करता है । हत्यारा, कातिल, चोर, लुटेरा, - वा0शि0आ0 । हन्ता: घातक: - सा0मु0 । Killing, to be killed, wishing to be killing - का0कैप0 । To be slain or killed, punished with death transgressed (law) renfuted, stribler, slayer, killer - मैकडानल ; slayer - ग्रिफिथ एवं विल्सन ; हन्ता शब्द हनन करने के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है यहाँ पर हनन करने वाला अर्थ अधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

सर्वा : भ्वा0पर0 शर्वति, चोट या क्षति पहुँचाना, मार डालना, वा0शि0आ0 । of a god killing with arrows - का0कैप0 ; of a god slaying with arrows, meantioned along with Bhava and other names of Pudra Siva, - मैकडानल । यहाँ पर शर्वा: शब्द का अर्थ चोट पहुँचाना उचित प्रतीत होता है ।

य: शाम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत् ।

ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्र: ॥ ११ ॥

अन्वय - य: पर्वतेषु क्षियन्तं शम्बरं चत्वारिंश्यां शरदि अन्वविन्दत् , य: ओजायमानं शयानं दानुम् अहिं जघान, जनास: ! स: इन्द्र. ।

हिन्दी अनुवाद - जिसने पर्वतों पर निवास करते हुए शम्बर [नामक असुर] को चालीसवें वर्ष में खोज निकाला, जिसने ओज [बल] का प्रदर्शन करते हुए तथा [जल को घर कर] लेटे हुए दनु-पुत्र [दानव] अहि को मार डाला, हे लोगों ! वह इन्द्र है ।

जघान् [हन् + घञ् + टाप्] प्रहार करने वाला, वध करने वाला - वा0शि0आ0 । जघान् - हतवान् - सा0मु0 । rear of an army (also the hips or pundenla - libidiour kind, last, latest, lowest - का0कैपलर । Buttock, lost, lostest lowest, meanest, worst, of law birght, containing a from of the root hun - मैक्डानल । the demon lying thero - ग्रिफिथ ; the sleeping - विल्सन । ; प्रस्तुत शब्द जघान् का अर्थ मार डाला ही उचित है ।

चत्वारिंश्याम - चत्वारो दस्याम् परिमाणस्य - वा0शि0आ0 । For fraity- का0 कैपलर । putting forth - ग्रिफिथ for forty - विल्सन । चत्वारिंश्याम शब्द का अर्थ यहाँ पर चालीसवें होता है ।

पर्वतेषु - पर्वत, सप्तमी ब0व0 ﴾पर्व + अचच्﴿ पहाड़, गिरि, परगुण परमाणुन्पर्वती-

कृत्यनित्यम् भर्तृ0 2/78, न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति, चट्टान, कृत्रिम पहाड़ या ढेर, सात की संख्या, वृक्ष - वा0शि0आ0 । Knotty, rugged, (of a mountain) height, hill, rock, stone, rock, stone, - का0कैप0। consisting of knots, or reggred, masses, mountain, hill, rock, boulder, cloud, - मैक्डानल ; the mountains - विल्सन । एवं ग्रिफिथ । पर्वतेषु शब्द का अर्थ यहाँ पर पर्वतों पर ही उचित है ।

शयानम् - ﴾शी + शानच् + मन्﴿ गिरगिट, एक साँप, अजगर - वा0शि0आ0 ।

सयानं शाम्बरम् सुरम् - सा0मु0 । Slèeply, slothful, sluggish, - का0कैप0 । sleepying, indulging, insleep - मैक्डानल । and the sleeping - विल्सन । demon lying - ग्रिफिथ । यहाँ पर सयानम् शब्द का अर्थ लेटे हुए असुर ही उचित है ।

शरदि - ﴾वि0﴿ शरदि जायते सप्तम्यां अलुक्﴿ पतझड़ या शरद ऋतु में सम्बन्ध रखने

वाला - वा0शि0आ0 । Bornor, Praduced in autumn autumnal - का0कैप0 ; Praduced, in autumnal - मैक्डानल ; Autumn- ग्रिफिथ । शरदि शब्द का अर्थ यहाँ ऋतु के सम्बन्ध में है ।

यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मानवासृजत्सर्तवे सप्त सिन्धून् ।

यो रौहिणमस्फुरद्वज्रबाहुर्द्यामारोहन्तं स जनास इन्द्रः ॥ 12 ॥

अन्वय - सप्तरश्मिः वृषभः तुविष्मान् यः सप्त सिन्धून् सर्तवे अवासृजत् , यः वज्रबाहुः द्याम् आरोहन्तं रौहिणम् अस्फुरत्, जनासः ! सः इन्द्रः ।

हिन्दी अनुवाद - सात किरणों वाले [अथवा सात मेघों से समन्वित], वर्षा करने वाले, [अथवा कामना की पूर्ति करने वाले] और बलशाली जिस [देवता] ने सात नदियों को बहने के लिए प्रवाहित किया, हाथ में वज्र को धारण करने वाले [अथवा हाथ में वज्र को उठाकर] जो द्युलोक में चढ़ते हुए रौहिण [नामक असुर] को मार डाला, हे लोगों ! वह इन्द्र है ।

वृषभः - [वृष् + अभच् किच्च] सांड कोई नर जानवर, अपने वर्ग का मुखिया, [समास अन्त में] द्विज वृषभः रत्न0 1/5 वृषराशि, एक प्रकार की औषधि तु0 ऋषभः हाथी का कान, कान का विवरण, वृषभी, वृषभ + डीष् विधाता कवच - वा0शि0आ0 । Manly, potent, strong, bull, friest, or best of chief & Lord, का0कैप0 ; Manly, mighty, bull, chief, lord - मैकडानल ; The bull ग्रिफिथ ; the power full - विल्सन ।
यहाँ पर वृषभः शब्द का अर्थ जानवर अर्थ में सर्वशक्तिशाली सांड के लिए प्रयुक्त है ।

तुविष्मान् - mighty - f. powerful - मैकडानल ; powerfull mighty - का0 कैप0 । the mighty - ग्रिफिथ ।
The powerfull - विल्सन ।

रश्मि. - ॥अस् + मिधातोरुद् रश + मिवा॥ डोरी, रस्सी, लगाम, रास, मुक्तेषु

रश्मिषु निरायत पूर्वकाया: श0 । रश्मि संयमनात् श0 । किरण प्रकाश, इसी प्रकार हिम रश्मि आदि समo कलाप: च्यवन लड़ियों की मोतियों की माला - वा0शि0आ0 - line, cord, touce, whip, measuring rope, ray or beam of light - का0कैप0 ; Cord, rape, trace rein, whip, measuring cord, line of light ray splendour, मैकडानल । Seven guiding reins - ग्रिफिथ । seven rayed - विल्सन । यहाँ पर रश्मि शब्द का अर्थ लगाम के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है ।

रौहिणम् - जत ॥रोहिण + अण्॥ चन्दन का वृक्ष, वटवृक्ष - वा0शि0आ0 ।

Relating to Rohini (cf. रोहित) m.n. of a demon etc. - मैकडानल । Connected with the lunar, mansion Rohini, m. sandal tree or Indian fig tree, n. of a demon vanquished by Indra - का0कैप0 ormed with the thunderbolt - ग्रिफिथ । Thunder, armedment Rauhina in pieeys - विल्सन । यहाँ पर रोहिण नामक ॥असुर॥ के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है ।

द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते ।

यः सोमपा निचितो वज्रबाहुर्यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्र. ॥ 13 ॥

अन्वय - अस्मै द्यावापृथिवी चित् नमेते, अस्य शुष्मात् पर्वताः चित् भयन्ते, यः वज्रबाहु निचितः सोमपाः, यः वज्रहस्त, जनासः ! सः इन्द्रः ।

हिन्दी अनुवाद - इस [जिस] के समक्ष द्युलोक [आकाश] तथा पृथिवी भी झुक जाते जाते हैं, [इसके [जिसके] पराक्रम के सामने पर्वत भी डर जाते हैं, जो वज्र के समान [कठोर] भुजाओं वाला, प्रसिद्ध सोम-पान-कर्ता [सोमपायी] है, जो हाथ में वज्र को धारण करने वाला है, हे लोगों ! वह इन्द्र है ।

द्यावा - द्यावा - dyava - night and morning - द्यावापृथिवी | heaven and earth - मैक्डानल ; द्यावा उदित् - कार्ले कैपलर | the same - का०कैप० ; The heaven and earth- ग्रिफिथ heaven and earth - विल्सन । यहाँ पर आकाश और पृथ्वी अर्थ समीचीन प्रतीत होता है ।

शुष्मात् - [पु०] [शुष् + ड. मनिप्] अग्नि - शि० 14/22 [नपुं०] सामर्थ्य से, पराक्रम से, प्रकाश, कान्ति, - वा०शि०आ० । Fire, might, courage, energy - मैक्डानल ; Strength, courage, vigour, का०कैप० । might - विल्सन ; Very breath - ग्रिफिथ । यहाँ पर सामर्थ्य अर्थ अत्यधिक उचित प्रतीत होता है ।

नि चितः - नि चितः [भू. क. कृ.] [नि + चि + क्त] ढका हुआ, आच्छादित फैला हुआ, निचितम् शमुपेत्य नीरदैः घट० 1, शि० 17/44, भरा

हुआ, पूरित, उठाया हुआ - वा0शि0आ0 । Heaped, or piled up covered or endowed, with, full of; मैकडानल ; Seen visible - का0कैप0 । यहाँ पर फैला हुआ अर्थ अन्य अर्थों की अपेक्षा उचित प्रतीत होता है ।

वज्रबाहु: - वज्रं सदृश बाहु: - सा0मु0 ।

सोमपा - सोमय - Superl, कज्ञका0कैप0 । सोमपा: सोमस्य पाता - सा0मु0 - The soma drinker - ग्रिफिथ । The drinker of soma juice - विल्सन । यहाँ पर प्रस्तुत शब्द सोमपा का अर्थ सोम रस पाने के सम्बन्ध में अर्थ प्रयुक्त किया गया है । यही यथोचित होगा ।

य: सुन्वन्तमवति य: पचन्तं य: शंसन्तं य: शशमानमूती ।

यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राध: स जनास इन्द्र: ॥ 14 ॥

अन्वय - य. सुवन्तम् अवति, य: पचन्तम्, य: ऊती शंसन्तम्, य: शशमानम् अवति, ब्रह्म यस्य वर्धनम्, सोम: यस्य, यस्य इदं राध:, जनास: ! स: इन्द्र: ।

हिन्दी अनुवाद - जो ॥देवता॥ सोम रस को निचोड़ते हुए ॥व्यक्ति॥ की रक्षा करता है, जो ॥हवि को॥ पकाते हुए ॥व्यक्ति॥ की, जो ॥अपनी॥ रक्षा के लिए ॥देव॥ स्तुति करते हुए ॥व्यक्ति॥ की, जो स्तोत्र-पाठ करते हुए ॥व्यक्ति॥ की ॥रक्षा करता है॥; स्तोत्र जिसकी वृद्धि करने वाला है॥; पुरोडाश आदि अन्न जिसकी वृद्धि करने वाला है; हे लोगों ! वह इन्द्र है ।

सोम: - सू + मन: एक पौधे का नाम, प्राचीन काल में यज्ञों में आहुति देने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण औषधि, सोम नाम के पौधे का रस जैसा कि सोमपा तथा सोमपीथिन् शब्दों में, अमृत देवताओं का पेय, - वा0शि0आ0 । सोम: वृद्धिहेतुर्भवति । - सा0मु0 । The soma for (often personified as a god, plant of juice) the moon or the god of the moon - का0कै0पा0 । extracted juice, soma, som plant moon god - मैक्डानल Soma juice - विल्सन । Pouring forth of soma - ग्रिफिथ । यहाँ पर सोम शब्द का अर्थ प्राय: विभिन्न विद्वानों ने एक औषधि के रूप में जो एक पेड़ के रूप में है, कहीं कहीं इसे देवता ॥सोम॥ के रूप में आते हैं ।

वर्धन - ॥वृध् + णिच् + ल्युट॥ बढ़ने वाला, उगने वाला, बढ़ाने वाला, विस्तृत करने वाला - वा0शि0आ0 । वर्धनम् वृद्धिकरं भवति । सा0मु0 ।

growing, increasing, prospering, getting, ricker, causing in increase strength - मैकडानल । Increasing, growing, thriving furthering, promoting, the cutting - का0कैप0 । यहाँ पर वर्द्धन शब्द का अर्थ बढ़ाने के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है ।

राधः - राधः पुरोडाशादिलक्षमन्नं वृद्धिकरं भवति - सा0मु0 । attitude in shooting, of Krsnu,s foster mother of Krsna,s consort, etc. का0कैप0 ; successfull, with, prosper, be happy, achieve accomplish, prepare, मैकडानल ; gift - ग्रिफिथ ; sacrificial - विल्सन ; यहाँ पर राधः शब्द का अर्थ दान के अर्थ ﴾पुरोहित﴿ में लिया गया है ।

सुन्वन्तम - सुन्वन्तम् सोमाभिषवं कुर्वन्तं यजमानम् - सा0मु0 । The offer or of a soma liberation a mans name - का0कैप0 ; sacrificer - मैकडानल ; after or the liberation - विल्सन ; sacrificer - ग्रिफिथ ; यहाँ पर सुन्वन्तम शब्द का अर्थ सोम रस को निचोड़ते हुए यजमान के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

शशमानम् - शशमानम् भवति स्तोत्रं कुर्वाणं रक्षति - सा0मु0 । active, busy, zealous, devout pious - का0कैप0 ; Singer - ग्रिफिथ प्रस्तुत शब्द शशमानम् का अर्थ स्त्रोताओं की रक्षा के लिये प्रयुक्त हुआ है ।

य: सुन्वते पचते दुध्र आ चिद्वाजं दर्दर्षि स किलासि सत्य: ।
वयं त इन्द्र विश्वह प्रियास: सुवीरासो विदथमा वदेम ।। 15 ।।

अन्वय - दुध्र: य: सुन्वते पचते वाजम् आ दर्दर्षि, स: किल सत्य: असि, इन्द्र ते प्रियास: वयं विश्वह विदथम् आवेदम ।

अनुवाद - (हे इन्द्र !) जो भयानक (तुम) (सोम रस को) निचोड़ते हुए (व्यक्ति) के लिए तथा (हवि) पकाने वाले के लिए अन्न (अथवा धन) को बार-बार प्रदान करते हो वह (तुम) निश्चित रूप से सत्य हो । हे इन्द्र ! तुम्हारे प्रिय हम लोग सभी दिनों में (सर्वदा) शोभन पुत्र-पौत्रों से युक्त होकर (तुम्हारे लिए) स्तोत्र-गान करें ।

सत्य: (वि0)(सते हितम् - सत् + यत्) सच्चा, वास्तविक, असली, जैसा कि सत्य-व्रत, सत्यसन्ध में, ईमानदार, निष्कपट, निष्ठावान्, सद्गुणसम्पन्ना त्य: ब्रह्मलोके सत्यलोक भूमि के ऊपर सात लोकों में सबसे ऊपर का लोक - देवलोक वा0शि0आ0 । सत्य: यथार्थभूत: - सा0मु0 । actual, real, genuine, true, successful, effectual, realised, faithful, real, true, - मैकडानल ; genuine, serious, valid, sincere, honest - का0कैप0 ; true - विल्सन ; libetion - ग्रिफिथ । यहाँ पर सत्य शब्द का सत्य अर्थ ही उचित है ।

असि - (अस् + इन्) हथियार, पशुओं की हत्या करने वाला चाकू सि (अव्यय) तू0तु0 अस्मि, कोई भी अत्यन्त कठिन कार्य सतां केनोदिष्टं विषमम् सिधाराव्रतमिदम् । भर्तृ0 2/28, वा0शि0आ0 । असि न पुनर्नास्तीति बुद्धि-

योम्यो सि - सा0मु0 । Sword, knife, - का0कैप0 ; Sword - मैकडानल। यहाँ पर असि शब्द का अर्थ हथियार ‡पशुओं की हत्या करने वाला‡ उचित प्रतीत होता है ।

किल: - ‡किल + क‡ क्रीड़ा, तुच्छ, खेल-खेल में हो जाने वाला । ‡अव्यय‡ किल् + आ‡ निश्चय ही, बेशक, नि:सन्देह, अवश्य, प्रसिद्ध - वा0शि0 आ0 । किल इति प्रसिद्धौ - सा0मु0 । Indeed, of course, jyoys, Stress on the preceding word - का0कैप0 ; indead, certainly, it is true, that is to say, it is to said, alleged, as is well known - मैकडानल । किल शब्द का अर्थ यहाँ पर निश्चय ही एक अव्यय के रूप में आया है ।

विदथम् - ‡विद् + कथच्‡ विद्वान् पुरुष, विद्या व्यवसी, सन्यासी, मुनि, - वा0 शि0आ0 । Direction, order, arrangement, disposition, meeting, assembly, council, congregation - का0कैप0 ; commond, rule, array, artful - मैकडानल । यहाँ पर विदथ शब्द का अर्थ विद्वान् पुरुष से है ।

विश्वह - विश्वह: सर्वेष्वह: सु - सा0मु0 । Adv. always at all times, - का0कैप0 ; adv. always - मैकडानल ; evermore - ग्रिफिथ । प्रस्तुत शब्द विश्वह का प्रयोग यहाँ पर प्रत्येक समय के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

ऋतुर्जनित्री तस्या अपस्परि मक्षू जात आविशद्यासु वर्धते ।

तदाहना अभवत्पिप्युषी पयों शो: पीयूषं प्रथमं तदुक्थ्यम् ॥ । ॥

अन्वय - ऋतु: जनित्री तस्या: परि जात: अप: मक्षु अविशत् यासु वर्धते ।
आहना: पय: पिप्युषी अभवत् तत् अंशो: पीयुषम् उक्थ्यम् प्रथमम् तत् ॥

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! उन जलों के चारों ओर वर्षा ऋतु सोम को जन्म देने वाली है । जिन जलों में यह बढ़ता है । उन जलों में शीघ्र उत्पन्न होकर भलीभाँति प्रविष्ट हुआ । वह प्रवृद्ध होने वाला और चुआने योग्य हो गया । सोम का वह जलात्मक रस पीने योग्य ﴾अमृत तुल्य﴿ प्रथम प्रख्यात और प्रशंसनीय है ।

ऋतु: -﴾ऋ + तु कित्﴿ मौसम वर्ष का एक भाग ऋतुयें गिनती में छ: है शिशिरश्च, वसन्तश्च, ग्रीष्मो, वर्षा सरद्हिम् कर्मा ये ऋतुयें पाँच समझी जाती हैं ﴾शिशिर और हिम या हेमन्त एक गिने जाने पर﴿ युगारम्भ, निश्चित काल, आर्तव, ऋतु स्राव, माहवारी, गर्भाधान के लिए उपयुक्त समय, वरऋतुषु नैवाभिगमनम् - पंच० । वा०शि०आ० । ऋतु: वर्षाख्य: काल: - सा०मु० । right or fixed time, period, epoch, season, the menees of a woman, caution at that time, fixed order, rule - का०कै०प० ; Period, season, the manses, fixed time right time, order, rule, settled, sequence, indle, season, at the proper season - मैक्डानल ; The season - ग्रिफिथ, विल्सन । यहाँ पर प्राय: सभी विद्वानों ने ऋतुओं की व्याख्या वर्षा की ऋतु सम्बन्धित की है, वास्तव में यही अर्थ उचित भी है ।

जनित्री - ॥जनितृ + ङीप्॥ माता - वा0शि0आ0 । जनित्री सोमस्य जनयित्री जननी भवति - सा0मु0 । Mother - का0कै0प0 एवं मैक्डानल । The parent - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर जन्म देने वाली माता के लिए जनित्री शब्द को प्रयुक्त किया गया है ।

मक्षु - ॥मक्ष + उन पृषो0 सस्यक्षत्वम्॥ तुरन्त, जल्दी से, शीघ्र - वा0शि0आ0 । मक्षु: शीघ्रम - सा0मु0 । Quickly, instantly, directly, superl- का0कै0प0 । quickly soon - मैक्डानल ; as soon as - विल्सन । यहाँ पर मक्षु शब्द का अर्थ शीघ्र किया जाना ही उचित होगा ।

पीयूषम् - ॥पीय् + उषन्॥ सुधा अमृत मनसि वचसि कापे पुण्य पीयूष पूर्णा: - भर्तृ0 2/68, इमां पीयूष लहरमि गंगा 53, दूध, पाने के बाद पहले सात दिन के गाय का दूध - वा0शि0आ0 । पीयूषम् रसभूतम रस: - सा0मु0 । First week milk, of a cow biestings, cream, juice, nector- मैक्डानल एवं का0कै0प0 milkly juice - ग्रिफिथ ; the juice of the soma - विल्सन । यहाँ पर पीयूष शब्द का अर्थ अमृत अत्यधिक समीचीन होगा ।

प्रथमम् - ॥वि0॥ ॥पु0 कर्तृ0ब0व0॥ प्रथमे या प्रथमा: ॥प्रथ +अमच्॥ पहला सबसे आगे का रघु0 3/44 वा0शि0आ0 । First, Primal, - का0कै0प0;Chief most, excellent, iminent, leading - मैक्डानल; Chief - ग्रिफिथ especially - विल्सन । यहाँ पर प्रथम शब्द का अर्थ पहला उचित है ।

सध्रीमा यन्ति परि बिभ्रती: पयो विश्वप्स्न्याय प्र भरन्त भोजनम् ।

समानो अध्वा प्रवतामनुष्यदे यस्ताकृणो: प्रथमं सास्युक्थ्य: ॥ 2 ॥

अन्वय - सध्री पय: परि बिभ्रती: ईम् आ यन्ति विश्व प्स्न्याय भोजनम् प्र भरन्त प्रऽवताम् अनुऽस्यदे अध्वा समान: यस्ता प्रथमम् अकृणो: स: उक्थ्य: असि ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! रस को धारण करती हुई एक साथ ये (जलराशियाँ) चारों ओर गमन करती हैं । सम्पूर्ण खाद्य पदार्थों से युक्त इन्द्र भोजन को प्रदान करता है । प्रवहणशील जलों को प्रवाहित होने के लिए समान मार्ग हैं जिसने इन सबको निर्मित किया वह तुम प्रशंसनीय हो ।

भोजनम् - (भुज् + ल्युट्) खाना, भोजन करना, अजीर्ण भोजन 'विष', आहार, भोजन (खाने के लिए) देना, खिलाना, - वा0शि0आ0 । भोजनम् भुज्यते इति भोजनम् पय: - सा0मु0 । Feeding, nourishing, enjoying, eating, feeding, meal, food, wealth, possession, pleasure, joy - का0कै0 ; Enjoying, using, eating, meal, food, living on, offording as food - मैकडानल । यहाँ पर भोजनम् शब्द का अर्थ भोजन करना अर्थ अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

समान: (वि0) (सम +अन् + अण्) वही, तुल्य, सदृश, एक जैसा, समान शालिव्यसनेषु सख्यम् सुभा0 एक, एकरूप, भला, सद्गुण सम्पन्ना, समान्य - साधारण - वा0शि0 आ0 । समान: एको हि शायण । One of the fuvevital arts, which has its seat in the stomach and entrails, is essential to digestion and pradues diarrhva etc. - मैकडानल ।

like, same, similar, equal to common, universal, all - का० कैप० । common - ग्रिफिथ ; The same - विल्सन । यहाँ पर समान: शब्द का अर्थ सद्गुण सम्पन्न अर्थ के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

अध्वा - ॥अद् + क्वनिप्॥ रास्ता, सड़क, मार्ग, नक्षत्र, मार्ग, दूरी, स्थान, अपि लङ्घितमध्वानं बुबुधेन बुधोपम: रघु० 1-47, वा० शि० आ० । अध्वा मार्ग: - सा० मु० । Road, Journey, wondering, distance - मैक्डानल ; road, path, travel, length, space - का० कैप० ; path - विल्सन the way - ग्रिफिथ । यहाँ पर अध्वा शब्द का तात्पर्य नक्षत्र मार्ग हेतु प्रयुक्त किया गया है ।

परि - ॥री॥ ॥परि + हृ + घञ्॥ पक्षे उपसर्गस्य दीर्घ: - छोड़ना, तजना, तिलांजलि देना, त्याग देना, हटना, दूर करना, निराकरण करना, उल्लेख न करना, भूल, चूक, आरक्षण, गुप्त गांव या नगर के चारों ओर भूखण्ड धनु:शतम् परिहारो ग्रामस्य स्यात्समंतव मनु: 8/236 - वा० शि० आ० । परि परित: - सा० मु० । round, about, against, apposite to beyond, above, more than from, out of, after - का० कैप० ; Fully, quite, entirely, excessively, towards - मैक्डानल । प्रस्तुत स्थान पर तिलांजलि देना अर्थ ही अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

एक. - ‡सर्व वि0‡ ‡इ + कन्‡ ‡एक, अकेला, एकाकी‡ केवल, मात्र, जिसके साथ कोई और न हो, वही, बिल्कुल वही, समरूप वयस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम् हि0 1.110, वा0शि0आ0 । एक: धेता: - सा0मु0 । Alone, sole, single, solitary, the same, indentical, common - का0कै0प0 । One, alone, only, single, one, the same, common, unique, excellent, one of - मैक्डानल ; one first - ग्रिफिथ ; one - विल्सन । यहाँ पर समरूप अर्थ अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

तितिक्षते - ‡तिज् + सन् + अ + टाप् द्वित्वम्‡ सहिष्णु - सहन करने वाला, सहनशक्ति - वा0शि0आ0 । तद्योग्यप्रायश्चित्तकरणेन ब्रह्मा सहते - सा0मु0 । endurance, patience - मैक्डानल ; endurance, patiance, enduring, patiance, - का0कै0प0 ; यहाँ पर सहनशक्ति अत्यधिक उचित होगा ।

प्रजाभ्यः पुष्टिं विभजन्त आसते रयिमिव पृष्ठं प्रभवन्तमायते ।
असिन्वन्दंष्ट्रैः पितुरत्ति भोजनं यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः ॥ 4 ॥

अन्वय - पुष्टिम् प्रऽजाभ्य. विभजन्तः आसते आऽयते पृष्ठम् प्रऽभवन्तम् रयिम्ऽइव असिन्वन् पितुः भोजनम् दंष्ट्रैः अत्ति यस्ताकृणोः यः ता ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र अतिथि के लिए जैसे धारक धन को उसी प्रकार यजमान लोग प्रजाओं के लिए पोषक तत्त्व का विभाजन करते हुए स्थित हुआ ॥पालक॥ पिता यजमान से प्राप्त भोजन ॥हविष्य॥ को, सेतु बन्धादि कर्म को करता हुआ व्यक्ति दांतों से खाता है ।

प्रजाभ्यः ॥प्र + जन् + ड + टाप्॥ ॥बहु0 समास के अन्त में बदलकर प्रजस् हो जाता है जबकि प्रथम पद अ, सु या दुस हो जाता है दे0रघु0 8/32, प्रजसन, प्रजन, जनन, प्रजोत्पत्ति, उभ, उत्पादन, वा0शि0आ0 । Procreation, impregnation, Ponturtion, Birth, offspring progency, family; descendants, creature, folk, people, subject - मैकडानल । Procreation, offspring, descendants childrens, family - का0कैप0 The people - ग्रिफिथ ; Progency - विल्सन ; यहाँ पर प्रजोत्पत्ति अर्थ ही अत्यधिक उपयुक्त है ।

पुष्टिम् - ॥स्त्री0॥ ॥पुष् + क्तिन्॥ पालनपोषण कर्त्ता, पालना परवरिश करना, संवर्धन, वृद्धि, प्रगति - वा0शि0आ0 । पुष्टिम् त्वया दत्तं पोषकं धनं स्वकीयाभ्यः - सा0भु0 । Thriving, Prosperity, composit wealth, opulence, breeding, rearing nourishment - का0कैप0 ; Thriving, increase, development, plenty, abundance, prosperity - मैकडानल ।

wealth - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर संवर्धन अर्थ अत्यधिक समीचीन होगा ।

पृष्ठम् - ‌॥पृष्, स्पृश वा थक् नि० साधुः॥ पीठ, पिछला, हिस्सा, पिछाड़ी, जानवर की पीठ, अश्वपृष्ठम् रूढः - आदि सतह या ऊपर का पार्श्व रघु० 4/3। वा०शि०आ०, पृष्ठम् धारकं - सा०मु० । Back, upper, side, surface, height, ridge, top, hinder, part, rear - मैक्डानल ; Back, hinder, part, rear, upper, side, surface, top, behind the back- का०कैप० । ; The back - ग्रिफिथ । यहाँ पर पृष्ठम् शब्द का अर्थ घोड़े की पीठ के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

अत्ति - ॥स्त्री०॥ ॥अत्तिका॥॥अद् क्तिन् स्वार्थे कन च॥ बड़ी बहन, भक्षण करना, वा०शि०आ० । अत्ति भक्षयति - सा०मु० । The food - विल्सन एवं ग्रिफिथ । यहाँ पर अत्ति शब्द का वास्तविक अर्थ ॥ भक्षण करना ही उचित है।

दंष्ट्रै. - ॥दंश + ष्ट्रन + टाप्॥ बड़ा दाँत, हाथी का दाँत विषैला दाँत, प्रसह्य, मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्राङ्कुरात् भर्तृ० 2/4, दंष्ट्राभंगं मृगाणामधिपतय इव व्यक्तमानावलेपानाज्ञाभंङ्गे सहन्ते नृतर नृपतयस्त्वा दृशाः सतिकौना. मुद्रा०3/22 वा०शि०आ० । दंष्टैः दन्तैः - सा०मु० । Bite - मैक्डानल । Bitten, strung, biting - का०कैप० । Teeth - विल्सन एवं ग्रिफिथ । यहाँ पर दंष्ट्रैः शब्द का अर्थ विषैला दाँत के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

अधाकृणो. पृथिवीं संदृशे दिवे यो धौतीनामहिहन्नारिणक्पथः ।

तं त्वा स्तोमेभिरुदभिर्न वाजिनं देवं देवा अजनन्त्सास्युक्थ्यः ॥ 5 ॥

अन्वय - अध दिवे पृथिवीं संदृशे अकृणोः यः धौतीनां पथः अहिहन् देवाः तं
देवं स्तोमेभि अजनन् उपभिर्न वाजिनम् अरिणक् न उक्थ्य ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! तुमने पृथ्वी को सूर्य के सम्यक् दर्शन के हेतु निम्नवर्ती
कर दिया और जिसने नदियों के मार्ग को निर्मित किया ।
देवताओं ने उस तुम देव ॥इन्द्र॥ को स्तोत्रों के द्वारा उत्पन्न किया तथा जलों के
द्वारा द्वारा अन्नवान को ।

दिव् - ॥स्त्री0॥ दीप्त्यन्त्यत्र दिव् + बा आधारे डिरि तारा0 ॥कर्तृ0 ए0व0 -
द्यौः॥ स्वर्ग, आकाश, दिन सूर्य, प्रकाश, उजाला, वह समस्त पद जिनका
पूर्वपद दिव् है । अधिकांश अनियमित है उदा0 दिवस्पतिः आदि - वा0शि0आ0
दिवे द्योतमानाय सूर्याय - सा0मु0 । cast, throw, radiate, shine, throw,
Akash, Suraja shine, - मैकडानल; upon the sky - ग्रिफिथ ;
Heaven day and day by day - का0कैप0; to heaven -
विल्सन; यहाँ पर दिव् का अर्थ आकाश में देदीप्यमान सूर्य के लिए प्रयुक्त किया
गया है ।

धौतीनाम् - धौत् शब्द षष्ठी, बहुवचन ॥भू0क0कृ0॥ ॥धाव् + क्त॥ धोया हुआ,
बहाया गया, साफ किया गया, पवित्र किया गया, प्रक्षालन किया
गया - वा0शि0आ0 । धौतानाम् चन्यलितानाम् नदीनाम् - सा0मु0 ।
Washing, flaming - मैकडानल; washed, clean, polished, bright -
का0कैप0; Settest free ग्रिफिथ; hurt set the path of river - विल्सन.

वाजिनम् - ॥पुं०॥ ॥वाज + इनि॥, घोड़ा न गर्दभा वाजिधुरं वहन्ति मृच्छ० 4/17
वाज, पक्षि, यजुर्वेद की वाजसनेयि शाखा का अनुयायी, सम० पृष्ठ
गोल सदाबहार, मक्षः छोटी मटर, वा०शि०आ० । वाजिनम् यथा वाजिनमव-
मुदभिस्दकैर्वर्धयन्ति तद्वत - सा०मु० । Spirited, swift, frabe, warlike,
manly, procreative, winged, having, feathered a horse by water
मैकडानल ; a horse by waters - विल्सन ; even as the steed
with waters - ग्रिफिथ ; यहाँ पर वाजिनम् का अर्थ घोड़े से निम्नकोटि
गधे के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

स्तोमेभिः - स्तोमभिः स्तोत्रैः - सा०मु० । Praise, eulogium, Panegyric
का०कै०प० ; Priase, song of praise, Fundamental from of
chent, mass quantity, multitude, evlogium, panegyric- मैकडानल ।
meet for praise - ग्रिफिथ ; Praised - विल्सन । यहाँ पर उक्त
शब्द का प्रयोग प्रशंसा अर्थ में प्रयुक्त किया गया है ।

देवाः - ॥वि०॥ ॥स्त्री०-वी॥ ॥दिव् +अच्॥ देवः शब्द प्रथमा-बहु०वच०, दिव्य,
भग० 9/11 देव, देवता, एकोदेवः केशवो वा शिवा वा भर्तृ० 3/120
वर्षा का देवता इन्द्र का विशेषण, दिव्यपुरुष ब्राह्मण, राजा शासक, वा०शि०
आ० । देवाः स्तोतारः - सा०मु० । Divine, heavenly, celestial,
being god, idol, priest, Brahman, King, Prince, का०कै०प०;
thou art, (Indra) - विल्सन; art thou - ग्रिफिथ । प्रस्तुत शब्द
देवाः का अर्थ शासक अर्थ के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

यो भोजनं च दयसे च वर्धनमाद्र्रादा शुष्कं मधुमद्दुदोहिथ ।

सः शेवधिं नि दधिषे विवस्वति विश्वस्यैक ईशिषे सास्युक्थ्यः ॥ 6 ॥

अन्वय - यः च दयसे वर्धनम् आद्र्रात् शुष्कम् मधुऽमत् दुदोहिथ सः विवस्वति शेवधिं नि दधिषे विश्वस्य एकः ईशिषे सः एकः उक्थ्यः असि ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! जो तुम अन्न को प्रदान करते हो जिस तुमने शुष्क और मधु सदृश आर्द्र पदार्थ से दोहन किया । जो विवस्वान् के विषय में निधि को धारण करता है । ‡तुम‡ सम्पूर्ण जगत् का अकेले ही स्वामित्व करते हो वह ‡तुम‡ प्रशंसनीय हो ।

वर्धनम् - ‡वि0‡ ‡वृध + णिच् + ल्युट‡ बढ़ने वाला, उगने वाला, बढ़ाने वाला, विस्तृत करने वाला, आवर्धन करने वाला, वा0शि0आ0 । increasing, growing, thriving, strengthening, furthering, pramating, ornimating, exhilarating, delighting- का0कैप0 ; Growing, increasing, prospering, getting, richer, causing in crease- मैकडानल ; increase - विल्सन । उक्त शब्द वर्धनम् का अर्थ विस्तृत करने वाला अत्यधिक उचित प्रतीत होता है ।

मधुमत् - ‡वि0‡ ‡स्त्री0‡ धु0 या0 हर्ता‡ ‡मन्यत इति मधु मत + उ तस्य तः‡ मधुर, सुखद, रुचिकर आनन्दयुक्त नपुं0 ‡धु‡ शहद, रतास्ता, मधु नो धाराश्चोतन्ति, सविषास्त्वपि उत्तर0 3/34, मनु तिष्ठति डिछाग्र हृदये तु हलालम् पुष्परस या फूलों का रस कु0 3/36, वा0शि0आ0 । excited by wine of by the spring, the intoxication of wine - का0कैप0 । the richin sweets- ग्रिफिथ । यहाँ रुचिकर अर्थ उचित है ।

शुष्कम् - ॥भू क कृ ॥ ॥शुष् + क्त॥ सूखा, सुखाया हुआ, शाखाया शुष्कम् करिष्यामि, मृच्छ० 8, भुना हुआ, म्लान, झुर्रीदार, सिकुड़न वाला, कृश, वा० शि० आ० । शुष्कम् अनार्द्र ब्रहियादिकं - सा० मु० । dry, hard, useless, vain - का० कै० प० । Driedup, dry, parched, ease, withered, caseless - मैकडानल । The dry - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर झुर्रीदार अर्थ अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

शेवधिः - शुक्र्याते सति शेते शी + वन् + धिः॥ धनवान, कोष, विद्या, ब्राह्मणमेत्याह शेवधिस्ते त्स्मि रक्षमाम् मनु० 2/114, सर्वे कामाः शेवधिर्जीवितं वा स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसाम् मा० 6/18, कुबेर के नौ कोषों में एक - वा० शि० आ० । jewel, treasure or treasury - का० कै० प० । Treasure, Treasury - मैकडानल । Precious stone - ग्रिफिथ । gives wealth - विल्सन । यहाँ पर शेवधि का तात्पर्य का कोष के लिए ॥कुबेर के नौ कोषों में से एक कोष॥ प्रयुक्त किया गया है ।

य: पुष्पिणीश्च प्रस्वश्च धर्मणाधि दाने व्यवनीरधारय: ।
यश्चासमा अजनो दिद्युतो दिव उरूर्वा अभित: सास्युक्थ्य: ॥ 7 ॥

अन्वय - य: पुष्पिणी: च द्रस्व: अवनी: दाने अधि धर्मणा वि अधारय य: च दिव: असमा: दिद्युत: अजन: उस: अभित: अवनिन् ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! जिस तुमने पुष्पवती तथा फलवती तप्तकर देने वाली औषधियों को खेतों में अपने नियम [कर्म] से धारण किया और जिस तुमने विविध प्रकार की सूर्य की रश्मियों को उत्पन्न किया और जिस महान् प्राणी समूह को तुमने चारों ओर उत्पन्न किया वह तुम प्रशंसनीय हो ।

पुष्पिणी: - [पुष्पिन् + ङीप्] [रजस्वला स्त्री] पुष्पमती - वा0शि0आ0 । पुष्पिणी: पुण्यवती - सा0भु0 । Provided with, resembling a flowering Palasee tree - मैकडानल । flowering - विल्सन । यहाँ पर पुष्पिणी: का वास्तविक अर्थ पुष्पवती तथा फलवती के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

अजन: - [वि0] ब0व0 जनशून्य, बियावान - वा0शि0आ0 । Solitary, desert place - मैकडानल । unpeopled, solitude- का0कैप0। अजन: अजनय: - सा0भु0 । उक्त शब्द प्राणी विहीन अर्थ के लिए समीचीन प्रतीत होता है ।

उरु: [वि0] स्त्री-रु-र्वी वरीयस 30 अ0 वरिष्ठ, विस्तृत, प्रशस्त, महान, बड़ा, अतिशय, प्रचुर, श्रेष्ठ, मूल्यवान - वा0शि0आ0 । उरु: महांस्त्वम्-सा0भु0।

Wide, broad, spacious, extensive, great, free space, far away - मैकडानल ; Spacious, extensive, wide, broad, great - का0 कैप0 । यहाँ पर उरु का वास्तविक अर्थ मूल्यवान के लिए उचित प्रतीत होता है।

उर्वान् - मरुतः प्राणिनिकायान् पर्वतान् वा अजनयः - सा0मु0 । ‡वि‡ ‡उरु + अ‡ विस्तृत, बड़ा । व: बड़वानल - वा0शि0आ0 । Reservoir, fold, cattlepen, N.of a saint-मैकडानल । receptanting of water, cloud, fence, fold, stable, prison, ancient sage - का0कैप0। Praised - विल्सन एवं ग्रिफिथ । यहाँ पर उर्वान् का तात्पर्य बड़वानल के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

अजनः - अजनः अजनयः - सा0मु0 । ‡वि0‡‡नःव‡ जनशून्य, बियावान् - वा0 शि0आ0 । Salitary, desert place - मैकडानल । unpeopled, solitude - का0कैप0 । Hast generated - विल्सन । Hast made the matchless - ग्रिफिथ । उक्त शब्द अजनः का मुख्य अर्थ मानवविहीन उचित प्रतीत होता है ।

अवनीः - ‡नी‡‡स्त्री‡‡अव + अनि पक्षे डीष्‡ पृथ्वी, आकृति, नदी, सम0 ईशः ईश्वरः = नाथः पतिः पालः भूस्वामी, राजा पतिरवनि पतीनां तैश्च काशे चतुर्भिः रघु0 10/86, 11/93 - वा0शि0आ0 । अवनिः अवित्री रोधसी - सा0मु0 । अवनी - The earth - मैकडानल । Strem, earth, ground - का0कैप0 । Field - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर अवनीः का वास्तविक अर्थ राज्य परिवर्तन अर्थ के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

यो नार्मरं सहवसुं निहन्तवे पृक्षाय च दासवेशाय चावहः ।

ऊर्जयन्त्या अपरिविष्टमास्यमुतैवाद्य पुरुकृत्सास्युक्थ्यः ॥ 8 ॥

अन्वय - पुरुकृत् यः नार्मरम् सहवसुम् निहन्तवे ऊर्जयन्त्या अपरिविष्टम् आस्यम् अद्य एव अवहः पृक्षाय दासवेशाय च ।

हिन्दी अनुवाद - हे बहुकर्मण ! जिस तुमने नृमर पुत्र सहवासु को मारने के लिए शक्ति मती वज्र धारा के निर्मल मुख के समीप तुरन्त ही अन्न प्राप्ति के लिए शत्रु हिंसक के विनाश के लिए पहुँचाया वह तुम प्रशंसनीय हो ।

पृक्षाय - पृक्ष - Refreshment food, satiation, पृक्षि - spotted, dappled, such a horse - का0कैम0 । comfort, nourishment, पृक्षि - spotted, dappled - मैकडानल । यहाँ पर पृक्षाय का शब्द शुद्ध भोजन के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

पुरु कृत् - पुरु [वि0] [स्त्री0-रु-वी] पुरि देहे शेते नर मनुष्य मर्द, [वि0] [कृ0 + क्विप्] प्रायः समास के अन्त में, निष्पादक, कर्ता, निर्माता, अनुष्ठाता - वा0शि0आ0 । पुरूणां कर्मणाम् कर्तः - सा0मु0 । Much, of an ancient king, often making doing - का0कैम0 । maker auther of performing much even now - ग्रिफिथ । to be praised - विल्सन । यहाँ पर पुरु कृत् का वास्तविक अर्थ मर्द के लिए समीचीन प्रतीत होता है ।

<u>अस्यम्</u> - ।अस्यते ग्रासो त्र - अस् + ण्यत्। मुंह जबड़ा आस्य कुहरे वृितास्य चेहरा आस्य कमलम् - वा0शि0आ0 । Mouth, jaws, face, organ of मैकडानल । Mouth face - का0कैप0 । The face - विल्सन एवं ग्रिफिथ यहाँ पर आस्यम् का अर्थ चेहरा के लिए उपयुक्त होगा ।

<u>अवह:</u> - ले जाने योग्य, हृयमेयोग्य, दण्ड देने योग्य - वा0शि0आ0 । Trashing, husking - का0कैप0 । Threshing, unpushing, lung, putting of, to be made to pay - मैकडानल । The fionds, might destroyed - ग्रिफिथ । an unclouded countenance to day sahawasa - विल्सन । यहाँ पर ले जाने योग्य अर्थ अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

<u>उक्थ्य:</u> - ।वच + थक + य:। कथन, वाक्य, स्तोत्र, स्तुति, प्रसंसा - वा0शि0 आ0 । Praise, hymn of praise in vocation, recitation- मैकडानल । Praise worthy, cert libation - का0कैप0। Worthy art thou of praiser - ग्रिफिथ । to be praised विल्सन । उक्त शब्द का अर्थ स्तुति उचित प्रतीत होता है ।

<u>अद्य</u> - ।वि0।।अद् + यत्। खाने के योग्य ध॰को उग - खाने के योग्य पदार्थ, आज, इस दिन, अद्य त्वाम् त्वरयति दारुण: कृतान्त: - वा0शि0आ0 । to day, now, this very day even to day even yet - मैकडानल । to day now farm now form to day - का0कैप0। even now - ग्रिफिथ । यहाँ पर अद्य का तात्पर्य तुरन्त के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

शतं वा यस्य दश साकमाद्य एकस्य श्रुष्टौ यद्ध चोदमाविथ ।

अरज्जौ दस्यून्त्समुनब्दभीतये सुप्राव्यो अभव: सास्युक्थ्य: ॥ 9 ॥

अन्वय - एकस्य यस्य श्रुष्टौ शतं दश आ अद्य यद्ध चोदं आविथ अरज्जौ दस्यून दभीतये समुनप् सुप्राव्य: अभव: ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! जब श्रेष्ठ व्यक्ति के यहां प्रसन्नता होने पर स्तोता (यजमान) की रक्षा करते हो उस समय दस सौ तुम्हारे अश्वरथ का वाहन करते हैं । श्रुष्टु रक्षा करते वाले (तुमने) दर्माति के लिए विना रस्सी में बाधे ही शत्रुओं को वाधित कर दिया वह तुम प्रशंसनीय हो ।

शतम् - (दश दशत: परिणामस्य - दशन् + त, श आदेश: नि० साधु:) सौ की संख्या - निश्वोवष्टि श्शनं शान्ति० 2/6 शतमे को पि संघते प्रकारस्यो धनुर्धर: पंच० 1-129 (शत शब्द किसी भी लिङ्ग के बहुवचनान्त संज्ञा शब्दों के साथ एकवचन में ही प्रयुक्त होता है । शतं नरा: शतम् गाव: - वा०शि०आ० । Hundred, also as expression or the hundredth n.a. hundred - का०कैप० । Hundred - मैक्डानल एवं ग्रिफिथ । यहाँ पर शतम् शब्द का प्रयोग सौ घोड़ों वाले रथ के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

चोदम् 5 good, while, impelling - का०कैप० driving, good, whip, inspiring stimulating furthering, impelling , injuncating , direction, invitation - मैक्डानल । The institutor - विल्सन । यहाँ पर चोदम् शब्द का अर्थ निष्कण्टक अर्थात् अबाधित (विकासशील) के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

एकस्य - ॥सर्व0 वि0॥ ॥इ + कन्॥, एक, अकेला, एकाकी, केवल मात्र, जिसके साथ कोई और न हो, वही, बिल्कुल वही, एक शब्द षष्ठी एकवचन - वा0 शि0आ0 । One, alone, only, single, one and the same, common, one of unique, excellent, a certain, someone मैकडानल । One of alone1 sole, single, solitary the some, identical, common - का0कैप0 । sole - विल्सन । ones - ग्रिफिथ । यहाँ पर एकस्य शब्द का अर्थ केवल मात्र, जिसके साथ कोई न हो, के लिये प्रयुक्त किया गया है ।

सम् - ॥भ्वा0पर0 समति॥ विक्षुब्ध या अव्यवस्थित होना, ॥अव्यय॥ ॥सो + डमु॥ धातु या कृदन्त शब्दों के रूप में लगकर इसका निम्नांकित शब्द है । ॥क॥ के साथ मिलकर, साथ-साथ यथा-संगम, संभाषण, संधा, संपंज आदि में ख कभी कभी यह धातु के अर्थ को प्रकट करता है - वा0 शि0आ0 । (i) along, with, together, (ii) even, smooth, parellel, like, equal, (iii) pron, any, every - का0कैप0 ; expressing union or completeness together, altogether - मैकडानल ; with - ग्रिफिथ । यहाँ पर सम् शब्द का अर्थ संभाषण समीचीन प्रतीत होता है ।

दस्यून - ॥दस + युच्॥ दुष्कर्मियों या राक्षसों का समूह जो कि देवताओं के विद्रोही जो मानवजाति के शत्रु थे और इन्द्र के द्वारा मारे गये । Class of demons to the gods and frequently represented, as being over come by Indra and Agni, friend foe of the gods, - मैकडानल Foe, enemy in evel, demon or an enemy of gods -

विश्वेदनु रोधना अस्य पौंस्यं ददुरस्मै दधिरे कृत्नवे धनम् ।

षळस्तभ्ना विष्टिरः पञ्च संदृशः परि परो अभवः सास्युक्थ्यः ॥ 10 ॥

अन्वय - विश्वेत् रोधनाः अस्य पौंस्यम् अनु अस्मै ददुः कृत्नवे धनम् दधिरे विष्टिरः षट् अस्तम्नाः संदृशः प च परि परः अभवः सः असि उक्थ्यः ।

हिन्दी अनुवाद - सम्पूर्ण नदियों ने इस इन्द्र के लिए शक्ति को क्रमशः प्रदान किया और लोगों ने इसके लिए धन धारण किया [है] हे इन्द्र ! तुमने छः विस्तृत [लोगों] को दृढ़ किया तथा प चजनों के चारों ओर स्थित होकर के प्रारक हो गये हो वह तुम प्रशंसनीय हो ।

रोधना - [रुध् + ल्युट्] बुध ग्रह - न, हटाना, रोकना, बनाना, रोकथाम - वा०शि०आ० । रोधना रोधस्वत्यो नद्यः - सा०मु० । Confining, invesing, shutting, up-restraining, suppressing - का०कैप० । Confinement, restraining, stopping - मैकडानल । Blanks - ग्रिफिथ ; Munhood - विल्सन । यहाँ पर रोधना शब्द का वास्तविक अर्थ रोकना प्रतीत होता है ।

धनम् - धन + अच्, सम्पत्ति, धन, निधि, रूपया [सोना आदि अचल सम्पत्ति] धनम् तावदसुलभाव हि० [आलं भी] जैसा कि तपोधन विद्याधन आदि में वा०शि०आ० । Prize (of contest or game) booty, wealth, property money - का०कैप० ; contest, chattels goods property, money, reward, gift, - मैकडानल ; wealth - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर धन का अर्थ निधि समीचीन प्रतीत होता है ।

षट् - वि० ‌षटभि: क्रीवम् + षप् + कन्‌ छ गुना, कम् छ की समष्टि भास षट्क
उत्तर षट्क आदि - वा० शि०आ० । Consisting of six, agreegate of six, six eared - का०कैप० ; consisting of six - मैकडानल The six - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ षट् का अर्थ छ: गुना अ उचित है ।

पञ्चु - ‌सं० वि०‌ ‌पंच् + कनिन्‌ सदैव बहुवचनान्त, कर्तृ० कर्म० पंच‌ पाँच समास
के पूर्व पद होने के स्थिति में पंचम् के न् का लोप हो जाता है सम० अंश पांचवा भाग अग्नि: प च अग्नियो का समूह - वा० शि०आ० । Consisting of five, five day old - का०कैप० ; Pankan - मैकडानल ; Five fold - ग्रिफिथ ; The five - विल्सन ; यहाँ पर प चू शब्द का अर्थ पांच समास के पूर्व पद होने की स्थिति में प्रयुक्त किया गया है ।

परि - परि ‌री‌ णाह: ‌परि + नह + घञ्‌ पधे उपसर्गस्य दीर्घ: परिधि, वृत,
विस्तार, फैलाना, चौड़ाई अर्ज स्तन युग परिणाहाच्छादिमा वल्कलेन - श० । वा० शि०आ० । round, about, (often - also to denote aboundance, or high degree) Prep, round about, against opposite, to beyond, above - का०कैप० ; around, fully, quite, entirely, excessively, against, towards, over - मैकडानल । यहाँ पर परि शब्द का अर्थ विस्तार अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

सुप्रवाचनं तव वीर वीर्यं९ यदेकेन क्रतुना विन्दसे वसु ।

जातूष्ठिरस्य प्र वयः सहस्वतो या चकर्थ सेन्द्र विश्वास्युक्थ्यः ॥ ११ ॥

अन्वय - वीर तव वीर्य सुप्रवाचनं एकेन क्रतुना वसु विन्दसे सहस्वतः ‹जातूष्ठिरस्य वयः प्र या विश्वा चकर्थ सः उक्थ्यः ।

हिन्दी अनुवाद - हे वीर इन्द्र । तुम्हारी श्रेष्ठ शक्ति प्रशंसनीय है जो कि एक ही कर्म के द्वारा धन को प्राप्त कर लेते हो । बलशाली जातूष्ठिर ‹राजा› के लिए तुमने अन्न प्रदान किया बलपूर्वक जो तुमने सारे कर्मों को किया तुम प्रशंसनीय हो ।

वीर्यम् - ‹वीर + यत्›, शूरवीरता, पराक्रम, बहादुरी, वीर्यविदानेषु कृतावमर्षः किo 3/43 - वाoशिoआo । वीर्यम् सामर्थ्यम् - साoभुo । manliness, courage, strenth, heroic, deed, semen, virile, काoकैपo। manliness, valour, power, potency - मैकडानल । The Power - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर वीर्यम् शब्द का अर्थ पराक्रम अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

क्रतुना - ‹कृ + कतु तृतीय एoवo› यज्ञ, कर्म से, वाoशिoआo । क्रतुना कर्माणा, साoभुo । Power, might, efficacy, counsel, मैकडानल । might, strenth, deliberation, insight, wisdom - काoकैपo Wisdom - ग्रिफिथ । यहाँ पर क्रतुना शब्द का अर्थ कर्म से ‹द्वारा› अत्यधिक समीचीन होगा ।

विन्दसे - शत्रूणाम् धनम् लमसे, सा0मु0 । Finding - winning; - का0कैप0 । Finding, gaining - मैकडानल ; obtainest - ग्रिफिथ । ecquired - विल्सन । यहाँ पर विन्दसे शब्द का तात्पर्य उपलब्धियों से है ।

सुप्रवाचनम् - सु - ॥अव्यय॥ ॥सु + डु॥ एक निपात जो कर्मधारय और बहुब्रीहि समास बनाने के लिए संज्ञा शब्दों के पूर्व जोड़ा जाता है । प्रवाचनम् - प्र + वच् + णिच् + ल्युट्॥ घोषणा, उद्घोषणा, प्रकथन, - वा0शि0 आ0 । शुष्ठु प्रवचनीयम् - सा0मु0 । सु good, well, indeed, right, प्रवाचनम् । grandioquent, announcement, declaration, frame - मैकडानल । well proclaimed, good praise - का0कैप0। High Praise- ग्रिफिथ । The heroism - विल्सन । यहाँ पर सुप्रवाचनम् शब्द का उद्घोषणा अर्थ समीचीन प्रतीत होता है ।

जातु स्थिर: - ॥अव्यय॥ जातु - जन् + क्तुन् पृषो0 साधु: निम्नांकित अर्थों में प्रकट किया गया । अव्यय - कभी, सर्वथा, किसी समय, संभवत: किं तेन जातु जातेन, मातुर्यौवनधारिणा पंच0 , 1-26, स्थिर: ॥वि0॥ स्था + किरच् म0अ0 ॥स्थेयस् उ0आ0 स्थेष्ठ॥, दृढ स्थिरमति, जमा हुआ, भावस्थिराणि जननान्तर सौहृदानि श0 4.2, वा0शि0आ0 । जातु - at all, ever,ones, possibly - स्थिर: hard, solid, firm, strong, faithful - का0कैप0 ; जातु: at all, ever, possibly, perhaps, once- स्थिर: Firm, haired, solid, stiff, fixed - मैकडानल। Jaluslhira - ग्रिफिथ । यहाँ पर प्रस्तुत शब्द जातु स्थिर: का अर्थ दृढ ॥स्थिर॥ समीचीन प्रतीत होता है ।

अरमयः सरपसस्तराय कं तुर्वीतये च वय्याय च स्रुतिम् ।
नीचा सन्तमुदनयः परावृजं प्रान्धं श्रोणं श्रवयन्त्सास्युक्थ्यः ॥ 12 ॥

अन्वय - सरपसः कं तराय अरमयः तुर्वीतये वय्याय च स्रुतिं परावृजम् नीचा सन्तम् उदनयः अन्धं श्रोणं श्रवयन् सः असि उक्थ्यः ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! जिस तुमने तरायुक्त लोगों को वेगवती जल को पार करने के लिए जलप्रवाह को वय तथा तुवार्य के लिए शान्त कर दिया । जल के नीचे डूबते हुए अपने को कान्तिमान बताते हुए अंधे तथा पंगु-परावृज को निकाल दिया वह तुम प्रशंसनीय हो ।

अरमयः [अव्यय] [र + अम्] तेजी से, निकट, पास ही, उपस्थित, तत्परता के साथ, - वा०शि०आ० । Suitably, sufficiently, according to wish - मैक्डानल । Suitably, conveniently - का०कैप० । अमरयः अक्रीडयः - सा०भु० । यहाँ पर अरमयः शब्द का अर्थ निकट अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

तराय - [तृ + अप् चतुर्थी ए०व०] पार जाने के लिए, पार करने के लिए मार्ग - वा०शि०आ० । तराय तरणाय - सा०भु० । Crossing, supper passing - का०कैप० । over coming - मैक्डानल । Crossing of the flowing of the water - विल्सन । यहाँ पर तराय शब्द का अर्थ पार करने हेतु मार्ग अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

नीचाः - नीचं - सा०भु० । नीचा [वि०] निकृष्टतमी शोभां चिनोति - [चि + ड तारा०, नचि, छोटा, स्वल्प, थोड़ा, बौना - वा०शि०आ० ।

Blow, down - का0कै0प0 । यहाँ पर नीचा शब्द का अर्थ स्वल्प अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

स्रुतिम् - ‡स्त्री0‡‡स्रु + क्तिन्‡ अर्क निकालना, रिसना, टपकना, चूना, कीट-क्षतिस्रुतिभिरसमिबौद्धमन्तः - मुद्रा0 6/13, वा0शि0आ0 । Flow, stream, gash, way, road, - का0कै0प0 । Flowing flood - मैकडानल । Flowing flood - ग्रिफिथ । Flowing-विल्सन । स्रुतिम् शरणं प्रत्परमयः - सा0मु0 । यहाँ पर स्रुतिम् शब्द का अर्थ अर्क निकालना उपयुक्त है ।

अन्धम् - ‡वि0‡ अन्ध् + अच्‡ अंधा ‡शब्द और आम्ल, प्रयोग, दृष्टिहीन - देखने में असमर्थ, किसी विशिष्ट समय पर ‡अंधा किया गया‡ स्रजमपि शिर स्पन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया - श0 7/24- वा0शि0आ0 । Blind - dark - का0कै0प0 । Blind, dim, Pitch, dark, blinded - मैकडानल । Blind - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर अन्धम् शब्द का अर्थ दृष्टिहीन किया गया अत्यधिक उचित प्रतीत होता है ।

श्रोणम् ‡वि0‡‡श्रोण् + अच्‡ विकलांग, लगड़ा - णः एक प्रकार का रोग - वा0 शि0आ0 । श्रोणं पड्गु सन्तं चक्षुर्दानादपड्गुकरणाछोदनयः - सा0मु0 । Fame - मैकडानल, का0कै0प0, एवं विल्सन । Halt - ग्रिफिथ । यहाँ पर श्रोणम् शब्द का अर्थ विकलांग अत्यधिक उपयुक्त होगा ।

सन्तम् - ‡सन् + त‡ दोनों ‡हाथ जुड़े हुए, अंजलि संहतत्ल - वा0शि0आ0 । existing being, present, happening, firtuous, existence- का0कै0प0 । यहाँ पर सन्तम् शब्द का अर्थ संहतत्ल अधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

अस्मभ्यं तद्वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम् ।

इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून्बृहद्वदेम विदथे सुवीरा. ॥ 13 ॥

अन्वय - वसो इन्द्र अस्मभ्यं तत् राधः दानाय समर्थयस्व ते बहु वसव्यम् चित्रम् यत् अनु द्यून श्रवस्याः सुवीराः विदथे बृहत् वदेम ।

हिन्दी अनुवाद - हे वासक । हम उस धन को देने में सक्षम हों समर्थवान तुम्हारे धन अनेक हैं । हे इन्द्र धन की इच्छा वाले हम प्रतिदिन धन की कामना करते हैं । हम यज्ञ में अपने वीर पुत्रों के साथ तुम्हारी विशाल स्तुतियों को जोर से उच्चारित करें ।

दानाय - ॥दा + ल्युट्॥ दान शब्द चतुर्थी एकवचन, देना, स्वीकार करना, अध्यापन, सौंपना, समर्पण करना, उपहार दान, पुरस्कार, 2-159, वा० शि०आ० । Giving, imparting, bestowing of, giving in marriage giving up, sacrificing offering paying teaching offering gift - का०कै०प० । Giving, presenting, offering, gift - मैकडानल Bestow - विल्सन । यहाँ पर दानाय शब्द का अर्थ दान अर्थ उचित प्रतीत होता है ।

चित्रम् - ॥वि०॥चित्र + अच्॥ ॥चि + ष्टम् वा उज्ज्वल, चितकबरा, दिलचस्प, अरुचिकर, तसवीर, वा०शि०आ० । चित्रमः चापनीयम् - सा०मु० । Conspicous, Visible, bright, clear, loud, variegated, manifold, various, excellent, extraordinary, strange, wonderfull - का०कै०प० । manifest, visible, bright, picture - मैकडानल । Wonderfull - ग्रिफिथ । यहाँ पर चित्रम् शब्द का अर्थ तसवीर अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता

विदथे - ﴾विद + कथ च्﴿ विद्वान पुरुष, विद्याव्यसनी, संन्यासी, मुनि - वा० शि०आ० । Direction, order, arrangement, disposition, meeting, assemble, council, gregating, array, squadron, fight, battle - का०कै०। Command, rule, assemble, feast, crafty, troop, battle - मैकडानल। assemble - ग्रिफिथ । यहाँ पर विद्याव्यसनी अर्थ अन्य अर्थों की अपेक्षा अधिक उचित प्रतीत होता है ।

बहु - ﴾वि०﴿ ﴾स्त्री० हु + ह्वी﴿ बह् + कु नलोप: - म०उ० - भूयस् उ०उ० भूयस् उ०उ० भूयिष्ठ﴿, अधिक, पुष्कल, प्रचुर, बहुत तस्मिन् बहु एतदपि - श० 4, वा०शि० आप्टे । Abundant, much, numberous, repeated, frequent, abounding, rich in - मैकडानल । much, many, large, great, mighty, often, greatly, almost, nearly, as it were - का०कै० । abundent - ग्रिफिथ । great - विल्सन । यहाँ पर बहु शब्द का अर्थ अनेक उचित प्रतीत होता है ।

बृहत् - ﴾वि०﴿﴾स्त्री०-ती﴿﴾बृह् + अति﴿ विस्तृत, विशाल, बड़ा, स्थूल, मा० 9/5 - वा०शि०आ० । Great - का०कै० Lofty, long, tall, vest much, strong, mighty, abundent - मैकडानल loud - ग्रिफिथ ।
यहाँ पर बृहत् शब्द का अर्थ महान् ﴾विस्तृत विशाल﴿ अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

अध्वर्यवो भरतेन्द्राय सोममामत्रेभि: सिञ्चता मद्यमन्ध. ।

कामी हि वीर: सदमस्य पीतिं जुहोत वृष्णे तदिदेष वष्टि ॥ । ॥

अन्वय - अध्वर्यव: इन्द्राय सोमं भरत अमत्रेभि: मद्यं अन्ध: आ सिञ्चत, वीर: अस्य पीतिं सदम् कामी हि वृष्णे जुहोत एष: तदित् वष्टि ।

हिन्दी अनुवाद - हे अध्वर्यक ! इन्द्र के लिए अमत्र के द्वारा सोम का आहरण करो । मदकर अन्न को इन्द्र के लिए सिंचत करो । सचमुच पराक्रमी इन्द्र इसके पान का लोभी है । शक्तिशाली इन्द्र के लिए संचय करो ।

भरत: (भरं तनोति -तन् + ड) शकुन्तला और दुष्यन्त का पुत्र जो चक्रवर्ती राजा था । दशरथ की रानी कैकेयी का बेटा, एक प्राचीन मुनि जो नाट्यकला तथा संतति के प्रवर्तक माने जाते थे, अभिनेता, भाड़े का सैनिक, जंगली, अग्नि का विशेषण । वा०शि०आ० । भरत हरत - सा०मु० । of Agni, Prince, other man, of a principal hero, the mythical, author, of dramatic art, - का०कैप० ; actor - मैक्डानल ; Ministers bring the - ग्रिफिथ ; Priests bring - विल्सन ; यहाँ पर भरत: का तात्पर्य कैकेयी के पुत्र उचित प्रतीत होता है ।

अमत्रेभि: - (अमति भुक्ते अन्नमत्र - अम् + आधारे अत्रन्), बर्तन, वासन, पात्र, सामर्थ्य, शक्ति - वा०शि०आ० । अमत्रेभि: । अमा सहादन्त्यत्र होत्रादय इत्यमत्राणि चमसा - सा०मु० । Strong, Firm, Vessel, cup - का० कैप० । यहाँ पर अमत्रेभि: का तात्पर्य सामर्थ्य अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

<u>मद्यम्</u> - ‡वि0‡ माद्यत्यनेन करणे यत्, मादक आनन्ददायक, उल्लासमय, द्यम् खींची हुई शराब, मदिरा, मादकपेय, रणक्षितिशोणित मद्य कुल्या0 रघु0 7/49, वा0शि0आ0 । मद्यम् मदकरम् - सा0मु0 । Exhilarating, intoxicating, charming, plasant, drink, spirituous, liquor - का0कैप0। Gladdening, exhilarating, - मैक्डानल, Liquor-ग्रिफिथ । exhilarating - विल्सन । यहाँ पर मद्यम् का तात्पर्य आनन्ददायक मादक से है और यही उचित भी है ।

<u>कामी</u> - ‡वि0‡ ‡स्त्री0-नी‡ ‡कम् + णिनि‡, कामासक्त, इच्छुक, प्रेमी, प्रेम करने वाला, कामुक, ‡स्त्रीयों की ओर विशेष ध्यान देने वाला‡ त्वया चन्द्रमसा चातसन्धीयसे कामिजन सार्थः श0 - वा0शि0आ0 । कामी हि काममानो हि - सा0मु0 । wish, desire, longing for, love, inclination lust, pleasure, pers - का0कैप0 ; Indulging in love, libidisous, any from dirised - मैक्डानल । Pesirous - विल्सन । यहाँ पर कामी शब्द का तात्पर्य स्त्रियों की ओर विशेष ध्यान देने वाला अधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

<u>जुहोत</u> - ‡जु + श्तिप्‡ 'जुहोत, क्रिया से सम्पन्न होने वाले यज्ञ अनुष्ठानों का नाम है । इससे भिन्न अनुष्ठानों का नाम यजति है । क्षरति सर्वा वैदिक्यो जुहोति यजति क्रिया - मनु0 2/84, वा0शि0आ0 - Burnt , oblatious - का0कैप0 Technical, designation of the sacrifice, denoted by the turn duhoti - मैक्डानल । यहाँ पर जुहोत का तात्पर्य यज्ञ अनुष्ठानों में सम्पन्न कराये जाने वाली क्रिया है । यही उचित प्रतीत होता है ।

अध्वर्यवो यो अपो वव्रिवांसं वृत्रं जघानाशन्येव वृक्षम् ।

तस्मा एतं भरत तद्वशाय एष इन्द्रो अर्हति पीतिमस्य ॥ 2 ॥

अन्वय - अध्वर्व: य: अप: वव्रिवांसम् वृत्तम् जघान् अशन्येव वृक्षं तस्मै एतं भरत एष: इन्द्र: अस्य पीतिं अर्हति ।

हिन्दी अनुवाद - हे अध्वर्यक ! जिसने जल को आवृत्त करने वाले वृत्र को उसी प्रकार मार डाला जैसे अशनि ने वृक्ष को । सोम की कामना करने वाले उस इन्द्र के लिए सोम को लाओ यह इन्द्र उस (सोम) के पान के योग्य है इस सोम को सभृत करो ।

अध्वर्यव: (अध्वर + क्यच् + युच्), ऋत्विक्, पुरोहित, पारिभाषिक रूप से "होतृ" उद्गातृ तथा ब्रह्मन् से अतिरिक्त ऋत्विक्, यजुर्वेद अध्वर्यव: अध्वरस्य नेतार: - सा0मु0 । Priest, one proforming the actual work of the sacrifice - का0कैप0 । Priest, Priest versed in the Yajur - veda - मैक्डानल । Priest - विल्सन । Minister - ग्रिफिथ । यहाँ पर अध्वर्यव: शब्द का अर्थ ऋत्विक् का नेता (पुरोहित) अर्थ अत्यधिक समीचीन है ।

अप: - (स्त्री0) (आप् + क्विप् + ह्रस्वश्च) परिनिष्ठित भाषा में केवल ब0व0 में ही रूप होते हैं । यथा आप:, अपाम्, अप्सु, परन्तु वेदों में एकवचन में द्विवचन भी होते हैं । पानी खानि चैव स्पृशेद्दभि: - मनु0 2/60, वा0शि0 आ0 । अप: उदकानि - सा0मु0 । 1. अप् - work ; 2. अप् - water, waters - का0कैप0 । water- मैक्डानल । यहाँ पर अप: शब्द का अर्थ पानी के अर्थ में लिया गया है ।

वृक्षम् - ॥व्रश्च + क्स॥ पेड़ आत्मापराध वृक्षाणां फलान्येता निदेहिनाम समo अदन:
बढ़ई की चौरसी, कुल्हाड़ी, वड़ का पेड़, पियाल वृक्ष, वाoशिoआo ।
Tree, Plant, Tree bearing, trunk of a tree, little tree -
मैकडानल । Tree, Plant, tree with, flower, or fruit tree- काoकैपo।
Tree - ग्रिफिथ । यहाँ पर वृक्ष शब्द का अर्थ पेड़ के लिए प्रयुक्त है ।

एषा: - ॥भ्वाo + उभ + एषति - ते - एषित॥, जाना, पहुँचना, शीघ्रता से जाना,
दौड़कर जाना, परि - ढूढ़ना - वाoशिoआo । Creep, rushing on,
as subert, seeking, looking for, wish, desire -
काoकैपo । of eated, seeking, wishing, search, wish, desire -
मैकडानल । Praise - विल्सन । To take it- ग्रिफिथ । यहाँ पर एषा: शब्द
का अर्थ शीघ्रता से गमन करने के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

य: - ॥या + ड॥ जो चलता है, गतिमान है, जाने वाला गन्ता गाड़ी, हवा,
वायु, मिलाप, जौ - वाoशिoआo । य: इन्द्र - साoमुo । who,which,
if, anybody, repeated or connected with -
काoकैपo । who, that, which,what- मैकडानल । who - ग्रिफिथ । who -
विल्सन । यहाँ पर य: शब्द का अर्थ जो य: धातु से बना है जिसका अर्थ ॥जो॥
होता है ।

अध्वर्यवो यो दृभीकं जघान यो गा उदाजदप हि वलं वः ।

तस्मा एतमन्तरिक्षे न वातमिन्द्रं सोमैरोर्णुत जूर्न वस्त्रैः ॥ 3 ॥

अन्वय - अध्वर्यवः यः दृभीकम् जघान् यः गाः उदाजत् बलम् अप वः तस्मै एतम् अन्तरिक्षे वातम् न सोमैः इन्द्रम् आ उर्णुत जूर्न वस्त्रै. ।

हिन्दी अनुवाद - हे मध्वर्यक ! जिसने दृभीक को मार डाला, जिसने गायों को बाहर निकाला । सचमुच बल नामक असुर को हिंसित किया इसलिए इस सोम को लाओ । अन्तरिक्ष में वायु पूरित रहता है । जैसे वृद्ध पूरित वस्त्रों से ढका रहता है उसी प्रकार इन्द्र को सोम से आतृप्त कर दो ।

दृभीकम् - दृभीकम् सर्वान् विदारयति भयकरोतितां नामासुरः - सा0मु0 । of a demon - का0कै0प0 । Make into tufts string together, found, together composed, confirmed - मैकडानल । Dribhike Smote - ग्रिफिथ । Slew Dribhike - विल्सन । दृभीक एक राक्षस का नाम है ।

अन्तरिक्ष - The intermediate rigion, the atmoshphere of air - का0कै0प0 । Sky - मैकडानल । regian - ग्रिफिथ । यहाँ पर अन्तरिक्ष शब्द का अर्थ आकाश है ।

वातम् - पुरा0 उभ वातयति ते हवा, पंखा करना, हवादार करना, सेवा करना वा0शि0आ0 । Wind, air, the wind of the god - का0कै0प0 । Blow, wind, the wind of god, air disorder caused by wind - मैकडानल । Vaua - ग्रिफिथ । Wind - विल्सन ।

ऊर्णुत - ≬अदा० उभ०≬ ≬उर्णा ≬र्णौ≬ ति उर्णुते, ऊर्णाति≬ ढकना, घेरना, छिपाना, भट्टि० 14/103 शि० 20/14 ≬प्रेर०≬ उर्णा वयति ≬इच्छा०≬ ऊर्णु नूषति ऊर्णुन् नु विषति, प्र - ढकना, छिपाना आदि - वा०शि०आ० । ऊर्णुत् आच्छादने सा०मु० । Cover, veil, hide, uncover, unvied, open - का०कैप० । Surround, envelope, oneself, uncover, coverup - मैक्डानल । is covered - विल्सन । उर्णुत् शब्द का अर्थ आच्छादित करना अर्थ अधिक समीचीन है ।

व: ≬वा + ड≬ वायु, हवा, वरुण, समाधान, संबोधित करना, मांगलिकता, निवास आवास, समुद्र, व्याघ्र, कपड़ा, राहु - वा०शि०आ० । Discovered - ग्रिफिथ । Destroyed - विल्सन । यहाँ पर व: का अर्थ वायु से लिया गया है ।

जू: - ≬भ्वा०दिवा०क्रधा०पर०चुरा०उभ० जरति जीर्यति, जारयति - ते जीर्ण जारयति - बूढ़ा होना, जीर्ण होना, जर्जर होना, सूखना, मुरझाना, जीर्यन्ते जीर्णत: केशा दन्ता जीर्यन्ति जीर्यत: जजीर्यतश्चक्षुषी श्रोत्रे तृष्णैका तरुणायते पंच० 5/83. - वा०शि०आ० । जूर्न जीर्णो यथा - सा०मु० । of/gur- मैक्डानल Old - विल्सन ।

अध्वर्यवो य उरणं जघान नव चख्वांसं नवतिं च बाहून् ।

यो अर्बुदमव नीचा बबाधे तमिन्द्रं सोमस्य भृथे हिनोत ॥ 4 ॥

अन्वय - अध्वर्यव:य: नव नवतिं च बाहून् चख्वांसम् उरणम् जघान् य: अर्बुदम् अव बबाधे तम इन्द्र सोमस्य भृथे हिनोत्x।

हिन्दी अनुवाद - हे अध्वर्यक ! जिस इन्द्र ने निन्यानबे बाहुओं का प्रदर्शन करने वाले उरण को हिंसित किया और जिसने अर्बुद नामक असुर को अधोमुख करके बाधित किया । वह इन्द्र ! सोम की आहुति दिये जाने पर स्तोत्रों से प्रसन्न हुआ ।

अबुर्दम् - ॥र्बु॥ द: दम ॥॥अर्ब्द॥ ॥र्व0॥ + विच् - उद् - इ + ड, सृजन, दस करोड़ की सख्या, आबू पहाड़, सांप, बादल, मांस-पिण्ड, सांप जैसा राक्षस जिसे इन्द्र ने मारा था - वा0शि0आ0 । अर्बुदम् एतन्नामकअसुरं -सा0मु0। a snake, a demon, of a mountain, of a people, hundred millions, cartilarge of the ribs - का0कै0प0 । snake like mass, shape of the foetus in the second month,of a min,of a people,the hymn. मैकडानल । Aburda and slaw - ग्रिफिथ । hundred Aburda - विल्सन । यहां पर अबुर्दम् शब्द का अर्थ एक राक्षस का नाम है जिसे इन्द्र ने मार गिराया था ।

भृथे - भृथे सोमम् विभ्रति पात्रे - सा0मु0 । Oblation - का0कै0प0 ; Offering - मैकडानल । offered- ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहां पर भृथे का अर्थ सोमरस एकत्रित करने का पात्र उचित है ।

नव - (सं०वि०) (नु + कनिन् वा० गुण:) (नित्य बहु०) नौ - नवति - नवाधिका रघु० 3/69 दे० नीचे दिये गये समस्त शब्द में न् का लोप होता है । अशीति. नवासी, निन्यानबे - वा०शि०आ० । Ninety one - का०कैप० । Ninety - मैकडानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर नौ शब्द का अर्थ 90 (नब्बे) संख्या के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

नवतिम् - (नवन् + तिंग) नौ का समूह - वा०शि०आ० । Nine - विल्सन एवं ग्रिफिथ । Nine in number - ग्रिफिथ । the number of nine - का०कैप० । यहाँ पर नवतिम् शब्द का अर्थ नौ संख्या के समूह के लिए आया है ।

बाहून् - वाध् + कु धस्य ह:, भुजा शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च वाहु कुत: फलमिहास्य श० 1-16, इस प्रकार महाबाहु आदि - वा०शि०आ० । Arms, fore arms, fore leg, its upper part arms - मैकडानल । Arms - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ बाहून् शब्द का अर्थ भुजाओं उचित है ।

अध्वर्यवो यः स्वश्नं जघान यः शुष्णमशुषं यो व्यंसम् ।

यः पिप्रुं नमुचिं यो रुधिक्रां तस्मा इन्द्रायान्धसो जुहोत ॥ 5 ॥

अन्वय - अध्वर्यवः यः अश्नम् तु अशुषं शुष्णम् यः व्यंसम् यः पिप्रुं नमुचिम् रुधिक्राम् यः तस्मै इन्द्राय अन्धसः जुहोत् ।

हिन्दी अनुवाद - हे अध्वर्यक ! जिस इन्द्र ने अश्न को मारा, जिसने शोषणरहित को अंशरहित करके मार डाला, जिसने पिप्रु, नमुचि तथा रुधिका को मार डाला, उस इन्द्र के लिए सोमरूपी आहुति करो ।

शुष्णम् - शुष्णम् असुरम् - सा0मु0 । of a demon slain of Indra - का0कैप0 । of a demon slain by Indra - मैक्डानल । and greedy sushnu - ग्रिफिथ । unabsorbable sushna - विल्सन । शुष्णम् एक असुर का नाम है ।

अशुषम् - अशुषम केनाप्यशोषणीयम् - सा0मु0 । derouring, varacious - का0कैप0 । greedy sushanu - ग्रिफिथ । the unabesorbable sushana - विल्सन । अशुषम् शोषण करने वाला अर्थ यहाँ पर उपयुक्त है ।

नमुचिम् - (न + मुच् + इन्) एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मार गिराया था । वनमुचे नमुचेररये शिर: - रघु0 9/22 (जब इन्द्र ने असुरों पर विजय प्राप्त किया तो नमुचित नामक राक्षस ने डटकर मुकाबला किया और अन्त में इन्द्र को बन्दी बना लिया और कहा कि प्रतिज्ञा करो कि न मैं तुम्हें दिन में मारूँगा न रात में न पानी में न सूखे में तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा - वा0शि0 आप्टे ।

.of a demon - का0कैप0 । of a demon subdued by Indra - ----------- मैकडानल । Namuchi - ग्रिफिथ एवं विल्सन । नमुचि एक राक्षस का नाम है ।

पिप्रुम् - एक राक्षस जिसे इन्द्र ने मार गिराया था - वा0शि0आ0 । of a demon - का0कैप0 । of a demon slain by Indra - मैकडानल । Piprum - ग्रिफिथ एवं विल्सन । पिप्रुम एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मारा था ।

रुधिक्रा - रुधिका एक राक्षस जिसे इन्द्र ने मार गिराया था - वा0शि0 आप्टे । of a demon - का0कैप0 । of a demon slain by Indra - मैकडानल । Rüdhrika - ग्रिफिथ एवं विल्सन । रुधिका एक राक्षस का नाम था ।

अध्वर्यवो यः शतं शम्बरस्य पुरो विभेदाश्मनेव पूर्वीः ।

यो वर्चिनः शतमिन्द्रः सहस्रमपावपद्भरता सोममस्मै ॥ 6 ॥

अन्वय - अध्वर्यवः यः शम्बरस्य पूर्वीः शतं पुरः अश्मनेव बिभेद यः इन्द्रः वर्चिनः शतं सहस्रम् अपावपत् अस्मै सोमं भरत ।

हिन्दी अनुवाद - हे अध्वर्यक ! जिसने शम्बर के प्राचीन सैकड़ों नगरियों को भ्रष्ट कर चूर्ण कर दिया, जिसने वर्चिन के सैकड़ों हज़ारों पुत्रों का पृथ्वी पर धराशायी किया, उस इन्द्र के लिए सोम को प्रवाहित करो ।

शतम् - (दश दशतः परिणामस्य - दशन् + त श आदेशः नि० साधुः) सौ की संख्या - नि: स्वो वष्ट शतं शान्ति० 2/6, वा०शि०आ० । Hundred- मैकडानल । Hundred, also as expression or the hundredth - का०कै०प० । Hundred - विल्सन एवं ग्रिफिथ । यहाँ पर शतं शब्द सौ की संख्या समीचीन है ।

शम्बरस्य - (शम्ब + अरच्) शंबर शब्द षष्ठी एकवचन - एक राक्षस जिसे इन्द्र ने मार गिराया । पहाड़, एक प्रकार का हिरन - वा०शि०आ० । Sambar - ग्रिफिथ एवं विल्सन । of a demon - का०कै०प० । a demon slain by Indra - मैकडानल । शम्बर. मायाविनो सुरस्य - सा०भु० । शम्बर एक राक्षस का नाम है, जिसे इन्द्र ने मार गिराया था ।

पुरः - (पॄ + क) नगर, शहर, विशाल भवन से युक्त - वा०शि०आ० । Strong hold, castle, town, the body - का०कै०प० । Fortfid, city, town - मैकडानल । castle - ग्रिफिथ । cites - विल्सन

पूर्वी: - पूर्व + अच् - दिशा पूरब, प्राचीन, पुराना, - वा0शि0आ0 । पूर्वी पुरातनी. - सा0मु0 । being before, frist, eastren, Prior, ancient, eastern - का0कै0 । eastern ancient - मैक्डानल । ancient - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर पूर्वी: शब्द का तात्पर्य प्राचीन उचित है ।

वर्चिन: - वर्चस् + इन् - ओजस्वी, प्रतापी, देदीप्यमान, एक राक्षस जिसे इन्द्र ने मारा - वा0शि0आ0 । of a demon - का0कै0 । demon slain by Indra - मैक्डानल । Varchin cast down - ग्रिफिथ । Varchin slain - विल्सन । यहाँ पर वर्चिन: एक राक्षस का नाम है, जिसे इन्द्र ने मार गिराया था ।

सहस्रम् - (समानं हसति = हस् + र) हजार सम0 अंशु, अर्चि: कर किरण दीधिति, धामन्, पाप, मरीचि, रश्मि, - वा0शि0आ0 । सहस्रम् एतत्संख्याकान-परिभितान्वीरान् पुत्रान् - सा0मु0 । thousand - ग्रिफिथ एवं विल्सन । सहस्रम् शब्द हजार की संख्या अर्थ प्रयुक्त किया गया है ।

अश्मना - (पु0) (अश् + मनिन्) पत्थर, नाराचक्षेपणी याश्मनिष्पेषोत्पतितानलम् रघु0 4/77, फलीता, चकमक पत्थर । - वा0शि0आ0 । अश्मनेव अश्मसदृशेन वज्रेण - सा0मु0 । rock, stone, thunderbold, sky - का0कै0 । rock, stone, thunderbold - मैक्डानल । Thunder - ग्रिफिथ । Thunderbolt - विल्सन । अश्मना शब्द का अर्थ पत्थर उचित होगा ।

अध्वर्यवो यः शतमा सहस्रं भूम्या उपस्थे वपज्जघन्वान् ।

कुत्सस्यायोरतिथिग्वस्य वीरान्न्यवृणग्भरता सोममस्मै ॥ 7 ॥

अन्वय - अध्वर्यव: जघन्वान् य: शतं सहस्रम् भूम्या: उपस्थे कुत्सस्य आयो: अतिथिग्वस्य वीरान् न्यवृणक् सोमम् भरत् ।

हिन्दी अनुवाद - हे अध्वर्यक ! जिस मारक ॥शत्रुहिंसक॥ ने पृथ्वी की गोद में सैकड़ों-हजारों को मार डाला । कुत्स के आयु के और अतिथिग्व के पुत्र को मार डाला । उस इन्द्र के लिए सोम को लाओ ।

भूम्या - ॥स्त्री0॥ ॥भवन्त्यस्मिन् भूतानि - भू + मि कि ववा ङीप्॥ पृथ्वी, ॥विप0॥ स्वर्ग गगन या पाताल द्यौभूमिरापोहृदयंयमश्च पंच0 1.182, वा0शि0आ0 । The earth, soil, land, of a house, place, site, abode - का0कै0 । earth ground, spot, floor-earth मैकडानल । earth - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ भूम्या शब्द का अर्थ पृथ्वी उचित है ।

आयो:- of a demon - ग्रिफिथ । a demon slain by Indra - मैकडानल । Aya - विल्सन । आयो: शब्द एक राक्षस के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

कुत्सस्य - चुरा0आ0 कुत्सयते, कुत्सति, गाली देना, बुरा भला कहना, निन्दा करना, कलंक लगाना, मनु0 4/54, वा0शि0आ0 । Blamable - का0कै0 । of a heated man - मैकडानल । Kuetsya - ग्रिफिथ । यहाँ पर कुत्सस्य शब्द का अर्थ गाली के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

वीरान् - [वि0] अजे: रक् वीभावश्च] शूर, वीर, उज्झ: - जो यज्ञ में आहुति न
नहीं डालता - वा0शि0आ0 । वीरान् अभि गन्तृन् प्रतिद्वन्दिन:
शुष्णादिभिसुरान् - सा0मु0 । excellent hero, man or hero -
का0कै0प0 । rolient man - ग्रिफिथ । destroyed the
assailants - विल्सन । यहाँ पर वीरान् शब्द का अर्थ शूर के लिए प्रयुक्त
हुआ है ।

उपस्थे - उपस्थे उत्सङ्गे - सा0मु0 । groin, the sexeual, organs,
of a women - का0कै0प0 । Drivers seats, organs, of ganrac-
tion of sexual, prassion - मैकडानल । Cast them down -
ग्रिफिथ । cast them down the lak - विल्सन । यहाँ पर उपस्थे शब्द
का तात्पर्य उत्संग समीचीन होगा ।

अवयत् - [अव + यत् + ल्यप्], उतरना, नीचे आना, नीचे गिराना, - वा0शि0
आ0 । एकैकेनप्रकारेणापातयत् - सा0मु0 । Fall, flyind down,
end - का0कै0प0 । Felling down, throwing - मैकडानल । Down -
ग्रिफिथ । them down - विल्सन । यहाँ पर अवयत् का तात्पर्य नीचे उचित
है ।

अध्वर्यवो यन्नरः कामयाध्वे श्रुष्टी वहन्तो नशथा तदिन्द्रे ।

गभस्तिपूतं भरत श्रुतायेन्द्राय सोमं यज्यवो जुहोत ॥ 8 ॥

अन्वय - नरः अध्वर्यवः यत् कामयाध्वे श्रुष्टी इन्द्रे वहन्तः तत् नशथ श्रुताय इन्द्राय गभस्तिपूतं सोमं भरत यज्यवः जुहोत ।

हिन्दी अनुवाद - हे अध्वर्यक ! मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ ॥नेता॥ यज्ञ के अन्न को तुम लोग जिसकी कामना करते हो उस सोम को इन्द्र के लिए वहन करते हुए शीघ्र ही उस कामना को ॥तुम लोग॥ इन्द्र से प्राप्त करो । हे ॥अध्वर्यक॥ यज्ञ की प्रसिद्धि के लिए तथा इन्द्र के लिए हाथ से शुद्ध किये गये आहुति किये हुए सोम का वहन करो ।

नरः ॥नृ + अच्॥ मनुष्य, पुमान, पुरुष, संयोजयति विद्येव नीच गापि नरं सरित - वा०शि०आ० । Man, husband, hero, the Primal man or sprit - का०कै०प० । नरः कर्मणां नेतारो हे - सा०भ्रु० । Leader विल्सन । men - ग्रिफिथ । यहाँ पर नर शब्द का अर्थ मनुष्य उचित है ।

श्रुताय - ॥भू०+क०+कृ०॥ ॥श्रु + क्त॥ सुना हुआ, ध्यान लगाकर श्रवण किया गया, कर्णगोचर, अधिगत, समझा गया, सुज्ञात - वा०शि०आ० । श्रुताय लोके प्रसिद्धाय - सा०भ्रु० । यहाँ पर श्रुताय शब्द का अर्थ श्रवण करने के लिए अधिक उचित प्रतीत होता है ।

जुहोत - ॥जू + क्विप॥ जुहोति क्रिया से सम्पन्न होने वाले यज्ञानुष्ठानों का पारिभाषिक नाम से भिन्न यज्ञानुष्ठानों से वर्णित नामकरन्ति सर्वा वैदिक्यो- जुहोति जयतिक्रिया 2.84 - वा०शि०आ० । Burnt, oblation -

का0कै0 । teachnical, designation of the secrifices denoted by the term juhoti- मैक्डानल । यहाँ पर जुहोतु शब्द का अर्थ यज्ञों को करने के लिए पारिभाषित किया गया है ।

नशथु - ॥दिवा: पर: नश्यति नष्ट, प्रेर0 नाशयति - इच्छा निनंक्षति निनशिषति॥ खोया जाना, अन्तर्ध्यान होना, लुप्त होना, अदृश्य होना, लुप्त होना, वा0शि0आ0 । attain, get, meet, with, reach, befall - का0कै0। be lost, Perish, disappear, Vanish, depart - मैक्डानल। यहाँ परनशथु शब्द का अर्थ अदृश्य होना समीचीन है ।

गभस्तिपूतम् - हस्ताभ्यां मार्जनदोहनादिभि: - सा0भु0 । ॥गभस्ति॥ arm, hand, ray - का0कै0 । पूतम् - cleanse, purify, make, clear or bright, sift, discern, invest - का0कै0। Hand have cleansed - ग्रिफिथ । Purifi by the sacrifice - विल्सन । यहाँ पर ॥सोम॥ रस को निचोड़ने ब्र के लिए प्रयोग किया गया है ।

अध्वर्यव: कर्तना श्रुष्टिमस्मै वने निपूतं वन उन्नयध्वम् ।

जुषाणो हस्त्यमभि वावशे व इन्द्राय सोमं मदिरं जुहोत ॥ 9 ॥

अन्वय - अध्वर्यव: अस्मै श्रुष्टिं कर्तन् वने वने निपूतम् उन्नयध्वम् जुषाण: व: हस्त्यं अभि वावशे मदिरम् सोमम् इन्द्राय जुहोत ।

हिन्दी अनुवाद - हे अध्वर्यक ! शीघ्रतापूर्वक काष्ठ के पात्र में शोधित (सोम) को ले आओ हस्तनिर्मित सोम का सेवन करता हुआ । बार-बार इस सोम का सेवन करता हुआ इन्द्र के लिए मदकर सोम की आहुति दो ।

वने - (वन् + अच्) अरण्य, जंगल, वृक्षा का झुरमुट, एकोवास: पत्तने वा वने वा भर्तृ0 3/120, वने पि दोषा: प्रभवन्ति रागिणाम, झुण्ड, सघन क्यारी में उगे हुए कमल या पौधों का समुच्चय, झरना, पानी, उदक, - वा0शि0आ0 । वने सम्भजनोये, वने उदके - सा0मु0 ।

(i) Like, wish, desire, aim at;

(ii) Wood, wooden, vessel;

(iii) tree, wood, forest, doud, Somejice;

(iv) desire, thicket ; का0कैप0 ।

Like, love, wish, desire, culuster, group, water - मैकडानल । Wood - ग्रिफिथ । water - विल्सन । यहाँ पर वने शब्द का अर्थ प्रस्तुत मन्त्र में जंगली वृक्षा के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

जुषाण: (तुदा0 + आ0 - जुषते, जुष्ट + अण्) प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना, अनुकूल होना, मंगलप्रद होना, सत्त्वं जुषाणस्य भवाय देहिनाम् भाग0 - वा0शि0

आ0 । Be Pleased or satisfied, be found of, delight in, enjoy, like to, resolve upon, delighting in - का0कैप0 । taste with pleasure, relish, hear favourably, like, posessing - मैकडानल । well pleased- विल्सन । well pleased - ग्रिफिथ । जुषाणः शब्द का अर्थ प्रसन्न होना यथोचित प्रतीत होता है ।

मदिरम् - ॥वि0॥ माद्यति अनेन मद्करणे - किरच्॥ मादक, दीवाना करने वाला, आनन्ददायक, आकर्षक । वा0शि0आ0 । मदिरम् मदकरमिमं - सा0 मु0 । any eneberiating drink - का0कैप0 । Spirituous liquor, having ravishing eyes - मैकडानल । the gladdening some juice - ग्रिफिथ । exhilarating some juice - विल्सन । मदिरम् शब्द का अर्थ मादक पदार्थ के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

अभि - ॥भी॥ क ॥वि0॥ अभि + कन्॥ कामी लंपट-विलासी, सो धिकारमिक: कुलाचितं काश्चन स्वयमवर्तयत्समा: रघु0 19/4 - वा0शि0आ0 । अभि वावशे कामायते - सा0मु0 । eager, desireous, libidinos - का0कैप0 । into, near, towards, to against, over, for, for the shake of - मैकडानल । यहाँ पर अभि एक विशेषण के रूप में लिया गया है ।

अध्वर्यवः पयसोधर्यथा गोः सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम् ।

वेदाहमस्य निभृतं म एतद्दित्सन्तं भूयो यजतश्चिकेत ॥ 10 ॥

अन्वय - अध्वर्यवः यथा गोः ऊधः पयसा ईम् भोजं इन्द्रम् सोमेभिः मे अस्य निभृतं अहम् वेद दित्सन्तं यजतः भूयः चिकेत ।

हिन्दी अनुवाद - हे अध्वर्यक । यथा गाय का स्तन दूध से आपूरित रहता है, उसी प्रकार फलदाता इन्द्र को सोम के द्वारा आपूरित कर दो, मैं इसके विषय में भलीभाँति जानता हूँ । पूज्य इन्द्र को उस सोम को देने की इच्छा करने वाले सोम को जानें ।

पयसा - ‹नपुं0› ‹पय् + असुन्, पा +असुन्, इकारादेशच› पानी, दूध, पय: पानम् भुजगानां केवलं विषवर्धनम् -हि0 3/4 - वा0शि0आ0 । पयसा पूर्ण तद्वत् - सा0मु0 । Juice, fluid, water or milk - का0कै0 । Juice, Fluid, Vital, Water, rain - मैक्डानल । Milk - ग्रिफिथ । rabiton - विल्सन । यहाँ पर पयसा शब्द का अर्थ दूध यथोचित है ।

ऊधः - ‹नपुं0› ‹उन्द् + असुन् ऊध आदेश› ऐन, औड़ी ‹बहुब्रीहि समास में बदलकर ऊधन हो जाता है । वा0शि0आ0 । udder, bosom, lap, the cloudy sky - का0कै0 । udder, bosom, doud, milk - मैक्डानल । udder - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर ऊधः शब्द का अर्थ आपूरित समीचीन है ।

भोजम् - ꞉भुज् + अच्꞉ मालवा का प्रसिद्ध राजा भोज, जा: एक जाति का नाम है । कंस का विशेषण, भोजों का राजा - वा०शि०आ० । भोजम् फलस्य दातारं क्षितारं च, - सा०मु० । Bountiful liberal, king of a people - का०कैप० । filled with milk -विल्सन । Fill with milkग्रिफिथ । भोज शब्द का अर्थ फल देने वाला, रक्षा करने वाला लिया जाता है ।

वेद - जानामि - सा०मु० । ꞉विद् + घञ् + अच् वा꞉ ज्ञान, आध्यात्मिक व धार्मिक ज्ञान, हिन्दुओं का धर्म ग्रन्थ - वा०शि०आ० । Knowledge , finding, obtaining - का०कैप० । Knowledge, ritual, lore, finding, tuft of strong grass - मैकडानल । I know him - ग्रिफिथ । Knowledge-विल्सन । यहाँ पर वेद शब्द का अर्थ जानने के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है ।

भूय: - ꞉वि०꞉ ꞉स्त्री०꞉ ꞉बहु + ईयसुन् ईलोपेभ्योदेश:꞉ अधिकतर, अपेक्षाकृत, संख्या में अधिक या बहुत अधिक, बड़ा - वा०शि०आ० । भूय: अतिशयेन = सा०मु० More, greater, mighter, more numberous - का०कैप० More, More numberous - मैकडानल । More - ग्रिफिथ । यहाँ पर भूय: शब्द का अर्थ अधिक उचित है ।

अध्वर्यवो यो दिव्यस्य वस्वो यः पार्थिवस्य क्षम्यस्य राजा ।

तमूर्दरं न पृणता यवेनेन्द्रं सोमेभिस्तदपो वो अस्तु ॥ ११ ॥

अन्वय - अध्वर्यवः यः दिव्यस्य वस्वः राजा यः पार्थिवस्य क्षम्यस्य तम् इन्द्रम् सोमेभिः पृणत् ऊर्दरं न यवेन अपः वः अस्तु ।

हिन्दी अनुवाद - हे अध्वर्यक ! जो (अन्तरिक्ष में) दिव्य धन का और पृथ्वी से सम्बन्धित धन का शासक है । उस इन्द्र को सोम के द्वारा उसी प्रकार आपूरित करो जैसे ऊर्दर पात्र को यव से भरा जाता है । यह कार्य वस्तुतः आपका है ।

दिव्यस्य - (वि०) (दिव् + यत्) दैवी, स्वर्गीय, आकाशीय, अतिप्राकृतिक, अलौकिक, परदोषेक्षणादिव्यचक्षुषः शि० 16/29, - वा०शि०आ० । दिव्यस्य द्युलोकाहस्य - सा०भु० ।' Heavenly, divine, a god, wonderful, splendid, any thing- का०कैप० । celestial, divine, magical, ordeal, oath - मैकडानल । Heavenly - ग्रिफिथ । Heaven- विल्सन । दिव्यस्य शब्द का अर्थ अलौकिक उचित है ।

वस्वः-(नपुं०) (वस् + अच) दौलत, धन, स्वयं प्रदुग्धे स्य गुणरूपस्नुता वसूयमानस्य वसूनि मेदिनी कि० 1/19 - वा०शि०आ० । वस्वः वसूनः - सा०भु० । good, wholesome, of the gods or a class property. wealth, riches- का०कैप० । good, benificent, gem, peace - मैकडानल । wealth - ग्रिफिथ । Riches - विल्सन । वस्वः शब्द यहाँ पर धन के लिए प्रयुक्त किया गया है । यही वास्तविक अर्थ है ।

पार्थिवस्य - ﴾वि0﴿ ﴾प्र + अर्थ + णिनि﴿ मांगने वाला, प्रार्थना करने वाला, इच्छा करने वाला - वा0शि0आ0 । पार्थिवस्य - पृथ्वीशब्देन विस्तीर्णमन्तरिक्षमुच्यते । तत्रत्यं धनं प्रार्थिवम् - सा0मु0 । wishing, desiring, longing, for, attacking - का0कैप0 । यहाँ पर पार्थिव शब्द का अर्थ कामना के लिए किया गया है ।

क्षाम्यस्य - ﴾क्षम् + अङ् + टाप्﴿ धैर्य, सहिष्णुता, माफी, क्षमा शत्रौ च मित्रे च यतानामेव भूषणम् हि0 2. पृथ्वी, दुर्गा का विशेषण - वा0शि0आ0 । क्षाम्यस्य क्षमा भूमि: - सा0मु0 । earthly, terrestrial - का0कैप0 । earthly - मैकडानल । terrestril - ग्रिफिथ । of earth - विल्सन। यहाँ पर क्षाम्यस्य शब्द का अर्थ पृथ्वी के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

यवेन - ﴾यु + अच्﴿ ﴾यव शब्द तृ0ए0व0﴿ जौ - यवा: प्रकीर्णा: न भवन्ति शालय: मृच्छ 4/17 - वा0शि0आ0 । any grain or corn, barley or a barley corn - का0कैप0 । grain, corn, barley - मैकडानल । Barley - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर यवेन शब्द का अर्थ अन्न के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

अस्मभ्यं तद्वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम् ।

इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून्बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ 12 ॥

अन्वय - इन्द्र वसो इति अस्मभ्यम् तत् दानाय राधः अर्थयस्व बहु ते वसव्यम् सम् द्यून यत् चित्रम् श्रवस्या अनु बृहत् सुऽवीराः विदथे वदेम ।

हिन्दी अनुवाद - हे वासक ! हम उस धन को देने के लिए ﴾हमें﴿ समृद्ध हो, समर्थवान तुम्हारे धन अनेक हैं । हे इन्द्र ! धन की इच्छा वाले हम प्रतिदिन धन की कामना करेते हैं । हम यज्ञ में अपने वीर पुत्रों के साथ तुम्हारी स्तुतियाँ उच्चस्वर में उच्चारित करें ।

दानाय - दान भ्वा0उभ0 - दानति ते - काटना, बाँटना, इच्छा0 दी दांसति ते - सीधा करना । दान ﴾दा + ल्युट﴿ देना, स्वीकार करना, अध्यापन, समर्पण करना, उपहार, दान - वा0शि0आ0 । Giving, imparting, distribution, cutting pasture the ratifluid- का0कैप0 । Presenting, offering - मैक्डानल । प्रस्तुत शब्द दानाय का अर्थ यहाँ पर समर्पण करने के लिए समीचीन है ।

चित्रम् - ﴾वि0﴿ ﴾चित्र + अच्, चि + स्त्रन वा﴿ उज्ज्वल, स्पष्ट, चितकबरा, धब्बेदार, सबलीकृत, दिलचस्प, रुचिकर, विभिन्न प्रकार का, भाँति, वा0शि0आ0 । manifest, visible, bright, loud, excelent, fold - मैक्डानल । conspicuous, visible, bright, loud, strange - का0कैप0 । Loud - ग्रिफिथ । यहाँ पर चित्रम् का अर्थ अनेक प्रकार उचित है ।

अनु - ॥अव्यय॥ अव्ययीभाव समास बनाने के लिए संज्ञा शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है। या क्रिया या कृदन्त शब्दों के पूर्व जोड़ा जाता है। या स्वतंत्र सम्बन्ध बोधक अव्यय के रूप में कर्मधारय के रूप में प्रयुक्त होता है। पश्चात्, पीछे, - वा0शि0आ0। Afterward, then, again, along, over- मैकडानल। Toward, then, along, over, with regard to, in consequence- का0कै0। अनु शब्द का अर्थ अव्ययीभाव समास बनाने के लिए प्रयुक्त होता है।

वृहत् - ॥वि0॥ ॥स्त्री0त्री0॥॥बृह + अति॥ विस्तृत, विशाल, बड़ा, स्थूल, मा0 9/5, चौड़ा, प्रशस्त, विस्तृत दूर तक फैला हुआ, व0शि0आ0। Lofty Great or big, strengthen, augment, fourther - का0कै0। Lofty, long, full, vast, abundant, extensive much, strong, mighty, big, large, great- मैकडानल। Great -ग्रिफिथ। abundence- विल्सन। यहाँ पर वृहत् शब्द का अर्थ विस्तृत समीचीन है।

प्र घा न्वस्य महतो महानि सत्या सत्यस्य करणानि वोचम् ।

त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्यास्य मदे अहिमिन्द्रो जघान ॥ । ॥

अन्वय - महत. सत्यस्य अस्य सत्यां महानि करणानि नु प्र वोचं घ त्रिकद्रुकेषु सुतस्य अपिबत् अस्य मदे इन्द्रः अहिं जघान ।

हिन्दी अनुवाद - मैं इन्द्र के महान सतत कार्य को करूँगा । इस निचोड़े गये सोम को त्रिकद्रुक नामक स्राव मै दिया । इस सोम के मद में इन्दु ने अहि को मारा ।

महत् - ﴾वि0﴿ ﴾म0अ0 महीयस् उ0अ0 महिष्ठ कर्तृ0 ﴾पुं0﴿ महान, महान्तौ, महान्त कर्म0 ब0व0 महत: मह् + अति बड़ा, वृहत्, विस्तृत, विशाल, वा0शि0 आप्टे । महत: बलवन्त: - सा0मु0 । great, big, large, tall, extensive, long, Protracted, much, many, might - का0कैप0 । almost, invariable, huge, high, deep, gross, long, full down - मैकडानल। mighty - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर महत् शब्द का अर्थ विस्तृत अधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

सत्यस्यं - ﴾वि0﴿ ﴾सते हितम् + सत् + यत्﴿ सच्चा, वास्तविक, असली, जैसा कि सत्यव्रत, सत्यसन्ध, ईमानदार, सच्चा, निष्ठावान् - वा0शि0 आप्टे । सत्यस्य संकल्पस्य - सा0मु0 । real, true, genuing, serious, valid, good, faithfully, honest, effective, sincere - का0कैप0 । actual, real, true, successful, effectful, realised- मैकडानल । true - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर सत्यस्यं का तात्पर्य निष्ठावान् अधिक उचित प्रतीत होता है ।

करणानि - ॥कृ + ल्युट॥ करना, अनुष्ठान, सम्पन्न, कार्यान्वित करना, वा०शि० आप्टे । करणानि अस्मिन्सूते वक्ष्यमाणानि कर्माणि - सा०मु० । active, cleaver, skilled - का०कैप० । making, helper, assistant,organ,occupation -मैकडानल । यहाँ पर करणानि शब्द का वास्तविक अर्थ कार्यान्वित करना उचित है ।

सुतस्य - ॥भू + क० + कृ० ॥सु + क्त॥ उड़ेला गया, निकाला गया, निचोड़ा गया, उत्पादित या पैदा किया गया । वा०शि० आप्टे । सुतस्य अभिषुतं सोमम् इन्द्र, - सा०मु० । expressing out, or extracted, the expressed (Some) Juice, Libation-का०कैप० । **Pressing, extracting** -मैकडानल । exploits - ग्रिफिथ । यहाँ पर सुतस्य का वास्तविक अर्थ उत्पादित किया गया अधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

महानि - महानि महान्ति - सा०मु० । यहाँ ॥कर्म० + स० और ब०स० में प्रथम पद के रूप में तथा कुछ अन्य अनियमित शब्दों के प्रारम्भ में प्रयुक्त "महत्" का स्थानापन्न रूप है ॥विशे० उन समस्त शब्दों की संख्या जिनका आदि पद"महा" है । बहुत अधिक है तथा अनेक शब्द बन सकते हैं । **greatness, abundance,** might - का०कैप० । **Mostly, greatly, . extensive--** मैकडानल । mighty-ग्रिफिथ । great - विल्सन । यहाँ पर महानि शब्द का वास्तविक अर्थ बहुत अधिक उचित है ।

सत्या - ॥सत्यमस्ति, अस्याः - सत्य + अच् + टाप्॥ सच्चाई, ईमानदारी,सीता का नाम, दुर्गा का नाम, द्रौपदी का नाम, व्यास की माता सत्यवती का नाम, कृष्ण की रानी सत्य भामा का नाम - वा०शि०आ० । सत्या सत्यानि - सा०मु० ।True -ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर सत्या का वास्तविक

अवंशे द्यामस्तभादृहन्तमा रोदसी अपृणदन्तरिक्षम् ।

स धारयत्पृथिवीं पप्रथच्च सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ 2 ॥

अन्वय - अवंशे द्या अस्तभायत् बृहन्तं अन्तरिक्षं रोदसी अपृणत् स: पृथिवीं धारयत् पप्रथच्च सोमस्य मदे इन्द्रश्चकार ।

हिन्दी अनुवाद - आकाश में महान् सूर्य को स्तब्ध किया द्युलोक अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी लोक को इन्द्र ने अपने प्रकाश से औद्योलित किया । उसने पृथ्वी को धारण किया और विस्तृत किया इन्द्र ने उन कर्मों को सोम के नशे में किया ।

बृहन्तु - बृहत् (वि0) (स्त्री + ती) (बृह् + अति) विस्तृत, विशाल, बड़ा, स्थूल, मा0 9/5, चौड़ा, प्रशस्त, विस्तृत, दूर तक फैला हुआ, दिलीपसूनो: स बृहद् भुजान्तरम् - रघु0 3/34, मजबूत, शक्तिशाली, लम्बा, ऊँचा - वा0शि0 आप्टे । बृहन्तं महत् - सा0भा0 । High, tall, great, much, abundant, important, mighty, grown up, loud - का0कैप0 ; highly , firmly, aloud, much - मैक्डानल । Fir mamelnt - विल्सन । Stablished - ग्रिफिथ । बृहन्तु शब्द का अर्थ विस्तृत अधिक उचित प्रतीत होता है ।

रोदसी - (नपुं0) (स्त्री0 द्वि0व0 - रोदसी) (रुद् +असुन्) आकाश और पृथ्वी रव: श्रवण भैरव: स्थगित रोदसी कन्दर: वेणी0 3/2, वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुषं व्याप्य स्थिते रोदसी विक्रम ।-। शि0 8/15, वा0शि0 आप्टे । रोदसी द्यावा पृथिव्यौ च - सा0भा0 । Heaven and earth - का0कैप0, मैक्डानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । अतएव रोदसी का वास्तविक अर्थ द्यावा और पृथिवी उचित प्रतीत होता है ।

पप्रथत् - प्र ३वि0३ ३पा + क३ ३समास के अन्त में प्रयुक्त३ पीने वाला जैसा कि "द्विप" अनेकय में, चौकसी करने वाला, रक्षा करने वाला । प्रथत - ३भू + क0 + कृ३ प्रथम+ क्त३ बढ़ाया विस्तार किया, प्रकाशित, घोषणा की हुई प्रथयशिक्षां भास कवि सौमिल्ल कवियिश्रादीनाम् - मालविकाग्नि0 । आप्टे । पप्रथत् एनां भूमिमप्रथयद् - सा0मु0 । extend, become large or wider, increase, grow - का0कैप0 । appear, become famous - मैकडानल । wide give it - ग्रिफिथ । यहाँ पर पप्रथत का वास्तविक अर्थ रक्षा करने वाला उचित है ।

वृथा - ३अव्यय३ ३वृ + थाल, किञ्च्३ विना किसी अभिप्राय के, बिना प्रयोजन निरर्थक, विना किसी लाभ के ३बहुधा विशेषण की शक्ति से युक्त३ व्यर्थ यत्र कपीन्द्रसखयमपि मे वीर्यं हरीणां वृथा - उत्तर0 3/45 दिवं यदि प्रार्थयसे वृथा श्रम: - कु0 5/45, वा0शि0आ0 । at will, at pleasure, freely, gaily- का0कैप0 । at random, for nothing - मैकडानल, Freely -ग्रिफिथ । यहाँ पर वृथा शब्द का अर्थ विना किसी लाभ के उचित है ।

असृजत् - सृजत् - ३तुदा0पर0 सृजति, सृष्ट३ रचना करना, पैदा करना, बनाना, करना, जन्म देना, अर्धेन नारी तस्यां स विराजम् सृजत प्रभु: - मनु0 । 1.32, अ ३वि३ विना, अनायास, नहीं, न - वा0शि0आप्टे । Huse, let, loose, throw, pourout, emit, send - का0कैप0 । Forth, create, Produce - मैकडानल, Forth - विल्सन । असृजत् अनायासेन - सा0मु0 । यहाँ पर असृजत् शब्द का अर्थ रचना करना अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

सद्मेव प्राचो वि मिमाय मानैर्वज्रेण खान्यतृणन्नदीनाम् ।

वृथासृजत्पथिभिर्दीर्घयाथैः सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ 3 ॥

अन्वय - सद्मेव मानैः प्राचः वि मिमाय । नदीनां खानि वज्रेण च अतृणत् दीर्घयाथैः पथिभिः वृथा असृजत् सोमस्य ।

हिन्दी अनुवाद - जैसे याग गृहों को उसी प्रकार से मानों पूर्व दिशा में विशेष रूप से और वज्र के द्वारा नदियों के मार्ग को खोदा दूर तक जाने वाले मार्ग से सरलतापूर्वक नियति किया इन्द्र ने उन कार्यों को सोम के नशे में किया ।

प्राचः - प्राच्य - {वि०} {स्त्री० + ची०} प्र + अच्च + क्विन्}, सामने की ओर मुड़ा हुआ, बिल्कुल आगे रहने वाला, पूर्व दिशा सम्बन्धी, पूर्व दिशा, प्राथमिक, पहला, पहले का, - वा०शि० आप्टे । प्राचः प्राङ्नस्वान् - सा०मु० being in front, eastern, former, ancient - का०कैप०। front, ancient, or in the inhabitants - मैकडानल। Front, from - ग्रिफिथ । the easterns - विल्सन । यहाँ पर प्राचः शब्द का अर्थ प्राथमिक अर्थ अधिक उचित है ।

पथिभिः - पथिन् {पुं०} {पथ् आधारे इनि} {कर्तृ० पंथाः पन्थानौ, पन्थानः, कर्म०ब०व० पथः ब०व० पथिभिः आदि, समास के अन्त में यह शब्द बदलकर पथ हो जाता है । तोपाधार पथाः, दृष्टिपथः, नष्टपथः, सत्यपथः प्रतिपथम् आदि, मार्ग, रास्ता, पथ {पसामेत पंथा भर्तृ० 2/26 - वा०शि०आ०। पथिभिः मार्गैः - सा०मु० । Path, course, way - का०कैप० । Path, being on the way-मैकडानल । Paths- ग्रिफिथ एवं विल्सन ।way-मैक्समूलर । यहाँ पर पथिभिः का अर्थ रास्ता उचित होगा ।

<u>नदीनाम्</u> - नदी शब्द षष्ठी ब०व०, ॥नद् + ङीप्॥ दरिया, प्रवहणी, सरिता,

रविपीतजला तपात्यये पुनरोघेन हि युज्जते नदी - कु० 4/74 - वा०शि०आ० । नदीनाम् खानि निर्गमनद्वाराणि - स०मु० । river, flowing, water - का०कैप० । river, kind of fem - मैकडानल । rivers - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर नदीनाम् शब्द का वास्तविक अर्थ प्रवहणी होगा ।

स प्रवोळ्हृन्परिगत्या दभीतेर्विश्वमधागायुधमिद्धे अग्नौ ।

सं गोभिरश्वैरसृजद्रथेभिः सोमस्य ता मद इंद्रश्चकार ॥ 4 ॥

अन्वय - सः दभीतेः प्रवोळ्हृन् परिगत्य विश्वं आयुधम् इद्धे अग्नौ अधाक् गोभिः अश्वैः रथेभिः समअसृजत् ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र । उस दभीति के अपहरण कर्ता असुरों के पास जाकर के उसने सम्पूर्ण आयुधों को अग्नि में जला दिया । दभीति को गो, अश्व और रथों से संयुक्त कर दिया । इनने इन कर्मों को (सोम) के नशे में किया ।

आयुधः - (धम् - (आ + युध्)x+ घञ्) हथियार, ढाल, शस्त्र, (ये तीन प्रकार के हैं - क. प्रहरण - खड्गादिक, ख. हस्तमुक्त, - चक्रादिक, ग. यन्त्र युक्त, वाणादिक, न मे त्वदन्येन विसोढमायुधम् रघु0 3/63 - वा0शि0 आप्टे । weapon, vessel,(adj.) armed with - का0कैप0 । armed, warrior - मैकडानल । weapons - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर आयुधः का तात्पर्य हथियार अधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

अग्नौ - (अग्निः, (अंगति उर्ध्वगच्छति - अङ्गम् + नि नलोपश्च) आग कोप पिता आदि, आग का देवता, तीन प्रकार की यज्ञीय अग्नि, गार्हपत्य आहवनीय और दक्षिण, जठराग्नि पाचनशक्ति, पित, सोमा, दीप्ति - वा0शि0आप्टे । Burnd with fire, like fire - का0कैप0 । Fire flame, having of fire - मैकडानल । Burnt fire - ग्रिफिथ । kind of fire विल्सन । यहाँ पर अग्नौ का अर्थ आग का देवता अत्यधिक उचित है ।

सम् - ।अव्यय। ।सो + डमु। धातु या कृदन्त शब्दों के पूर्व उपसर्ग के रूप में लगकर इसका निम्नांकित अर्थ है । क. के साथ मिलकर साथ-साथ, यथासंभव, संभाषण, संयुज आदि में ; ख. कभी कभी यह धातु के अर्थ को प्रकट कर देता है इसका अर्थ होता है बहुत, अधिक, बिल्कुल, खूब, पूर्णत: ; ग. समास में संज्ञा शब्दों के पूर्व लगकर इसका अर्थ है । भाँति, समान, एक जैसा, कभी कभी इसका अर्थ होता है निकट, पूर्व, जैसा कि सक्षम मैं । वा0शि0आ0 । Along, with, together - का0कैप0 । with - ग्रिफिथ, विल्सन एवं मैक्सम्यूलर । together , with मैक्डानल । with along - मोनियर वि0 । यहाँ पर सम् शब्द का तात्पर्य भाँति अर्थ अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

अश्वै: - अश्व: ।अंशू + क्वन्। घोड़ा, सात की संख्या प्रतीत करने वाला । घोड़े जैसा बल रखने वाला मनुष्यों की दौड़ । घोड़ा या घोड़ी । हंटर । जो अश्वारोहियों में प्रबल हो । जिसके पास घोड़े अधिक हों । वा0शि0 आप्टे । Horse, a mans name : mare - का0कैप0 । Hourse - मैक्डा0। Hourses - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर अश्वै: शब्द का अर्थ घोड़ा अर्थ अधिक उचित है ।

स ईं मुहीं धुनिमेतोररम्णात्सो अस्नातॄनपारयत्स्वस्ति ।

त उत्स्नाय रयिमभि प्र तस्थुः सोमस्य ता मद इंद्रश्चकार ॥ 5 ॥

अन्वय - सः ईम् महीं धुनिम् एतोः अरम्णात् सः अस्नातॄन् स्वस्ति अपारयत् ते उत्स्नाय रयिम् प्र तस्थुः ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! उस विशाल नदी को जिसने स्थिर किया उसने स्नान करने में असमर्थ कुशलतापूर्वक पार करा दिया । वे नदी को पार करके धन पाने के लिए चल पड़े । इन्द्र ने इन्दु कर्मों को सोम के नशे में किया ।

महीम् - [वि0] [महत्] अपेक्षाकृत, बड़ा, विशाल, अधिक शक्तिशाली, भारी, महत्त्वपूर्ण, ताकतवर, मजबूत, उदारचेता: प्रकृतिः खलु सा महीयसः सह ते नान्यं समुन्नतिम् यथा । कि0 2/21 - वा0शि0आ0 2/13 । great, happy, or blessed, be exalted, or honoured by - का0कै0 । great, rich, high - मैकडानल । mighty - ग्रिफिथ । great - विल्सन एवं मैक्समू0 । यहाँ पर महीम् शब्द का अर्थ अधिक शक्तिशाली समीचीन प्रतीत होता है ।

धुनिम् - [स्त्री0] हिलाना, क्षुब्ध करना, वा0शि0 आप्टे । धुनिम् धुनोति स्तोतृणाम पापानीति परुष्णी नदी । सा0भा0 । wont to rare or roar - का0कै0 । roaring - ग्रिफिथ । Boistorous, tempestuous, wild - मैकडानल । यहाँ पर धुनिम् शब्द का वास्तविक अर्थ क्षुब्ध करना अधिक उपयुक्त होगा ।

अपारयत् - ।वि०। ।न०त०। जिसका पार पाना कठिन हो, असीम, सीमारहित, जो समाप्त न हो, अत्यधिक, पहुँच के बाहर, जिसे पार करना कठिन हो, जिस पर विजय न पाया जा सके । रम् - नदी का दूसरा तट । वा०शि० आप्टे । conveyed across - ग्रिफिथ । Swam not safely over - विल्सन । unbounded, immeasurable का०कैप० । unable - मैकडानल । यहाँ पर अपारयत् शब्द का अर्थ जिस पर विजय न पाया जा सके अधिक समीचीन होगा ।

अरम्णात् - अरम् ।अव्यय। ।ऋ + अम्। तेजी से, निकट, पास ही उपस्थित, तत्परता के साथ । वा०शि० आप्टे । अरम्णात् उपाशमयत् - सा० मु० । Suitably to, according to wish - मैकडानल । enough, suitably - का०कैप० । यहाँ पर अरम्णात् शब्द का वास्तविक अर्थ तत्परता के साथ उचित होगा ।

तस्थुः - ।वि०। ।स्था + कु + द्वित्वम्। स्थावर, अचर, स्थिर, वा०शि० आप्टे Stationary, immovable - का०कैप० । यहाँ पर तस्थुः शब्द का अर्थ स्थिर समीचीन प्रतीत होता है ।

सोदञ्चं सिंधुमरिणान्महित्वा वज्रेणान उषसः सं पिपेष ।

अजवसो जविनीभिर्विवृश्चन्त्सोमस्य ता मद इंद्रश्चकार ॥ 6 ॥

अन्वय - सः सिन्धुं महित्वा उदञ्चम् अरिणात् उषसः अनः वज्रेण सं पिपेष
अजवसः जविनीभिः विवृश्चन् ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! उसने अपनी महिमा से उत्तर की ओर प्रवाहित किया । वेगरहित सेनाओं को वेगयुक्त सेनाओं से छिन्न-भिन्न करते हुए वज्र के द्वारा अपश के सकट को चूर चूर कर दिया । इनने इन कर्मों को सोम के नशे में किया ।

अरिः - ॠ० + इन॥ शत्रु, दुश्मन, विजितारिपुरः सरः रघु० 1.59, मनुष्य जाति का शत्रु, ॥मनुष्य के मन को व्याकुल करने वाले 6 शत्रु बताये गये हैं । कामः क्रोधस्तथा लोभोमदमोहौ च मत्सरः - कृतारिषड्वर्गजयेन - कि० 1.9, 6 की संख्या, सम० कर्षण ॥वि०॥ शत्रु को पीड़ित या पराभूत करने वाला वा०शि० आप्टे । 1. eager, devoted, faithful, 2. greedy, impious, envious, enemy - का०कैप० । यहाँ पर अरिः शब्द का वास्तविक अर्थ शत्रु को पराभूत करने वाला उचित है ।

अनः - ॥अन् + अच्॥ सांस, प्रश्वास, अन् ॥अदा० पर० सेट॥ ॥अनिति, अनित॥ सांस, हिलना, जीना, परे० आनयति, सन्नत० अनिनियति ॥दिवा० आ०॥ जीना प्र उपसर्ग के साथ जीवित रहना - यदहं पुनरेव प्राणिमि का० 35 प्राणिमि स्तव भानार्थं भीम० 8/38, वा०शि० आप्टे । यहाँ पर अनः शब्द का वास्तविक अर्थ जीना उपयुक्त है ।

<u>जवनीभि:</u> - जव ׀वि०׀ ׀जु + अप्׀ फर्तीला, चुस्त, - व: वेग, फुर्ती, तेजी,

द्रुतता, जतो: हि सप्ते: परमं विभूषणम्, भर्तृ० 3/121, त्वरा, वेग, जनेनपीण्द्रुदतिष्ठदच्युत: शि० 1/12, वेग सम० बेगवान द्रुतगामी, वा० शि० आप्टे० । जवयुक्ताभि: सेनाभि: - सा०मु० । impelling, quick, swift - का०कैप० । Swift, speed, hoste, curtain - मैकडानल । Swift foree - विल्सन । यहाँ पर जवनीभि: शब्द का अर्थ द्रुतता उचित प्रतीत होता है ।

स विदाँ अपगोहं कनीनामाविर्भवन्नुदतिष्ठत्परावृक् ।

प्रति श्रोण: स्थात् वि अनक् अचष्ट सोमस्य तामद इन्द्रश्चकार॥ 7 ॥

अन्वय - कनीनां अपगोहम् विद्वान् परावृक् आविर्भवन् उदतिष्ठत् श्रोण: प्रति स्थात् वि अचष्ट इन्द्रश्चकार ।

हिन्दी अनुवाद - वह परावृक् ऋषि कन्याओं को छिपने की बात जानकरके प्रकट होता हुआ खड़ा हो गया और वह पंगु होता हुआ भी उठ खड़ा हुआ और विविधतया देख लिया गया । यह सब कर्मों को इन्द्र ने [सोम पान] के मद में किया ।

विद्वान् - विद्स् [वि0] विद् + क्वसु [कर्तृ ए0व0 पु0 विद्वान स्त्री0 विदुषी नपुं0 विद्वत्, जानने वाला [कर्म के साथ] आनन्द ब्राह्मणो विद्वान् न बिभेति कदाचन, तव विद्वान पि तापकारणम् रघु0 8/76 बुद्धिमान, विद्वान्, बुद्धिमान् मनुष्य या बुद्धिमान व्यक्ति, विद्या अभ्यसनी । वा0शि0 आप्टे । Knowing, wise, learned, cunning, versed, wise man - का0कैप0 । Learned, wise, familiarमैकडानल । Knowing - ग्रिफिथ। conscious - विल्सन । यहाँ पर विद्वान् शब्द का तात्पर्य बुद्धिमान व्यक्ति समीचीन है ।

श्रोण: - श्रोण: पङ्गुरीदानीमिन्द्रय प्रसादात् विभग्नजानु: - सा0मु0 । Lame का0कैप0, मैकडानल, विल्सन आदि ।

कनीनाम् - (क्व् + ई) अपमनयोरतिशयेन युवा अल्पो वा कनादेश (कन् + ई) स्त्रियां ङीप्) कन्या - वा0शि0 आप्टे । girl, maiden - का0 कैप0 । Girls, maiden, the pupil of the eyes - मैकडानल। maids - ग्रिफिथ । यहाँ पर कनीनाम् का वास्तविक अर्थ कन्या समीचीन प्रतीत होता है ।

भिनद्वलमङ्गिरोभिगृणानो वि पर्वतस्य दृंहितान्यैरत् ।

रिणग्रोधांसि कृत्रिमाण्येषां सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ 8 ॥

अन्वय - अङ्गिरोभिः गृणानः वलं भिनत् पर्वतस्य दृंहितानि वि ऐरत् एषां कृत्रिमाणि रोधांसि रिणक् ।

हिन्दी अनुवाद - अङ्गिरसों के द्वारा स्तुति होते हुए इन्द्र ने बल को विदीर्ण किया । पर्वतों के दहितानि द्वारों को हटा दिया । इन पर्वतों के कृत्रिम द्वारा को खोल दिया । इन्द्र ने इन कर्मों को सोमरस के मद में किया ।

वलम् - वलनामकमसुरं - सा०भा० । वल दे० वल - वा०शि० आप्टे । of a demon- का०कै० । मैक्डानल । slaughtered vala - ग्रिफिथ । destroyed vala - विल्सन । यहाँ पर वलम् शब्द का अर्थ वल नामक असुर के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

रोधांसि - रोधनः [रुध + ल्युट्] ठहराना, रोकना, बंदी बनाना, बंदी, रोकथाम, वा०शि० आप्टे । confining, investing, shutting up - का०कै०म० । confining investing - मैक्डानल । tox away - ग्रिफिथ । Broke down - विल्सन । यहाँ पर रोधसि शब्द का अर्थ रोकना अत्यधिक उचित है ।

कृत्रिमाणि - कृत्रिम - ॥वि॥ ॥कृत्या + निर्मितम्" कृ + क्ति + मण्॥ बनावटी,
काल्पनिक , कृत्रिमः स्यात्सवयः दत्तः - याज्ञ0 2/131, वा0
शि0 आप्टे । कृत्रिमाणि - कृपया निवृत्तानि - सा0मु0 । artificial -
ग्रिफिथ । Built defences - विल्सन । artificial, factitious,
adopted - का0कैप0 । accidental, unnatural-मैकडानल । यहाँ पर
कृत्रिमाणि शब्द का वास्तविक अर्थ काल्पनिक अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

दृहितानि - दृह् - भ्वा0पर0 दर्हति, दृंहति, स्थिर या दृढ़ होना, विकसित
होना, बढ़ाना, समृद्धि होना, वा0शि0 आप्टे । दृहितानि
शिर्लीकि दृटिकृतानि द्वाराणि - सा0मु0 । make firm, fortily, fix -
का0कैप0 । Hold fast, be firm - मैकडानल । the firm shut (doors)
विल्सन । यहाँ पर दृहितानि का वास्तविक अर्थ विकसित होना उचित प्रतीत
होता है ।

स्वप्नेनाभ्युप्या चुमुरिं धुनिं च जघंथ दस्युं प्र दभीतिमावः ।
रभी चिदत्र विविदे हिरण्यं सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ 9 ॥

अन्वय - दस्युम् चुमुरिं धुनिं स्वप्नेन अभ्युप्य जघन्थ दभीतिं प्र आवः रम्भी चित् अत्र हिरण्यं विविदे सोमस्य मदे चकार ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! वह तुमने चुमुरि और धुनि को स्वप्न से संयोजित करके मार डाला और और दभीति की भाँति सहायता किया वेत्रधारी दौवारिक ने भी यहीं पर धन को प्राप्त कर लिया इन्द्र ने इन कर्मों को सोम के नशे में किया ।

स्वप्नेन - ﴾स्वप् + नक्﴿ सोना, नींद, स्वप्न, ख्वाब, निद्रा लाने वाला, ऊँघने वाला, दीर्घ निद्रा से, वा०शि० आप्टे । स्वप्नेन दीर्घ निद्रयण - सा०मु० । sleep, dream - का०कै०प० । sleep - ग्रिफिथ एवं विल्सन। Sleeping - मैकडानल । यहाँ पर स्वप्नेन शब्द का वास्तविक अर्थ स्वप्न अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

हिरण्यम् - ﴾हिरणमेव स्वार्थे यत्﴿ सोना, मनु 2/246 सोने का पात्र﴿ कोई मूल्यवान वस्तु दौलत, सम्पत्ति, धतूरा - वा०शि० आप्टे । हिरण्यम् धनं - सा०मु० । gold, a gold coin, ornament - का०कै०प० । gold, money, metal - मैकडानल। found of golden - ग्रिफिथ । the gold - विल्सन । यहाँ पर हिरण्यम् शब्द का वास्तविक अर्थ मूल्यवान् वस्तु उचित है ।

प्र वः सतां ज्येष्ठतमाय सुष्टुतिमग्नाविव समिधाने हविर्भरे ।

इन्द्रमजुर्यं जरयन्तमुक्षितं सनाद्युवानमवसे हवामहे ॥ । ॥

अन्वय - वः सतां ज्येष्ठतमाय अग्नाविव समिधाने हविः प्र भरे सुष्टुतिं अजुर्यम् जरयन्तं उक्षितं सनात् युवानं इन्द्रम् अवसे हवामहे ।

हिन्दी अनुवाद - मैं तुम्हारे लिए पूज्यों में श्रेष्ठतम {इन्द्र} के लिए शोभनीय समिद्धाग्नि स्तुति को हविष्य के समान संभरण करता हूँ । {हम} जरा रहित {शत्रु को} जीर्ण करते हुए प्रवृद्ध चिरयुवा इन्द्र को रक्षार्थ पुकारते हैं ।

भरे - संपादयामि - सा0मु0 । Before, forward, onward, on, forth - आगे, सामने, पहला, ऊपर, वेग से - मैकडानल । Forward, onward, forth, away, fore - आगे, सामने, वेग से - का0कैप0 । यहाँ पर भरे शब्द का अर्थ सम्पादित करना उचित है ।

वः - {वा + ड} वायु हवा, भुजा, वरुण, समाधान, संबोधित करना, मांगलिकता निवास । वा0शि0 आप्टे । Indcel- इव - का0कैप0 । like - इव मैकडानल । like - समान - ग्रिफिथ । यहाँ पर प्रायः सभी विद्वानों ने वः का अर्थ इव {समान} अर्थ लगाया है । समान या एक जैसा अर्थ ही समीचीन प्रतीत होता है ।

सताम् - सत् {वि0} {स्त्री0} {अतीस् + शतृ अकारलोपः} वर्तमान, विद्यमान, मौजूद - सन्त. स्वतः प्रकाशन्ते गुणानपरतो नृणाम् भा मि0 1/120,

उच्च, - वा०शि०आ० । Vessel or disch - का०कै०प० । existing, Present, being, lasting - मैकडानल । यहाँ पर सता शब्द का 'महान देवों' अर्थ उचित है ।

ज्येष्ठतमाय - ‹वि०› अयमेषामतिशयेन वृद्ध: प्रशस्यो वा + इष्ठन् ज्यादेश:, आयु में सबसे बड़ा, जैठा, श्रेष्ठतम, सर्वोत्तम, प्रमुख, प्रथम, मुख्य, उच्चतम बड़ा भाई - वा०शि०आ० । Principal, best, eldest, highest, greatest - का०कै०प० । highest, eldest, best, first, chicp, greatly, elder, brother - मैकडानल । the best - ग्रिफिथ । Best - विल्सन । यहाँ पर ज्येष्ठतमाय शब्द का अर्थ सर्वश्रेष्ठ उचित है ।

समिधान - ‹स्त्री०› ‹सम् + इन्ध् + क्विप्› लकड़ी, ईंधन, विशेषकर के यज्ञाग्नि के लिए तैयार समिधाएं, संविदाहरणाय श० ।, सम् + /इन्ध् + ल्युट् - आग सुलगाना, ईंधन, सम् + /इन्ध् + क - आग - वा०शि०आ० । Flaming, log of wood, fuel, kindling - का०कै०प० । The kind-containing the ward samidh - मैकडानल । The kindled fire - ग्रिफिथ । kindled - विल्सन । यहाँ पर समिधान शब्द का अर्थ यज्ञ की समिधाएँ ‹यज्ञ की सामग्रियाँ› अर्थ उचित है ।

युवानम् - ‹वि०›‹स्त्री-युवति› ती-यूनी-म०अ० यवीयस् या कनीयस् उ०अ०, यविष्ठ या कनिष्ठ ‹यौतीति युवा यु + कनिन् - तरुण, जवान, कनिष्ठ, वयस्क, परिपक्वता अवस्था को प्राप्त, हृष्ट पुष्ट, स्वस्थ, श्रेष्ठ, उत्तम, - वा०शि०आ० । young, young man, youth - का०कै०प० । young - मैकडानल । strengthened - ग्रिफिथ । youthful - विल्सन । यहाँ पर युवानम् शब्द का अर्थ नित्य नया के सदृश उचित है ।

यस्मादिन्द्राद् बृहत: किं चनेमृते विश्वान्यस्मिन्त्संभृताधि वीर्या ।

जठरे सोमं तन्वीउ सहो महो हस्ते वज्रं भरति शीर्षाणि क्रतुम् ॥ 2 ॥

अन्वय - बृहत: यस्मात् इन्द्रात् ऋते किम् ईम् चन अस्मिन् विश्वानि अधि सभृता जठरे सोमम् भरति तन्वि सह: मह: हस्ते वज्रम् शीर्षणि क्रतुं ।

हिन्दी अनुवाद - जिस महान् इन्द्र के विना यह ॥जगत्॥ कुछ भी नहीं है । इसमें सम्पूर्ण पराक्रम निहित है । ॥वह॥ उदर में सोम, शरीर में स्थित सम में हाथ में वज्र तथा शिरस् में प्रज्ञा धारण करता है ।

चन् - ॥अव्यय॥ नहीं, न केवल, भी नहीं ॥अकेला कभी प्रयुक्त नहीं होता बल्कि सर्वनाम किं तथा इसके व्युत्पन्न शब्दों ॥कद्, कथम, क्व, कदा, कुत आदि॥ के साथ प्रयुक्त होकर अनिश्चयात्मक अर्थ को व्यक्त करता है - वा०शि० आ० । Inded, also, not, even (not) even nor - का०कैप० only aor, rejoice, gladden - मैकडानल । nothing - विल्सन laft one - ग्रिफिथ । प्रस्तुत शब्द चन् का अर्थ नहीं शब्द समीचीन है ।

जठर - जायते जन्तुर्गर्भो वास्मिन् जन् + ठर + ठान्त॥ कठोर, सख्त दृढ़ र-रण-पेट, उदर, जठर को न भवति - गर्भाशय, किसी वस्तु का भीतरी भाग वा०शि०आ० । Belly - stomach, womb, cavity, hole - का०कैप०। hard, old, belly, womb, interior - मैकडानल। within him - ग्रिफिथ । stomach - विल्सन । यहाँ पर जठर शब्द का अर्थ उदरे अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

तन्वि - ॥तन् + ङीष्॥ सुकुमार या कोमलांगी स्त्री-शरीर इयम् धिक् मनोज्ञा वल्कलेना पि तन्वि - श० 1/120 - वा०शि० आप्टे । Body, from, nature - का०कैप० । Body, life, brave - मैकडानल । Frome-ग्रिफिथ। body - विल्सन । यहाँ पर तन्वि शब्द का अर्थ सुकुमार अधिक उचित है ।

हस्ते - ॥हस् + तन् + न इद॥ हाथ, हस्तं गत: हाथ में पड़ा हुआ, हाथ में आया हुआ । गौतमीहस्ते विसर्जयिष्यामि - वा०शि०आ० । Hand - का० कैप०, मैकडानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर हस्ते शब्द का अर्थ हाथ में आया हुआ उचित प्रतीत होता है ।

वीर्यम् - ॥वीर + यत्॥ शूरता, पराक्रम, बहादुरी, वीर्यविदानेषु कृतावमष: कि० 3/43, बल, सामर्थ्य, पुरुषत्व, उर्जा, दृढ़ता, साहस, - वा०शि०आ० । manliness, courage, strength, heroic - का०कैप० । Heroic valour, power, - मैकडानल । Heroic, deed - ग्रिफिथ । Power - विल्सन । वीर्यम् शब्द का वास्तविक अर्थ दृढ़ता शब्द अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

न क्षोणीभ्यां परिभ्वे त इन्द्रियं न समुद्रैः पर्वतैरिन्द्र ते रथः ।

न ते वज्रमन्वश्नोति कश्चन यदाशुभिः पतसि योजना पुरु ॥ 3 ॥

अन्वय - इन्द्र ते इन्द्रियं क्षोणीभ्यां (द्यावापृथिवीभ्यां) न परिभ्वे ते रथः समुद्रैः पर्वतैः न ते वज्रम् आयुधं कश्चन न अन्वश्नोति यद् पुरु योजना पतसि ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! जब तुम तीव्रगामी अश्वों द्वारा अनेक योजन गमन करते हो तब तुम्हारा बल पृथ्वी और आकाश से पराभूत होने को नहीं न तो तुम्हारा रथ (ही) समुद्रों (और) पर्वतों से पराभूत होने को नहीं है और नहीं कोई वज्र को पा सकता है ।

श्रोणी - णी (स्त्री०) (श्रोण् + इन् वा ङीष्) मेखला, पृथ्वी - वा०शि०आ० । earth - का०कैप० । land - मैकडानल । worlds - ग्रिफिथ । यहाँ पर श्रोणी शब्द का वास्तविक अर्थ मेखला उचित प्रतीत होता है ।

समुद्र - (वि०) (सह मुद्रया - ब०व०) मुहरबन्द, मुहर लगा हुआ, मुद्रांकित समुद्री लेख, (सम् + उद् + /रा + क) सागर, महासागर, वा०शि०आ० । either the sky as the aerial, ocean, or, ocean - का०कैप० । ocean - मैकडानल । seas - ग्रिफिथ । यहाँ पर समुद्र का वास्तविक अर्थ सागर अत्यधिक उचित है ।

पर्वतः - (पर्व + अच् च्) पहाड़, गिरि, - वा०शि०आ० । mountain, knotty, rugged, hieght, hill, stone - का०कैप० । mountain, hill- मैकडानल । mountain - ग्रिफिथ एवं विल्सन । hill - मैक्समू० । यहाँ पर पर्वतः का उचित अर्थ पहाड़ है ।

<u>रथः</u> - [रम्यतेनेन अत्र वा + /रम् + कथन्]गाड़ी, जलूसी वाहन, युद्धरथ - वा० शि०आ० । waggon, war-chariot, ehicle of the gods - का०कैप० । vehicle of the gods - मैकडानल । chariot - विल्सन । car be stayed - ग्रिफिथ । यहाँ पर रथः शब्द का वास्तविक अर्थ युद्धरथ उचित प्रतीत होता है ।

<u>पतः</u> - [पत् + अच्] उड़ना, उड़ान, जाना, गिरना, उतराना, वा०शि०आ० । rush, go, down, fall or sink - का०कैप० । Fall, down, go - मैकडानल । Fliest over -ग्रिफिथ । यहाँ पर पतः शब्द का अर्थ उड़ान अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

<u>योजना</u> - [/युज् भावादौ ल्युट्] जोड़ना, मिलाना, जोतना, प्रयोग करना, स्थिर करना, दूरी का माप - वा०शि०आ० । harnesing, yoke, team, course, way - का०कैप० । instigation, erection , mential - मैकडानल । यहाँ पर योजना का वास्तविक अर्थ जोतना उचित प्रतीत होता है ।

विश्वे ह्यस्मै यजताय धृष्णवे क्रतुं भरन्ति वृषभाय सश्चते ।

वृषा यजस्व हविषा विदुष्टरः पिबेन्द्र सोमं वृषभेण भानुना ॥ 4 ॥

अन्वय - विश्वे यजताय धृष्णवे वृषभाय सश्चते क्रतुं भरन्ति हि वृषा विदुष्टरः हविषा यजस्व इन्द्र वृषभेण भानुना सोमं पिब ।

हिन्दी अनुवाद - सभी, पूज्य धर्षक, कामना सेचक, संयुक्त होने वाले (इन्द्र) के लिए क्रतुम् कर्म का संभरण करते हैं । हे यजमान हविष्य सेचक विद्वान् (तुम) हविष्य का यजन करो । इन्द्र ! विद्वत्तर (तुम) कामना-सेचक तेज से सोम को पिओ ।

यजताय - (यज् + शानच्) वह व्यक्ति जो नियमित रूप से यज्ञ करता है और व्यय भार स्वयं वहन करता है । वह व्यक्ति जो अपने लिए यज्ञ करवाने के लिए पुरोहित या पुरोहितों को आमंत्रित करता है । आतिथेयी, संरक्षक कुल का प्रधान पुरुष । - वा०शि०आ० । Brahaman, also sacrificer - का०कै०प० । institutor of a sacrificeमैकडानल । all man offer worship - विल्सन । यहाँ पर यजताय का वास्तविक अर्थ संरक्षक अधिक उचित है ।

धृष्णवे - धृष्णु - (वि०) (धृष् + क्नु) - दिलेर, साहसी, बहादुर, बलशाली, ढीठ - वा०शि०आ० । Bold, courageous, valiant, strong- का०कै०प० । courageous bold - मैकडानल । Strong - ग्रिफिथ । Powerful - विल्सन । यहाँ पर धृष्णवे शब्द का वास्तविक अर्थ बलशाली अत्यधिक उचित है ।

<u>वृषभाय</u> - वृषभः ॥/वृष् + उभ च् + किच्च॥ एक वर्ग का मुखिया चार वर्णों में एक, उत्तम, वा०शि०आ० । manly, potent, strong - का०कैप० । manly, strong - मैकडानल । Strong -ग्रिफिथ । munificent - विल्सन । वृषभाय शब्द का अर्थ उत्तम अधिक उचित प्रतीत होता है ।

<u>स ्चते</u> - ॥पु०॥ ॥सम् + चत् + क्विप्॥ संचय, संपादन करना, संकरण करना, मार्ग-दर्शन करना - वा०शि०आ० । be united, deal with, belong-का०कैप० । cleave - ग्रिफिथ । associated - विल्सन । यहाँ पर स चते शब्द का वास्तविक अर्थ संपादन करना अधिक उचित प्रतीत होता है ।

<u>वृषा</u> - ॥वृष् + क॥ सोम एक पौधे का नाम है औषधि है देवताओं का - वा०शि० आ० । Some plant - का०कैप० । A. Plant -मैकडानल । oblation - विल्सन । यहाँ पर वृषा शब्द का अर्थ देवताओं की औषधि उचित प्रतीत होता है ।

<u>हविषा</u> - हविषे, हूयते नेन इति । /हु कर्मणि असुन् आहुति या हवनीय द्रव्य - वा०शि०आ० । oblation or gift for the goods - का०कैप० । oblation - मैकडानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर हविषा का तात्पर्य यज्ञादि की सामग्री उचित है ।

<u>भानुना</u> - भा + नु - प्रकाश-कान्ति, चमक, किरण - वा०शि०आ० । Light, beam, sun - का०कैप० । light, sun - मैकडानल । sun - विल्सन । यहाँ पर भानुना शब्द का उचित अर्थ प्रकाश-कान्ति है ।

वृष्णः कोशः पवते मध्व ऊर्मिर्वृषभान्नाय वृषभाय पातवे ।

वृषणाध्वर्यू वृषभासो अद्रयो वृषणं सोमं वृषभाय सुष्वति ॥ 5 ॥

अन्वय - वृष्णः मध्वः कोशः ऊर्मिः पवते वृषभान्नाय वृषभाय पातवे वृषणा अध्वर्यू वृषभासः अद्रयः वृषणं सोमं वृषभाय सुष्वति ।

हिन्दी अनुवाद - कामनासेचक मधु का कोश, कामना सेचक अन्न वाले, कामनासेचक [इन्द्र] के लिए पानार्थ प्रवहमान है दोनों अध्वर्यु कामना सेचक है । कामनासेचक पाषाण, कामनासेचक [इन्द्र] के लिए कामनासेचक सोम को अभिषुत करते हैं ।

वृष्णः - [वृषे + नः + किच्] कामनासेचक - वा०शि०आ० । manly, vigorous, wishing - का०कै०प० । manful, mighty - मैकडानल । strong - ग्रिफिथ । gratifying - विल्सन । यहाँ पर वृष्णः शब्द का वास्तविक अर्थ कामनासेचक उचित होगा ।

कोशः - [ष] - शम् [कुश् [ष] + घञ् अच् वा] तरल पदार्थ रखने का वर्तन, वाल्टी, डोल, कटोरा, पात्र - वा०शि०आ० । cash, bucket, box, chest, sheath, cover, case - का०कै०प० । box, chest, cover - मैकडानल । यहाँ पर कोशः शब्द का वास्तविक अर्थ पात्र समीचीन प्रतीत होता है ।

पातवे - [पात] [वि०] पा + क्त] रक्षित, देखभाल किया गया, संचारित - वा०शि०आ० । Fall, into, cast, drink - मैकडानल ।

.Drink, immbile, swallow, greedly - का0कैप0 । For drink - ग्रिफिथ । dispenser - विल्सन । यहाँ पर पातवे शब्द का उचित अर्थ देखभाल किया गया है ।

पृषणं - ﴾नपुं0﴿ ﴾पृष् + अण्﴿ ठोस पदार्थ या पाषाण - वा0शि0आ0 । small, monted, stones - का0कैप0 । stones - ग्रिफिथ, विल्सन एवं मैकडानल । यहाँ पर पृषणं शब्द का वास्तविक अर्थ ठोस पदार्थ उचित है ।

मध्व: - एक प्रसिद्ध आचार्य, शास्त्रप्रणेता, वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक अथवा वेदान्त सूत्रों के भाष्यकर्ता - वा0शि0आ0 । of a name - का0कैप0 । of the founder of a set- मैकडानल । Vessel - ग्रिफिथ । greatfying - विल्सन । यहाँ पर मध्व: शब्द का एक प्रसिद्ध आचार्य के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

वृषा ते वज्र उत ते वृषा रथो वृषणा हरी वृषभाण्यायुधा ।

वृष्णो मदस्य वृषभ त्वमीशिष इन्द्र सोमस्य वृषभस्य तृप्णुहि ॥ 6 ॥

अन्वय - वृषभ ते वज्रः वृषा ते रथः वृषा हरी [एतन्नामकावश्वौ] वृषभा आयुधा वृषभाणि वृष्णः मदस्य त्वम् ईशिषे इन्द्र वृषभस्य सोमस्य तृप्णुहि ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! तुम्हारा बल शक्तिशाली है । तुम्हारा रथ शक्ति है, तुम्हारे दोनों घोड़े शक्तिशाली हैं , तुम्हारे आयुध शक्ति शाली हैं, हे वृषभ तुम शक्तिशाली हो और मदकर सोम का स्वामित्व करते हो । हे इन्द्र ! शक्तिशाली सोम के पाने से तृप्त होओ ।

वृषु - [वृष + क] महान, मजबूत, शक्तिशाली, विशाल, उत्तम, वर्ग का मुखिया - वा०शि०आ० । man, husband, bull, strong - का०कैप० । Best of the kind, bull, strong - मैकडानल । strong - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर वृषु शब्द का अर्थ शक्तिशाली समीचीन होगा ।

हरी - [वि०] [हृ + इन्] हरा, हरा पीला, भूरा, इन्द्र के घोड़े, - वा०शि०आ० two horses - का०कैप० । (colar-allow, red) horse - मैकडानल । yea and car - ग्रिफिथ । two horses - विल्सन । यहाँ पर हरी शब्द का वास्तविक अर्थ इन्द्र के घोड़े उचित है ।

आयुधा - आयुध [आ + युध् + घञ्] हथियार, ढाल, शस्त्र - वा०शि०आ० । Weapon, arms, ar senal - का०कैप० मैकडानल । Weapons - ग्रिफिथ एवं विल्सन ।

ईशिषे - ईश - ।वि0। ।ईश + क। अपनाने वाला, स्वामी, मालिक - वा0शि0 आ0 । owner, disposer, able to, lord, chief of- का0कैप0 Lord, Chief - मैकडानल । Lord - ग्रिफिथ । यहाँ पर ईशिषे शब्द का वास्तविक अर्थ स्वामी अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

प्र ते नावं न समने वचस्युवं ब्रह्मणा यामि सवनेषु दाधृषि: ।

कुविन्नो अस्य वचसो निबोधिषदिन्द्रमुत्सं न वसुन: सिचामहे ॥ 7 ॥

अन्वय - दाधृषि: समने वचस्युवम् नावं न ते ब्रह्मणा प्र यामि प्राप्नोमि अस्य वचस: कुवित् निबोधिषत् उत्सं न वसुन: निधानभूतम् इन्द्रं सिचामहे ।

हिन्दी अनुवाद - संग्रामों में नाव की भाँति पारक स्तुति की कामना करने वाले धर्षक मैं मंत्रों के साथ सोमाभिषवण में इन्द्र के पास पहुँचता है । हमारी स्तुति के विषय में बार-बार समझो, धन के स्रोतों की भाँति हमें सिंचित करते हैं ।।

नावं - ﴾नौ + अच्﴿ किस्ती, पानी की जहाज - वा०शि०आ० । Boot - का० कैप०, एवं विल्सन । ship - मैकडानल एवं ग्रिफिथ । यहाँ पर पानी का जहाज अत्यधिक उचित है ।

समन - meeting, encounter, insembly, embrace, contest, का०कैप० । in the war - ग्रिफिथ । in battle - विल्सन । fight - मैक्समूलर । यहाँ पर समन शब्द का वास्तविक अर्थ संग्राम अत्यधिक समीचीन होगा ।

यामि: - मी ﴾स्त्री०﴿ ﴾याति कुलात् कुलान्तरम् या + मि ङीप् च वहन, रात, - वा०शि०आ० । keeping watch - का०कैप० । being on guard - मैकडानल । यामि: शब्द का उचित अर्थ रात है ।

सवने - ।सु ।सू। + ल्युट् सोम रस का निकालना या पीना, स्नान, जनन प्रसव - वा०शि०आ० । 1. Soma juice; 2. Budding, impelling, setting in motion; 3. along with the wools - का०कैप० । Soma juice, morning, moon - मैकडानल । of thrrsure - विल्सन । सवने शब्द का वास्तविक अर्थ सोम रस का निकलना समीचीन प्रतीत होता है ।

वचस् - ।नपुं०। ।वच् + असुन्। भाषण, वचन, वाक्य, उवाच धात्रया प्रमोदितं वच: रघु 2/24, वा०शि०आ० । speech, word, song, councel, advice, का०कैप० । unjuction, command, language, song- मैकडानल । words - विल्सन एवं ग्रिफिथ । यहाँ पर वचस् शब्द का वास्तविक अर्थ वाक्य या वचन समीचीन प्रतीत होता है ।

उत्स: - ।उनत्ति जलेन, /उन्द् + स किच् नलोप:। झरना, फौव्वारा, जल का स्थान - वा०शि०आ० । spring, fountain - का०कैप० । well fountain, source - मैकडानल । spring - ग्रिफिथ । as a well (is of water) - विल्सन । source - मैक्सम्यूलर । यहाँ पर उत्स: शब्द का अर्थ झरना अत्यधिक उचित है ।

पुरा संबाधादभ्या ववृत्स्व नो धेनुर्न वत्सं यवसस्य पिप्युषी ।
सकृत्सु ते सुमतिभिः शतक्रतो सं पत्नीभिर्न वृषणो नसीमहि ॥ 8 ॥

अन्वय - संबाधात् पुरा नः अभ्या ववृत्स्व धेनुर्न वत्सम् यवसस्य पिप्युषी शतक्रतो सुमतिभिः सकृत् सु नसीमहि वृषणः न पत्नीभिः ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! यथा अन्न से तृप्त गाय वत्स (बछड़े) की ओर जाती है । उसी प्रकार कष्ट आने से पूर्व हमारी ओर आओ । हे सत्रक्रतो वर्षक युवा लोग जैसे पत्नी दो से युक्त होते हैं उसी प्रकार हम लोग तुम्हारी शोभन स्तुति में संयुक्त हों ।

पुरा - (पुर + टाप्) गंगा का विशेषण, एक प्रकार का गंधद्रव्य, पूर्व दिशा, किला, - वा०शि०आ० । Once upon a time, of yore, up to the first time, soon, before - का०कै०प० । Formerly, hitherto - मैकडानल । turm thee unto us are calamity - ग्रिफिथ । Before hand - विल्सन । यहाँ पर पुरा शब्द गंगा के विशेषण के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

वत्सः - (वद् + सः) बछड़ा, किसी जानवर का बच्चा, बच्चा - वा०शि०आ० । calf, young animal, child - का०कै०प० । calf - मैकडानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर वत्सः शब्द का अर्थ गाय के बछड़े के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

यवसस्य - यवस् + षष्ठी ए०व० (यु + असच्) घास, चारा, चरागाहों का घास, यवस धनम् पंच० । - वा०शि०आ० । grass, food, pasture - का०कै०प० । fodder, grass and fuel- मैकडानल । Pasture - ग्रिफिथ । grassing - विल्सन । यहाँ पर चरागाहों की घास अर्थ अधिक उचित है ।

सकृत् - [अव्यय] [एक - सुच् सकृत् आदेश सुचो लोप:] एक समय, साथ-साथ, एक बार गर्भवती होने वाली, वह स्त्री जिसके केवल एक ही संतान हुई हो । वह गाय जो केवल एक ही बार व्याही हो - वा0शि0आ0 । at once , suddenly, once for all, का0कै0प0 । once - ग्रिफिथ । if but once विल्सन । यहाँ पर सकृत् शब्द का अर्थ एक ही संतान समीचीन प्रतीत होता है ।

पत्नीभि: - [पति + ङीप् +नुक्] सहधर्मिणी, भार्या - वा0शि0आ0 । mistress, lady, wife - का0कै0प0 । lady, wife - मैकडानल । husband to their wives - ग्रिफिथ । husband to their wives विल्सन । प्रस्तुत शब्द पत्नीभि: का अर्थ सहधर्मिणी अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

तदस्मै नव्यमङ्गिरस्वदर्चत शुष्मा यदस्य प्रत्नथोदीरते ।

विश्वा यद्गोत्रा सहसा परीवृता मदे सोमस्य दृंहितान्यैरयत् ॥ । ॥

अन्वय - नव्यं तत् अङ्गिरस्वत् अस्मै अर्चत यत् अस्य शुष्मा: प्रत्नथा उदीरते यत् विश्वा गोत्रा परीवृता दृंहितानि सोमस्य मदे सहसा ऐरयत् ।

हिन्दी अनुवाद - इसके लिए जैसे अङ्गिरसों ने उसी प्रकार से नूतन स्रोतों को प्राप्त करो । जिस प्रकार से इन्द्र की शक्तियाँ भलीभाँति व्यक्त हो सकें । जो सम्पूर्ण गोत्र शक्ति द्वारा आवृत्त किये गये थे सोम के मद में उन दृढ़ द्वारों को उद्घाटित किया ।

नव्यम् - {वि0} नव + यत् या} नया, ताजा, हाल का या आधुनिक - वा0शि0 आ0 । newly - नव to be sung, praised, fresh - का0कैप0 । new, fresh, young, to be landed - मैकडानल । new - ग्रिफिथ । a new - विल्सन । fresh - मैक्समूलर । उपरोक्त नव्यम् शब्द का अर्थ प्रस्तुत मन्त्र में नूतन किया गया है ।

अङ्गिरस - {पु0} {अङ्ग + अस् + इरुट् - ऋग्वेद के अनेक सूक्तों का द्रष्टा एक प्रसिद्ध ऋषि - वा0शि0आ0 । a kind of mythol, beings with again at their head - का0कैप0 । messenger - मैकडानल । like the Agniras - ग्रिफिथ । After the manner of Angi-ras - विल्सन । अङ्गिरस शब्द का अर्थ प्रस्तुत मन्त्र में ऋषि के नाम के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

शुष्मा: - शुष्म: शुष् + मन् + सूर्य, आग, वायु, हवा, पक्षी, - वा०शि०आ० ।

Fury, Power - का०कैप० । Valour, impetuasity, impulse- मैक्डानल । power - ग्रिफिथ । strength - विल्सन । प्रस्तुतशुष्मा: शब्द का अर्थ शक्तिशाली उचित प्रतीत होता है ।

सहसा - (सह + सो + डा) बलपूर्वक, जबरजस्ती, उतावली के साथ, अंधाधुन्ध, बिना विचारे । - वा०शि०आ० । atonce, suddenly - का०कैप० । all atonce, on the spot, mightly, victorious- मैक्डानल । Strength - ग्रिफिथ । यहाँ पर सहसा शब्द का अर्थ बलपूर्वक उपरोक्त मन्त्र मे उचित है ।

दृंह - दृंह भ्वा० + पर० - दर्हति, दृणाति, दृंहति, स्थिर या दृढ़ होना, विकसित होना, बढ़ाना, समृद्ध होना, - वा०शि०आ० । make or be firm, fortify, hold form - का०कैप० । make firm - मैक्डानल । solid firm - --------- ग्रिफिथ । solid clouds - विल्सन । यहाँ पर दृंह शब्द का अर्थ अन्य विद्वानों के अर्थों की अपेक्षा दृढ उचित है ।

ऐरयत् - उद्घाटयत् - सा०मु० । the reture of the some - ग्रिफिथ । in the exhileration - विल्सन । ऐरयत् शब्द का अर्थ उद्घाटित करना प्रस्तुत मन्त्र में उचित है ।

स भूतु या ह प्रथमाय धायस ओजो मिमानो महिमानमातिरत् ।

शूरो यो युत्सु तन्व परिव्यत शीर्षाणि द्यां महिना प्रत्यमुञ्चत ॥ 2 ॥

अन्वय - सः भूतु यः ओजः मिमान. प्रथमाय धायसे महिमानम् आतिरत् शूरः युत्सु तन्वं परिव्यत महिना शीर्षाणि द्यां प्रत्यमु चत ।

हिन्दी अनुवाद - वह इन्द्र जो कि प्रथम सोमपान के लिए अपनी शक्ति को मापते हुए अपनी महिमा को प्रवृद्ध कर दिया । पराक्रमी इन्द्र जो युद्धों में अपनी शरीर को ‡कवच‡ से आवृत्त करता है । अपनी शक्ति से शीर्ष पर द्युलोक को धारण करता है ।

भू - भवा० पर० ‡अविरल‡ भवति, भूत, होना, घटित होना, कथमयम् भवेन्ताम् - वा०शि०आ० । Become, be - का०कैप०, मैक्डानल । be - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर भू शब्द का अर्थ होना उचित है ।

धायस् - पीने के लिए, ग्रहण करने के लिए, प्राप्त करने के लिए - वा०शि०आ० । nourishing, refreshing, drinking - का०कैप० । nourishing, only, nourish - मैक्डानल । Drinking - विल्सन । यहाँ पर धायस् शब्द का अर्थ पान करने के लिए समीचीन है ।

ओज् - ‡नपुं०‡ ‡/उब्ज् + असुन + व लोपः‡ गुणश्च, शारीरिक सामर्थ्य, बल, शक्ति - वा०शि०आ० । strength, vigour, energy, power - का०कैप० । energy, power - मैक्डानल । power - ग्रिफिथ । energy - विल्सन एवं मैक्डानल । यहाँ पर ओज् शब्द का अर्थ प्रस्तुत मन्त्र के लिए तेज‡बल‡ उचित है ।

तन्वं - तनू (तन् + अ) शरीर - वा०शि०आ० । Body - का०कैप०, मैकडानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर तन्वं शब्द का अर्थ शरीर प्रस्तुत मन्त्र में उचित प्रतीत होता है ।

महिना - (वि०) महान्, श्रेष्ठ, बलिष्ठ, उच्च, कुलीन, शक्तिशाली - वा०शि०आ० महिना स्वकीयेन महिम्ना - सा०मू० । Greater - ग्रिफिथ । विल्सन । powerful - मैकडानल । Greatful - का०कैप० । यहाँ पर महिना शब्द का अर्थ कई विद्वानों ने अनेक ढंग से प्रस्तुत किये हैं किन्तु प्रस्तुत मन्त्र में प्रयुक्त महिना शब्द का अर्थ 'अपनी महानता' सर्वोचित प्रतीत होता है ।

ह- (अव्यय) (हा + ड) बलबोधक निपात जो पूर्ववर्ती शब्द पर बल देता है । इसका अर्थ सचमुच यथार्थ में निश्चय ही आदि - वा०शि०आ० । to be, sure, in deed, often expletive - का०कैप० । of course, to be sure - मैकडानल । measuring - ग्रिफिथ । to be sure - मैक्समूलर । यहाँ पर ह का प्रयोग शब्दों के पूर्व प्रयुक्त होने वाले अव्यय के रूप में लाया गया है ।

आ - विस्मयादिद्योतक अव्यय के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रयुक्त करता है । स्वीकृति, हाँ (दया, आह, पीड़ा खेद, प्रत्यास्मरण अहो - ओह - वा०शि०आ० । Hither, near, towards, besides, further, quite - का०कैप० । near, towards, even - मैकडानल । even - ग्रिफिथ । यहाँ प आ विस्मयादिबोधक शब्द है जिसका अर्थ अहो है ।

अधाकृणोः प्रथमं वीर्यं महद्यदस्याग्रे ब्रह्मणा शुष्ममैरयः ।

रथेष्ठेन हर्यश्वेन विच्युताः प्र जीरयः सिस्रते सध्र्यक् पृथक् ॥ 3 ॥

अन्वय - अध प्रथमं वीर्यं अकृणोः ब्रह्मणा अस्य अग्रे यत् हर्यश्वेन विच्युताः सध्र्यक् पृथक् प्र सिस्रते । शुष्मं ऐरयः जीरयः रथेष्ठेन ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र तुमने मुख्य महान वीर-कर्म को किया जो अग्नि समझकर यजमान के लिए मन्त्र के कारण बल को प्रेरित किया । स्वर्णिम अश्व वाले रथ पर स्थित होने वाले इन्द्र के द्वारा विविध दिशाओं में च्युतशील बनाये गये जीर्ण करने वाला विशेषरूप से साथ-साथ दौड़ने वाले पृथक् पृथक् भाग रहे हैं ।

अध् - ﴾अव्यय﴿ ﴾अधर + असि﴿ अधर शब्दस्य स्थाने अधादेशः - तले, नीचे - वा० शि० आ० । Then, so, and, but, therefore - का० कै०प० । then, so, and - मैकडानल । thou didst - ग्रिफिथ । यहाँ पर अध शब्द का अर्थ नीचे उचित है ।

अग्रे - ﴾वि०﴿ ﴾अङ्ग + रन्﴿ नलोपश्च, प्रथम, सर्वोपरि, मुख्य, सर्वोत्तम, प्रमुख, वा० शि० आ० । At first, the same, surface, front, top - का० कै०प० । First, the same - मैकडानल । Thy first - ग्रिफिथ । First - विल्सन । यहाँ पर अग्रे शब्द का अर्थ सर्वोपरि उचित है ।

विच्युता - ﴾भू० + क० + कृ०﴿ ﴾वि + च्यु + क्त﴿ अधः पतित, विस्थापित । Falling of, separating from - का० कै०प० । Down-fall - मैकडानल । Hurled down - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर

विच्युता शब्द का अर्थ छोड़कर अन्य विद्वानों के मतों की अपेक्षा अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

सध्यक् - ॥वि0॥ ॥स्त्री0 सध्रीची॥ ॥सहा चति सह + अ च् + क्विन्॥ सन्धि आदेश: साथ चलने वाला - वा0शि0आ0 । jointly, together, in the right way or manner - का0कै0प0 । Companion, friend - मैकडानल । सध्यक शब्द का अर्थ साथ साथ उचित है ।

पृथक् - ॥अव्यय॥ ॥प्रथ् + अच् + कित्॥ संप्रसारण, अलग अलग, जुदा जुदा, एक एक करके - वा0शि0आ0 । Sparatly, singly - का0कै0प0 । singly, difference - मैकडानल । Fled sunder - ग्रिफिथ । अलग अलग अर्थ पृथक शब्द के लिए उपर्युक्त मन्त्र में उचित है ।

अधा यो विश्वा भुवनाभि मज्मनेशानकृत्प्रवया अभ्यवर्धत ।

आद्रोदसी ज्योतिषा वह्निरातनोत्सीव्यन्तमांसि दुधिता समव्ययत् ॥ 4 ॥

अन्वय - अथ प्रवया: य: विश्वा भुवना मज्मना ईशानकृत् अभ्यवर्धत आत् वह्नि: ज्योतिषा रोदसी आतनोत् तमांसि दुधिता सीव्यन् समव्ययत् ।

हिन्दी अनुवाद - इसके अनन्तर अपने शासक बना देने वाले प्रकृष्ट अन्न वाले जो सर्वत: सम्पूर्ण लोकों के प्रति अपनी शक्ति के द्वारा प्रबुद्ध हो गया पालक अग्नि ने अपनी ज्योति से द्युलोक और पृथ्वी को भर दिया तथा व्याप्त अन्धकार को ढक लिया ।

भुवन - being, existence, thing, world, earth, abode - का0कैप0 creature, existing, being - मैकडानल । worlds - ग्रिफिथ। abode - विल्सन । भुवना सर्वान् लोकान् - सा0मु0 । यहाँ पर भुवन: शब्द का अर्थ सम्पूर्ण लोक उचित प्रतीत होता है ।

मज्मन् - मज्मना बलेनाभिभूय - सा0मु0 । greatness, might, gether, generall, at all - का0कैप0 । might, at all - मैकडानल । might - ग्रिफिथ एवं विल्सन । मज्मन् शब्द का अर्थ उपरोक्त मन्त्र में बल से अभिभूत किया उचित है ।

ईशानकृत - ईश् + ताच्छील्ये चानश् कृत - शासक बनाने वाले - वा0शि0आ0 । ईशानकृत आत्मानं सर्वस्याधिपतिं कुर्वन् । Ruling over, ruller - का0कैप0 । Acting as a lord - मैकडानल । Lord - ग्रिफिथ । Making humself, lord - विल्सन । ईशानकृत शब्द का अर्थ उपरोक्त मन्त्र में

शासक बनाने वाले उचित है ।

रोदस् - ।नपुं0। ।स्त्री0 द्वि0ब0 - रोदसी। ।√रूद् + असुन्। आकाश और पृथ्वी । वा0शि0आ0 । Heaven and earth - का0कैप0, मैकडानल, एवं विल्सन । The heaven and earth - ग्रिफिथ । रोदस् शब्द का अर्थ सभी विद्वानों ने पृथ्वी और आकाश बताया है ।

ज्योतिषा ।नपुं0। द्योतते द्युत्यतेवा - द्युत् + इसुन् दस्य जादेश: - प्रकाश, प्रभा, चमक, दीप्ति, वा0शि0आ0 । light, brightness - का0कैप0 । Bright, light, fire - मैकडानल । light - ग्रिफिथ । Bright - विल्सन । ज्योतिषा शब्द का अर्थ अपने तेज से उचित है ।

तमांसि - वि0 - काला, अन्धकार - वा0शि0आ0 । darkness, darknight, hark, hell - का0कैप0 । darkness - मैकडानल ।एवं ग्रिफिथ glooms - विल्सन । तमांसि शब्द का अर्थ अन्धकार उचित है ।

सीव्यन् - ।सी0 + वयन्। ।वि0। - विस्तार, - वा0शि0 आप्टे । a round, sew sew on - का0कैप0 । Sewing - ग्रिफिथ । सीव्यन् शब्द का अर्थ विस्तार अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

स प्राचीनान्पर्वतान्दृंहदोजसाधराचीनमकृणोदपामपः ।

अधारयत्पृथिवीं विश्वधायसमस्तभ्नान्मायया द्यामवस्रसः ॥ 5 ॥

अन्वय - सः प्राचीनान् पर्वतान् ओजसा दृंहत् अपां अपः अधराचीनम् अकृणोत् विश्व-
धायसं पृथिवीं अधारयत् मायया द्यां अवस्रसः ।

हिन्दी अनुवाद - उस इन्द्र ने प्राचीन चलने वाले पर्वतों को दृढ़ किया तथा मेघों के
जलों को बरसाया । जिसने सबको ﴾सोमरस﴿ का पान कराने
वाली पृथ्वी को धारण किया तथा अपनी शक्ति से द्युलोक को नीचे गिरने से रोक
लिया ।

प्राचीन - ﴾वि0﴿ ﴾प्राच् + ख﴿ पूर्वकाल का, पुराना, पुरातन, वा0शि0आप्टे ।
प्राचीनान् इतस्ततः प्रकर्षेणा चतो गच्छतः सपक्षान् - सा0भा0 । previous,
terior, old - का0कैप0 । prior, ancient, old - मैकडानल ।
Forward - ग्रिफिथ । wordering - विल्सन । प्राचीन शब्द का अर्थ प्रस्तुत
मन्त्र में पुराना उचित है ।

दृंहत् - दृंह् ﴾भ्वा0पर0 दर्हति - दृंहति﴿ स्थिर या दृढ़ होना, विकसित होना या
बढ़ाना - वा0शि0 आप्टे । Be firm, only, hold fast -
का0 कैप0 । Be firm - मैकडानल । made firm - ग्रिफिथ । Be fixed
विल्सन । दृंहत् शब्द का अर्थ विकसित होना समीचीन प्रतीत होता है ।

अस्तभ्नात् ﴾अस्तभायते गम्यतेस्मिन् इति अस्तम् + इ + अच्﴿ नाश से बचाना, गिरने से
रोकना - वा0शि0आ0 । Stayed - ग्रिफिथ एवं विल्सन । अस्तभ्नात्
शब्द का अर्थ गिरने से बचाना उचित है ।

अधराचीनम् - §वि0§ §नञ् + धृ + अच्§ पहले - नीचे, अवर, पहले नीचा - वा0 शि0आ0 । First low, be subduect, loving - का0कैप0 law, bawn - मैक्डानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । प्राय: सभी विद्वानों ने अधराचीनम् का अर्थ नीचे का पुराना बताया है वस्तुत: यही सत्य है ।

अपाम् - §अप् - जल का संबं0 ब0व0§§समास के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त§, जल, बिजली, समुद्र, वरुण, वा0शि0 आप्टे । Ocean, Varuna, water - का0कैप0 । water - ग्रिफिथ । of the water - विल्सन । अपाम् शब्द का अर्थ जल उचित है ।

सास्मा अरं बाहुभ्यां यं पिताकृणोद्विश्वस्मादा जनुषो वेदसस्परि ।

येना पृथिव्यां नि क्रिविं शयध्यै वज्रेण हत्व्यवृणक्तुविष्वणिः ॥ 6 ॥

अन्वय - स: अस्मै अरम् पिता विश्वस्मात् जनुष: परि वेदस: बाहुभ्यां यम् आ अकृणोत तुविष्वणि: येन क्रिविम् वज्रेण हत्वी पृथिव्यां शयध्यै नि अवृणक् ।

हिन्दी अनुवाद - वह इन्द्र इस जगत् के लिए पर्याप्त है जिसे प्रजापति ने दोनों भुजाओं से सम्पूर्ण प्राणियों की अपेक्षा उत्कृष्ट ज्ञान के द्वारा निर्मित किया। अत्यधिक शब्द करने वाले उस इन्द्र के वज्र के द्वारा क्रिवि को पृथ्वी पर (लेटने के लिए) मारकर पूर्णतया समाप्त कर दिया ।

अरम् - (अव्यय) (ऋ + अम्) तेजी से, निकट, पास ही, उपस्थित, तत्परता के साथ वा0शि0 आप्टे । Suitably, conveniently - का0कैप0 । according towish - मैक्डानल । sufficiently - विल्सन । अरम् शब्द का अर्थ तत्परता के साथ उचित प्रतीत होता है ।

यम: - (/यम् + घञ्) संयत रहना, नियन्त्रित करना, दमन करना, कोई महान नैतिक कर्त्तव्य या धर्म साधना (विप0 नियम) तप्तं यमेन तपो मुनैव नै0 36/16 यम और नियम में भिन्न प्रकार की भिन्नता दर्शायी गयी है । मृत्यु का देवता, मृत्यु का मूर्त रूप यह सूर्य का पुत्र माना जाता है, जोड़ के एक, जोड़ा, जोड़ी, शिव का विशेषण - वा0शि0 आप्टे । 1. Holder, bridle or driver, restraint, pairted twin of a god का0कैप0 । forming a fair, minor, rule, observance - मैक्डानल । यम: शब्द का अर्थ यमराज के लिए जो मृत्यु का देवता है उसके लिए प्रयुक्त हुआ है ।

पिता - पितृ ॥पाति रक्षति /पा + तृच्॥ पिता - तेनास लोकः पितृमान् विनेत्रा - रघु० 14/23, माता, पिता, पितृकुल के पितर, - वा० शि० आप्टे । Father, parents - का० कैप० । parents - मैकडानल । पिता शब्द का अर्थ सम्पूर्ण जगत के पालनकर्ता/प्रजापति के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

जनुष - ॥नपुं०॥ ॥जन् + उसि॥, जन्म, धिग्वारिधीनां जनु भा० मि० 1/16, सृष्टि, उत्पादन, जीवन, जन्म से अन्धा, - वा० शि० आप्टे । Birth, origin, being, kind - का० कैप० । Birth, kind - मैकडा० । kind of - ग्रिफिथ । Production - विल्सन । जनुष शब्द का अर्थ मनुष्यों से ॥जनात्॥ अ उचित है ।

शयध्यै - शयथ ॥वि०॥ ॥शी + अथच्॥ सोया हुआ, मृत्यु, - वा० शि० आप्टे । abode, coach, fair- का० कैप० । death - ग्रिफिथ । abode - विल्सन । शयध्यै शब्द का अर्थ दीर्घनिद्रा में सोने वाला ॥मरा हुआ॥ अर्थ यहाँ पर उचित है ।

हत्वी - हत् ॥भू० + क० + कृ॥ ॥हन् + क्त॥ मारा गया, वध किया गया - वा० शि० आ० । struck, pierced, hurt - का० कैप० । afflicted by, wretched, bereft of charm - मैकडानल । struck - ग्रिफिथ । striking - विल्सन । हत्वी शब्द का अर्थ मारा गया सर्वोचित है ।

अमाजूरिव पित्रोः सती समानादा सदसस्त्वामिये भगम् ।

कृधि प्रकेतमुप मास्या भरऽदद्धि भागं तन्वो३ येन मामहः ॥ 7 ॥

अन्वय - अमाजूः पित्रोः सचा सती समानात् सदसः भगं त्वाम् इये । प्रकेतं कृधि उप मासि आ भर भागं तन्वः दद्धि येन ममहः ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! माता पिता के साथ परिवार में रहने वाली कन्या के समान तुमसे मैं सम्पत्ति को माँगता हूँ । इस प्रकार धन दो । अपने हिस्से का धन पूर्ण मात्रा में लाओ जिस धन की अर्चना की जाती है ।

अमाजूः - §वि0§ अमा, साथ साथ, मिलकर, घर में निवास हो या पैदा हो । जू - जू + क्विप् - रहने वाली अर्थात् घर में साथ साथ रहने वाला । वा0शि0 आप्टे । As she who in her parients' house is growing - ग्रिफिथ । dwelling with her parients' - विल्सन । यहाँ पर अमाजूः का वास्तविक अर्थ मिलकर उचित प्रतीत होता है ।

सती - §स्त्री0§ §सत् + ङीप्§ §साध्वी स्त्री§ - वा0शि0 आप्टे । Virtuous- ग्रिफिथ । as she (vessel) - विल्सन । Truly -का0कैप0 । really - मैकडानल । यहाँ पर सती का अर्थ साध्वी स्त्री समीचीन प्रतीत होता है ।

सदस् - §नपुं0§ सीदत्यस्मिन् + सद् + असि§ असुन् निवासस्थान, वा0शि0आप्टे । seat, place, abode - का0कैप0, seat - ग्रिफिथ । dwelling - मैकडानल । सदस् शब्द का वास्तविक अर्थ निवासस्थान उचित होगा ।

भग: - ॥भज् + घ॥ अच्छी किस्मत, भाग्य, सम्पन्नता, समृद्धि, प्रसिद्धि, उत्कर्ष - वा0शि0आ0 । distributer, gracious, lord, protector, gods, lot, position - का0कै0 । lord phal, sun-god, fortune - मैकडानल । Thee as Bhaga - ग्रिफिथ । Wealth - विल्सन । भग: शब्द का वास्तविक अर्थ अच्छी किस्मत अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

भाग. - ॥भज् + घञ्॥ खण्ड, अंश, हिस्सा, प्रभाग, टुकड़ा - वा0शि0 आप्टे । Share, part, spot, space- का0कै0 । Part, share, region- मैकडानल । share - ग्रिफिथ । Portion - विल्सन । भाग: शब्द का अर्थ प्रभाग ॥टुकड़ा॥ उचित है ।

भर - ॥वि0॥ ॥भृ + अच्॥ धारण करने वाला, देने वाला, भरण-पोषण करने वाला - वा0शि0 आप्टे । Bearing, carrying, getting, song, human - का0कै0 । Bestowing, maintaining - मैकडानल । measure - विल्सन । भर शब्द का वास्तविक अर्थ भरण पोषण करने वाला अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

भोजं त्वामिन्द्र वयं हुवेम ददिष्ट्वामिन्द्रापांसि वाजान् ।

अविड्ढीन्द्र चित्रया न ऊती कृधि वृषन्निन्द्र वस्यसो नः ॥ 8 ॥

अन्वय - इन्द्र भोजं त्वां वयं हुवेम इन्द्र त्वम् अपांसि वाजान् ददिः इन्द्र चित्रया ऊती नः अविड्ढ वृषन् इन्द्र नः वस्यसः कृधि ।

हिन्दी अनुवाद - हे पालक इन्द्र ! तुम कर्मनिष्ठा तथा धनों को देने वाले हो । मैं तुमको पुकारता हूँ ॥तुम॥ विचित्र सहायता के द्वारा हमारी सहायता करो । हे वर्षक ॥इन्द्र॥ हमें धनयुक्त कर दो ।

भोजः - ॥भुज् + अच्॥ एक जाति का नाम, शासक, पालनकर्ता, स्वामी - वा0शि0 आप्टे । Liberal, voluptuous, king of king - का0कैप0 । Bountial, liberal - मैक्डानल । liberal - ग्रिफिथ । enjoyed - विल्सन । भोजः शब्द का अर्थ पालनकर्ता ॥एक जाति का नाम॥ उचित प्रतीत होता है ।

वृषन् - ॥पु0॥ ॥वृष् + कनिन्॥ वृषराशि, किसी वर्ग का मुखिया, कामना वर्षक इन्द्र- वा0शि0आ0 । manly, potent, strong, bull, first or last - का0कैप0 । mighty, great, powerful, lord - मैक्डानल। mighty - ग्रिफिथ । manifold - विल्सन । वृषन् शब्द किसी वर्ग का मुखिया अर्थ उचित है ।

नः ॥वि0॥ ॥नह् ॥नश्॥ + ड॥ पतला, पालतू, खाली, रिक्त, वही, अविभक्त, दौलत, सम्पन्नता, निषेधात्मक अव्यय, नहीं न तो, न का समानार्थक लोट् के लकार में प्रतिषेधात्मक न होकर आज्ञा, प्रार्थना या कामना के लिए प्रयुक्त, विधि-

लिङ्ग क्रिया के साथ प्रयुक्त किये जाने पर कई बार इसका अर्थ होता है ऐसा न हो कि इस डर से, कहीं ऐसा न हो, तर्कपूर्ण ले तो में 'न' शब्द इति चेत् के पश्चात् रखा जाता है । वा0शि0 आप्टे । no, lest, like, in the negative का0कैप0 । not, less, quite by, as, like- मैकडानल । as - विल्सन । यहाँ पर न: शब्द का वास्तविक अर्थ सम्पन्नता उचित प्रतीत होता है ।

हत: - /हु + अ, /ह्व + अच्, संप्र0 वा आहुति, यज्ञ, आवाहन, प्रार्थना, वा0 शि0 आप्टे । to be invoked - का0कैप0 । offered oblation to be invoked - मैकडानल । invoke - ग्रिफिथ एवं विल्सन यहाँ पर हत: शब्द का अर्थ आवाहन उचित प्रतीत होता है ।

ऊति: स्त्री0 अव् + क्तिन् संरक्षा, पालना, तुलना, सीमा - वा0शि0 आप्टे । help, aid, refreshment, protector - का0कैप0 । help, favour, comfort, cordial - मैकडानल । help - ग्रिफिथ । Protection- विल्सन । यहाँ पर ऊति: शब्द का वास्तविक अर्थ संरक्षा अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

प्राता रथो नवो योजि सस्निश्चतुर्युगस्त्रिकशः सप्तरश्मिः ।

दशारित्रो मनुष्यः स्वर्षाः स इष्टिभिर्मतिभी रंह्यो भूत् ॥ 1 ॥

अन्वय - रथः नवः सस्निः प्रातः योजि चतुर्युगः त्रिकशः सप्तरश्मिः दशारित्रः मनुष्यः स्वर्षाः सः इष्टिभिः मतिभिः रह्यः भूत् ।

हिन्दी अनुवाद - प्रातःकाल शुद्धस्नात चार अश्व युगों वाला (ऋत्विक् या पाषाण) तीन कोड़ों वाला, सात लगामों वाला दशारित्र वाला मानवहितकारी तथा स्वर्गदायक इन्द्र का नूतन रथ इष्टियों और स्तुतियों से गतिशील हो गया ।

प्रातर - (अव्यय) (प्र + अत् + अरन्) तड़के, पौ फटे, प्रातःकाल, अगले दिन सुबह - वा०शि० आप्टे । early, in the morning, tomorrow - का०कै०पु० । morning, early - मैकडानल । morning - ग्रिफिथ । early - विल्सन । प्रातर् शब्द का अर्थ प्रस्तुत मन्त्र प्रायः सभी विद्वानों ने प्रातःकाल किया है, प्रातःकाल अर्थ ही समीचीन है ।

नवः - (वि०) (नु + अप्) नया, ताजा, थोड़ी आयु का, नवीन, now, fresh, young - का०कै०पु० । newly, just, new - मैडानल । new - ग्रिफिथ । fresh - विल्सन । नव शब्द का अर्थ "नूतन" ही उपरोक्त मन्त्र में उचित है ।

त्रिकशः - त्रि - स० वि० - केवल ब०व० कर्तृ० पु० त्रय, स्त्री० तिस्र, नपुं० त्रीणि- तीन । कशः - (√कश् + अच्) कोड़ा - वा०शि० आप्टे । a kind of growing animal, a whip - कशा - whip, rope, a whip,

त्रि - Three - का0कैप0 । Three whips, The rope-मैकडानल । Three whips - ग्रिफिथ । Three tones - विल्सन । त्रिकशा: शब्द अर्थ तीन कोड़ों वाला ही उचित है ।

सप्तरश्मि: - ﴾सं0वि0﴿ सदैव बहुवचनान्त, कर्तृ0 व कर्म0 सप्त ﴾सप् + तनिन्﴿ सात - रश्मि: - ﴾अश् + मि 'अश्नोतेर्मि रशादेशश्च इत्यनेन धातो: रशादेश: । रश् + मि वा﴿ डोर, डोरी, रस्सी, लगाम - वा0शि0 आप्टे । Seven ropes, seven reins - का0कैप0 । seven ropes - मैकडानल। Seven reins - ग्रिफिथ । Seven matres - विल्सन । सप्तरश्मि शब्द का अर्थ सात लगामों वाला उचित है ।

मनुष्य. - ﴾मनोरपत्यं यक् सुक् च﴿ आदमी, मानव, मर्त्य, नर - वा0शि0 आप्टे । Human, humane, man, husband - का0कैप0 । human, suitable for men - मैकडानल । friendly - ग्रिफिथ । to man - विल्सन । मनुष्य "आदमी" अर्थ लगाया गया है वस्तुत: यही सत्य है ।

भूत - ﴾भू + क + क्﴿ ﴾भू + क्त﴿ जो हो चुका हो, होने वाला, घट चुका हो, हो गया - वा0शि0 आप्टे । become, either been, past - का0कैप0 being, either been, past, gone - मैकडानल । being - ग्रिफिथ। having - विल्सन । भूत शब्द का अर्थ बीत गया या घट चुका समीचीन है ।

सास्मा अरं प्रथमं स द्वितीयमुतो तृतीयं मनुषः स होता ।

अन्यस्या गर्भमन्य ऊ जनन्त सो अन्येभिः सचते जेन्यो वृषा ॥ 2 ॥

अन्वय - सः अस्मै प्रथमं अरं सः द्वितीयं उतो तृतीयं सः मनुषः होता अन्ये अन्यस्याः गर्भ जनन्त उ वृषा जेन्यः सः अन्येभिः सचते ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! वह [यज्ञ] प्रथम सवन में इस [इन्द्र] के लिए पर्याप्त है । वह द्वितीय सवन में तृतीय सवन में पर्याप्त हुआ । वह मानव का आह्वानकर्ता है । अन्य [ऋत्विजों ने] पृथ्वी के गर्भ स्थान से [सोम] को उत्पन्न किया । वह जयशीलवर्धक अन्य देवों से संयुक्त होता है ।

अरम् - [अव्यय] [ऋ0 + अम्] तेजी से, पास, निकट, पर्याप्त, पूरक - वा0शि0 आप्टे । Sufficient, enough - का0कै0 । Sufficient, enough - मैकडानल । Prepared - ग्रिफिथ । Sufficient -विल्सन । अरम् शब्द का अर्थ तेजी से वस्तुतः सत्य है ।

गर्भः - [गृ + भन्] गर्भाशय, पेट, भीतरी, अन्दर से - वा0शि0 आप्टे ।

प्रथम - [वि0] [पुं0 कर्तृ0 ब0व0 - प्रथमे वा प्रथमाः] [√प्रथ् + अम च] पहला, सबसे आगे का - वा0शि0 आप्टे । First, Primal, Foremost, Chief- का0कै0 । Primer, First, Just - मैकडानल । First - ग्रिफिथ एवं विल्सन। यहाँ पर प्रथम शब्द का अर्थ पहला उचित है ।

द्वितीय - [वि0] [स्त्री0 यी] [द्वि + अयट्] दोहरा, दुगुना, दो प्रकार का, दो

दो तरह का, दो, जोड़ी - दूसरा - वा0शि0 आप्टे । Second - ग्रिफिथ एवं विल्सन । Second, heeth, two by two - का0कैप0 । Two, double, Second - मैकडानल । द्वितीय का अर्थ यहाँ पर दूसरा उचित है ।

तृतीय - ‖वि0‖ ‖त्रि + तीय‖ सं0प्र0 तीसरा, तीसरा भाग - वा0शि0 आप्टे । Third - ग्रिफिथ एवं विल्सन । Forming the third part, the third - मैकडानल । the third - का0कैप0 । तृतीय का अर्थ तीसरा प्रस्तुत मन्त्र में सर्वोचित है ।

जेन्य - ‖वि0‖ ‖/जि + केन्य‖ जीतने के योग्य, प्रहार्य, जो जीता जा सके । वा0शि0 आप्टे । noble, genuine, true - का0कैप0 । of noble race - मैकडानल । as a noble - ग्रिफिथ । जेन्य शब्द का अर्थ जयशील सर्वथा उचित है ।

हरी नु कं रथ इन्द्रस्य योजमायै सूक्तेन वचसा नवेन ।

मो षु त्वामत्र बहवो हि विप्रा नि रीरमन्यजमानासो अन्ये ॥ 3 ॥

अन्वय - इन्द्रस्य रथे हरी नु कं आयै नवेन वचसा सूक्तेन योजं अत्र बहव: विप्रा: हि अन्ये यजमानास: त्वां सु मो नि रीरमन् ।

हिन्दी अनुवाद - मैं अब इन्द्र के रथ में इन्द्र के आगमन के लिए नूतन सूक्तों से तथा वाणों के द्वारा दोनों घोड़ों को संयोजित करता हूँ । यद्यपि यज्ञ में अनेक पुरोहित होते हैं किन्तु अन्य यज्ञ न करने वाले पुरोहित तुझे भलीभाँति प्रदान करें ।

हरि - [वि0] [ह + इन्] इन्द्र का नाम - वा0शि0 आप्टे । the steeds of Indra - का0कैप0 । the chief of Dev Indra - मैकडानल । to Indra - ग्रिफिथ । Indra - विल्सन । हरि का अर्थ वस्तुत: सभी विद्वानों ने घोड़ा लिखा है यही उचित है ।

सूक्तेन [सु + उक्तेन] साधना से, परिश्रम से, अभ्यास से, - वा0शि0 आप्टे । well spoken, or recited, good recitation - का0कैप0। well spoken - मैकडानल, एवं ग्रिफिथ । well recited - विल्सन। सूक्तेन शब्द का अर्थ सूक्तों से यहाँ पर उचित है ।

वचस् - [नपुं0] भाषण, वचन, वाक्य - वा0शि0 आप्टे । Speech, word, Song - का0कैप0 । word, speech, counsel, language - मैकडानल । words - ग्रिफिथ । prayer - विल्सन । वचस् शब्द का अर्थ

यहाँ पर वाणी उचित है ।

विप्रा: - ।/वप् + रन् पृषो0 अत इत्वम्। ब्राह्मण, मुनि, यजमान - वा0शि0आ0।
Singer - ग्रिफिथ। wise - विल्सन। stirred, inspired, wise - का0कैप0। Brahaman, wise, stirred - मैक्डानल।
विप्रा शब्द का अर्थ 'ब्राह्मणों' ही यथोचित है।

आ द्वाभ्यां हरिभ्यामिन्द्र याह्या चतुर्भिरा षड्भिर्हूयमानः ।

आष्टाभिर्दशभिः सोमपेयमयं सुतः सुमख मा मृधस्कः ॥ 4 ॥

अन्वय - आ हूयमानः इन्द्र द्वाभ्यां हरिभ्याम् आ याहि चतुर्भिः आ षड्भिः सोम-
. पेयम् अष्टाभिः आ दशभिः सुमख अयं मृध. मा कः ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! तुम दो घोड़ों से आओ । चार अश्वों से, छः अश्वों
से पुकारे जाते हुए आओ । आठ घोड़ों से दस घोड़ों के द्वारा
इन्द्र को पाने के लिए यह सोम अभिषुत हे सुमखों ! हिंसा मत करो ।

आ - विस्मयादिद्योतक अव्यय के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है,
स्वीकृति, हां, दया, आह, पीड़ा या खेद ।बहुधा-आस् या आः लिखा
जाता है, हा, हंत, प्रत्यास्मरण अहो ओह आ एवं किलासीद् - उत्तर 6, कई बार
केवल अनुपूरक के रूप में प्रयुक्त होता है । आ एवं मन्द से, संज्ञा या क्रियाओं के
उपसर्ग के रूप में निकट, पास, गत्यर्थक नयनार्थक या गम् जाना, आगम्, आना, -
वा0शि0 आप्टे । Hither, near, further, quite, even - का0
कैप0 । Till, as far as, before, in, at, on मैक्डानल । Hither
ward - विल्सन । come - ग्रिफिथ । आ शब्द का अर्थ विस्मयादि द्योतक,
अव्यय के रूप किया गया है ।

द्वाभ्याम् - द्वि0 - शब्द तृतीय, द्विवचन - ।वि0। संख्या, कर्तृ + द्वि0व0 - पु0 द्वौ
स्त्री0 नपुं0 द्वे। दो, दोनों - सद्यः परस्पर तुलामधिरोहतां द्वे रघु0 5/6।
।विशें दशन् विंशति और त्रिंशद् में पूर्व द्वि को द्वा हो जाता है । - वा0शि0 आप्टे
Double - द्वि0 - Two-का0कैप0 । with two - विल्सन । द्वाभ्याम् शब्द

का अर्थ दो "घोड़ों" से उचित है ।

मृधः - ‡मृध् + क‡ संग्राम, युद्ध, लड़ाई, सत्वविहितमतुलंभुजयोर्बलस्य पश्यत मृधे धि-
कुप्यतः कि० 12/39 - वा०शि० आप्टे । Combat, fight, foe, enemy, battle, scorn - का०कैप० । Scorn - ग्रिफिथ । worship - विल्सन । मृध् शब्द का अर्थ लड़ाई उचित है ।

सुमख - सुमख - सुयज्ञ, सुधन । Jound, merry, joy, festival - का०कैप० vigorous, gay, auspicious- मैकडानल । सुमख शब्द का अर्थ यज्ञ की "साधन" के लिए प्रयुक्त है ।

आ विंशत्या त्रिंशता याह्यर्वाङा चत्वारिंशता हरिभिर्युजानः ।

आ पञ्चाशता सुरथेभिरिन्द्राऽऽषष्ट्या सप्तत्या सोमपेयम् ॥ 5 ॥

अन्वय - इन्द्र सोमपेयं अर्वाङ् विंशत्या आ याहि त्रिंशता चत्वारिंशता हरिभिः युजानः आ सुरथेभिः प चाशता आ षष्ट्या सप्तत्या ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! बीस या तीस घोड़ों से आओ, चालीस घोड़ों से युक्त होकर आओ । पचास घोड़ों वाले सुन्दर रथ से हे इन्द्र आओ और सत्तर घोड़ों के द्वारा सोम को पीने के लिए आओ ।

विंशत्या - विंश् - बीस से । Twenty - ग्रिफिथ एवं विल्सन । विंशति संख्या-कैरश्वैः - सा0मु0 । विंशत्या शब्द का अर्थ बीस प्रस्तुत मन्त्र में वर्णित है ।

चत्वारिंशता - Forty-का0कैप0 मैकडानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । चत्वारो दशतः परिणामस्य ब0स0नि0 - चालीस - वा0शि0 आप्टे । चत्वारिंशता "चालीस" अर्थ ही सत्य है ।

युजानः - युज् + अन - मिला हुआ । [स्धा0 उभ0 युनक्ति, युङ्क्ते, युक्त] सम्मिलित, मिला हुआ, युक्ता होता हुआ - वा0शि0 आप्टे । Yoked,- together, harnessed, with - का0कैप0 । harnessed, together, with - मैकडानल । Harnessed - ग्रिफिथ । having harnessed - विल्सन । युजान शब्द का अर्थ "मिला हुआ" अर्थ उचित है ।

<u>प॰चाशता</u> - पंचाशति: [स्त्री0] पचास - वा0शि0 आप्टे । Fifty- का0कैप0,
मैक्डानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । प॰चाशता शब्द का अर्थ पचास उचित है ।

<u>षष्ट्या</u> - [स्त्री0] षड् गुणिता दशाति: नि0 - साठ - वा0शि0 आप्टे । Sixty-
का0कैप0, मैक्डानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । षष्ट्या शब्द का अर्थ "साठ" प्राय: सभी विद्वानों ने बताया और यही सही है ।

आशीत्या नवत्या याह्यर्वाङा शतेन हरिभिरुह्यमान. ।

अयं हि ते शुनहोत्रेषु सोम इन्द्र त्वाया परिषिक्तो मदाय ॥ 6 ॥

अन्वय - अशीत्या अर्वाई. आ याहि नवत्या शतेन हरिभिरुह्यमान: आ इन्द्र हि ते मदाय शुनहोत्रेषु अयं सोम: त्वाया परिषिक्त: ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! तुम अस्सी घोड़ों के द्वारा नब्बे घोड़ों के द्वारा हमारी ओर आओ सौ घोड़ों से ढोये जाते हुए आओ । हे इन्द्र शुभ होत्रों से यह सोम तुम्हारी कामना से प्रसन्नता के लिए उड़ेला गया है ।

अशीति: - ﴾वि0﴿ ﴾निपातो यम्﴿ ﴾अस्सी﴿ यह सदैव स्त्रीलिङ्ग एकवचन में प्रयुक्त होता है चाहे इसका विशेष्य कुछ ही हो । - वा0शि0 आप्टे । Eighty- का0कैप0, मैकडानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । अशीतिसंख्याकैरश्वै:अशीत्या सा0भू0 । अशीति: शब्द का अर्थ अस्सी ही उचित है ।

नवति: - ﴾स्त्री0﴿ ﴾नि0﴿ ﴾नब्बे﴿ नवनवतिशताद्रव्यकोटिचवरास्ते - मुद्रा0 3/27, वा0शि0 आप्टे । एतत्संख्याकैरश्वैरागच्छ नवत्या - सा0भू0 । Ninety- का0कैप0, मैकडानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । नवति शब्द का अर्थ नब्बे ही यथोचित है ।

शतेन - ﴾दश शतत: परिमाणमस्य दशन् + त_+ श आदेश: नि0 साधु: सौ की संख्या﴿ वा0शि0 आप्टे । शतेन शतसंख्याकै: - सा0भू0 । Hundred - का0कैप0, मैकडानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । शतेन शब्द का अर्थ यहाँ पर सौ है ।

उह्यमान: - /वह् + य + युक् + शानच् + सु ॥पुं०॥ ढोये जाते हुए - वा०शि० आप्टे । carried or borne along - का०कैप० । carried - मैकडानल एवं विल्सन । carried by - ग्रिफिथ । उह्यमान: शब्द का अर्थ ढोये जाते हुए ही यथोचित है ।

मदाय - ॥मद् + अच्॥ मद्, च०ए०व०, प्रसन्नता, मस्ती, - वा०शि० आप्टे । Gladden, bubble - का०कैप० । gladding - मैकडानल । glad - ग्रिफिथ । exhilaration - विल्सन । मदाय शब्द का अर्थ प्रसन्नता ही यथोचित है ।

मम ब्रह्मेन्द्र याह्यच्छा विश्वा हरी धुरि धिष्वा रथस्य ।

पुरुत्रा हि विहव्यो बभूथास्मिन्छूर सवने मादयस्व ॥ 7 ॥

अन्वय - इन्द्र मम ब्रह्म अच्छ याहि विश्वा हरी रथस्य धुरि धिष्व पुरुत्रा विहव्यः बभूथ शूर अस्मिन् सवने मादयस्व ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! हमारे मन्त्र की ओर लक्ष्य करके आओ । सभी गमन शील घोड़ों को अपने रथ की धुरी में संयुक्त करो । बहुत स्थलों पर पुकारे जाने योग्य हो हे शूर इसी सवन में मस्त (तृप्त) होवो ।

ब्रह्मन् - (नपुं०) (√बृंह् + मनिन्, नकारस्याकारेऽतोरत्वम्) परमात्मा जो निराकार और निर्गुण समझा जाता है । वेदान्तियों के मतानुसार ब्रह्म ही इस दृश्य मान संसार का निमित्त और उपादान कारण है । वही सर्वव्यापक आत्मा और विश्व की जीवशक्ति है । वही वह मूल तत्त्व है जिसमें संसार की सब वस्तुयें पैदा होती हैं तथा जिसमें कि वह लीन हो जाती है । अस्ति तावन्नित्यशुद्ध मुक्तस्वभावं सर्वज्ञं सर्वशक्तिमन्वितं ब्रह्म - शारी० । - वा०शि० आप्टे । First - का०कैप० । First, the god Brahman - मैक्डानल । Prayer - ग्रिफिथ एवं विल्सन । ब्रह्मन् शब्द प्रस्तुत मन्त्र में ब्राह्मण के लिए आया है प्रायः सभी विद्वानों ने ब्राह्मण अर्थ में ही उल्लेख किया है ।

अच्छ - (अव्यय) (न + छो + क) लक्ष्य, - वा०शि० आप्टे । to, toward, often - का०कैप० । hither thy - विल्सन । to thus - ग्रिफिथ अच्छ शब्द प्रस्तुत मन्त्र में लक्ष्य अर्थ में प्रयुक्त है ।

धुरि - धुरीय ।वि०। ।धुरं वहति, अर्हति वा, धुर् + ख, छ वा । बोझा ढोने या सम्भालने योग्य, मुख्य, प्रधान, योग्य, अग्रणी, गाड़ी की आधार खण्ड, वा०शि० आप्टे । धुरि युग प्रान्ते - सा०मु० । Yoke or pole- का०कैप० । Yoke - मैकडानल एवं विल्सन । Pole - ग्रिफिथ । धुरि शब्द ।रथ। की धुरी के अर्थ में प्रयुक्त है ।

पुरुत्रा - ।वि०। ।स्त्री० + रु - वर्ग। /पृ पालनपाषणयो: में कु। अति, प्रचुर, लौकिक साहित्य में प्राय: व्यक्तिवाचक संज्ञाओं में आरम्भ में प्रयुक्त होता है । रु: फूलों का पराग, स्वर्ग, देवलोक, त्र, स्थलों से, विभिन्न यजमान के द्वारा - वा०शि० आप्टे । in many, place or ways, variously, often - का०कैप० । in many, often -मैकडानल । be inyoked in many places - ग्रिफिथ । in many ways by many (worshippers) - विल्सन । प्रस्तुत शब्द उपरोक्त मन्त्र में प्रचुर अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ।

न मु इन्द्रेण सख्यं वि योषदस्मभ्यमस्य दक्षिणा दुहीत ।

उप ज्येष्ठे वरूथे गभस्तौ प्रायेप्राये जिगीवांस: स्याम ॥ 8 ॥

अन्वय - इन्द्रेण मे सख्यं न वि योषत् अस्य दक्षिणा अस्मभ्यं दुहीत ज्येष्ठे वरूथे गभस्तौ उप स्याम प्रायेप्राये जिगीवांस: ।

हिन्दी अनुवाद - इन्द्र के साथ मेरी मित्रता को विमुक्त न करो दक्षिणा हमारे लिए स्वयं हो जाय । श्रेष्ठ रक्षक इन्द्र को आश्रम के समीप रहकर प्रत्येक संग्राम में विजेता होवे ।

सख्यम् - {सख्युर्भाव: यत् प्रत्यय:} मित्रता, घनिष्ठता, मैत्री, मुमूर्छ सख्यं रामस्य समानव्यसने हरी - रघु0 12/57 - वा0शि0 आप्टे । Fellowship, Friendship, Relationship- का0कैप0 । Love, relationship - मैकडानल Love - ग्रिफिथ । Friendship -विल्सन । सख्यम् शब्द मित्रता अर्थ में प्रयुक्त है।

ज्येष्ठ - {वि0} अयमेषामतिशयेन वृद्ध: प्रशस्यो वा + इष्ठन् ज्यादेश: आयु में सबसे बड़ा, जेठा, श्रेष्ठतम, सर्वोत्तम, मुख्य, प्रथम, - वा0शि0 आप्टे । Principal, best, eldest, highest, greatest -का0कैप0 । First,best highest - मैकडानल । Supreme - ग्रिफिथ । ज्येष्ठ शब्द का अर्थ यहाँ पर प्रधान ही उचित है ।

वरूथे - ।/वृ + ऊथन्। एक प्रकार का लकड़ी का बना हुआ आवरण, जो रथ की टक्कर हो जाने पर रथ की रक्षा करे ।इस अर्थ में पु0 भी। वरूथों रथ गुप्तियो तिरो धत्ते रथस्थितिम्, कवच, वखतर, ढाल - वा0शि0 आप्टे । Cover, Protection, Shelter, Chariot, army, troop -का0कैप0 । Cover, selp in arms - मैकडानल । Protection self in his arms -ग्रिफिथ । defence (Protecting) arms - विल्सन । वरूथे शब्द प्रस्तुत मन्त्र में रथ की टक्कर से रक्षा करने वाले कवच् के लिए प्रयुक्त है वस्तुत: यही अर्थ समीचीन है ।

अपाय्यस्यान्धसो मदाय मनीषिण: सुवानस्य प्रयस. ।
यस्मिन्निन्द्र: प्रदिवि वावृधान ओको दधे ब्रह्मण्यन्तश्च नर: ॥ । ॥

अन्वय - सुवानस्य मनीषिण: प्रयस: अस्य अन्धस: मदाय अपायि प्रदिवि यस्मिन् वावृधान: इन्द्र: ओक: दधे ब्रह्मण्यन्त: नर: ।

हिन्दी अनुवाद - मनीषी सोमाभिषव करते हुए [यजमान के] मद के लिए इस प्रिय अन्न का भक्षण करते हैं । जिस प्राचीन सोम में निवास धारण करता है । प्रवृद्ध होता हुआ इन्द्र तथा स्तोत्र करते हुए ऋत्विक् लोग निवास करते हैं ।

प्रयस: [भू + क. + कृ.] [प्र + यस्] अभ्यास, - वा0शि0 आप्टे । Pleasure - का0कैप0 । Draught, libation, offering - मैक्डानल । draughts- ग्रिफिथ । libation - विल्सन । प्रस्तुत मन्त्र में प्रयस: शब्द का अर्थ अभ्यास उपयुक्त है ।

अन्धस: - [न0] [/अद् + असुन् , नुम् दकारस्य धकार:] भोजन - मद के लिए - कि0 I-39- वा0शि0 आप्टे । 1. darkness, 2. herb, juice, some plant, food - का0कैप0 । herb some food - मैक्डानल । Food - विल्सन । juice have been drank - ग्रिफिथ । अन्धस: शब्द का अर्थ मद के लिए सर्वोचित है ।

ओक: - [उच् + क नि0 चस्य क:] घर, शरण, आश्रय, वा0शि0 आप्टे । Home, house - का0कैप0 । dewelling - मैक्डानल एवं विल्सन । यहाँ पर प्रस्तुत ओक: शब्द का अर्थ घर उचित है ।

नर: - (नृ + अच्) मनुष्य, पुमान् पुरुष - वा० शि० आप्टे । man, husband, hero, sprit - का० कै० प० । man, human, husband - मैक्डानल । men - ग्रिफिथ । नर: शब्द का अर्थ प्रस्तुत मंत्र में मनुष्य उचित है ।

मनीषिण: - (वि०) (मनीषा + इनि) बुद्धिमान, विद्वान्, प्रज्ञावान्, चतुर - वा० शि० आप्टे । thoughtful, wise, devout - का० कै० प० । The wise - ग्रिफिथ । devout - विल्सन । caption, wise, desire-मैक्डानल । मनीषिण: शब्द का अर्थ विद्वान् यहाँ पर सर्वोचित है ।

अस्य मन्दानो मध्वो वज्रहस्तोऽहिमिन्द्रो अर्णोवृतं वि वृश्चत् ।

प्र यद्वयो न स्वसराण्यच्छा प्रयांसि च नदीनां चक्रमन्त ॥ 2 ॥

अन्वय - अस्य मध्व: मन्दान: वज्रहस्त: इन्द्र: अर्णोवृतम् अहिं वि वृश्चत् यद् नदीनां प्रयांसि अच्छ प्र चक्रमन्त वयो न स्वसराणि ।

हिन्दी अनुवाद - इस मधुयुक्त सोम के कारण हर्षित होता हुआ बज्रयुक्त हाथ वाला इन्द्र इन जलों को आवृत्त करने वाले अहि को छिन्न-भिन्न कर दिया । घोंसलों की ओर जैसे पक्षियाँ उसी प्रकार नदियों के जल-प्रवाह को समुद्र की ओर परिवर्तित कर दिया ।

मन्दान: - ‖मन्द + शानच्‖ प्रसन्न होता हुआ, वा0शि0 आप्टे । Cheered - ग्रिफिथ ; Cheerful, gay - का0कैप0 । exhilarated - विल्सन । मन्दसान: शब्द का अर्थ प्रसन्न होता है सर्वोचित है ।

मध्व: - एक प्रसिद्ध आचार्य तथा शास्त्र प्रणेता, वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्तक तथा वेदान्त सूत्रों के भाष्यकर्ता अथवा मधुना - वा0शि0 आप्टे । of a name or sweets; eating sweets some juice - का0कैप0 । Sweets foods or some juice -मैकडानल । Some juice - ग्रिफिथ एवं विल्सन । मध्व: शब्द का अर्थ ‖सोम के‖ "मद से" है ।

वय: - ‖भ्वा0 आ0 वयते‖ जाना, पंक्षी, - वा0शि0 आप्टे । Small birds - का0कैप0 । Birds - मैकडानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । वय: शब्द का अर्थ प्रस्तुत मन्त्र में सभी विद्वानों ने पंक्षी ही प्रयोग किये हैं । यही उचित है ।

चक्रम् - ▮क्रियते अनेन, /कृ घ थें क नि० द्वित्वम् - ता०रा०▮ गाड़ी का पहिया, चक्र,
गोल, निकलकर चक्र की भाँति फिर उसी छोर से मिलना, चक्राकार गति, गोलाई में घूमना - वा०शि० आप्टे । Circle, troop, circuit, province- का०कैप० । Circular, having wheel or a discuss -मैकडानल । Currents of the river flowed - ग्रिफिथ । Currents of the rivers proceeded - विल्सन । चक्रम् शब्द का अर्थ प्रस्तुत मंत्र में गोलाकार ही उचित है ।

स माहिन् इन्द्रो अर्णो अपां प्रैरयदहिहाच्छा समुद्रम् ।

अजनयत्सूर्यं विदग्दा अक्तुनाह्नां वयुनानि साधत् ॥ 3 ॥

अन्वय - माहिनः अहिहा सः इन्द्रः अपाम् अर्णः समुद्रम् अच्छ प्रैरयत् सूर्यम् अजनयत् गाः विदत् अक्तुना अह्नां वयुनानि साधत् ।

हिन्दी अनुवाद - अहि को मारने वाले उस महान इन्द्र ने जलों के प्रवाह को समुद्र की ओर प्रेरित किया । सूर्य को उत्पन्न किया और गायों को प्राप्त किया और तेज के द्वारा दिवसों के प्रकाश को सिद्ध किया ।

अर्णो - अर्णांसि सन्ति यस्मिन् अर्णस् + व सलोपः - सागर, जलों का स्वामी, महान् वा0शि0 आप्टे । Wave, stream, flood - मैकडानल । Syllable, rising - का0कैप0 । Flood - ग्रिफिथ । Current - विल्सन । अर्णो शब्द का अर्थ जलों का स्वामी उचित है ।

माहिनः - ॥वि0॥ ॥स्त्री + इन॥ उत्तम, महानुभाव, यशस्वी - वा0शि0 आप्टे । Joyous, glad - का0कैप0 । glad, blithe, joyous, gladdening - मैकडानल । mighty - ग्रिफिथ । adorable - विल्सन । महिनः शब्द का अर्थ महानुभाव अर्थ सर्वोचित है ।

अजनयत् - ॥वि0॥ ॥न0ब0॥ जनशून्य, विपावान - वा0शि0 आप्टे । Unpeopled, Solitude - का0कैप0 । generated - विल्सन । gave to sun his life - ग्रिफिथ । अजनयत् शब्द का अर्थ "जनशून्य सर्वोचित है ।

साधत् - साध् - स्वा0प0 साध्नोति, पूरा करना, समाप्त करना, निष्पन्न किया जाना, साबित करना, सिद्ध करना, - वा0शि0 आप्टे । effected - ग्रिफिथ । effect - का0कैप0 । effecting - मैकडानल। साधत् शब्द का अर्थ पूरा करना उचित है ।

अक्तुना - ॥वि0॥ ॥अक् + क्त॥ सना हुआ, अभिषिक्त ॥इसका प्रयोग वस्तुतः समस्त पदों में होता है॥ जै ॥घृताक्त॥ रात - वा0शि0 आप्टे । Light or night, Tinged bright - का0कैप0 । Light, ray, clear, night, by night - मैकडानल । The night the werks of days - ग्रिफिथ । The day by night - विल्सन । यहाँ पर अक्तुना शब्द का अर्थ तेज से सर्वोचित है ।

सूर्यम् - ॥सरति आकाशे सूर्यः, यद्वा सुवति कर्माणि लोकं प्रेरयति /सु प्रेरणे + क्यप् नि0, सूरज, वा0शि0 आप्टे । The sun - का0कैप0 । sun- ग्रिफिथ। विल्सन, मो0वि0 । सूर्य शब्द का अर्थ ॥सूरज॥ अर्थ सर्वोचित है ।

समुद्रः - ॥वि0॥ ॥सह मुद्रया ब0स0॥ सागर, महासागर, - वा0शि0 आप्टे । The gathering of the waters above and under the firmament, either the sky as the aerial ocean - का0कैप0। collection of the waters - मैकडानल । waters of the ocean - ग्रिफिथ । the waters to ward off the ocean - विल्सन । समुद्रः शब्द का अर्थ सागर यहाँ पर सर्वोचित है ।

सो अप्रतीनि मनवे पुरूणीन्द्रो दाशद्दाशुषे हन्ति वृत्रम् ।

सद्यो यो नृभ्यो अतसाय्यो भूत्पस्पृधानेभ्यः सूर्यस्य सातौ ॥ 4 ॥

अन्वय - सः इन्द्रः दाशुषे मनवे पुरूणि अप्रतीनि दाशत् वृत्रम् हन्ति यः सूर्यस्य सातौ पस्पृधानेभ्यः सद्यः अतसाय्यः भूत् ।

हिन्दी अनुवाद - उस दाता इन्द्र ने मनुष्यों के लिए अत्यधिक उत्कृष्ट धन प्रदान किया । वह वृत्र का वध करता है जो कि तुरन्त ही सूर्य के संग्राम में स्पर्धा करते हुए मनुष्यों के लिए समाश्रणीय हुआ ।

मनवे - मनुः शब्द ‡मन् + उ‡ मनुष्यों के लिए, मानवों के लिए, मानव जाति के लिए - वा0शि0 आप्टे । man, mankind - का0कैप0 । man, mankind, coll, wise - मैकडानल । Presenter (of the libation) - विल्सन । मनवे शब्द का अर्थ मनवे के लिए उचित है ।

पुरूणि - ‡वि0‡ ‡स्त्री0 - रु, र्वी‡ ‡पृ पालनपोषणयोः - कु‡ अति, प्रचुर, अधिक बहुत से, ‡लौकिक साहित्य में "पुरु" शब्द प्रायः व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के आरम्भ में प्रयुक्त होता है रुः फूलों का पराग, स्वर्गदेवलोक - वा0शि0 आप्टे । much, many, of an ancient, king, much, often - का0कैप0। many, much, often, king - मैकडानल । many - ग्रिफिथ एवं विल्सन । पुरूणि शब्द का अर्थ प्रचुर यहाँ पर सर्वोचित है ।

नृभ्यः - Strengths - का0कैप0 । manliness, strengths - मैकडानल । Straigth - ग्रिफिथ ।

हन्ति - ॥वि०॥ ॥हन् + तृच् + ङ॥ वध कर दिया, प्रहार किया, मार डाला - वा०शि० आप्टे । Slaying, slayer - का०कै०पा० । Killing, slay - मैकडानल । slayeth - ग्रिफिथ । slays - विल्सन । killed- मैक्समूलर । यहाँ पर हन्ति शब्द का अर्थ "प्रचुर" उचित प्रतीत होता है ।

स सुन्वत इन्द्रः सूर्यमाऽऽदेवो रिणङ्मर्त्याय स्तवान् ।

आ यद्रयिं गुहदवद्यमस्मै भरदंशं नैतशो दशस्यन् ॥ 5 ॥

अन्वय - स्तवान् देवः सः इन्द्रः सुन्वते मर्त्याय सूर्यम् आ रिणक् यत् एतशः दशस्यन् अस्मै गुहदवद्यं रयिं आ भरत् अंशं न ।

हिन्दी अनुवाद - स्तुति होते हुए उस देव इन्द्र ने सोमाभिषव करते हुए मनुष्य के लिए सूर्य को पृथक् किया और जिससे हविरूप प्रदाता यजमान ने इसके लिए प्रच्छन्न और अवद्य धन को उसी प्रकार सम्पादित किया जैसे पिता पुत्र के लिए भाग को प्रदान करता है ।

सुन्वते - Sacrificer - मैकडानल । Gifts- ग्रिफिथ । Offering of the libation - का0कै0प0 । सुन्वते शब्द का अर्थ सोम रस को निचोड़ते हुए है ।

स्तवान् - स्तवः - (स्तु + अप्) प्रशंसा करना, विख्यात करना, स्तुति करना, वा0 शि0 आप्टे । Thundering or mighty - का0कै0प0 । mighty- मैकडानल एवं ग्रिफिथ । louded - विल्सन । स्तवान् शब्द का अर्थ यहाँ पर प्रशंसनीय होना उचित है ।

रयिम् - (रु + अप् + इ) धन, दौलत, प्रसन्नता, वा0शि0 आप्टे । Riches - ग्रिफिथ एवं विल्सन । wealth - मैकडानल । Property -का0कै0प0 । रयिम् शब्द का अर्थ "सोम्सूर्या धन को" यहाँ पर प्रयुक्त किया गया है ।

अंश - Portion - मैकडानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । Portion, share, part - के०कैप० । अंश शब्द का अर्थ भाग सर्वोचित है ।

एतशः - As- ग्रिफिथ । as (a father gutes) - विल्सन । as (of a son- का०कैप० । Thus - मैकडानल । एतशः शब्द का अर्थ "जैसा" उचित है ।

स रन्धयत्सदिवः सारथ्ये शुष्णमशुषं कुयवं कुत्साय ।

दिवोदासाय नवतिं च नवेन्द्रः पुरो व्यैरच्छम्बरस्य ॥ 6 ॥

अन्वय - सदिवः सः सारथ्ये कुत्साय शुष्णम् अशुषं कुयवम् रन्धयत् इन्द्रः दिवोदासाय शम्बरस्य नव नवतिं पुरः व्यैरत् ।

हिन्दी अनुवाद - कान्तियुक्त उस इन्द्र ने शुष्ण को तथा शोषणरहित को तथा कुयव को सारथी कुत्स के लिए हिंसित किया और उस इन्द्र ने निन्यानबे नागरिकों को दिवोदास के लिए विदीर्ण किया ।

सदिवः - ‹स्त्री०› ‹सदीत्यन्त्यत्र दिव् + वा आधारे डिरि तारा०› ‹कर्तृ ए०ब०द्यौः› आकाश, दिन, प्रकाश, उजालायुक्त - वा०शि० आप्टे । radient- विल्सन । once to the axiver - ग्रिफिथ । lighted - का०कैप० । सदिव शब्द का अर्थ प्रकाशयुक्त अर्थ सर्वोचित है ।

सारथ्ये - सारथि - सृ + अथिण् सह रथेन सरथः घोटकः तत्र नियुक्तः इ्‌ वा‹ रथवान, साथी, सहायक - वा०शि० आप्टे । Charioteer, aostr, का०कैप० । Charioteer - मैकडानल एवं ग्रिफिथ । Chariot - विल्सन। सारथ्ये शब्द का अर्थ प्रस्तुत मन्त्र में सारथी उचित है ।

अशुषम् ‹दिवा०पर० शुष्यति, शुष्क› शोषणरहित, न सूखने वाला, न मुरझाने वाला - वा०शि० आप्टे । Plucue of harnest - ग्रिफिथ । Asusam - विल्सन । No dried up - मैकडानल । अशुषम् शब्द का अर्थ प्रस्तुत मंत्र में शोषण रहित सर्वोचित है ।

पुरः ॥स्त्री०॥ ॥कर्तृ० ब०व० पूः, करण हि०ब० - पूरयमि ॥पृ + क्विप् - नगरों,
शहरों, वा०शि० आप्टे । Towns, cities- का०कैप० । Towns -
मैकडानल । Cities - विल्सन एवं ग्रिफिथ । पुरः शब्द का अर्थ नगर सर्वोचित
है ।

नवतिम् - ॥स्त्री०॥ ॥नि०॥ नब्बे, नवनवतिशताद्रव्यकोटिश्वरास्ते - मुद्रा० 3/27,
वा०शि० आप्टे । Ninety - का०कैप०, मैकडानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन।
नवतिम् शब्द का अर्थ नब्बे होता है प्रायः सभी विद्वानों ने यही अर्थ लगाया है ।
यही सर्वोचित है ।

एवा त इन्द्रोचथमहेम श्रवस्या न त्मना वाजयन्त: ।

अश्याम तत्साप्तमाशुषाणा ननमो वधरदेवस्य पीयो: ॥ 7 ॥

अन्वय - इन्द्र श्रवस्या वाजयन्त: ते एव उचथं त्मना न अहेम आशुषाणा: साप्तं अदेवस्य पीयो: वध: ननम: ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! यश की कामना से मानो स्वयं अन्न (धन) चाहते हुए हम लोग इस प्रकार से तुम्हारे स्तोत्र को प्राप्त करें । तुझसे संयुक्त होते हुए उस मित्रता को प्राप्त करें ।

उचथ - Praise - का0कैप0, विल्सन । human of Praise - मैकडानल । our human of thee - ग्रिफिथ । उचथ - स्तोत्र, वा0शि0 आप्टे । उचथ शब्द का अर्थ प्रार्थना करना उचित है ।

श्रवस्या - श्रवस् (नपुं0) (श्रु + असि) ख्याति, कीर्ति, यश - वा0शि0 आप्टे । Glories, Praise, nimble - मैकडानल । Glory, Praise - का0कैप0 । Glory - ग्रिफिथ । Praise -विल्सन । श्रवस्या शब्द का अर्थ प्रस्तुत मन्त्र में ख्याति सर्वोचित है ।

साप्तम् - (स्त्री0) साप्त (वि0)(सप्त + खञ् वा) सात पग साथ चलने से बनी हुई मित्रता, घनिष्ठता, - वा0शि0 आप्टे । Friendship - ग्रिफिथ, विल्सन, का0कैप0 । साप्तम् शब्द का अर्थ प्रस्तुत मन्त्र में सात पग साथ-साथ चलने वाला सर्वोचित है ।

नमः: - bending - का0कै0पे0 । bend - ग्रिफिथ । trying - मैक्डा0।

वधः: - ‡हन् + अप्‡ मारना, कत्ल करना, हत्या करना, हिंसा करना - वा0शि0 आप्टे । slayer, slay, kill, destroy - मैक्डानल । kill, slayer -ग्रिफिथ । वधः शब्द का अर्थ यहाँ पर मारना प्रायः सभी विद्वानों ने किया है । मारना अर्थ ही प्रस्तुत मन्त्र में समीचीन प्रतीत होता है ।

एवा ते गृत्समदाः शूर मन्मावस्यवो न वयुनानि तक्षुः ।

ब्रह्मण्यन्त इन्द्र ते नवीय इषमूर्जं सुक्षितिं सुम्नमश्युः ॥ 8 ॥

अन्वय - शूर इन्द्र गृत्समदाः मन्म ते एव तक्षुः अवस्यवो न वयुनानि नवीयः ते ब्रह्मण्यन्तः सुक्षितिम् इषम् उर्जं सुम्नं अश्युः ।

हिन्दी अनुवाद - हे शूर इन्द्र ! रक्षा कामी लोग जैसे भोगों का निर्माण करते हैं, उसी प्रकार गृत्समदों ने तुम्हारे लिए मन्त्रों का निर्माण किया हे इन्द्र स्तोत्रों की कामना करते हुए तुम्हारे नूतन अन्न जल, बल तथा सुनिवास से संयुक्त सुख को प्राप्त किया ।

मन्म - hymn - का0कै0प0, ग्रिफिथ । Praise- विल्सन । thought, hymn, Praises- मैकडानल ।

तक्षु - ‡भ्वा0स्वा0प0र0 तक्ष - तक्षति‡ चीरना, निर्माण करना, काटना, बनाना, वा0शि0 आप्टे । Farour - ग्रिफिथ । make - का0कै0प0 । (constradt) - विल्सन । तक्षु शब्द का अर्थ प्रस्तुत मंत्र में निर्माण करना सर्वोचित है ।

इषम् - ‡इष् + अच्‡ बलशाली, शक्ति, सामर्थ्य, वा0शि0 आप्टे । Strength - का0कै0प0, विल्सन एवं ग्रिफिथ । Vigour - मैकडानल । इषम् शब्द का अर्थ "शक्ति" यहाँ पर सर्वोचित है ।

वयं ते वय इन्द्र विद्धि षु णः प्र भरामहे वाजयुर्न रथम् ।

विपन्यवो दीध्यतो मनीषा सुम्नमियक्षन्तस्त्वावतो नून् ॥ । ॥

अन्वय - इन्द्र ते वयं वयः प्र भरामहे वाजयुर्न रथं नः सु विद्धि विपन्यवः मनीषा दीध्यतः त्वावतः नून् सुम्नं इयक्षन्तः ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र अन्न का इच्छुक व्यक्ति रथ को संयोजित करता है उसी प्रकार हम तुम्हारे लिए सोमादि रस को संपादित करते हैं । हमारे बारे में भलीभाँति समझो तथा स्तुति करते हुए तथा प्रज्ञा से प्रकाशित होते हुए तुझ सदृश्य अन्नयनकर्ताओं के लिए सुख से सम्पादित करते हुए हम लोग अन्न सम्पादित करते हैं ।

वाजः - [वज् + घञ्] भोजन सामग्री, घी, श्राद्ध की सामग्रियाँ । gain for combat - ग्रिफिथ । Food - विल्सन एवं मैक्स0 । gain, good, food- का0कैप0 । Food, Struggle, Prize - मैक्डानल । वाजः शब्द का अर्थ भोजनसामग्री ही समीचीन प्रतीत होता है ।

मनीषा - [मनसः ईषा ष0त0श0का0] चाह, कामना, यो दुर्जनं वशीयतुं मनीषाम् - भा0मि0 1/95, प्रज्ञा, समझ, सोच, विचार - वा0शि0 आप्टे । Thoughtful - ग्रिफिथ । Thought - का0कैप0 । understanding - मैक्डानल । मनीषा शब्द का अर्थ कामना सर्वोचित है ।

सुम्नम् - [सु] [मन्यते नेन मन् करणे असुन्] सुखद, आकर्षक, रुचिकर, प्रिय, सुन्दर - वा0शि0 आप्टे । सुम्नम् सुखेन - सा0भा0 । regard - ग्रिफिथ, विल्सन मैक्डानल । सुम्नम् शब्द का अर्थ रुचिकर उचित प्रतीत होता है ।

रथम् - रम्यते नेन अत्र वा - रम् + कथन्॥ गाड़ी, रथ का साज सामान, रथ का उपयोग, मानव हितकारी रथ - वा0शि0 आप्टे । war-chariot, waggon - का0कै0प0 । warrior, waggon - मैकडानल । waggon - विल्सन । Chariot - ग्रिफिथ । शकटम् संपायायि तद्वत् - सा0मु0 । रथम् शब्द का अर्थ यहाँ पर मानव हितकारी रथ अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

भरामहे - ॥भृ + टाप् + महे॥ धारण करने वाला, संपादित करने वाला, प्राप्त करने वाला - वा0शि0 आप्टे । carrying, brings - का0कै0प0 । gaining carrying - मैकडानल । Brings - ग्रिफिथ एवं विल्सन । भरामहे प्रकर्षेण सम्पादयाम: - सा0मु0 । भरामहे शब्द का अर्थ संपादित करने वाला उचित प्रतीत होता है ।

त्व न इन्द्र त्वाभिरूती त्वायतो अभिष्टिपासि जनान् ।

त्वमिनो दाशुषो वरूतेत्थाधीरभि यो नक्षति त्वा ॥ 2 ॥

अन्वय - इन्द्र त्वं त्वाभिः ‹त्वदीयाभिः› ऊती नः अस्मान् त्वायतः जनान् अभिष्टिपा असि दाशुषः त्वम् इनः वरूता इत्थाधीः यः त्वा अभि नक्षति ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! तुम अपनी सहायता के लिए हमारी रक्षा करो । तुम्हारे प्रति कामना करने वालों के तुम रक्षक हो । इस प्रकार की बुद्धि से संयुक्त होकर के वह जो तुमसे संयुक्त होता है तुम हविष्य प्रदाता के कष्ट निवारक हो ।

ऊती - ‹स्त्री०› ‹अव् + क्तिन्› बुनना, संरक्षा, उपभोग - वा०शि० आप्टे । ऊती ऊतिभिः पालनाभिः - सा०मु० । Protector - का०कैप० । Furtherance, helper - मैकडानल । Protection - ग्रिफिथ । Protections- विल्सन । ऊती शब्द का वास्तविक अर्थ उपभोग सर्वोचित प्रतीत होता है ।

वरूता - ‹वृ + अतन् + टाप्› सहायता करने वाला, आश्रय देने वाला - वा०शि० आप्टे । ग्रसीतस्तभितस्तभित - सा०मु० । defender - ग्रिफिथ एवं विल्सन । defender, cover, protector-का०कैप० । defender, covers- मैकडानल । वरूता शब्द का वास्तविक अर्थ सहासता करने वाला अत्यधिक समीचीन है ।

इनः - ‹वि०› ‹इण् + नक्› योग्य, शक्तिशाली, बलवान्, साहसी, स्वामी - वा० शि० आ० । इनः ईश्वरः प्रभु - सा०मु० । Liberal mans -

स नो युवेन्द्रो जोहूत्र: सखा शिवो नरामस्तु पाता ।

य: शंसन्तं य: शशमानमूती पचन्तं च स्तुवन्तं च प्रणेषत् ॥ 3 ॥

अन्वय - युवा जोहूत्र: सखा शिव: स: इन्द्र: नराम् य: शंसन्तं य: शशमानम् पचन्तं स्तुवन्तं ऊती प्रनेषत् ।

हिन्दी अनुवाद - वह युवा इन्द्र बार बार पुकारने योग्य सखा योग्य कल्याणकारी लोगों का पालनकर्ता होवे जो मन्त्र पाठ करते हुए को पुरोडास पकाते हुए को स्तुति करते हुए को आगे बढ़ावे ।

युवा - युवन् (वि0)(स्त्री युवति:, ती, म0अ0 यवीयस् या कनीयस् उ0अ0 यविष्ठ कनिष्ठ) यौतीति युवा, /यु + कनिन) तरुण, जवान, वयस्क, परिपक्वावस्था को प्राप्त, हृष्ट पुष्ट, स्वस्थ, श्रेष्ठ, उत्तम - वा0शि0 आप्टे । युवा तरुणो यष्टॄणां शमयिता वा - सा0मु0 । Young, youngman, youth, a younger des cendant - का0कै0 । young man, youth - मैकडानल । The young - ग्रिफिथ । young - विल्सन । यहाँ पर युवा शब्द का अर्थ वयस्क अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

सखा - कर्तृ0 सखा, सखायौ सखाय: पु0 (सह समानं ख्यायते डिन् नि0) मित्र, साथी, दोस्त, सहचर, तस्मात्सखा त्वमसि (अन्यत्र तत्त्वैव उत्तर 4/10, वा0शि0 आप्टे । Friend, comrade, attendant - का0कै0 । Friend, comrade - मैकडानल । Friend - ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर सखा शब्द का अर्थ दोस्त उचित प्रतीत होता है ।

जोहूत्र - जोहूत्र स्तौतृभिराह्वातव्यो होतव्यो वा - सा0मु0 । Calling, aloud, neighing - का0कैम्प0 । roaring, neighing, loud मैकडानल । Called -ग्रिफिथ ।

शिव: - [वि0] [श्यति पापम् -शो + वन् पृषो0] शुभ, मांगलिक, सौभाग्यशाली, रघु0 5/8, इयं शिवाया नियतेरिवायति: कि0 4/21, प्रसन्न समृद्ध, सुखकर, - वा0शि0 आप्टे । auspicious - ग्रिफिथ । kind, friendly, auspicious -- का0कैम्प0 । conduct - विल्सन । kind, friendly, auspicious - मैकडानल । शिव: सुखकर: - सा0मु0 । यहाँ पर शिव: शब्द का वास्तविक अर्थ सुखकर उचित प्रतीत होता है ।

पाता - पात [वि0] पा + क्त, रक्षित, देखभाल किया गया - वा0शि0 आप्टे । पाता पालको भवति - सा0मु0 । Protector - विल्सन एवं का0कैम्प0। Keeper - ग्रिफिथ । Protector, defender - मैकडानल । यहाँ पर पाता शब्द का अर्थ देखभाल किया गया समीचीन है ।

शंसन्तम् - शंसनम् - [शंस् + ल्युट्] प्रशंसा करना, पाठ करना, कहना, वर्णन करना - वा0शि0 आप्टे । in a loud, praise, announce - का0कैम्प0 । Praise, loud, foretell - मैकडानल । Praiser - ग्रिफिथ । Praise - विल्सन । यहाँ पर शंसन्तम् शब्द का अर्थ पाठ करना अत्यधिक उचित प्रतीत होता है ।

तमु स्तुष इन्द्रं तं गृणीषे यस्मिन्पुरा वावृधुः शाशदुश्च ।

स वस्वः कामं पीपरदियानो ब्रह्मण्यतो नूतनस्यायोः ॥ 4 ॥

अन्वय - तमु इन्द्रं स्तुषे तम् गृणीषे यस्मिन् पुरा वावृधुः शाशदुश्च इयानः सः
ब्रह्मण्यतः नूतनस्य आयोः वस्वः कामम् पीपरत् ।

हिन्दी अनुवाद - मैं उस इन्द्र की स्तुति करता हूँ और उस इन्द्र की प्रशंसा करता
हूँ जिनके आश्रित होकर पहले प्रबुद्ध हुए और शत्रुओं को हिंसित
किया । याचना किया जाता हुआ वह इन्द्र नूतन स्त्रोत करते हुए मनुष्य के धन
की कामना को पूर्ण करे ।

स्तु - [अदा० उभ० स्तौति स्तवति स्तुते स्तुतीते स्तुत इच्छा० तुष्टूषति ते इकारान्त
या उकारान्त उपसर्ग के पश्चात् स्तु के स् का ष् हो जाता है । प्रशंसा या
स्तुति करना, सराहना, स्तुतिगान करना भी० 1/41, वा०शि० आप्टे । extol-
ग्रिफिथ एवं का०कैप० । praise - मैकडानल । glorify - विल्सन । स्तु -
स्तौति - सा०मु० । यहाँ पर स्तु शब्द का वास्तविक अर्थ सराहना अधिक समीचीन
है ।

कामः - [कम् + घञ्] कामना, इच्छा, संतान का माप 2/65 रघु० विषय, इच्छित
पदार्थ - वा०शि० आप्टे । कामम् अभिलाषं - सा०मु० । wish, desires
का०कैप० । wealth - Prosperity - मैकडानल । wealth - विल्सन।
कामः शब्द का उचित अर्थ इच्छित पदार्थ सर्वोचित है ।

वस्वः - वसु - वस् + उन् - दौलत, धन, वा०शि० आप्टे । wealth,prosperity
मैकडानल । wealth - का०कैप०, एवं विल्सन । वस्वः वसुनः - सा०मु०
वस्वः शब्द का उचित अर्थ दौलत उचित प्रतीत होता है ।

पुरा - ‡अव्यय‡ पुर् + का पूर्वकाल में, पहले, प्राचीनकाल में, सबसे पहले । वा0 शि0 आप्टे । of old men - ग्रिफिथ । of old - विल्सन । before, of old - का0कैप0 । before, from, of old - मैकडानल। पुरा पूर्व स्तानार: - सा0भा0 । पुरा शब्द का वास्तविक अर्थ प्राचीन काल में अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

ब्रह्मण्य: - ‡वि0‡ ब्रह्मन् + यत् - ब्रह्म से संबद्ध, ब्रह्मा या प्रजापति से संबद्ध, पवित्र, पावन, ब्राह्मण - वा0शि0 आप्टे । The supreme being, highest, devotion - का0कैप0 । worship, piety, Prayer- मैकडानल । Prayer - ग्रिफिथ । Pious - विल्सन । ब्रह्मण्य: शब्द का उचित अर्थ प्रजापति से सम्बद्ध समीचीन प्रतीत होता है ।

नूतन - ‡वि0‡ ‡नव + तनप्‡ ‡त्नवा‡ नू आदेश:, नया नूतनों राजा समज्ञापयति - उत्तर0 ।, भेंट, उपहार, हाल का, आधुनिक, वा0शि0 आप्टे । Present new, fresh, young - का0कैप0 । new, just, fresh, present- मैकडानल । Present - विल्सन । mortal living - ग्रिफिथ । नूतन शब्द का वास्तविक अर्थ आधुनिक सर्वोचित है ।

सो अङ्गिरसामुचथा जुजुष्वान्ब्रह्मा तूतोदिन्द्रो गातुमिष्णन् ।

मुष्णन्नुषसः सूर्येण स्तवानश्नस्य चिच्छिश्नथत्पूर्व्याणि ॥ 5 ॥

अन्वय - अङ्गिरसां उचथा जुजुष्वान् सः इन्द्रः गातुं इष्णन् ब्रह्म स्तवान् सूर्येण उषसः मुष्णन् अश्नस्य पूर्व्याणि शिश्नथत् ।

हिन्दी अनुवाद - वह इन्द्र । अङ्गिरसों की प्रार्थना को सुनता हुआ यजमान के स्तोत्र को प्रवृद्ध करता हुआ मार्ग को प्रेरित करें । सूर्य के द्वारा उषा का अपहरण करते हुए इन्द्र ने अश्न के प्राचीन नगरियों को स्थिर किया ।

गातुम् - ॥गम् + तुन्॥ जाने के लिए रास्ता, आनेजाने का मार्ग, - वा०शि०आप्टे० गातुम् मार्गम् - सा०भा० । Motion, way, path - का०कैप० । Course, Path, way-grant free course - मैकडानल । made their going way - ग्रिफिथ । way granted - विल्सन । गातुम् शब्द का अर्थ आने जाने का मार्ग समीचीन प्रतीत होता है ।

तूतोत् - ॥तुदा०प० तुदति॥ तुद् - प्रविशि गृहमिति प्रतोद्यमाना न चलति भाग्यकृतां दशामवेक्ष्य ॥मृच्छ० 1/56॥ प्रेरित करना, आगे ढकेलना, जोर डालना, बार बार, आग्रह करना - वा०शि० आप्टे । directed -विल्सन । Pierce - का० कैप० । Penetrate - मैकडानल । तूतोत् शब्द का वास्तविक अर्थ आग्रह करना उचित है ।

मुष्णन् - ॥क्र्या०प० मुष्णाति, मुष्णति, इच्छा मुमुषिषति॥ चुराना, उठा लेना, लेटना, डाका डालना, अपहरण करना, ॥द्विक० मानी जाती है देवदत्तं

शतं मुष्णाति - परन्तु लौकिक साहित्य में विरल प्रयोग। मुष्णाण रत्नानि शि0 1/5। वा0शि0 आप्टे। मुष्णाति मुष्णन् अपहरन् - सा0मु0। Steal - का0कैप0। Plunder, rob, carry of - मैकडानल। Stealing - ग्रिफिथ। carrying of - विल्सन। मुष्णन् शब्द का वास्तविक अर्थ अपहरण करना अधिक उचित है।

उषः - उष् + क। प्रातःकाल, पौ फटना, सबेरा - वा0शि0 आप्टे। morning - downs - ग्रिफिथ। down - विल्सन। morning down - का0 कैप0। downs - मैकडानल। उषः शब्द का अर्थ प्रातःकाल अधिक समीचीन है।

स्तवान् - स्तवः /स्तु + अप्। प्रशंसा करना, विख्यात करना, स्तुति करना, स्तुति, स्त्रोत, वा0शि0 आप्टे। Praise, bymn, song - का0कैप0। Praise- मैकडानल एवं विल्सन। स्तवान् शब्द का वास्तविक अर्थ स्तुति करना अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है।

शिश्नयत - शिष् - भ्वा0पर0 शेषति, चोट पहुँचाना, नष्ट करना, मार डालना, वा0शि0 आप्टे। Leave, remain, missing - का0कैप0। be eminent among - मैकडानल। demolished - विल्सन। crushed - ग्रिफिथ। शिश्नयत् शब्द का वास्तविक अर्थ चोट पहुँचाना अधित समीचीन प्रतीत होता है।

स ह श्रुत इन्द्रो नाम देव ऊर्ध्वो भुवन्मनुषे दस्मतमः ।

अव प्रियमर्शसानस्य साह्वाञ्छिरो भरद्दासस्य स्वधावान् ॥ 6 ॥

अन्वय - देवः श्रुतः दस्मतमः सः इन्द्रः मनुषे ऊर्ध्वः भुवत् नाम ह साह्वान् स्वधावान् अर्शसानस्य दासस्य प्रियं शिरः अव भरत् ।

हिन्दी अनुवाद - वह प्रसिद्ध इन्द्र नामक दर्शनीय देवता मनुष्यों के लिए उठ खड़ा हुआ शत्रु हिंसक तथा बलवान इन्द्र ने लोकों को बाधित करने वाले अर्शसान के प्रिय सिर को काटकर दूर कर दिया ।

श्रुतः - ॥भू + क0 + कृ0॥ ॥श्रु + क्त॥ सुना हुआ, ध्यान लगाकर श्रवण किया गया, अधिगत, सुज्ञात, प्रसिद्ध, विख्यात - वा0शि0 आप्टे । glorious- ग्रिफिथ। renouned - विल्सन । Listening, Sound, ear, rumour - का0कैप0 । learning, news, report - मैकडानल । श्रुतः शब्द का अर्थ सुना हुआ अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

देवः - ॥वि0॥ ॥स्त्री0-वी॥ दिव् + अच् - दिव्य, स्वर्गीय, भ्वा0 9+ ।। - वा0 शि0 आप्टे । heavenly, divine, god, Priest- का0कैप0 । divine, heavenly, princcess - मैकडानल । देवः द्योतमान् - सा0भा0 । देवः शब्द का वास्तविक अर्थ देव अधिक उचित है ।

प्रिय - ॥वि0॥ ॥प्री + क॥ ॥म0अ0 प्रेयस्, उ0अ0 प्रेष्ठ-प्रिय, प्यारा - पसन्द आया, वा0शि0 आप्टे । dear, valued, pleasing to, beloved of- का0कैप0

Loveing, fond of, lover - मैकडानल । dear - ग्रिफिथ ।
Precious - विल्सन । प्रिय शब्द का वास्तविक अर्थ पसन्द आया उचित प्रतीत होता है ।

शिरः - ॥नपुं०॥ ॥/शृ + असुन् निपात॥ सिर, चोटी, खोपड़ी, शिखर, उच्चतम, वा०शि० आप्टे । head, top, point, highly - का०कैप० । honour, head, top - मैकडानल । head - ग्रिफिथ एवं विल्सन । शिरः शब्द का वास्तविक अर्थ शिखर अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

स्वधावान् ॥स्वद् + आ + अम्॥ स्वयं का निश्चय करने वाला, बलवान्, स्फूर्ति वाला वा०शि० आप्टे । self position - का०कैप० । self reliant - ग्रिफिथ । self determination - मैकडानल । स्वधावान् शब्द का अर्थ स्वयं का निश्चय करने वाला अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है ।

स वृत्रहेन्द्रः कृष्णयोनीः पुरंदरो दासीरैरयद्वि ।

अजनयन्मनवे क्षामपश्च सत्रा शंसं यजमानस्य तूतोत् ॥ 7 ॥

अन्वय - वृत्रहा पुरंदरः सः इन्द्रः कृष्णयोनीः दासीः वि ऐरयत् च मनवे क्षां अपः अजनयत् यजमानस्य सत्रा तूतोत् शंसं ।

हिन्दी अनुवाद - उस वृत्त हन्ता इन्द्र ने काले रंग के हिंसक प्रजाओं को दूर भगा दिया, मानव के लिए निरन्तर पृथ्वी और जल को उत्पन्न किया यजमान की स्तुति को अत्यधिक प्रवृद्ध किया ।

कृष्ण योनीः - कृष्ण [वि०] [/कृष् + नक्] काला, श्याम, गहरा, नीला, शूद्र, दुष्ट, अनिष्टकर, ष्णः काला रंग, काला हरिण् भारतीय पुराण के अनुसार कृष्ण अत्यन्त प्रसिद्ध नायक है देवताओं में सर्वप्रिय है । वसुदेव और देवकी का पुत्र होने के नाते यह कंस के भान्जे है, परन्तु व्यवहारतः ये नन्द और यशोदा के पुत्र हैं । इन्होंने इनका पालनपोषण किया तथा कृष्ण ने अपनी बचपन बिताया उसने कंस द्वारा उसकी हत्या के लिए भेजे गये पूतना तथा बक आदि शूर पराक्रमी राक्षसों को मार गिराया तो क्रमशः उनका दिव्य लक्षण प्रकट होने लगा युवावस्था में उनके मुख्य साथी थे ग्वाल की वधुएें तथा गोपिकायें जिसमें राधा उनमें विशेष प्रिय थीं । - वा०शि० आप्टे । योनिः - [पु० स्त्री] [/यु + नि] गर्भाशय, बच्चेदानी, स्त्रियों की जनेन्द्रिय, जाति, कुल, वंश - वा०शि० आप्टे । कृष्णयोनिः निकृष्ट जातिः - सा०मु० । darkness - ग्रिफिथ । Black-sprung - विल्सन । Black caste - का०कै०प० । dark female - मैकडानल । यहाँ पर कृष्ण योनीः शब्द का अर्थ श्रीकृष्ण के लिए प्रयुक्त किया गया

क्षाम् - [क्षम् + अङ् टाप्] धैर्य, दुर्गा का विशेषण, पृथ्वी - वा0शि0 आप्टे ।
क्षां पृथिवीम् - सा0मु0 । earth - का0कैप0, मैक्डानल, ग्रिफिथ एवं विल्सन । यहाँ पर क्षाम् शब्द का अर्थ धैर्य उचित है ।

शंसम् - [शंस् + अ + टाप्] श्लाघा, अभिलाषा, इच्छा, आशा, - वा0शि0 आप्टे।
शंसाम् अभिलाषं - सा0मु0 । wish - का0कैप0 । expect, fear, wish-मैक्डानल । शंसम् शब्द का वास्तविक अर्थ अभिलाषा उचित है ।

यजमानस्य - यजमान षष्ठी एक0व0, यज् + शानच् - वह व्यक्ति जो नियमित रूप से यज्ञ करता है । वह व्यक्ति जो अपने के लिए यज्ञ करवाने के लिए पुरोहित या पुरोहितों को नियुक्त करता है । आतिथेयी कुलप्रधान पुरुष - वा0शि0 आप्टे । Sacrifice, Brahamn, and pays the expenses - का0कैप0 । Sacrificer, Brahamn - मैक्डानल । Sacrificer - विल्सन warship for other - ग्रिफिथ । यजमानस्य शब्द का वास्तविक अर्थ वह व्यक्ति जो अपने के लिए यज्ञ करवाने के लिए पुरोहित या पुरोहितों को नियुक्त करता है ।

पुरंदर: - [पुरं दारयति - इति दृ + णिच् + खच् , मुम्] इन्द्र - रघु0 2/74 शिव का विशेषण, अग्नि की उपाधि, चोर, सेंध लगाने वाला । वा0शि0 आप्टे । destroyers - का0कैप0 । destroyer of castes - मैक्डानल। destroyer - ग्रिफिथ एवं विल्सन । पुरंदर: शब्द का अर्थ अग्नि की उपाधि उचित प्रतीत होता है ।

तस्मै तवस्य 9 मनु दायि_सत्रेंद्राय देवेभिरर्णसातौ ।

प्रति यदस्य वज्रं बाह्वोर्धुर्हत्वी दस्यून्पुर आयसीर्नि तारीत् ॥ 8 ॥

अन्वय - देवेभि: अर्ण सातौ तस्मै तवस्यं अनु दायि सत्रा इन्द्राय अस्य यत् वज्रं बाव्हो: प्रति हत्वी दस्यून् आयसी: दस्यून् नितारीत् ।

हिन्दी अनुवाद - उस इन्द्र के लिए बलशाली पदार्थ देवताओं द्वारा अनेक स्थल पर प्रदान की गयी जब इन्द्र ने दोनों भुजाओं पर बज्र को निहित किया तब इससे दस्युओं को मार कर लौह निर्मित किलों को विदीर्ण कर दिया ।

अर्णसातौ - [अर्णस् + मतुप्] बहुत अधिक पानी रखने वाला सागर जल राशि -वा0 शि0 आप्टे । अर्ण सातौ - उदकलाभे निमित्ते - सा0भा0 । winning of the streams - का0कैप0 । Brustle of the fight, broil - Trumult of- मैकडानल । Tumult of the battle - ग्रिफिथ । of obtaining of the rain - विल्सन । अर्णसातौ शब्द का वास्तविक अर्थ जल-राशि ही अधिक समीचीन है ।

हत्वी - [हत् + वी] बध करना, मार डालना, संहार करना - वा0शि0 आप्टे । Slain, Cursed, wretched - का0कैप0 । afflicted by, strike down - मैकडानल । Slaughtered - ग्रिफिथ । having slain - विल्सन । हत्वी शब्द का वास्तविक अर्थ वध करना अधिक उचित है ।

आयसी: - [वि0] [स्त्री0+सी] [आयसो विकार: अण्] लौह निमित्त लोहाधातु-

विश्वजिते धनजिते स्वर्जिते सत्राजिते नृजित उर्वराजिते ।

अश्वजिते गोजिते अब्जिते भरेन्द्राय सोमं यजताय हर्यतं ॥ । ॥

अन्वय - विश्वजिते धनजिते स्वजिते सत्राजिते नृजिते उर्वराजिते अश्वजिते गोजिते अपजिते यजताय इन्द्राय हर्यतं सोमं भर ।

हिन्दी अनुवाद - हे अध्वर्युवों । विश्वजयी, धनजयी, स्वर्गजयी, निरन्तरजयशील मनुष्य भूमि को जीतने वाले अश्व जयी, गायों को जीतने वाले यजनीय इन्द्र के लिए कमनीय सोम को सम्पादित किया ।

विश्वजिते - ॥सा० वि०॥ ॥विश् + व॥ सारे, सारा, समस्त, सार्वलौकिक, हरेक, प्रत्येक जित् - ॥पुं०॥, यज्ञ विशेष का नाम, रघु० 5/1, सबका स्वामी, वा० शि० आप्टे । The lord of all - ग्रिफिथ एवं विल्सन । For all, for every, for whole - का० कैप० । all, universal मैकडानल ।

धनजिते - ॥धन् + अच्॥ संपत्ति, दौलत, धन, जिते, ॥पुं०॥ पर आधिपत्य रखने वाला, विजय पाने वाले, धनपति, धन का स्वामी, धन पर आधिपत्य रखने वाला, वा० शि० आप्टे । The lord of wealth - का० कैप०, ग्रिफिथ, विल्सन एवं मैकडानल ।

स्वजिते - ॥सार्व० वि०॥ ॥स्वन् + ज॥ अपना, निजी, ॥आत्मपरक सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त होता है । स्वजिते, आत्मप्रकाशी, अपने के लिए प्रकाशित,

आत्मप्रज्ञा - वा0शि0 आप्टे । The lord of morning - का0कैप0 । The lord of light - ग्रिफिथ एवं विल्सन ।

नृजिते - पु0 (नि + अन् + डिच) (कर्तृ0 एकवचन) सम्बन्ध, ब0व0, नृणां या नृणाम्, मनुष्य, मनुष्यजाति जित, पु0 पर राज्य करने वाला, जीतने वाला, इस प्रकार मनुष्यों का स्वामी, वा0शि0 आप्टे । The lord of men- ग्रिफिथ । The lord of human - का0कैप0 । The lord of man - विल्सन । The lord of all people youth - मैकडानल ।

उर्वराजिते - उर्णु + कु = नलोप: ह्रस्व डीष्, विस्तृत, प्रदेश, भूमि, पृथ्वी, धरती, वा0शि0 आप्टे, The lord of earth - का0कैप, एवं विल्सन।

अश्वजिते - (अंश् + क्वन्) घोड़ा, जिते, घोड़ों का स्वामी, The lord of horses - ग्रिफिथ, विल्सन, का0कैप0, एवं मैकडानल ।

अभिभुवेऽभिभगाय वन्वतेऽषाळ्हाय सहमानाय वेधसे ।

तुविग्रये वह्नये दुष्टरीतवे सत्रासाहे नम इंद्राय वोचत ॥ 2 ॥

अन्वय - अभिभुवे अभिभंगाय वन्वते अषाळ्हाय सहमानाय वेधसे तुविग्रये वह्नये दुस्तरीतवे सत्रासहे इन्द्राय नमः वोचत ।

हिन्दी अनुवाद - सबको अभिभूत करने वाले शत्रुओं को चारों ओर तितर वितर करने वाले धन का विवरण करने वाले शत्रुओं से पराजित नहीं होने वाले अतिस्तुत वाहक दुस्तर अत्यधिक अभिभव करने वाले इन्द्र के लिए नमस्कार बोलो ।

अभि भुवे अभिभूवः ॥अभि + भू + अप्॥ हार मरा भव, दमन, अभिभूतः ॥स्त्री0॥ अभि + भू + क्तिन् - प्रधानता, प्रभुत्व, जीतना, अभिभूत करना, वा0शि0 आप्टे । superior - का0कैप0 । defeat - मैकडानल । Potent- ग्रिफिथ ।

सह - ॥अव्यय॥ के साथ, मिलकर, सहित, युक्त, साथ मिलकर, वा0शि0 आप्टे । Victor - ग्रिफिथ, Victorious - का0कैप0 । over comer - विल्सन । over coming - मैकडानल ।

वेधस् - ॥पुं0॥ ॥विधा + असुन् गुणः॥ स्रष्टा मा0 1/21, ब्रह्मा, विधाता, तं वेधा विदधे नूनम् महा भूतसमाधिना रघु0 1/29, गौण सृष्टि कर्ता, विद्वान्, पुरुष, वा0शि0 आप्टे । author, creator - का0कैप0 disposes- ग्रिफिथ ।

Piercing, perforated - मैकडानल । enduring - विल्सन ।

तुवि: - mighty, powerful - का०कैप० । abundantly - मैकडानल ।
mighty - ग्रिफिथ । adorable - विल्सन ।

दुस्तर - ।दु + सक् + तर। दुस्तर, या दुस्तर, वा०शि० आप्टे । unassilable-
ग्रिफिथ एवं विल्सन । irrsistible - का०कैप० । unsufferable-
मैकडानल ।

नमु - ।वि०। ।नम् + अच्। अभिवादन, प्रणाम, नमस्कार, वा०शि० आप्टे ।
Prayer - ग्रिफिथ । abode, worship - का०कैप० । adoration-
मैकडानल एवं विल्सन । benctny - मैक्समूलर ।

सत्रासाहो जनभक्षो जनंसहश्च्यवनो युध्मो अनु जोषमुक्षितः ।

वृतंचय: सहुरिर्विक्ष्वारित इन्द्रस्य वोचं प्र कृतानि वीर्या ॥ 3 ॥

अन्वय - सत्रासहः जनभक्षः जनंसहः च्यवनः युध्मः उक्षितः अनु जोषंवृतंचयः सहुरिः विक्षु आरितः कृतानि इन्द्रस्य वीर्या प्र वोचं ।

हिन्दी अनुवाद - सर्वत्र अभिभव करने वाले लोगों के द्वारा संभजनीय शत्रुजनों को अभिभूत करने वाले शत्रुओं को अपने अपने स्थान से डिगा देने वाले युद्ध करने वाले इच्छानुसार सिंचित (होते हुए) सर्वत्र व्यापक शत्रुहिंसक प्रजाओं के बीच व्याप्त इन्द्र के द्वारा किये गये वीर कर्मों को (मैं) उच्चरित करो ।

उक्षितः - (वि0)(उक्ष् + क्त) सींचा गया, गीला किया गया, शुद्ध किया गया, सुवासित किया गया, वा0शि0 आप्टे । grow up, get strong - का0कैप0 । strengthen, get strong - मैकडानल । when - ग्रिफिथ । (of strong) men - विल्सन ।

च्यवनः (च्यु + ल्युट्) वंचित होना, मरना, नष्ट होना, वा0शि0 आप्टे ।

युध्मः - (युध् + म) योद्धा, वीर, क्षत्रिय जाति का पुरुष, वा0शि0 आप्टे । warrior - का0कैप0 । Fight, battle, warrior - मैकडानल । warrior - ग्रिफिथ एवं विल्सन ।

जोषम् - [जुष् + घञ्] संतोष, प्रसन्नता, सुखोपभोग, आनन्द, आराम, वा०शि० आप्टे । loved - ग्रिफिथ । abundantly - का०कैप० । satisfaction - मैक्डानल ।

विश् - [वि + ष्] प्रजा, वा०शि० आप्टे ।

आरितः - [आ + रा + क्तिच्] अरातिः - शत्रु - वा०शि० आप्टे । enemies- ग्रिफिथ । enemyes - का०कैप० । enemy- विल्सन । folk- मैक्डानल ।

सहुरिः - [सह् + उरिन्] सूर्य, [स्त्री० पृथ्वी], वा०शि० आप्टे । mighty, Victorious - मैक्डानल । mighty - का०कैप० । gratified - ग्रिफिथ ।

वीर्या - वीर्यम् [वीर + यत्] शूर वीरता, पराक्रम, बहादुरी, शक्ति, क्षमता, वा०शि० आप्टे । Valous - मैक्डानल । Power, efficacy - का०कैप० । heroic - ग्रिफिथ । granter - विल्सन ।

अनानुदो वृषभो दोधतो वधो गम्भीर ऋष्वो असमष्टकाव्य: ।

रध्रचोद: श्नथनो वीळितस्पृथुरिन्द्र: सुयज्ञ उषस: स्वर्जनत् ॥ 4 ॥

अन्वय - अनानुद: वृषभ: दोधत: वध: गम्भीर: ऋष्व: असमष्टकाव्य: रध्रचोद: श्
श्नथन: वीळित: पृथु: सुयज्ञ: इन्द्र उषस: स्व: जनत् ।

हिन्दी अनुवाद - एक ही बार में प्रभूत देने वाला कामनावर्षक हिंसक व्यक्ति का
वध करते हुए गम्भीर, महान, अन्य के द्वारा व्याप्त कर्मों
वाला धन को प्रेरित करने वाला, शत्रुहिंसक शक्तिशाली प्रख्यात शोभन यज्ञ वाले
इन्द्र ने उषाओं की ओर सूर्य को उत्पन्न किया ।

वृषभ - [वृषु + अभच् + किच्] इच्छाओं का वर्षक, कामनावर्षक, वा0शि0 आप्टे
Manly, Potent, Strong - का0कैप0 । Stallion, Strong, Manly,
- - मैकडानल । Strong - ग्रिफिथ । Liberality - विल्सन।

वध् - [भ्वा0प0 वर्धति] मारना, कत्ल करना, वा0शि0 आप्टे ।

वध: - [हन् + अप् वधादेश:] मार डालना, हत्या, कत्ल, विनाश, वा0शि0
आप्टे । Slow - ग्रिफिथ । Slayer - विल्सन । Strike, Slay,
Kill - का0कैप0 । Kill Cut of, Slayer- मैकडानल ।

गम्भीर: - [वि0][=गम्भीर] - रघु0 1/36, दुर्दान्त, अड़ियल, गम्भीर, वा0
शि0आ0 । The deep - ग्रिफिथ । Profound - विल्सन ।
inscruitable, deep - का0कैप0 । Secret, deep, impervious -
मैकडानल ।

रघ्र_चोद: - ॥रघ्र + र॥ + ॥कृणा - चोद: ॥च्यु + ल्युट॥ उत्साह बढ़ाना, वा० शि० आप्टे । impell the miser - का०कैप० । inpen-trable sagacity - विल्सन । the breaker down ग्रिफिथ ।

पृथु - ॥वि०॥ ॥स्त्री० थु - थ्वी॥ तुलनीय प्रथीयस् उत्त०अ० प्रतिष्ठ प्रथ् + कु संप्रसारणम्॥ चौड़ा, विस्तृत, प्रशस्त, वा०शि० आप्टे । wide, large, extensive - का०कैप० । ample, abundant - मैक्डानल ।

यज्ञेन गातुमप्तुरो विविद्रिरे धियो हिन्वाना उशिजो मनीषिणः ।

अभिस्वरा निषदा गा अवस्यव इन्द्रे हिन्वाना द्रविणान्याशत ।। 5 ।।

अन्वय - धियो हिन्वाना: उशिज: मनीषिण: अभिस्वरा अप्तुर: गातुम् यज्ञेन विविद्रिरे निसदा द्रविणानि आशत गा: इन्द्रे अवस्यव: हिन्वाना: ।

हिन्दी अनुवाद - स्तुति {बुद्धि} को प्रेरित करते हुए शक्तिशाली {अङ्गिरसों ने} जलप्रेरक इन्द्र ने मार्ग को यज्ञ के द्वारा जान लिया शब्द गर्या रक्षाकामी इन्द्र के लिए {स्तुतियों} गायों को प्रेरित करते हुए धनों को उपसदन के द्वारा प्राप्त किया - वा0शि0 आप्टे ।

यज्ञेन - {यज् + भावे नङ्} याग या मख, यज्ञ सम्बन्धी कृत्य, यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवा:, वा0शि0 आप्टे । Worship, devotion, obluion - का0कैप0 । sacrifice, devotion - मैकडानल । Sacrifice - ग्रिफिथ एवं विल्सन ।

उशिज: - उशी {वश् + ई, संप्र0} कामना, इच्छा, वा0शि0 आप्टे । The same, desires, eager - का0कैप0 । desirous eager - मैकडानल ।

द्रविणानि - द्रविणम् {द्रु + इनन्} दौलतमन्द, धन, सम्पत्ति, वा0शि0 आप्टे । Treasures - विल्सन । Movable goods, property ग्रिफिथ ।

movable goods, property - का0कैप0 । money, wealth - मैकडानल ।

<u>मनीषिण:</u> - ॥वि0॥ ॥मनीषा + इनि॥ बुद्धिमान् विद्वान्, प्रज्ञावान्, चतुर, वा0 शि0आप्टे । wise - विल्सन । wise, humn, thoughtful- मैकडानल, reflexion, prayer- का0कैप0 । song found - ग्रिफिथ ।

<u>गा:</u> - ॥गै + डा॥ गाना, श्लोक, वा0शि0 आप्टे । worship - ग्रिफिथ । Praises - विल्सन । Study - का0कैप0 । Song, singer- मैकडानल ।

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे ।

पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् ॥ 6 ॥

अन्वय - इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि दक्षस्य चित्तिं अस्मे सुभगत्वं रयीणां पोषं तनूनाम् अरिष्टिम् स्वाद्मानं अह्नां सुदिनत्वं ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र [तुम] श्रेष्ठ धनों को, ख्याति को, दक्षता को, धनाढ्यता को हमें दो, धन की पोषकता, अरि की अहिंसा, वाणी की मधुकता, दिनों की अच्छाई को दो ।

श्रेष्ठानि - श्रेष्ठ, [वि] [अतिशयेन प्रसस्यः इष्ठन् आदेश] सर्वोत्तम अत्यन्त श्रेष्ठ, प्रमुखता - वा0शि0 आप्टे । Fairest, Bestew, Superior - का0कैप0 । Highest, Chief, Bestew- मैकडानल । Bestew - ग्रिफिथ। एवं विल्सन ।

दक्षस्य [वि0] [दक्ष + अच्] योग्य, सक्षम, विशेषज्ञ, चतुर, वा0शि0 आप्टे । Ability - ग्रिफिथ एवं विल्सन । Able - मैकडानल । Skilful- का0कैप0 ।

पोषं - [पुष + घञ्] पोषण, संपालन, पुष्टि, समृद्धि, प्राचुर्य, वा0शि0 आप्टे । Increase - ग्रिफिथ । Prosperity - विल्सन । rearing - abundance - का0कैप0 । Prosperity - मैकडानल ।

रयीणाम् - त्वया दत्तानां धनानाम् - सा०मु० । riches - ग्रिफिथ । wealth- विल्सन । Property, wealth- मैक्डानल । Treasure - wealth, money - का०कै०प० ।

अरिष्टम् - वि०न०ता० अक्षत, पूर्ण, अविनाशी, वा०शि० आप्टे । Safety - ग्रिफिथ । Security - विल्सन । misfortune - मैक्डानल । Safe - का०कै०प० ।

त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृपत्सोममपिबद्विष्णुना
सुतं यथावशत् । स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे
महामुरुं सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ॥ 1 ॥

अन्वय - महिषः तुविशुष्मः तृपत् त्रिकद्रुकेषु सुतम् यवाशिरं सोमं विष्णुना अपिबत् । यथावशात् सः महां उरुं ईम् ममाद महि कर्म कर्तवे सत्यः इन्दुः देवः सः सत्यं देवं इन्द्रं सश्चत् ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र । तीन कद्रुकों से युक्त, महान्, बहुबल वाले, तृप्त होने वाले, अभिषु मिश्रित, सोम को पिओ, सोम के महान तेज से विस्तीर्ण अमाद इको हे इन्द्र पियो, हे इन्द्र वृत्त को मारने का कर्म करने के लिए सत्य और देदीप्यमान सोम कामनावर्षण के लिए सर्वत्र व्याप्त है ।

कद्रुकेषु - (वि0) (स्त्री0 द्रु या द्रू) कद + रु, भूरे रंग वाली, भूरे ज्योति वाली - वा0शि0 आप्टे । Kadrakeshu - ग्रिफिथ । Kadruka विल्सन ।

महिष - (मह् + टिषच्) शक्तिशाली, ताकतवर, वा0शि0 आप्टे । The adrable- विल्सन । Great - ग्रिफिथ । महिषः महान्, पूज्य - सा0मु0 । mighty - strong - का0कैप0 । high, priest - मैकडानल ।

तृपत् - दिवा०स्वा०प०र० तृप्यति, तृप्त - संतुष्ट होना, प्रसन्न होना, परितुष्ट होना, वा०शि० आप्टे । तृपत् तृप प्राणने - सा०मु० । Poured out Some Juice - ग्रिफिथ । Fortaking of the Some - विल्सन । Having abundant juice - का०कैप० ।

कर्म - ‡नपु०‡ ‡कृ + मनिन्‡ कृत्य, कार्य, कर्म, सम्पादन, work, action, deed, का०कैप० । rite, fate, Business - मैकडानल । work - ग्रिफिथ । deeds - विल्सन ।

सत्यं - सत्य ‡वि०‡ सते हितं ‡सत् + यत्‡ सच्चा, वास्तविक, असली, सत्यवत् - वा०शि० आप्टे । True - ग्रिफिथ एवं विल्सन । real, true, valid, Karve Kapler; True, honest, truth - Macdonell.

महाम् - ‡कर्म० स० और ब०स० में प्रथम पद के रूप में तथा कुछ अनियमित शब्दों के रूप में प्रयुक्त महत् का स्थानापन्न रूप‡ विशे० उन समस्त शब्दों की संख्या जिसका आदि पद महा है बहुत अधिक है और अनेक शब्द बन सकते हैं - वा०शि० आप्टे । महाम् - महां महान्तम् - सा०मु० । great - ग्रिफिथ एवं विल्सन । great or chief - का०कैप० । great, chief, high, best - मैकडानल ।

अधा त्विषीमाँ अभ्योजसा क्रिविं युधाभवदा रोदसी अपृणदस्य मज्मना प्र वावृधे ।

अधत्तान्यं जठरे प्रेमरिच्यत सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ॥ 2 ॥

अन्वय - अध त्विषीमान् ओजसा क्रिविं युधा अभि अभवत् रोदसी आ अपृणत् अस्य मज्मना प्र वावृधे सः अन्यं जठरे अधत्त ईम् प्र अरिच्यत ।

हिन्दी अनुवाद - हे देदीप्यमान इन्द्र । बल से क्रिविं नामक राक्षस को युद्ध में अभिभूत किया (इन्द्र) आकाश पृथ्वी को अपने तेज से परिपूर्ण कर दिया । सोम को पीकर बल से परिपूर्ण किया, अर्थात् सोम को पीकर बल से क्रिवि राक्षस को परास्त किया । उस (सोम में) से एक भाग हमारे लिए तथा दूसरा आधा भाग देवताओं के लिए करो ।

युधा - युधा युद्धेन - सा० मु० । (युध् + क्विप् + टाप्) जंग, लड़ाई, संग्राम, वा० शि० आप्टे । in the battle - ग्रिफिथ । Warrior - मैकडानल । battle, warrior - का० कैप० ।

जठरे - (वि०) जायते जन्तुर्गर्भोवास्मिन् - जन् + अर ठान्त देशः ता रा० कठोर, सख्त, दृढ़, रः पेट, उदर, जठरें की न विभक्तिर्केवलं - पंच० 1/22, गर्भाशय, किसी वस्तु का भीतरी भाग । वा० शि० आप्टे । cavity, belly; का० कैप० । Cavy - मैकडानल । Efficacy - ग्रिफिथ ।

अध - ॥अव्यय॥ ॥अधर + असि॥, अधरशब्दस्य स्थाने अधादेशः, नीचे तले, बाद में, वा0शि0 आप्टे। Then, so, but, therefore का0कैप0 । So, therefore - मैकडानल । So - ग्रिफिथ । thereupon - विल्सन ।

अन्यम् - ॥वि0॥ ॥नपुं0॥ अन्यत्, दूसरा, भिन्न, वा0शि0 आप्टे । other, another, else, different- का0कैप0 । further, again, other- मैकडानल । other - विल्सन । one share - ग्रिफिथ ।

त्विषिमानः - त्विषिः त्विष + इन् - प्रकाश की किरण, वा0शि0 आप्टे । Brilliance, beauty - का0कैप0 । energy, splendid- मैकडानल । majesty - ग्रिफिथ । power - विल्सन ।

साकं जात: क्रतुना साकमोजसा ववक्षिथ साकं वृद्धो वीर्यै: सासहिर्मृधो विचर्षणि: ।

दाता राध: स्तुवते काम्यं वसु सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दु: ॥ 3 ॥

अन्वय - क्रतुना साकं जात: साकमोजसा ववक्षिथ वीर्यै: साकं वृद्ध: मृध: सासहि: विचर्षणि: स्तुवते राध: काम्यं वसु दाता सत्यम् इन्द्रं सत्य इन्दु: ।

हिन्दी अनुवाद - हे [इन्द्र] प्रज्ञा कर्म से बल से जगत् का भार वहन करो । शत्रु हिंसक पराक्रमी लक्षण से प्रबुद्ध होने हुए शत्रुओं को युद्ध में परास्त करो और सम्पूर्ण विश्व को शत्रुविहीन कर दो । पुण्य कृत्य से स्तुति करने वाले यजमानों के लिए प्रार्थनीय धन को प्रदत्त करो ।

साकम् - [अव्यय] [सह अकति + अक् + अमु सादेश:] के साथ मिलकर [करण के साथ] यान्ती गुरुजनै: साकम् स्मयमाना नतावुधा ¤ भामि० 2/132, उसी समय युगपत्, एक ही समय, वा०शि० आप्टे । साकम् ओजसाबलेन - सा०मु० । with each other, atonce, together-का०कैप० । with, together - मैकडानल । together - ग्रिफिथ । with - विल्सन । together - मैक्समूलर ।

वृद्ध - [वि०] [वृध् + क्त] [म०अ० ज्यायस् या वर्षीयस् उ०अ० ज्येष्ठ या वरिष्ठ] बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त, प्रगति या विकसित, बुद्धिमान, या विद्वान् बड़ा या विशाल, वा०शि० आप्टे । वृद्ध प्रवृद्ध - सा०मु० । Sarge, tall, strong, great, high - का०कैप० । High, old, great, strong - मैकडानल । wisdom - ग्रिफिथ । piceous- विल्सन ।

ससहि: - सस् [अदा०पर० सस्ति] सोना, ससहि [वि०] सह + सत्वेन ब०स०]

जीवनशक्ति से युक्त, उर्जस्वी, बलवान्, साहसी, वा0शि0 आप्टे । Hero - ग्रिफिथ । consicious,minister,hero - का0कैप0 । hero, gress - मैकडानल । heroic - विल्सन ।

मृधः - ‡मृध् + क‡ संग्राम, युद्ध, लड़ाई, सत्त्वहिहितमतुले भुजयोर्बलमस्य पश्यत मृधे धिकुप्यतः - कि0 12/39, वा0शि0 आप्टे । मृधः हिंसकान् संग्रामान्वा - सा0मु0 । battle, fight- का0कैप0 । combat, fight, foe, enemy - मैकडानल । growest - ग्रिफिथ ।

काम्य - ‡वि0‡ ‡कम् + णिङ् + यत्‡ वांछनीय, इच्छा के उपयुक्त, सुधा, विष्ण च काम्याशनम् - श0 2/8, रुचि के अनुकूल भाषण, किसी विशेष उद्देश्य या निष्ठा से किया गया धर्मानुष्ठान, स्वीकार करने योग्य उपहार, ऐच्छिक भेंट, वा0शि0 आप्टे । Lovely, pleasent, voluntary - का0कैप0 । dear, amiable, connected wish - मैकडानल । loved - ग्रिफिथ । substantial - विल्सन ।

राधः - ‡स्वा0पर0 राध्नोति, राद्ध, इच्छा0 रिरात्सति, ‡परन्तु मारना चाहता है के लिए रित्सति‡ राजी करना, मनाना, प्रसन्न करना, सम्पन्न करना, कार्यान्वित करना, पूरा करना, प्रस्तुत करना, ‡दिवा0पर0 राध्यति राद्ध‡ अनुकूल या दयार्द्र, सम्पन्न या पूर्ण करना, सफल होना, कामयाब होना, वा0शि0 आप्टे । Succeed, Prosper, Partake of - का0कैप0 । Prosperty, satisfy - मैकडानल । Prosperty - ग्रिफिथ । शधः - शाधकं - सा0 मु0 ।

तव यन्नर्यं नृतो प इन्द्र प्रथमं पूर्व्यं दिवि प्रवाच्यं कृतम् ।

यद्देवस्य शवसा प्रारिणा असुं रिणन्नपः ।

भुवद्विश्वमभ्यादेवमोजसा विदादूर्जं शतक्रतुर्विदादिषम् ॥ 4 ॥

अन्वय - नृतो इन्द्र नर्यं प्रथमं पूर्व्यं कृतं तव स्यत् अपः दिवि प्रवाच्यं देवस्य असुं रिणन् अपः प्रारिणाः विश्वं अदेवं ओजसा अभि भुवत् शतक्रतुः ऊर्जं विदात् इषं विदात् ।

हिन्दी अनुवाद - हे इन्द्र ! मनुष्यों के लिए हितकारी प्रथम सब पर नर्तयित प्राचीन काल से तुमने अपने बल से स्वर्ग लोक में विद्यमान हो । देवताओं को पीड़ित करने वाले राक्षसों को जाने से मार कर मार्ग को निरुद्ध किया विश्व अंधेरे में व्याप्त असुरों को पीछे भगाने के लिए वंदनीय हो । हे शतक्रतुः इन्द्र बल, हविर्लक्षण अन्न हमारे लाभ के लिए प्रदान करो ।

नर्यम् - नर्यम् नराणाम् हितकरः - सा0मु0 । deed or gift, manly, human, strong, capable, good - का0कैप0 । deed, manly, human - मैकडानल । deed - ग्रिफिथ । good - विल्सन ।

पूर्व्यम् - पूर्व्यं काल भवं त्वया - सा0मु0 । (वि0) पूर्व + अय् - पहले का, प्राचीन, पुराना, पुरातन, पुराने समय का, वा0शि0 आप्टे । Ancient - ग्रिफिथ एवं विल्सन । Ancient, old, former, previous - का0कैप0 । Old, ancient - मैकडानल ।

दिवि - [दिव् + इन्] दैवी, स्वर्गीय, प्रकाश, वा०शि० आप्टे । दिवि-स्वर्ग लोके - सा०मु० । heaven, the god of heaven, light - का०कै०प० । deaven, day, light, divine, ordeal - मैक्डानल । heaven - ग्रिफिथ एवं विल्सन ।

अरिणा - अरि: - पु० [ऋ० + इन्] शत्रु, दुश्मन, विजितारिपुर, सर, रघु० 1/59, मनुष्यजाति का शत्रु, वा०शि० आप्टे । अरिणा - देवस्य विजिगीषोरसुरस्य - सा०मु० । enemies - का०कै०प० ।

---------::0::---------

अध्याय चतुर्थ

द्वितीय मण्डल में आये प्रमुख पदों की व्याकरणात्मक टिप्पणी

अक्तुना - ﴾वि0﴿ अक् + क्त - समा हुआ, Light or night ;

मं0 2, अ 2, सू0 19. मं0 5.

अग्रे - ﴾वि0﴿ अङ्ग + रन् , न लोपश्च - प्रथम, सर्वोपरि A first ;

मं02, अ0 2, सू0 17, मंत्र 3.

अग्निम् - अंगति उर्ध्वंगच्छति अङ्ग नि लोपश्च आग - The Fire ;

मं0 2, अ0 2, सू0 12, मंत्र 3.

अङ्गिरस्वान् - पु0 ﴾अङ्ग - अस् + इ रु टाप्﴿ ऋग्वेद के अनेक सूक्तों का द्रष्टा एक प्रसिद्ध ऋषि - A kind of mythol ;

मं0 2, अ0 1, सू0 11, मंत्र 20.

अच्छ - अव्यय ﴾नञ् + छो + क﴿ लक्ष्य often ;

मं0 2, अ0 2, सू0 18, मंत्र 7

अजन: - वि0न0ब0 जनशून्य Solitary ;

मं0 2, अ0 2, सू0 17, मंत्र 7

अत्ति - ﴾स्त्री0﴿ अत्तिका ﴾अद् + क्तिन्﴿ स्वार्थे कन् च बड़ी बहन, भक्षण करना, अत्ति भक्षयति - The Food ;

मं0 2, अ0 2, सू0 13, मंत्र 4.

अद्य - ﴾वि0﴿ अद् + यत् - खाने योग्य, The Feerm to day ;

मं0 2, अ0 2, सू0 13, मंत्र 9.

अध - ﴾अव्यय﴿ अधर + असि - अधर शब्दस्य स्थाने अधादेश - तले, वाद में The repore - मं0 2, अ0 2, सू0 22, मंत्र 2.

अधरम् - ﴾वि0﴿ ﴾नञ् + धृ + अच्﴿ नीचे का Lower ;

मं0 2, अ0 2, सू0 12, मंत्र 4.

अध्वा - ॥अद् + क्वनिप्॥ रास्ता Road ;

मं० 2, अ० 2, सू० 13, मंत्र 2.

अन: - ॥अन् + अच्॥ सांस, अन् ॥अदा०पर०सेट्॥ जीना ।

मं० 2, अ० 1, सू० 10, मंत्र 6.

अनु - ॥अव्यय॥ अव्ययीभाव समास के लिए संज्ञा शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है या क्रिया अथवा कृदन्त शब्दों के साथ जोड़ा जाता है । After word again;

मं० 2, अ० 2, सू० 13, मंत्र 4.

अन्धम् - ॥वि०॥अन्ध् + अच्॥ अंधा, Blind ;

मं० 2, अ० 2, सू० 13, मंत्र 12.

अन्यम् - ॥वि०॥ नपुं० अन्यत् - दूसरा - other ;

मं० 2, अ० 2, सू० 22, मंत्र 3.

अन्तरिक्षा - region

मं० 2, अ० 2, सू० 14, मंत्र 3.

अध्वर्यु - अध्वर + क्यच् + पच् # ऋत्विक् - पुरोहित sacrifice ;

मं० 2, अ० 2, सू० 14, मंत्र 2.

अपिन्व: - फैलाया, विस्तृत किया, sellested ;

मं० 2, अ० 1, सू० 11, मंत्र 2.

अपि - ॥अव्यय॥ कई बार भागुरि के मतानुसार अ का लोप "वष्टि भागुरि रल्लो यम् वाप्यो रूपसर्गयोविधा पिधानम् आदि संज्ञा या धातुओं के साथ प्रयुक्त निकट या ऊपर रखना - Toe even -

मं० 2, अ० 1, सू० 11, मंत्र 12.

अप: - ॥स्त्री० ॥आप + क्विप्॥ इस्वश्च - यथा आप: अप: अद्भ्य: अपाम् परन्तु वेद में एकवचन, द्विवचन में भी प्रयोग होते हैं ।

मं० 2, अ० 1, सू० 11, मंत्र 3.

अप: - ॥स्त्री॥ ॥आप् + क्विप्॥ हृस्वश्च परिष्ठित भाषा के रूप में बहुवचन में ही रूप होते हैं। यथा अप: water ;

मं02, अ0 2, सूक्त 13, मंत्र 1.

अपाम् - ॥अप् ।- जल का सं0ब0व0॥ समुद्र, वरुण, water, sea

मं0 2, अ0 2, सू0 12, मंत्र 7.

अपारयत् - वि0 ॥न0त0॥ जिसका पार पाना कठिन हो - converged, across -

मं0 2, अ0 2, सू0 14, मंत्र 4.

अबुर्दम् - ॥र्बु॥ द: दम् ॥अर्बु॥ वि + विच् + उद् + इ + ड - सूजन, दस करोड़ की संख्या, अबू पहाड़ Snake like mass,

मं0 2, अ0 2, सू0 14, मंत्र 4.

अभित: - अभित: सर्वत: To word;

मं0 2, अ0 2, सू0 13, मंत्र 8.

अभ्यसेताम् - अभ्यस्त शब्द बार बार अभ्यास किया गया - Thrown ;

मं0 2, अ0 2, सू0 12, मंत्र 1.

अमत्रेभि: - अमति मुक्ते अन्नमत्र - अम् + आधारे अत्रन् - सामर्थ्य, strong ;

मं0 2, अ0 2, सू0 13, मंत्र 13.

अभि भूर्वे - अभिभूम: ॥अभि + भू + अप्॥ दमन्

मं0 2, अ0 2, सू0 21, मंत्र 1.

अभिभूत - ॥स्त्री0॥ अभि + भू + क्तिन् - प्रमुख - superior ;

मं0 2, अ0 2, सू0 21, मंत्र 1.

अमर्त्यम् - वि0 ॥न0त0॥ जो मरण धर्मी न हो - immortal ;

मं0 2, अ0 1, सू0 11, मंत्र 2.

अमानुषम् - ॥वि0॥ स्त्री + वी ॥न0त0॥ अमनुष्योचित् अपौरुषेय आदि - अमानवीय
no human - म0 2, अ0 2, सू0 17, मंत्र 10.

अमित्रा - ॥अम् + इत्र॥ जो मित्र न हो, शत्रु: यमा ह्वयन्ति । enemy -
म0 2, अ0 2, सू0 12, मंत्र 8.

अर्कै: - ॥अर्क + घञ् + कुत्वम्॥ प्रकाश की किरण The sun, fire,
म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 15.

अर्णो - अर्णांसि सन्ति यस्मिन् - अर्णस व स लोप: सागर - ware,
म0 2, अ0 2, सू0 19, मंत्र 3.

अर्य: - ॥ऋत् + यत्॥ श्रेष्ठ, बढ़िया, devoted ;
म0 2, अ0 2, सू0 12, मंत्र 4.

अरमय: - ॥अव्यय॥ ॥ऋ0 + अम्॥ तेजी से ; suitable ;
म0 2, अ0 2, सू0 13, मंत्र 12.

अरम्णात् - अरम्॥ अव्यय ऋ + अम् - तेजी से, पास ही ; suitable to ;
म0 2, अ0 2, सू0 15, मंत्र 5.

अरिणा - अरि: पर0 शत्रु - दुश्मन - देवस्य विजिगीषोरसुरस्य - enemies;
म0 2, अ0 2, सू0 22, मंत्र 4.

अवनी - ॥नी॥ ॥स्त्री0॥ ॥अव + अनि पक्षेङ्गीप् -पृथ्वी ; the earth;
म0 2, अ0 2, सू0 13, मंत्र 8.

अवयत् - ॥अव् + यत् + ल्युट्॥ उतरना, नीचे गिरना - fall ;
म0 2, अ0 2, सू0 14, मंत्र 5.

अवरे - वि0 ॥न वर: इति अवर: न0त0तु0 + अपु0बा0 - आयु में छोटा, कमजोर
lower; म0 2, अ0 2, सू0 12, मंत्र 8.

अवह: - हटाने योग्य Trushing;

मं0 2, अ0 2, सू0 13, मंत्र 9.

अवशे - अवशे स्वरक्षणाय, avare, help;

मं0 2, अ0 2, सू0 12, मंत्र 9.

अवाभिनत् - भिदिर विदरणेलङि. शिपिरसम् -अवाङ्मुखे यथा भवति - hast, cast down;

मं0 2, अ0 1, सू0 11, मंत्र 2.

अंश - Portion;

मं0 2, अ0 2, सू0 19, मंत्र 7.

अशनम् - Stone of a demon;

मं0 2, अ0 2, सू0 14, मंत्र 3.

अश्वास: - ‹वि0 + सान् + स› प्राप्त करना, घोड़ों को प्राप्त करने वाला, Skilled in horse;

मं0 2, अ0 2, सू0 12, मंत्र 7.

अशुषम् - अशुषम् केनाप्य शोषणयिम् - Greedy;

मं0 2, अ0 2, सू0 14, मंत्र 3.

अश्मनो - पु0 ‹अश् + मनिन्› पथर - rock;

मं0 2, अ0 2, सू0 12, मंत्र 3.

अश्वै - अश्व: ‹अंश + क्वन्› घोड़ा - Horse;

मं0 2, अ0 2, सू0 15, मंत्र 4.

अस्तम्नांत - अस्तमीयते गम्यतेस्मिन् इति अस्तम् - इ + अच् - गिरने से रोकना, Stayed;

मं0 2, अ0 2, सू0 17, मंत्र 5.

असि - अस् + इन् - हथियार - Sword;

मं0 2, अ0 2, सू0 12, मंत्र 15.

अहन् - (नपुं0) न जहाति त्यजति सर्वथा परिवर्तनम् न + हा + कनिन्, कर्तृ0 - अह:
दिन और रात को मिलाकर । मं0 2, अ0 1, सू0 11, मंत्र 5.

अहिम् - वि0 (न0त0) अंशु not cold;
म0 2, अ0 1, सू0 11, मंत्र 5.

(आ)

आ - विस्मयादिद्योतक अव्यय के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रयुक्त होता है, स्वीकृति ;Hither; म0 2, अ0 2, सू0 18, मंत्र 5.

आयुधा - आ + युध् + घञ् - हथियार - armed ;
म0 2, अ0 2, सू0 16, मंत्र 5.

आर्यांय - आर्य शब्द प्र0ए0व0 वि0 ऋ + ण्यत् श्रेष्ठ, योग्य, आदरणीय, faithfull belonging; म0 2, अ0 1, सू0 11, मंत्र 18.

आरित: - (आ + रा + क्तिच्) शत्रु । enemy;
म0 2, अ0 2, सू0 21, मंत्र 3.

आश्यानम् - भू0 + क0 + कृ0 (आ + श्यै + क्त) जमा हुआ, सम्बन्धित, कि0 16/ megician ; म0 2, अ0 1, सू0 11, मंत्र 9.

आस्यम् - अस्यते ग्रासो त्र अस् + ण्यत् मुँह, जबड़ा, mouth;
म0 2, अ0 2, सू0 13, मंत्र 8.

(इ)

इति - (अव्यय) ई + क्तिन् - यह अव्यय किसी के द्वारा बोले गये या समझे गये वैसा का वैसा रख देने के लिए प्रयुक्त किया जाता है । Thus;
म0 2, अ0 1, सू0 11, मंत्र 7.

इत्था धी - इदे + थमु - इस प्रकार - अधी ‖अध् + रन्‖ खूब पढ़ा हुआ - right; मं० 2, अ० 2, सू० 20, मंत्र 2.

इन्द्र - इन्द् + रन् - इन्दताति इन्दु: दिशेश्वरम् मल्लि० देवों का स्वामी, वर्षा का स्वामी । मं० 2, अ० 1, सू० 11, मंत्र 8.

इशिषे - ईश् ‖वि‖ ईश + क अपनाने वाला - owner ; मं० 2, अ० 2, सू० 16, मंत्र 5.

इषमू - ‖इष् + अच्‖ बलशाली - strength; मं० 2, अ० 2, सू० 18, मंत्र 7.

‖ई‖

ईषीताम् - अव्यय ईष् ‖+ ईषन् + तल + टाप् त्वल वा जरा कुछ सीमा तक, थोड़ा सा rise up; मं० 2, अ० 1, सू० 11, मंत्र 8.

ईषानकृत - ईश + ता‖लिये या नरा नरा कृत् - Ruling over x rular; मं० 2, अ० 2, सू० 17, मंत्र 4.

‖उ‖

उक्थ्य: - वच् + थक् + य: कथन - praise, worthy; मं० 2, अ० 2, सू० 13, मंत्र 8.

उग्रेषु - ‖वि०‖ ‖उच् + रन्‖ गश्चान्तादेश: क्रूर, जंगली - huge fierce; मं० 2, अ० 2, सू० 11, मंत्र 14.

उर्णुत - अदा०उभ० ‖उर्णोरर्णौ‖ ति उर्णुते ढकना - cover; मं० 2, अ० 2, सू० 14, मंत्र 4.

उचथ - उचथ स्त्रोतं Praise;

मO 2, अO 2, सूक्त 19, मंत्र 7

उत - ॥अव्यय॥ उ + क्त eidher;

मO 2, अO 2, सूक्त 12, मंत्र 5.

उपस्थे - उपस्थे, उत्सङ्गे ; grain;

मO2, अO 2, सूक्त 14, मंत्र 7.

उभया - सर्वO विO स्त्रीO + यी - उभ + अयट् यद्यपि यह अर्थ की दृष्टि से द्विवचनान्त है परन्तु इसका प्रयोग एकवचन में होता है ।

मO 2, अO 12, सूक्त 12, मंत्र 9.

उरणम् - स्त्रीO + णी - ऋO + क्यु उत्वं रपरश्च भेंड़ा aram.

मO 2, अO 2, सूक्त 14, मंत्र 4.

उर्वान - महतः प्राणिनि कायान् पर्वतान् वा अजनयतः ॥विO॥ ॥उरु + अ॥ विस्तृत बड़ा ; Saint; मO 2, अO 2, सूक्त 14, मंत्र 4.

उशिजः - उशी ॥वश् + ई सप्रO कामना - eager;

मO 2, अO 2, सूक्त 21, मंत्र 5.

उषः - उष् + क - प्रातःकाल morning;

मO 2, अO 2, सूक्त 20, मंत्र 5.

उह्यमानाः - उह् + य + अम् + अन् - ढोये जाते हुए - carried ;

मO 2, अO 2, सूक्त 18, मंत्र 6.

उक्षितः - विO उक्ष् + क्त - सींचा गया - grow up;.

मO 2, अO 2, सूक्त 21, मंत्र 3.

॥ऊ॥

ऊती - स्त्री0 अव + क्तिन् - संरक्षा - Protector;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 20, मंत्र 2.

ऊधः - नपुं0 उन्द् + असुन् ऊध आदेश - ऐन ॥बहुव्रीहि समास में बदलकर ऊधम् हो जाता है - udder; मं0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 10.

ऊर्जम् - ऊर्जः Food; ऊर्ज् + णिच् + अच् - भोजन ।

मं0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 8.

॥ए॥

एकः - सर्व0वि0 ॥इ + कन्॥ एक, अकेला, एकेला, एकाकी, केवल, मात्र, जिसके साथ कोई और न हो वचस्येकं, कर्मण्येकं, महात्मानाम, हि0 1-110,
Alone, single; मं0 2, अ0 2, सूक्त 13, मंत्र 3.

एतश - as, thus; मं0 2, अ0 2, सूक्त 19, मंत्र 5.

एषः - भ्वा0 + उभ0 एषति - ते + एषित - जाना, पहुँचना, शीघ्रता से जाना, Creck, rushing; मं0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 2.

॥ऐ॥

ऐरयत् - The reture of the some;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 17, मंत्र 1.

॥ओ॥

ओक् - ॥उच् + क नि0 यस्य कः॥ घर, शरण, Home, House,

मं0 2, अ0 2, सूक्त 19, मंत्र 1.

ओजः - ॥नपुं0॥ ॥अव्ज् + असुन्॥ व लोप: गुणश्च, बल, सामर्थ्य, strength;
म0 2, अ0 2, सूक्त 17, मंत्र 2.

॥क॥

कर्म - ॥नपुं0॥ ॥कृ0 + मनिन्॥ कृत्य - कार्य, work ;
म0 2, अ0 2, सूक्त 22, मंत्र 1.

कद्रकेषु - ॥वि0॥ ॥स्त्री0 + द्र + द्रु॥ कद् + रु॥ भूरे रंग वाली, Kadrakesu;
म0 2, अ0 2, सूक्त 22, मंत्र 1.

कतुना - ॥कृ + कतु॥ तृतीया ए0व0 यज्ञ कर्म से

काम्य - ॥वि0॥ ॥कम् + णिङ्. + यत्॥ वांछनीय विष्ण च काम्याशनम् श0 2/8.
lovely; म0 2, अ0 2, सूक्त 22, मंत्र 3.

केतुः - चाय् + तु को आदेश - पताका झंडा, शुकमिव केतो प्रतिवार्तनीयमानस्य - श0 1/35 मुख्य - mark, chief;
म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 6.

कुक्षी - ॥कुष् + क्सि, जिह्मताहमात कुक्षि: ॥भुजश्रयति मृच्छ 9/12, गर्भाशय, पेट, cave valley; म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 10.

कुह - कुह् + स्तुभ + क, विष्णु - समुद्र - where;
म0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 5.

कृशास्य - ॥वि0॥ ॥म0य0 क्रशीयस् उत्त0 क्रशिष्ठ कृश् + क्त नि0॥ कृश शब्द षष्ठी एकवचन दुबला, पतला - Thin;
म0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 6.

किल - (किल् + क) क्रीड़ा, तुच्छ (अव्यय) किल् + क निश्चय ही - indeed,
म0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 15.

कर्तन् - (कृत् + ल्युट्)काटना - cutting;
म0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 9.

करणानि - (कृ + ल्युट्) करना - active;
म0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 1.

क्रतुना - (कृ + क्तु तृतीया एकवचन यज्ञ कर्म से, क्रतुना कर्माणा, Power;
म0 2, अ0 2, सूक्त 13, मंत्र 11.

कुत्सस्य - चुरा0आ0 कुत्सयते - Blamable;
म0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 7.

कामः - (कम् + घञ्) कामना, इच्छा, कामम् अभिलाषम् - wish;
म0 2, अ0 2, सूक्त 20, मंत्र 4.

कृष्ण योनीः - कृष्ण (वि0 कृष् + नक्) काला, श्याम, योनिः - पु0 (स्त्री0)
यु + नि - गर्भाशय - Black caste;
म0 2, अ0 2, सूक्त 20, मंत्र 7.

कामी - (वि0)(स्त्री0 + मी) कम् + णिनि इच्छुक - कामीहि - कामयमानो हि
sx wish; म0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 1.

कोशः - (ष) शम् (कुष्) ष + घञ् अच वा - तरल पदार्थ वाला बर्तन, Box,
chest; म0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 5.

कनीनाम् - (कन्+ ई) अपवण योरति श्येनयुवा अल्पयोता कनी (कम + ई) स्त्रियाँ
girls; डपि) कन्या, कनीनाम् कन्द का नाम - म0 2, अ0 2, सू0 15, मं07.

कृत्रिमाणि - कृत्रिम ॥वि0॥ कृत्या + निर्मितम्॥ कृ + क्त + मप्, बनावटी, काल्प-
निक, कृतमाणि कृपया निवृतानि ।

मं0 2, अ0 2, सूक्त 15, मंत्र 8.

॥ग॥

गुहा - ॥गुह् + टाप्॥ गुफा, कन्दरा, छिपने का स्थान गुहानिब्द्धि पुनिशब्ददीर्घम्
रघु0 2/28/5, धर्मस्य निहितम् गुहायाम् महा0 2, छिपना, ढंकना,
cave, mine; मं0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 5.

गर्भः - ॥गृ + मन्॥ गर्भाशय, मं0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 2.

गम्भीरः - ॥वि0॥गम्भीर॥ रघु0 1-36, दुदन्ति, गम्भीर, The deep;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 21, मंत्र 4.

गातुम् - ॥गम् + तुमुन्॥ जाने के लिए रास्ता - Motion way;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 20, मंत्र 5.

गुह्यम् - ॥सं0 + कृ0॥ गुह् + क्यप् - छिपाने के योग्य गोपनीय, गुह्यम् च गूह्यति
भर्तृ0 12-117/2, Hidden or covered;

मं0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 5.

ग्रामा - ग्रसः + मन् आपन्तदेश ग्राम शब्द प्रथम बहुवचन, गांव, पुरवा, पत्तने विद्य
माने पि ग्रामेरत्नपरीक्षा, माल0वि0 । The village;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 7.

॥घ॥

घोरम् - ॥वि0॥ घुर + अच् - भयंकर, डरावना, careful, terrific;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 5.

॥च॥

च्यवना - ॥च्य + ल्युट्॥ चलना, गति, Moving;

मO 2, अO 2, सूक्त 12, मंत्र 4.

चक्रम् - ॥क्रियते अनेन कृ + घ थें क नि0 दित्वम् गाड़ी का पहिया, चक्र - Circle;

मO 2, अO 2, सूक्त 19, मंत्र 2.

चत्वारिंश्याम् - चत्वारो दस्याम् परिमाणस्य ब0स0नि0 चार - Forth;

मO 2, अO 2, सूक्त 12, मंत्र 11.

चन् - अव्यय , नहीं, न केवल, Indeed, also;

मO 2, अO 2, सूक्त 16, मंत्र 2.

चिकेत - नचिकेतस् - चिकेत्

मO 2, अO 2, सूक्त 14, मंत्र 10.

चित्रम् - ॥वि - चित्र + अच् चि + ष्ट्रन् वा स्पष्ट, चितकबरा, धब्बेदार, manifest;

मO 2, अO 2, सूक्त 14, मंत्र 12.

चोदम् - good whip;

मO 2, अO 2, सूक्त 13, मंत्र 9.

चोदिता - ॥भू + क + कृ॥ ॥चुद् + णिच् + क्ता॥, भेजा, निर्दिष्ट, Prepect;

मO 2, अO 2, सूक्त 12, मंत्र 6.

॥ज॥

ज्येष्ठतमाय - वि0 - अमेषानति शयेन वृद्ध: प्रशस्यो वा + इष्ठन् ज्यादेश: आयु में सबसे बड़ा जेठा, श्रेष्ठतम, Principal;

मO 2, अO 2, सूक्त 16, मंत्र 1.

ज्योति - धात्वतेद्युत्यते वा द्युत + इमुन दस्य ज्यादेश: प्रभा, दमक, ज्योतिर्मय (ज्योतिष् + मयट्, तारों से युक्त, consisting;

मं0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 18.

जघान् - (हन् + घञ् + टाप्) प्रहार करने वाला, जघान्, हतवान् slayer;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 11.

जनित्री - (ज नितृ + ङीप्) माता, जनित्री सोमस्य जनयित्री जननीभवति, Mother;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 13, मंत्र 1.

जठर - (वि0) जायते जन्तु गर्भो वास्मिन् (जन् + ठर + ठान्त) कठोर, Hard;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 2.

जरा - जृ + अङ्ग + टाप्) जरा शब्द के स्थान पर विकल्प से जरस् का आदेश होता बुढ़ापा, क्षीणता, Roaring;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 1.

जरित्रे - (वि0 (जरा + इत्र्) बुढ़ापा, Thine;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 9.

जनुष - नपुं0 (जन् + उसि) जन्म, Birth, origin;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 17, मंत्र 6.

जात - भू + क + कृ - जनु + क्त - अस्तित्व में लाया गया, जनम दिया गया - Creature;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 1.

जुहोत्र - (जु + रितप्) जुहोत - क्रिया से सम्पन्न होने वाले अनुष्ठान का नाम है Burnt;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 1.

जू - (भ्वा0दिवा0पर0चुरा0उभ0 जरति जर्जर होना, सूखना, जूर्म जीर्णो यथा -

मं0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 3.

old;

जोषम् - जष् + घञ् - संतोष, प्रसन्नता, fond;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 21, मंत्र 3.

जोहूत्र - जोहूत्र स्तोतृभिराहातव्यो होतत्योवा - calling, aloud;
मO 2, अO 2, सूक्त 20, मंत्र 3.

॥ त ॥

तव - तद शब्द के रूप की भांति प्रयुक्त होता है यथा तस्मात तस्या: ततो न्य
त्रापि दृश्यते - Thou मO 2, अO 1, सूक्त 11, मंत्र 19.

तन्व - तन् ॥तन् + ऊ॥ शरीर, Body;
मO 2, अO 1, सूक्त 11, मंत्र 2.

तन्वि - तन् + ङीष्॥ सुकुमार या कोमलांगी - Body;
मO 2, अO 2, सूक्त 16, मंत्र 2.

तक्ष - भ्वाOस्वाO परO तक्ष - तक्षति, चीरना - make;
मO 2, अO 2, सूक्त 19, मंत्र 7.

तरन्त - ॥तृ + अच्॥ समुद्र - मO 2, अO 1, सूक्त 11, मंत्र 19.

तराय - तृ + अप् चतुर्थी एOवO, पार जाने के लिए - crossing;
मO 2, अO 2, सूक्त, 13, मंत्र 12.

तरुत्र - तरुत्र शत्रूणाम् हिंसक हे इन्द्र associated;
मO 2, अO 2, सूक्त 11, मंत्र 15.

तस्थुः ॥विO॥ ॥स्था + कु + द्वित्वम्॥ स्थावर - immovable;
मO 2, अO 2, सूक्त 13, मंत्र 5.

त्वाष्ट्रम् - त्वाष्ट्रम् त्वष्टुः सुतः - unsgobst;
मO 2, अO 1, सूक्त 11, मंत्र 19.

त्विषिमान: - त्विषि: त्विष + इन् - प्रकाश की किरण - energy, splendid;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 22, मंत्र 2.

त्रिताय - ꞉वि0꞉꞉स्त्री0+ पी꞉ त्रयो वयतायस्य - त्रि तयप् तीन भागों वाला,
For Trita; मं0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 19.

तितिक्षते - तिज् + सन् + अ + टाप् द्वित्वम् - सहिष्णु, सहन करने वाला ।
Patience; मं0 2, अ0 2, सूक्त 13, मंत्र 3.

तृपत् - दिवा0स्वा0पर0 तृप्यति, तृप्त, संतुष्ट होना, तृपत तृप प्राणने - powered out some juice;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 22, मंत्र 1.

तृतीय - ꞉वि0꞉ ꞉त्रि + तीय꞉ सं0पु0 तीसरा - Third;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 2.

त्रिकशा: - त्रि, सं0वि0 केवल ब0व0, कर्तृ0पु0 त्रय स्त्री त्रिस नपुं0 कशा: ꞉कश + अच्꞉ कोणा - Tree rope;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 2.

तुतोद् - तुदा0 पर0 तुदति, तुप् प्रविशि गृहमिति प्रद्योतमाना न चलति भाग्यकृतां दशामवेक्ष्य मृच्छ0 1-56, प्रेरित करना, directed;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 20, मंत्र 5.

तुवि: - mighty; मं0 2, अ0 2, सूक्त 21, मंत्र 2.

तुविष्मान् - mighty, powerfull;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 12.

दस्यून् - [दस + युच] राक्षसों का समूह, Class of demon;

मO 2, अO 2, सूक्त 13, मंत्र 11.

दस - [सं0वि0ब0व0] दंश् + कन् - दस - Tenth;

मO 2, अO 2, सूक्त 13, मंत्र 10.

दस्यु - दस् + युच्] दुष्कर्मियों या राक्षसों का समूह, Foe, enemy;

मO 2, अO 1, सूक्त 11, मंत्र 18.

दक्षिय - [वि0] [दक्ष् + अच्] योग्य, ability;

मO 2, अO 2, सूक्त 21, मंत्र 6.

दक्षिणा - [अव्यय], दक्षिण + आप्] ब्राह्मणों का उपहार, Gift;

मO 2, अO 2, सूक्त 17, मंत्र 9.

दानवेश्याम - दुनाति [दु + घ] दव् दहन, Fixed;

मO 2, अO 2, सूक्त 17, मंत्र 7.

दानम् - दा + ल्युट - उपहार, Gift;

मO 2, अO 1, सूक्त 11, मंत्र 18.

दानुम् - दानु: दानो:, Class of demon;

मO 2, अO 1, सूक्त 11, मंत्र 18.

दानवस्य - दानव षष्ठी एकवचन, दनो: आपत्यम् दनु: अण् राक्षस, पिशाच, demon;

मO 2, अO 1, सूक्त 11, मंत्र 10.

दासम् - दास + अच् - गुलाम, दासवर्ण शूद्रादिकम् यद्वा दासमुपक्षपयितारम् - The house servent;

मO 2, अO 2, सूक्त 12, मंत्र 4.

दासी: - [दास + ङीष्] सेविका - Dasaroces;

मO 2, अO 1, सूक्त 11, मंत्र 4.

द्वाभ्याम् - द्वि शब्द तृतीय द्विवचन, वि० संख्या कर्तृ० द्वि०व०प्र० द्वौ स्त्री० नपुं०,
Double; म० 2, अ० 2, सूक्त 18, मंत्र 4,

द्यावा - द्यावापृथ्वी - heaven and earth;
म० 2, अ० 2, सूक्त 12, मंत्र 13.

दिवि - [दिव् + इन्] दैवी, स्वर्गीय, दिवि स्वर्ग लोके -
म० 2, अ० 2, सूक्त 22, मंत्र 4.

द्वितीय - [वि०] [स्त्री० यी] द्वि + अयट्, दो-हरा, Second;
म० 2, अ० 2, सूक्त 18, मंत्र 3.

दुस्तर - [दु + सद् + तर] दुस्तर, unassilable;
म० 2, अ० 2, सूक्त 21, मंत्र 2.

देव: - [वि०] [स्त्री० वी] दिव् अच् + दिव्य स्वर्गीय, भग० 9-11, divine;
म० 2, अ० 2, सूक्त 20, मंत्र 6.

दृहितानि - दृह् + भ्वा०पर० दृहति दृंहति, make firm;
म० 2, अ० 2, सूक्त 13, मंत्र 8.

दंष्ट्रै - [दंश + ष्ट्रन् + टाप्] बड़ा दांत, विषैला दांत, द्रष्ट्रै, दन्तै, Bite;
म० 2, अ० 2, सूक्त 13, मंत्र 4.

दभीकम् - सर्वान् विदानयति भयंकरोतितीनाम् सुनु: of a demon;
म० 2, अ० 2, सूक्त 14, मंत्र 3.

दृंहतु - दृंह् [भ्वा०पर० दर्हति दृंहति, स्थिर या दृढ़, be firm;
म० 2, अ० 2, सूक्त 17, मंत्र 5.

॥धा॥

धत्त - ॥धा॥ ॥दा॥ लो०म०पु०ब०व०, मध्यस्थ क्रिया - निधात् -

म० 2, अ० 2, सूक्त 12, मंत्र 5.

धनम् - धन् + अच् सम्पति धन, निधि, Prize, wealth;

म० 2, अ० 2, सूक्त 13, मंत्र 10.

धनजिते - धन् + अच् - सम्पत्ति । The lord of wealth;

म० 2, अ० 2, सूक्त 21, मंत्र 1.

धमनिम् - नी - धम् + अनि, धमनि ङीष्, नरकुल, शिरा, गला, flewmenting;

म० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 8.

धायस् - nourishing, nourish;

म० 2, अ० 2, सूक्त 17, मंत्र 2.

धुनिम् - स्त्री०, हिलाना, want to rare or roar;

धुनिम् धुनोति, स्तोतृणाम, पापानांति पुरूणी, नदी

धुरि - धुरयि - वि० धुरे वहति धुर् + रव छ वा बोझा, Yope or Pole;

म० 2, अ० 2, सूक्त 18, मंत्र 7,

धौतीनाम् - धौत् शब्द षष्ठी बहुवचन भू + क + कृ धाव् + क्त, धोया हुआ, बहाया गया, Washing;

म० 2, अ० 2, सूक्त 13, मंत्र 5.

धृष्णवे - धृष्णु ॥वि०॥ ॥धृष् + क्नु॥ दिलार, Bold, Strong;

म० 2, अ० 2, सूक्त 16, मंत्र 4.

ॄनॄ

नमम् - bending;   मं0 2, अ0 2, सूक्त 19, मंत्र 7.

नर - ॄनृ + अच्ॄ मनुष्य, प्रमाण, पुरुष, man, husband, hero;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 19, मंत्र 7.

नव्यम् - ॄवि0ॄ नव + रव यत् परॄ नया, ताजा, newly; नव, Fresh;
ताजा,   मं0 2, अ0 2, सूक्त 17, मंत्र 1.

नव - ॄवि0ॄ, ॄनु + अप्ॄ नया, ताजा, New, fresh, young;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 1.

नवति - ॄस्त्री0ॄॄनि0ॄॄनब्बेॄ नव नवति शाता द्रव्य कोटिव रास्ते मुद्रा 3/27
Ninety;   मं0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 6.

नवतिम् - स्त्री0 ॄनि0ॄ, नब्बे, Ninety;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 19, मंत्र 5.

नक्षति - नक्षति हविषा परिचरति, worships;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 20, मंत्र 2.

नशथ - ॄदिवा0पर0 नश्यति, नष्ट, प्रेर0 नाशयति, इच्छा, निनंक्षति, निनशिष
खोया जाना, अन्तर्ध्यान होना, attain, get, meet;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 8.

नर्यम् - नर्य नराणाम हितकर:, deed or gift;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 22, मंत्र 4.

नमुचिम् - ॄन + मुच् + इन्ॄ एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मार गिराया था ।
Of a demon slain by Indra;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 5.

नाना - अव्यय ‡न् + ना ‡ अनेक, विभिन्न, different;

मO 2, अO 2, सूक्त 12, मंत्र 8.

नावं - नौ + अम्, किश्ती,पानी की जहाज, Boat;

मO 2, अO 2, सूक्त 16, मंत्र x6

नदीनाम् - नदी शब्द षष्ठी बहुवचन ‡नद् + ङीप्‡ दरिया, सरिता, रविपति जलातपात्यये पुनरोधेन हि प्रज्जते नदी कु - ज/44, नदीनाम् खानि निर्गमनद्वाराणि - River, Flowing;

मO 2, अO 2, सूक्त 13, मंत्र 3.

नि_चित: - निश्चत: ‡भू + क + कृO‡ ‡नि + चि + क्त‡ ढका हुआ, आच्छादित Heaped or piled;

मO 2, अO 2, सूक्त 12, मंत्र 13.

नु - ‡अव्यय‡ नुद् + डु - प्रश्नवाचकता का द्योतक तथा संदेह तथा अनिश्चतता प्रकट करने वाले अव्यय स्वत्मोनुमायानुमतिभ्रमो नु - शO अन्तशैल गहनं नु - Now, still, indeed;

मO 2, अO 1, सूक्त 11, मंत्र 15.

नूतना - ‡विO‡ ‡नव + तनप्‡ त्नवा‡ नू आदेश: नया नूतनो राजा समाज्ञापयति, उO/रघुO 8/13, Strance;

मO 2, अO 2, सूक्त 17, मंत्र 6.

नूनं - ‡विO‡‡नव + अन् + अम्‡ असंदिग्ध रूप से, निश्चित रूप से, the refore;

मO 2, अO 2, सूक्त 16, मंत्र 9.

नृम्ण - Strengths; मO 2, अO 2, सूक्त 19, मंत्र 4.

नृम्णस्य - नृम्णस्य सेना लक्षण स्यवलस्य; manliness;

नृजिते - पुं0 ॥नि + श्रन् + डिग्च्॥ कर्तृ0ए0व0, सम्बन्ध, ब0व, नृणां - मनुष्यजाति जित - The lord of man;

म02, अ02, सूक्त 21, मंत्र 1.

॥ब॥

बहु - ॥वि0॥॥स्त्री0॥हु+ही॥ बह् + कु न लोप; म0अ0 भूयस उ0अ0 भूयिष्ठ, अधिक much;

म0 2, अ0 2, सूक्त 13, मंत्र 13.

बाह्वोर्दधाना - बाहु - ॥बाधु + कु धस्य हः॥ भुजा दधाना, दा दधते - पकड़ना, धारण करना, Drops from the arms;

म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 4.

बृहन्त - बृहत् ॥वि0॥ ॥स्त्री0 + ती॥ ॥बृह् + अति॥ विस्तृत, विशाल, बड़ा, स्थूल, High, great;

म0 2, अ0 2, सूक्त 15, मंत्र 2.

बृहन्त - ॥वि0॥ ॥स्त्री + ती॥ ॥बृह् + अन् + त॥, बृहत, विस्तृत, Great, big;

म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 16.

ब्रह्मण - ॥ब्रह्मन् + अण्॥ हिन्दू वर्ण में सर्वप्रथम वर्ण का व्यक्ति, one who prays;

म0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 6.

ब्रह्मन् - नपुं0 ॥बृह् + मनिन्॥ नकारस्याकारे श्रतोरत्वम् परमात्मा जो निराकार और निर्गुण समझा जाता है, prayer, god, friest.

म0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 7.

ऋभऋ

भग - भज् + घ, अच्छी किस्मत, भाग्य, distributer;

मO 2, अO 2, सूक्त 17, मंत्र 7.

भर - विO ऋभृ + अच्ऋ धारण करने वाला, देने वाला, Bearing;

मO 2, अO 2, सूक्त 17, मंत्र 7.

भरे - विO ऋभृ + अच्ऋ धारण करने वाला, Bearing;

मO 2, अO 2, सूक्त 16, मंत्र 1.

भरत: - भरं तनोति - तन् + ड - शकुन्तला, और दुष्यन्त का पुत्र जो चक्रवर्ती राजा था। राजकुमार। Prince, Hero, Of Agni;

मO 2, अO 2, सूक्त 14, मंत्र 7.

भरामहे - ऋभृ + टाप् + महेऋ धारण करने वाला, संपादित करने वाला, carrying, Brings;

मO 2, अO 2, सूक्त 20, मंत्र 1.

भाग - भज् + घञ् - खण्ड, अंश, Share, Part;

मO 2, अO 2, सूक्त 17, मंत्र 7.

भानुना - भा + नु - प्रकाश, कान्ति, Light, beam;

मO 2, अO 2, सूक्त 16, मंत्र 4.

भुवन - Being, existence;

मO 2, अO 2, सूक्त 17, मंत्र 9.

भू - ऋभ्वाOपरO - आ, विरल, भवति, भूत, Become, be,

मO 2, अO 2, सूक्त 17, मंत्र 2.

भूत - ऋभू + क + कृऋ ऋभू + क्तऋ जो हो चुका हो, Become,

मO 2, अO 2, सूक्त 18, मंत्र 1.

भूय - ‡वि0‡ ‡स्त्री0‡ बहु + ईंप सुन् ई लोपे भ्यादेश: अधिकतर, अपेक्षाकृत, More; म0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 11.

भूम्या - ‡स्त्री0‡ भवन्त्यस्मिन् भूतानि भू + नि, कि चताडपि‡ पृथ्वी, The earth, soil; म0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 7.

भूमि - ‡स्त्री0‡ भवन्त्यस्मिन् भूतानि भू + नि0 कि चवाडपि‡ पृथ्वी, स्वर्ग, द्यौ भूमिरापो हृदयं यमश्च पंच0 1. 1.82,

म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 7.

भोज: - भुज् + अच् - एक जाति का नाम, शासक, पालनकर्ता, Liberal;

म0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 8.

भोजम् - ‡भुज् + अच्‡ मालवा का प्रसिद्ध शासक भोज । जा एक जाति का नाम है । Bountiful, Liberal; म0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 10.

‡म‡

महत् - ‡वि0‡ ‡म0अ0‡ महीयस् उ0अ0 महिष्ठ कर्तृ0 ‡पुं0‡ कर्म ब0व0 महत: मह + अति - बड़ा - Great; म0 2, अ0 2, सूक्त 15, मंत्र 1.

महत: - एक प्रसिद्ध विद्वान् तथा शास्त्रप्रणेता वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक वेदान्त सूत्रों के भाष्यकर्ता, of a name;

म0 2, अ0 2, सूक्त 19, मंत्र 2.

मज्मन् - महान् mighty; म0 2, अ0 2, सूक्त 17, मंत्र 4.

मद्यम् - ‡वि0‡ मद्यत्वेन करणेयत् मादक - Liquor

म0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 1.

मन्दन्तु - ॥वि0॥ ॥मन्द + अच् + न्तु॥ धीमा, बन्द बुद्धि -

म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 11.

महानि - महानि महान्ति; greatness;

म0 2, अ0 2, सूक्त 15, मंत्र 1.

महाम् - यह महत् का स्थानापन्न रूप है । इसका आदि पद महा है - बड़ा - mighty, great;

म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 9.

मन्दिरम् - ॥वि0॥ माद्यति अनेन मद् करणे किरच मादक, मदकरमिमं spritious liquor;

म0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 9.

महि - कर्म0स0 और ब0व0 में प्रथमपद के रूप में अनियमित शब्दों के प्रारम्भ में प्रयुक्त महत् का स्थानापन्न रूप, greatly;

म0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 10.

महिष - ॥मह् + टिषच्॥ शक्तिशाली, great, mighty;

म0 2, अ0 2, सूक्त 22, मंत्र 1.

मनीषिण: ॥वि0॥ ॥मनीषा + इनि॥ बुद्धिमान, wise;

म0 2, अ0 2, सूक्त 21, मंत्र 5.

मक्षु - मङ्क्ष + उन पृषो0 सस्यक्षत्वम् - तुरन्त, शीघ्र, quickly;

म0 2, अ0 2, सूक्त 13, मंत्र 1.

मधुमत्त - ॥व0॥ ॥स्त्री0 पु0 या हती॥ मन्यत इति मधु - मत + उ तस्य त मधुर नपुं0 तस्य त॥ मधुर, sweet;

म0 2, अ0 2, सूक्त 13, मंत्र 6,

मन्दसान: ॥मन्द + शानच्॥ अग्नि, glad;

म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 3.

माया - ॥मीयते अनया - मा + य + टाप् वा नेत्वम् धोखा, जाल-साज,
Fraud; म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 10.

मायाविन: - ॥वि0॥ माया अत्यर्थे विनि, धोखेबाज, magical;
म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 9.

मारुते - ॥वि0॥ ॥स्त्री0 + ती॥ मरुत + अण मरुत सम्बन्धी, मा मरुत से उत्पन्न
Strength of the Maruts;
म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 14.

मानुष: - ॥वि0॥ ॥स्त्री0 + वि0॥ मनोरमयम् अण् + सुक् मनुष्य, इन्सान, human;
म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 10.

माहिन: - ॥वि0॥ ॥स्त्री0 + इन्॥ उत्तम, Glad;
म0 2, अ0 2, सूक्त 19, मंत्र 3.

मुष्णन् - ॥क्र्या0पर0 मुष्णाति, मुष्पति इच्छा0 मुमषिषति॥ अपहरण - steal;
म0 2, अ0 2, सूक्त 20, मंत्र 3.

मृध् - ॥मृद् + क॥ संग्राम सत्त्वविहितमतुलं भुजयोर्बलमस्य पश्यत मृधे धि कुप्यत:
कि0 12-39, म0 2, अ0 2, सूक्त 22, मंत्र 3.

॥य॥

यु: - या + ड - जो चलता है, गतिमान है, गाड़, हवा, वायु, मिलाप, जो
who, which, if; य: इन्द्र: ।
म0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 2.

यमु - यम् + घञ् संयत करना, दमन करना, Bridle, driver;
म0 2, अ0 2, सूक्त 17, मंत्र 13.

युज्ञेन - ॥यज् + भावे॥ नङ्. याग या मख यज्ञ सम्बन्धी कृत्य, Worship;
म0 2, अ0 2, सूक्त 21, मंत्र 5.

युद्मम् - ॥युध् + म॥ योद्धा, Warrior; म0 2, अ0 2, सूक्त 21, मंत्र 3.

युधा - ॥युधा युद्धेन, युध् + क्विप् + टाप - जंग, in the battle;
म0 2, अ0 2, सूक्त 22, मंत्र 2.

युवा - युवन् - वि0 ॥स्त्री0 - युवतिः ती म0अ0 यवीयस या कनीयस, उ0अ0 यविष्ठ या कनिष्ठ, वयस्क, Young;
म0 2, अ0 2, सूक्त 20, मंत्र 3.

युवानम् - वि0 ॥स्त्री0 - युवति॥ ती - यूनी - म0अ0 यवीयस् कनीयस् - उ0अ0
Young; म0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 1.

योजना - युज् भावार्थे ल्युट् - जोड़ना, मिलाना, Harnessing;
म0 2, अ0 2, सूक्त 19, मंत्र 3.

॥र॥

रथः ॥रम्यतेनेन अत्र वा + रम् + कथन्॥ गाड़ी, वाहन, Chariot, Waggon;
म0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 3.

रयिम् - रयिं धनं, Wealth; म0 2, अ0 2, सूक्त 13, मंत्र 4.

रयीणाम् - त्वया दत्तानां धनानाम् , rich, wealth;
म0 2, अ0 2, सूक्त 21, मंत्र 6.

राधः - स्वा0पर0 राध्नोति शद्ध, रिरात्सति राजी करना, मनाना, प्रसन्न करना, Succeed, Prosper;
म0 2, अ0 2, सूक्त 22, मंत्र 3.

राशिः - अश्नुते व्याप्नोति अश + इ धातोरुहागमश्च ढेर, अम्बार, संग्रह, RMass, Multitude; म० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 13.

रुद्रियेषु - वि० रोदति रुद् + ॥क॥ सं०ब०व०, भयानक, भीषण, भयंकर, Roaring, Terrific; म० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 1.

रुधिका - of a demon; म० 2, अ० 2, सूक्त 14, मंत्र 5.

रोदस् - नपुं० ॥स्त्री० द्वि०ब०, रोदसी, रुद् + असुन्, आकाश और पृथ्वी, Heaven and earth; म० 2, अ० 2, सूक्त 17, मंत्र 4.

रोधना - ॥रुध् + ल्युट॥ डराना, रोकना, confining; म० 2, अ० 2, सूक्त 13, मंत्र 10.

रौहिणम् - रोहिण + अव् - चन्दन वृक्ष, वट वृक्ष, connected with the lunger; म० 2, अ० 2, सूक्त 12, मंत्र 12.

॥ल॥

लक्ष्मम् -॥लक्ष् + अच्॥ सौ हजार, इच्छति शती सहस्रं सहस्री लक्षमीहते सुभा० त्रयो लक्षास्तु विज्ञेया याज्ञ: 3/102, चिह्न, चांदमारी, indirectly; म० 2, अ० 2, सूक्त 12, मंत्र 4.

॥व॥

वः - ॥वा + ड॥ वायु, हवा, भुजा, वरुण, समाधान, Indeed, like; म० 2, अ० 2, सूक्त 16, मंत्र 1.

वलम् - वलनामकमसुरं - of a demon; म० 2, अ० 2, सूक्त 15, मंत्र 8.

वचस् - नपुं० ‡वच् + असुन्‡ भाषण, वचन, Speech, word;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 16, मंत्र 1.

वय - भ्वा०आ० वयते - जाना, small, birds;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 19, मंत्र 2.

वधः - हन् + अप् - मारना, कत्ल करना, हत्या करना, Slayer;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 19, मंत्र 2.

वरम् - अव्यय वृ० + अप्, अपेक्षाकृत, Space;

वस्यः - वस् + उन्, दौलत, Wealth; मं० 2, अ० 2, सूक्त 20, मंत्र 4.

वरुता - ‡वृ + ऊतन् + टाप्‡ सहायता करने वाला, आश्रय देने वाला, defender;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 20, मंत्र 2.

वरूथे - वृ + अथन् - एक प्रकार का लकड़ी का बना हुआ कवर जो रथ को टक्कर बचाये - cover; मं० 2, अ० 2, सूक्त 18, मंत्र 8.

ववृधानां - वृध वर्धने - बढ़ाया, विस्तार किया, Increase;

मं० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 2.

वज्र - पुं० वज् + रन्, वज्र, बिजली मं० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 3.

वर्धयन्ति - वृधु वर्धने, विस्तृत करने वाला, increase, strengthening;

मं० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 1.

वनेम - वन् + अप् , अरण्य, जंगल, वृक्षों का झुरमुट, good of the rition, cloud; मं० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 12.

वरम् - वि० वृ कर्मणि अप्‡ श्रेष्ठ, Fairor;

मं० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 19.

व्यथमानाम् - भ्वा० + आ० व्यथते व्यथति शोकान्वित, पीड़ित होना, of flicted;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 12, मंत्र 2.

वरीय - वि० वरीय: उरुतमव, उरुवी उरु । ईयसुन् वरादेश उसकी म०अ०, अपेक्षाकृत, Wide middle regior;

मं० 2, अ० 2, सूक्त , मंत्र

वर्णम् - वर्ण + घञ् रंग, मनुष्य जाति, Caste of human;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 12, मंत्र 5.

वर्धन् ।वृध + णिच् + ल्युट्। बढ़ने वाला, Furtherihg;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 12, मंत्र 14.

वस्त्रै: - वस् + ष्ट्रन्, परिधान, कपड़ा, Cloth, garment;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 14, मंत्र 3.

वने - वन् + अच्, अरण्य, Wood, Forest;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 14, मंत्र 9.

वस्व: - नपुं०, वस् + अच् - दौलत, good, money;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 14, मंत्र 11.

वसूनां - ।वसु + कै + क। धन, दौलत, good, wealth;

मं० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 1.

वत्स - ।वद् + स:। बछड़ा, किसी जानवर का बच्चा, Calf;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 16, मंत्र 8.

वाज: - वज् + घञ् - भोजन सामग्री, Food, gain for combat;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 20, मंत्र 1.

वाह्वो - [वह् + णिच् + अच्] भुजा, घोड़ा, arm, horse;

मं० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 6.

वाणीम् - वण + इण् + ङीप् - भाषण, वचन, Speech, ward;

मं० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 7.

वायव: - [वि०] [स्त्री० + वी०] वायु + अण् - वायु से सम्बद्ध या प्राप्त, relaing, god of wind;

मं० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 14.

वाजम् - वज् + घञ् - वाज् - ड़ैना, Strength, booty gain;

मं० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 15.

वर्चिन - वर्चस + इन् - ओजस्वी, देदीप्यमान, Vorchin cast down;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 14, मंत्र 6,

वातम् - चुरा०उभ० वातयति, हवा, wind, air,

मं० 2, अ० 2, सूक्त 14, मंत्र 3.

वाजिनम् - पुं० - वाज् + इनि - घोड़ा, गर्दभा, Swift, brave, horse;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 13, मंत्र 5.

विन्दसे - शत्रूणाम् धनम् लभसे, Finding; मं० 2, अ० 2, सूक्त 13, मंत्र 11.

वि नुद: - सर्वाणि तत्कृतकाणि विक्षेपण रूपाणि कर्मवैगुण्यानि, shock;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 13, मंत्र 3.

विश्वह: - विश्वह: सर्वेष्वह: सु ever more;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 12, मंत्र 15.

विजयन्ते - [वि + जि + धम् + इन् - क्त] जिसके ऊपर विजय न पाया जा सके, victorous; मं० 2, अ० 2, सूक्त 12, मंत्र 9.

विश्वा - सारे, सारा विश्व [वि0] सत्र, जगत, every all whole;
मं0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 18.

विप्रः - वप् + रन् पृषो अत इत्वम् ब्राह्मण, बुद्धिमान, चतुर, wise, prayer;
मं0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 13.

विश् - विश् + क्विप् - तीसरे वर्ण का मनुष्य, वैश्य, murder of the it the third caste ;
मं0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 4.

विक्षु - वि + क्षु - प्रजा - People; मं0 2, अ0 2, सूक्त 21, मंत्र 3.

विंशत्या - विंश् - बीस, Twienty; विंशति, संख्याकैरश्वै: ।
मं0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 5.

विप्रा - [वप् + रन् पृष्ठो0 अत इत्वम्] ब्राह्मण singer, wise;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 3.

विच्युता - [भू0 + क0 + कृ0] [वि0 + च्यु + क्त] अधः पतित, विस्थापित, Hurled down, Falling of,
मं0 2, अ0 2, सूक्त 17, मंत्र 3.

वीर्यम् - वीर + यत् - शूरता, पराक्रम, साहस, Valour, courage,
मं0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 3.

वीर्या - वीर + यत् - शूरवीरता, पराक्रम, बहादुरी, Valour, heroic;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 21, मंत्र 3.

वीर्येण - वीर + तृतीय + एकवचन, वीर + यत् - बहादुरी, Power;
मं0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 5.

वीरयन्तम् - [वि0] वीर + गतुम् - शूरों से भरा हुआ, Great Power;
मं0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 13.

विदथम् - ॥विद् + कथ्य॥ विद्वान पुरुष, Order, Meeting;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 15.

वेद - विद् + छम् अथ् वा, ज्ञान, Knowledge;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 10.

वेधस् - पु0 ॥विधा + असुन् गुणः॥ स्रष्टा मा0 1-21, ब्रह्मा, Author;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 2.

वृषा:- वृषे + नः वृष + क - ओषधि, देवताओं के लिए सोम नामक पौधा,Some Plant, oblation;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 4.

वृष्णः - वृषे + नः + क्विप् - कामना का सेचक, money, manful;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 4.

बृहत् - ॥वय् + रन् पृषो0 अत इत्वम्॥ ब्राह्मण, Big, Great;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 3.

वृषभ - वृष् + अभय् + क्विप् - इच्छाओं का वर्धक, कामनावर्धक, manly, strong;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 21, मंत्र 5.

वृद्ध - वि0 वृध् + क्त, म0अ0 ज्यायस् या वर्षीयस्×वृद्धि का प्राप्ति, बढ़ा हुआ, Sarge, Tall;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 22, मंत्र 3.

वृत्रम् - वृत + रक् - वृत्र शब्द द्वितीया एकवचन, वृत्र नामक राक्षस, of a demon;

मं0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 9.

वृक्षम् - व्रश्च + क्स् - पेड़ Tree, Plant;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 2.

श्म: - शम + वन - नाश, शव: तादृश: वल, Powerless;

मO 2, अO 1, सूक्त 11, मंत्र 18.

शतेन - दश शतत परिणामस्य दशम् + त + श आदेश निO सौ की संख्या Hundred;

मO 2, अO 2, सूक्त 18, मंत्र 6.

शयध्यै - शयथ् §विO§ शी + अथ च् - सोया हुआ, abode;

मO 2, अO 2, सूक्त 17, मंत्र 7.

शसनम् - शंसनम् §शंस् + ल्युट्§ प्रशंसा करना, in a loud, Praise;

मO 2, अO 2, सूक्त 20, मंत्र 3.

शतं - §दश दशत: परिणामस्य दशन् + त श आदेश: नि: साधु: सौ की संख्या, Hundred;

मO 2, अO 2, सूक्त 13, मंत्र 9.

शशमानम् - शशमानम् अवति स्त्रोते कुर्वाणं रक्षति - active;

मO 2, अO 2, सूक्त 12, मंत्र 14.

शरदि - §विO§ यादि सप्तम्यां §अलुक§ सम्बन्ध रखने वाला§ - Autumn.

मO 2, अO 2, सूक्त 12, मंत्र 11.

शर्वा - भ्वाOपरO शर्वति, of a god;

मO 2, अO 2, सूक्त 12, मंत्र 10.

शश्वत् - अव्यय, शश् + वद् + वा, लगातार, ever reparting;

मO 2, अO 2, सूक्त 12, मंत्र 10.

शम्बरस्य - शम्ब + अरच्, शम्बर शब्द षष्ठी एकवचन, एक राक्षस का नाम, of a demon;

मO 2, अO 2, सूक्त 14, मंत्र 6.

शर्धः - शृध् + घञ् - अपानुवायु का त्याग, containing be stowing;

मO 2, अO 1, सूक्त 11, मंत्र 14.

शिक्षा - ।शिक्षा भाव अ + टाप्। - अधिगम, Ability;

मं० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 21.

शिर: - नपुं० ।शृ + असुन् निपात। सिर, head;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 20, मंत्र 6.

शिव: - ।वि०। श्यति पापम् शो + वम् पृषो० सौभाग्यशाली, kind;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 20, मंत्र 3.

शिश्नयत् - शिश् भ्वा पर० शेषति, चोट पहुँचाना, leave;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 20, मंत्र 5.

शुभ्रं शुष्मं - शुभ् + रक - चमकीला, शुष् + मन् - पराक्रम, the brillient strength;

मं० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 4.

शुभ्रा - ।शुभ्र + टाप्। गंगा, स्फटिक, शुभ्रा:दीप्यमाना: स्तुत्य:, Shining, white;

मं० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 3.

शुष्मात् - शुष्मन् शब्द पंचमी एकवचन, बलात, Fire;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 12, मंत्र 7.

शुष्कम् - शू + क + कृ० + शुष् + क्त, सूखा हुआ, dry;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 13, मंत्र 6.

शुष्णम् - demon slain of Indra;

मं० 2, अ० 2, सूक्त 13, मंत्र 5.

शूर - ।चुरा० उभ० शूरयति ते शौर्य के लिए कार्य, शूर् + अच् - प्रबल, mighty;

मं० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 5.

शृध्याम् - शृध् शब्द बहुवचन भ्वा०आ० लृट् लुङ् लङ् पर भीशर्धते,

मं० 2, अ० 2, सूक्त 12, मंत्र 10.

(ष)

षट् - वि० (षट्भिः कतिम् + वप् + कन्) छ गुना, six;
म० 2, अ० 2, सूक्त 13, मंत्र 10.

षष्ट्या - (स्त्री०), साठ, sixty; म० 2, अ० 2, सूक्त 18, मंत्र 5.

(स)

सहस्रम् - (समानं हसति हस् + र) हजार, thousand;
म० 2, अ० 2, सूक्त 14, मंत्र 6.

सन्तम् - सन् + त - अंजलि, existing being;
म० 2, अ० 2, सूक्त 13, मंत्र 12.

समानम् - (वि०) सम् + अन् + अण् तुल्य, like;
म० 2, अ० 2, सूक्त 12, मंत्र 8.

सद्मः - (नपुं०) सदित्यस्मिन् - सद् + मनिन् - घर, मकान, sitter;
म० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 12.

स्तवः - (स्तु + अप्) प्रशंसा करना, Praise;
म० 2, अ० 1, सूक्त 11, मंत्र 6.

स्तु - (अदा० उभ० स्तौति, प्रशंसा या स्तुति करना, extol;
म० 2, अ० 2, सूक्त 20, मंत्र 4,

स्तवान् - स्तवः (स्तु + अप्) प्रशंसा करना, Praise;
म० 2, अ० 2, सूक्त 20, मंत्र 5.

स्वधावान् - स्वद् + आ + अन्, स्वयं का निश्चय करने वाला, Self reliant;
म० 2, अ० 2, सूक्त 20, मंत्र 6.

स्वजिते - ꞉सार्व0 + वि0꞉ ꞉स्वन् + ज꞉ अपना निजी, Lord of morning;

म0 2, अ0 2, सूक्त 21, मंत्र 1.

स्तवान् - स्तव: ꞉स्तु + अप्꞉ प्रशंसा करना, Praise;

म0 2, अ0 2, सूक्त 19, मंत्र 3.

स्वप्नेन - ꞉स्वप् + नक्꞉ सोना, नींद, स्वप्न, sleep;

म0 2, अ0 2, सूक्त 15, मंत्र 8.

सत्यस्य - वि0 ꞉सतेहितम् + सत् + यत्꞉ सच्चा, वास्तविक, actual, real;

म0 2, अ0 2, सूक्त 15, मंत्र 1.

सत्या - सत्यमस्ति अस्या: सत्य + अच् + टाप् ꞉सच्चाई꞉ Truly;

म0 2, अ0 2, सूक्त 15, मंत्र 1.

सम् - ꞉अव्यय꞉ ꞉सो + मु꞉ धातु या कृदन्त शब्दों के पूर्व उपसर्ग के रूप में लगकर इसका निम्नांकित अर्थ है साथ-साथ, मिलकर, with;

म0 2, अ0 2, सूक्त 15, मंत्र 4.

समुद्र - ꞉वि0꞉ ꞉सह मुद्रया ब0व0, सम + उद् + रा + क꞉, महासागर, ocean;

म0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 3.

स_चते - पु0 ꞉सम + चत् + क्विप्꞉ संचय, belong;

म0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 4.

समन - युद्ध, battle; म0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 6.

सवने - सु ꞉सू + ल्युट्꞉ सोमरस निकलना या पीना, Some juice;

म0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 6.

सकृत - ꞉अव्यय꞉ ꞉एक सुच् + सकृत् आदेश सुचोलोप:, एक साथ, साथ-साथ, once;

म0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 8.

सहसा - ॥सह + सो + डा॥ बलपूर्वक, Strength;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 17, मंत्र 1.

सध्यक् - ॥वि0॥ स्त्री सध्राचि, सध्र चति सह + अ च् + क्विन्॥ सन्धि आदेश साथ चलने वाला, Jointly; मं0 2, अ0 2, सूक्त 17, मंत्र 3.

सती - ॥स्त्री0॥ ॥सत् + ङीप्॥ साध्वी स्त्री, Virtuous;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 17, मंत्र 7.

सदस् - नपुं0 सीदत्यस्मिन् सद् + असि, असुन्, निवासस्थान, Seat;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 17, मंत्र 7.

सप्तरश्मि ॥सं0वि0॥ सदैव बहुवचनान्त कर्तृ0 व0 कर्म0 सप्त सप् + तनिन ॥सात॥ रश्मि, अश् + मि रादेश: रस + मिवा, डोरा, Seven rains;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 1.

सख्यम् - ॥सख्युभाव: यत्॥ मित्रता, love;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 8.

सदिव: - ॥स्त्री0॥ ॥सदीप्यन्त्यत्र दिव् + वा आधारेडिरि तारा0 प्रकाश, lighted; मं0 2, अ0 2, सूक्त 19, मंत्र 6.

सखा - ॥सह् समानं रण्यायते डिन्॥ मित्र, Friend;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 20, मंत्र 3.

सह - अव्यय, साथ, Victor; मं0 2, अ0 2, सूक्त 21, मंत्र 3.

सहुरि: - ॥सह् + उरिन्॥ सूर्य, mighty;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 21, मंत्र 3.

ससहि - सस् ॥अदा0पर0 सस्ति॥ सोना, hero;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 22, मंत्र 3.

स्तोमेषु - ॥स्तु + मन्॥ स0ब0व0 - प्रशस्ति स्तुति,   Praise;

म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 3.

सप्त - ॥स0वि0॥ सदैव बहुवचनान्त कर्तृ0 कर्म0 सप्त सप्य ॥सप् + तनिन्॥ सात,

Seven;   म0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 3.

साख्यस्य - ॥सखि + ष्य ॥ मित्रता, सौहार्द, of our party;

म0 2, अ0 2, सूक्त 11, मंत्र 19.

सादि - ॥सद् + इण्॥ सारथि, सादि नभसि निषण्य आसीत्, rideron;

म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 8.

सारथ्ये - सारथि - सृ + अथिण् - सह रथेन सरथः रथवान्, Chariot;

म0 2, अ0 2, सूक्त 19, मंत्र 6.

साकम् - सह + अकति + अक् + अम् सादेशः साथ मिलकर, with;

म0 2, अ0 2, सूक्त 22, मंत्र 3.

साधत् - साध् ॥स्वा0पर0 साध्नोति, पूरा करना, effect;

म0 2, अ0 2, सूक्त 19, मंत्र 3.

सिन्धवः - इव घृत क्षरणोपेतीन सा0मु0, like;

म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 1.

सिन्धुम् - स्यन्दः + उद् संप्रसारणं दस्य धः, समुद्र, Stream;

म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 9.

सिन्धून् - ॥स्यन्द + उद् संप्रसारणं दस्य धः॥, समुद्र, water ;

म0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 3.

सिन्चत् ॥सिच् - सिन्चति - ते सिक्त, Pour out;

म0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 1.

सीव्यन् - ॥सी + क्यन्॥ ॥वि॥ विस्तारं, around;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 17, मंत्र 4.

सुतस्य - ॥भू + क0 + कृ0॥ ॥सु + क्त॥ उड़ेला गया -expressing;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 15, मंत्र 1.

सुमख - सुयज्ञ, सुधन, merry;   मं0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 4.

सुन्वत् - साधु स्वभाव वाला, Sacrificer;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 19, मंत्र 5.

सुम्नम् - ॥सु॥ मन्यते नेन मन् + करणे असुन्x Regard;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 20, मंत्र 1.

सुतासः - सुत + टाप् + सः, सुतास्ते भिषुताः सोमाः, सोमरस धारण करने वाला स्थान ॥अव्यय॥,   मं0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 11.

सुवीरा - सुन्दर पुत्रों से युक्त, शोभना वीराः यस्मिन् तम् भ. सभ्याम् -

मं0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 21.

सुशिप्र - शुशिप्र शोभन हनु सुशीस को सन् वा - शोभायुक्त, beautiful;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 6.

सुन्वन्तम् - सुन्वन्तम् शोभाभिषवं कुर्वन्तं यजमानम् , Sacrificer;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 14.

सुप्रवाचनम् - सु ॥अव्यय॥ ॥सु + डु॥ प्रवाचनम् - प्र + वद् + णिच् + ल्युट् - घोषण

मं0 2, अ0 2, सूक्त 13, मंत्र 11.

सुतिम् - स्त्री0 सु + क्तिन्, आर्क निकालना, Flaw Stream;

मं0 2, अ0 2, सूक्त 13, मंत्र 12.

सूर्यस्य - ॥सरति आकाशे सूर्यः यद्वा सुवति कर्माणि लोके प्रेरयति सृ + क्यप् नि0॥ सूरज
सूर्ये तपत्या वरणाय दृष्टिः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा रघु0 8/13,
The Sun ; म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 6.

सूक्तेन - ॥सु + उ + तेन॥ साधना से, well spoken;
म0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 3.

सोमम् - ॥सू + मन्॥ एक पौधे का नाम प्राचीन काल में यज्ञ के काम आता था ।
Some Plant; म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 11.

सृजः - सृजः व्यसृजः ॥तुदा0पर0 सृजति सृष्टि॥ रचना करना, अर्धेन नारी तस्या स
विराजम् सृजत्प्रभुः मुक्त करना, discharging;
म0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 2.

॥ह॥

ह - ॥अव्यय॥ ॥हा + ड॥ बलबोधक, to be, sure;
म0 2, अ0 2, सूक्त 17, मंत्र 1.

हविः - ॥नपुं0॥ ॥हुयते अनेन इति असुन्॥ आहुति, calling;
म0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 1.

हविषा - हूयते हु कर्मणि असुन् - आहुति या हवनीय द्रव्य, ablation;
म0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 4.

हवः - हु + अ, ह्वे + अप् - संप्र0 पृषो0 वा, आहुति, to be involved;
म0 2, अ0 2, सूक्त 17, मंत्र 8.

हत्वी - ॥हत् + वी॥ वध करना, Slain;
म0 2, अ0 2, सूक्त 20, मंत्र 8.

हस्ते - ॥हस् + तन् न दूर॥ हाथ, हस्तं गतः, हाथ में पड़ा हुआ, Hand;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 16, मंत्र 2.

हरिः - ॥वि0॥ ॥हृ + इन्॥ इन्द्र का नाम, The Steeds of Indra;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 18, मंत्र 3.

हत्वा - ॥वि0॥ ॥हन् + क्त॥ हन् शब्द त्वा प्रत्यय से, मार करके, slew the dragon;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 3.

हन्ता - ॥हन् + त + टाप्॥ प्रहारकर्ता, Killing; Slayer;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 10.

हस्त्यम् - हस् + वन् + न इद इयम् हाथों से सुशोभित, Luner Mansion;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 14, मंत्र 9.

हरिभ्याम् - हरि शब्द तृतीय द्वि0ब0, हृद + इन हरा पीला लाल, दो घोड़ों से युक्त, with two horses;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 11, मंत्र 17.

हिरण्यम् - ॥हिरणमेव स्वार्थेयत्॥ सोना, हिरण्यम् धनं, gold;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 15, मंत्र 9.

॥श्र॥

श्रत् - ॥अव्यय॥ ॥श्री + इति॥ rely; मं0 2, अ0 2, सूक्त 12, मंत्र 5.

श्रवस्या - श्रवस् ॥नपुं0॥, श्रु + असि॥ ख्याति, glorious;
मं0 2, अ0 2, सूक्त 19, मंत्र 7.

श्रुधी - श्रु + क्त सा0 श्रुणु - सुना - hear;
मं0 2, अ0 1, सूक्त 11, मंत्र 1.

श्रोण. - श्रोण: पङ्गुरीदानम्भिव प्रपप्रसादात् विभग्नजनु:, Lame;

मO 2, अO 2, सूक्त 15, मंत्र 7.

श्रोणी - णी, (स्त्री0) श्रोण: + इन् वा ङीष् मेखला, पृथ्वी, earth;

मO 2, अO 2, सूक्त 16, मंत्र 3.

पञ्चम अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

धर्मों के इतिहास के अध्ययन में वैदिक पुराकथा शास्त्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है । संसार की किसी अन्य साहित्यिक राशि की अपेक्षा इनका प्राचीनतम स्रोत हमारे सामने प्राकृतिक घटनाओं के मूर्तिकरण और उपासना पर आधारित विश्वासों की उत्पत्ति का एक आरम्भिक चरण प्रस्तुत करता है, इसी प्राचीनतम सामग्री में अधिकांश भारतीयों के धार्मिक विश्वासों के अविच्छिन्न विकास के चिह्न देखे जा सकते हैं * भारोपीय जाति की भारतीय ही एकमात्र ऐसी शाखा है जिसमें मूल प्राकृतिक उपासना का एक विदेशी ऐकेश्वरवादी धार्मिक धार्मिक विकास द्वारा अनेक शताब्दियों पूर्व सर्वथा उन्मूलन नहीं हो सका । यद्यपि पुराकथा शास्त्र का प्राचीनतम स्रोत उतना पुराना नहीं है जितना इसे पहले स्वीकार कर लिया गया था ।[1]

वह आधार जिस पर वैदिक साहित्य टिका हुआ है अत्यन्त प्राचीनकाल से चला आ रहा है और वह यही विश्वास है कि प्रकृति की सभी वस्तुएँ तथा घटनायें जिनसे मनुष्य घिरा हुआ है चेतन और दिव्य है सभी वस्तुयें जो व्यक्ति की अन्त-रात्मा को भय से प्रभावित कर सकीं अथवा जो उन पर प्रिय अथवा अप्रिय प्रभाव कर सकने की क्षमता से युक्त मानी गयी है । वह सभी वैदिककाल में आराधना ही नहीं वरन् पूजा भी बन गयी । आकाश, पृथ्वी, पर्वतों, नदियों, पेड़ पौधे आदि तक की दिव्य व्यक्तियों के रूप में अभ्यर्चना की गयी है ।[2]

---

1. Hopkins : Religions of India, xiii, Original Sanskrit Texts, p. 107.

2. Lectures on the Science of Language (ed. 1891). Cosmology of the Rigveda 9 de Regveda er le origines de la motiologie indo-europeanne, Paris, 1892.

वैदिक पुराकथा शास्त्र का ऐसे देश और काल तथा सामाजिक और भौगोलिक स्थिति की कृतियाँ है जो हम (ब्रिटिश) लोगों से अत्यन्त दूरस्थ और अत्यधिक भिन्न है। इसके अतिरिक्त हमें यहाँ तथ्य से सम्बन्धित प्रत्यक्ष लेखों का ही नहीं वरन् अनेक विद्वानों द्वारा द्वितीय मण्डल में वर्णित इन्द्र देवता के सम्बन्ध में वर्णित काल्पनिक सृजनों का समालोचनात्मक अध्ययन करना है। जिनका प्रकृति के प्रति मानसिक दृष्टिकोण आज के मनुष्यों (विद्वानों तथा अनुसंधानकर्ताओं) के लिए मार्गदर्शक है। इतनी जटिल और विचारों के इतने आरम्भिक स्तर का प्रतिनिधित्व करने वाली इन सामग्रियों से अध्ययन की कठिनाइयाँ उन काव्यों की प्रवृत्ति के कारण और भी बढ़ जाती है। जिनमें यह विचार निहित है कि इस प्रकार यहाँ कोई भी विषय ऐसा नहीं है जिसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण से निरूपण किया जा सके। अत: कुछ अंशों तक काव्यात्मक अन्तर्दृष्टि के अतिरिक्त इसके अध्ययन में सतर्कता और निर्णयों की गम्भीरता की अत्यन्त आवश्यकता है। फिर भी अध्ययन दृष्टि में स्पष्टत: आवश्यक इतनी सतर्कता का वैदिक पुराकथा शास्त्र के ऋग्वेद द्वितीय मण्डल के इन्द्र सूक्तों के अनुसंधान में बहुत अधिक अभाव रहा है। उपलब्ध सामग्री में ही निहित अस्पष्टता के साथ-साथ नि:सन्देह बहुत अंशों में यही दोष बहुसंख्यक महत्त्वपूर्ण पुराकथाशास्त्रीय समस्याओं पर वैदिक विद्वानों में व्याप्त अत्यधिक मतभेद का भी कारण है।[2]

द्वितीय मण्डल (ऋग्वेद के) अध्ययन के आरम्भिककाल में दोषपूर्ण क्षेत्र से ही अनुसंधान आरम्भ करने की प्रवृत्ति सी थी। उस समय तुलनात्मक पुराकथाशास्त्र की

---

1. Zft. f. deutsche, Mythologie, 17.

2. Religiose und Philosophische Anschuun gen des veda (1875)

व्युत्पत्तिमूलक समानताओं से अध्ययन आरम्भ किया जाता था। यह समीकरण जिनमें से आज यद्यपि अधिकांश अस्वीकृत कर दिये जाते हैं वेदों की पुराकथाशास्त्रीय धारणाओं की व्याख्या आज बहुत दिनों तक अनुचित ढंग से प्रभावित करते रहे।[1] इन व्युत्पत्तिमूलक विचारों के अतिरिक्त भी अक्सर प्रमाणों के सूक्ष्म परीक्षण की अपेक्षा सामान्य अनुभवों पर ही सिद्धान्तों को आधारित किया जाता था और इस प्रकार कभी कभी तो परवर्ती अथवा एकाकी प्रवृत्तियों को भी प्राथमिक की ही भाँति महत्त्व मिल गया है।[2] इस सिद्धान्त के आधार पर, कि वैज्ञानिक अनुसंधान को अधिक सुपरिचित से अपेक्षाकृत कम परिचित की ओर अग्रसर होना चाहिए, ऐसे शोध कार्य को जिनका अभीष्ट वैदिक देवों के चरित्र तथा व्यवहारों का अध्ययन किया गया है तुलनात्मक द्वितीय मण्डल (ऋग्वेद) के अपर्याप्त और अनिश्चित निष्कर्षों से आरम्भ नहीं कर भारतीय साहित्य द्वारा प्रस्तुत विवरणों से ही आरम्भ किया गया है[3] क्योंकि यही साहित्य में भारतीय पुराकथाशास्त्र के सर्वाधिक प्राचीन स्रोत ऋग्वेद से लेकर आधुनिक काल तक का प्राय: एक अविच्छिन्न विवरण निहित है।[4] किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने से पूर्व प्रत्येक देवता अथवा पुराकथा सम्बन्धी समस्त सामग्री से वर्गीकरण तथा उनका अन्य समानान्तर स्थलों के साथ तुलनात्मक सूक्ष्म परीक्षण करना चाहिए। इस कार्य के उन प्राथमिक विशेषताओं को, जो मूर्तिकरण का आधार रही हों, बाद के उपचयनों से पृथक कर लेना चाहिए।[5]

---

1. Recherches sur 1 historie de la liturgie, Vedeque, 8.

2. Die Arische Reroide, 3.

3. Die Griechischen Qulte und Mythen, 1.

4. Gottinger Gelehrte Anzeigen, 32.

5. Dyaus Asura, 13.

वैदिक देवों की उत्पत्ति से सम्बन्धित वेदों में उपलब्ध अधिकांश तथ्यों का उल्लेख किया गया है । अत: यहाँ अब केवल थोड़ा सा संक्षिप्त विवरणमात्र ही और जोड़ देने की आवश्यकता है । दार्शनिक सूक्तों में देवों की उत्पत्ति को अधिकतर जलतत्व[1] से सम्बद्ध किया गया है । अथर्ववेद ‖10/6‖[2] में ऐसा कहा गया है कि देव लोग असत् से उत्पन्न हुए सृष्टि सम्बन्धी एक सूक्त ‖10/129‖[3] के अनुसार इन लोगों की उत्पत्ति जगत की सृष्टि के बाद हुई । इसके अतिरिक्त इन लोगों को समान्यत: या आकाश और पृथ्वी की संतान कहा गया है । एक स्थल ‖10/63‖[4] पर प्रत्यक्षत: विश्व के तीन स्तरों के अनुरूप ही देवों की त्रिस्तरीय उत्पत्ति का भी वर्णन है जहाँ इन लोगों को "अदिति से उत्पन्न" "जल से उत्पन्न" और "पृथ्वी से उत्पन्न" आदि कहा गया है । ‖तु0की0 1/139‖[5] अन्य धारणाओं को किसी प्रकार की संदिग्धता न प्रदान करते हुए व्यक्तिगत रूप से विभिन्न रूप से विभिन्न देवों द्वारा ही कुछ दूसरे देवों की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है । इसी के अनुसार इन्द्र को समस्त देवों का स्वामी या शासक कहा गया है ।

मनुष्य की उत्पत्ति से सम्बन्धी धारणायें भी कुछ अस्थिर और परिवर्तन-शील हैं किन्तु मानव जाति को सामान्यतया एक आदिपुरुष से ही उत्पन्न माना

---

1. Zeitschrift der Deutschen Morgenlandischen Gesell schaft,1.
2. Oldenburg : Dei Religiondes Veda, 347.
3. Original Sanskrit text, 4.
4. वही ।
5. वही ।

गया है । इस आदिपुरुष को या तो विश्ववत् का पुत्र "मनु" कहा गया है जो प्रथमतः यज्ञकर्ता (10/63)[1] था और इसे ही "मनुवों" का पिता भी कहा गया है । (1/80)[2] अथवा इसे (आदिपुरुष को) विवस्वत् का पुत्र "यम-वैवस्वत" माना गया है जिसने अपने यमज भगिनी पत्नी के साथ मानवजाति को उत्पन्न किया था । उसे कहीं मनुष्यों की उत्पत्ति इस आदिपूर्वज से भी पहले हुई मानी गयी है । वहाँ इस उत्पत्ति को दिव्य माना गया प्रतीत होता है । विवस्वत् (18) ही आदि यमजों का पिता है, जबकि एक बार दिव्य गन्धर्व, और जल में रहने वाली अप्सरा को मनुष्य आदि का पूर्वज कहा गया है । (10/10)[3] कभी कभी देवों से मनुष्य के सम्बन्ध की चर्चा है[4] और निश्चित रूप में आकाश और पृथ्वी की संतानों के अन्तर्गत मनुष्य भी थे ।

ऋग्वेद द्वितीय मण्डल इन्द्र सूक्तों का समालोचनात्मक अध्ययन करने के लिए प्रमुख रूप से पाँच अध्यायों के माध्यम से किया गया है जो निम्नवत् है । 1. प्रस्तुत (ऋग्वेद द्वितीय मण्डल इन्द्र सूक्तों) पर शोधकार्य करने की आवश्यकता तथा महत्त्व तथा इन्द्र का महत्त्व, 2. वैदिक देवों का वर्गीकरण, इन्द्र का वैशिष्ट्य, (सामवेद ब्राह्मण, ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद, आरण्यक, पुराणों, द्वितीय मण्डल के इन्द्रसूक्तों का अनुवाद (हिन्दी) तथा इन्द्र का अन्य देवों के साथ सम्बन्ध, प्रमुख शब्दों की भाषा वैज्ञानिक टिप्पणी, उपसंहार । इस प्रकार पाँच अध्यायों के माध्यम से ऋग्वेद

---

1. बोनि - Sa Religion Vedique, 1.

2. वही, नं0 4, पृष्ठांकित पृष्ठ पादटिप्पणी ।

3. वही ।

4. निरुक्त 5.

द्वितीय मण्डल इन्द्र सूक्तों का समालोचनात्मक अध्ययन विषय पर शोध-कार्य किया गया है ।

ऋग्वेद द्वितीय मण्डल के इन्द्र सूक्तों का समालोचनात्मक अध्ययन की आवश्यकता इन्द्र जैसे महान् शक्तिशाली तथा देवाधिपति के गुणों को तथा दोषों को खोजना अत्यन्त आवश्यक है । ऋग्वेद में ज्यादातर इन्द्र देवता के बारे में ही मन्त्रों के माध्यम से उल्लेख किया गया है । 1028 सूक्तों में इन्द्र देवता का उल्लेख मिलता है ऐसे देवता के बारे में व्यक्तिगत शोध करना एक आवश्यक विषय है । ऐसा क्या गुण या शक्ति इस देवता में था जिसके कारण हर जगह इन्द्र का ही उल्लेख मिलता है इन सभी विषयों की जानकारी के लिए इन्द्रसूक्त पर शोधकार्य किया गया । इस देवता के बारे में अनेक जबरजस्ती या अनैतिक कार्यों का विवरण अनेक स्थलों पर आया है ।

वैदिक देवों के वर्गीकरण के सम्बन्ध में बताया गया है कि ऋग्वेद तथा अथर्व वेद दोनों देवों की संख्या 33 बतायी गयी है । (3/6)[1] इत्यादि अथर्ववेद (10/6) इसी संख्या को अनेक स्थानों पर ग्यारह का तीन गुना के रूप में व्यक्त किया गया है । (8/33 इत्यादि) एक स्थान पर (1/139) पर ग्यारह को स्वर्ग में ग्यारह को पृथ्वी पर ग्यारह को जल (=वायु) में रहने वालों के रूप में सम्बोधित किया गया है । इस प्रकार अथर्ववेद (10/9)[3] भी देवों का स्वर्ग अन्तरिक्ष और पृथ्वी पर रहने वालों के रूप में वर्गीकरण करता है । किन्तु इनकी संख्या का कोई निर्देश नहीं करता है । तैंतीस संख्या के इस योग का सदैव पर्याप्त नहीं माना जा सकता क्योंकि कुछ स्थलों (1/34, 43, 8, 35, 39)[4] पर तैंतीस के अतिरिक्त भी अनेक

---

1. Die Altindischen todten-und Bestattings gebranche, Amsterdam, 1896.
2. Fa Religion vedique, 3.
3. अथर्ववेद 3/22
4. Oldenburg; Die Religion des Veda, 93.

देवों का उल्लेख मिलता है । एक मंत्र ३3/9=10,52३[1] वाजसनेयी संहिता 33.6[2] में अकस्मात् देवों की संख्या 3339 बतायी गयी है ३6.51[3] जहाँ देवों को स्वर्ग पृथ्वी और जल को सम्बद्ध बताया गया है । 6.33, 10.49, 65[4] वहाँ भी इनके त्रिपदीय विभाजन का ही आशय निहित है । शतपथ ब्राह्मण तथा ऐतरेय संहिता में इन्हें तीन प्रमुख वर्गों में विभाजन करने पर सहमत व्यक्त किया गया है । इन वर्गों में 8 वसुगण, 11 रुद्रगण, 12 आदित्यगण के रूप में प्रस्तुत करते हैं ।[5] इनके सम्पूर्ण संख्या के योग को तैंतीस बनाने के लिए जहाँ शतपथ ब्राह्मण उक्त तालिका में या तो द्यौस् और पृथ्वी ३4/5/6३[6] यहाँ प्रजापति चौंतिसवां देवता है अथवा इन्द्र और प्रजापति ३11/6/3३[7] को सम्मिलित करता है वहीं ऐतरेय ब्राह्मण ३2/18३[8] वाषट्कार और प्रजापति को ।

ऋग्वेद के त्रिपदीय वर्गीकरण का अनुकरण करते हुए भास्कर ३निरुक्त 6/3३ विभिन्न देवों अथवा नैघुण्टक के पंचम अध्याय में वर्णित एक ही देव के विभिन्न रूपों को तीन लोकों के अन्तर्गत रखते हैं । जो इस प्रकार से है । पृथ्वी स्थानों अथवा पार्थिव ३निरुक्त 6/14/9/43३[9] अन्तरिक्ष स्थानीय अथवा मध्यस्थान ३10/1/11/30३[10]

---

1. History of Ancient Literature, 526.
2. Ibid.
3. Visions litterature, 134.
4. Hopkins; Feligion of India, 138-140.
5. वही, पृष्ठ 190-210.
6. वही, नं0 4.
7. मुइर - Original Sanskrit Texts, 4-18.
8. वही ।
9. The Pelicion Vedique- 3-203.
10. वही, नं0 7.

वैदिक देवों की इन्हीं रूपरेखा में अन्तरिक्ष देवता इन्द्र को भी विशेषता मालूम होती है इन्द्र वास्तव में देवराज (देवाधिपति) माना जाता है अर्थात् अन्तरिक्ष दिव्य प्रार्थिव, द्युस्थानीय आदि सभी प्रकार के देवों नेतृत्वकर्ता माना जाता है जब कभी किसी देवता को कष्ट या परेशानी आती थी तो देवराज इन्द्र उसकी सहायता करते थे। देवता इन्द्र प्राय: पराक्रम और वर्षा के स्वामी माने जाते हैं[2] जब कभी लड़ाई में कोई इनकी याद करता तो उसकी मदद करते प्राय: विद्वानों का मत है कि लोग युद्ध में अपनी विजय के लिए देवराज इन्द्र का आवाहन स्तुति द्वारा करते थे।[3]

इन्द्र का मुख्य अस्त्र वज्र है जिससे सम्पूर्ण असुर और हर अशुभ कार्यों को करेने वाले को कष्ट देने वाला माना जाता था। इन्द्र अपने वज्र से बड़े बड़े राक्षस, वृत्र, चुमुरि, शम्बर आदि अनेक विकराल राक्षसों का भार गिराया। इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी और इन्द्र स्वर्ग का निवासी माना जाता है।[4] इन्द्र अन्तरिक्ष या स्वर्ग में निवास करते थे। इन्द्र लोक अप्सरायें मेनका, इन्द्राणी आदि अनेक अप्सरायें थीं। इन्द्र का मुख्यतया सोम मादक द्रव्य का यह सोम ऋषियों तथा यजमानों द्वारा लाया था तथा उसे ग्रहण करने के लिए इन्द्र की स्तुति करते थे।

---

1. Origin and Growth of Religion, 1-101.
   Cosmology of the Rigveda, 3.
2. Anthropological Religions, 109.
3. All Gemiene Geschichte dur Philosophie mit besonderer Beru Chrichtiguns der Religionen Vol. 1, Part 1, Philosophie des Veda bis auf die Upanishad's Leipzig, 1894.
4. Ormazd et Ahriman. 111.

प्राय: निश्चित रूप से वैदिक पुराकथाशास्त्र का स्रोत भारत की प्राचीन साहित्यिक कृति ऋग्वेद ही है । ऋग्वेद में वर्णित देवाधिपति इन्द्र के पेय आकाश में जन्में कूप को गतिशील बनाने के लिए जलों का आवाहन किया गया है ।[1] अक्सर वर्तमान काल में वृत्र का वध करते हुए इन्द्र का वर्णन किया गया है । अथवा उसका वध करने के लिए इनका आवाहन किया गया है ऐसा विश्वास प्रतीत होता है कि वृत्र के साथ इन्द्र के इस युद्ध की स्थायी रूप बार-बार आवृति होती है जो पुरा कथा शास्त्रीय दृष्टि से तत्सम्बन्धी प्राकृतिक घटना की निरन्तर पुनरावृत्ति को व्यक्त करता है । अनेक उषाओं शरद् ऋतुओं में इन्द्र ने वृत्र का वध करके जल धाराओं को प्रवाहित किया ।[2] अथवा भविष्य में ऐसा ही करने के लिए इन्द्र का आवाहन किया गया है ।[3] इन्द्र पर्वत तोड़कर जलधारायें प्रवाहित करते हैं तथा गायों को ले जाते हैं ।[4] यहाँ तक की अपने वज्र की ध्वनिमात्र से ये सब कार्य हो जाते हैं ।[5] इन्होंने दानवों से रोक रक्खी धाराओं को उन्मुक्त किया ।[6] जलधाराओं को प्रवाहित करने के लिए वज्र से पथ का निर्माण किया ।[7] बाढ़ के जल को समुद्र में बहाया ।[8]

---

1. शतपथ ब्राह्मण, 5/5/4.
2. Hillebrandt : Vedische Mythologie, 3.
3. Zeitschriftder deutschen Morgenlandi schen Gesellsch aft, 9.
4. Hillebrandt : Vedische motholggie 1.
5. पिशल: विदिशे स्टूडियन, 2/249.
6. Hillebrandt : Vedische Mothologie 1.
7. Ibid.
8. Zeitschriftder deutschen Morgenlandi schen Gesellsch aft,9.

इन्द्र का फिर वैदिक देवों के गुणों में नैतिक धरातल का उतना ऊँचा स्थान नहीं है जितना शक्ति का । यही कारण है कि "महान्" और "शक्तिशाली" आदि विशेषणों की की तुलना में सत्यवादी और कपटरहित आदि को कहीं कम प्रमुखता प्रदान की गयी है । इच्छाओं की पूर्ति देवों की कृपा पर निर्भर माना जाता है । सभी जीवों पर इनका साम्राज्य है और न तो इनके विधान का कोई उल्लंघन कर सकता है और न ही इनके निर्धारित अवधि से अधिक कोई जी सकता है ।

जगत के निर्माण करते समय ऋग्वेद के कविगण इसके लिए अक्सर-विभिन्न विवरणों सहित भवन के रूप को का प्रयोग करते हैं । भवन क्रिया का नित्य ही उल्लेख है । उदाहरण के लिए इन्द्र ने छः प्रदेशों का मापा और पृथ्वी के विस्तृत भू-भाग तथा स्वर्ग के उच्च शिखर का निर्माण किया ।[1] देवों का भौतिक स्वरूप मानवत्वारोपित है किन्तु यहाँ अत्यन्त क्षीण है क्योंकि यह केवल देवों के क्रिया-कलापों का वर्णन करने के लिए ही उनके प्राकृतिक आधार का लक्षणात्मक प्रतिनिधित्व करता है ।[2] इसलिए सर, आकृति, मुख, गाल, नेत्र, केश, कन्धे, वक्षस्थल, पेट, भुजायें और हाथों आदि का मुख्यतया इन्द्र और मरुतों के युद्ध उपकरण के सन्दर्भ में ही वर्णन किया गया है । सूर्य की भुजायें उनकी किरणें हैं, उनके नेत्रों की परिकल्पना भी उनके भौतिक पक्ष का प्रतिनिधित्व करने के लिए ही की गई है । अग्नि की जिह्वा और हाथ पैर केवल उनकी ज्वालायें हैं सोम को तैयार करने वाले के रूप में उनकी चरित्र की व्याख्या करने के लिए त्रित की उंगलियों का और सोमपान करने की अपार शक्ति पर बल देने के लिए ही इन्द्र के पेट का वर्णन किया गया है ।[3]

---

1. शर्मन्

2. निरुक्त 6-7.

3. ओल्डेनवर्ग -
तैत्तिरीयसंहिता, 1-6-1.

वैदिक देवों का चरित्र नैतिक दृष्टि से भी समृद्ध माना गया है सभी देवता[1] सत्यवादी तथा कपटरहित हैं । ये लोग सदैव सत्यता तथा धार्मिकता रक्षक और मित्र हैं । इन्द्र भी पाप से दण्डित करने वाले देव हैं किन्तु इस गुण को उनके चरित्र से केवल एक क्षीण रूप से ही सम्बन्धित किया गया है । इन्द्र पूर्ण उपयोग से सर्वथा मुक्त नहीं हैं और कभी कभी तो इन्होंने किसी श्रेष्ठ अभीष्ट की सिद्धि के बिना भी इस प्रकार के उपायों का प्रयोग किया है ।[2] फिर भी वैदिक देवों के गुणों में नैतिक धरातल का उतना ऊँचा स्थान नहीं है जितना शक्ति का यही कारण है कि महान् और शक्तिशाली आदि विशेषणों को तुलना में सत्यवादी और कपट-रहित आदि को कहीं कम प्रमुखता प्रदान की गयी है । इच्छाओं की पूर्ति देवों की कृपा पर ही निर्भर मानी गयी है । सभी जीवों पर उनका साम्राज्य है और न तो उनके विधानों का कोई उल्लंघन कर सकता है और उनके द्वारा निर्धारित अवधि से अधिक कोई जीवित रह सकता है ।

अदृश्य देवों में महापराक्रमी इन्द्र ही सर्वश्रेष्ठ एवम् सर्वोपरि है । इसका विशाल शरीर अपने एक पार्श्व से समूची पृथ्वी एवम् स्वर्ग को आवृत्त करने की क्षमता रखता है । कोई अचरज नहीं कि इन्हें अगर उठाने की अगर इच्छा हो तो दोनों इसकी मुट्ठी में ही समा जायँ ।[3] बल में इनकी समता करने वाला न कोई हुआ है, न भविष्य में होगा । इनकी सामर्थ्य की थाह भला कौन पा सकता है ? माता के गर्भ में होने के समय से ही स्वतन्त्र प्रवृत्ति रखने वाला यह इन्द्र "जो मैं कहूँगा करके रहूँगा" में विश्वास रखता है । सोमरस का इन्हें इतना शौक भी था

---

1. वर्णन :

2. मुइर :

3. ऋग्वेद, 6/30/1, 10-11, 9/7, 3/30/5,

कि एक ओर उससे दूर रखने वाले अन्यायी पिता को भी रास्ते से दूर हटा दिया।[1] दूसरी ओर अवैध रूप से सोमरस को अर्पित करने वाली अपाला पर प्रसन्न होकर उसके सम्पूर्ण दुःख दूर कर डाले । मन से अत्यन्त उदार होने के कारण स्तोता को अपने पास जो कुछ हो उसे पूरी तौर से समर्पित करने में तो कोई संकोच नहीं होता । स्तोता के द्वारा या चित वस्तु की प्राप्ति के लिए यह "इन्द्र कभी गाय का कभी अश्व का कभी नारी का रूप भी धारण करता है और स्तोता को विमुख न लौटने के अपने प्रण का पालन करता है । विविध रूप धारण करने की इस दैवी शक्ति के कारण युद्धों में इन्द्र के शत्रु मुँह की खाने को बाध्य होते थे ।

त्वष्टा ने इसके लिए एक विशेष प्रकार का वज्र बनाया जो इसे अतीव प्रिय होने के कारण भुजा पर सदैव विराजमान है । इसकी सहायता से कई दस्यु रणभूमि में खेत रहे ।[2] स्तोताओं का निमन्त्रण पाते ही उनकी सहायता के लिए दौड़ने वाला यह देवता पहले उनके द्वारा समर्पित सोम का आकण्ठ पान करके उनके स्तोत्रों से प्रोत्साहित होता है[3] और उनके शत्रुओं को पराजित करके उनके समस्त सम्पत्ति को सौंप देता है ।[4] मरुद्गण तथा अङ्गिरस कुल के पूर्वज ऋषि इसके सहायक एवम् चारण बने[5] और उन्होंने वृत्र एवम् बल के वध के अवसर पर दूसरी सभी प्रकार की सहायता की। वृत्त के सिकंजे में पड़ स्वर्गीय नदियों को मुक्त करके उन्हें इस इन्द्र ने पार्थिव समुद्र की ओर बहाया[6] और बल की गुफा में अवरुद्ध देवों की गायों के साथ सूर्य, उषा एवम्

---

1. ऋग्वेद, 3/48/4, 4/18/12.
2. वही, 2/12/14, 6/23/4, 4/18/1.
3. वही, 6/28/1, 19/1/2, 8/101/15-16.
4. वही, 10/142/3, 7/114/4.
5. वही, 1/91/10, 2/24, 13, 10/34/6, 4/83,8, 2/33/14.
6. वही, 10/83/7, 2/19/18, 6/69/6.

अग्नि को मुक्त करके उन्हें नित्य कर्मों के लिए प्रवृत्त किया ।[1] इन दोनों वीरता-पूर्ण कार्यों की सराहना करते हुए वैदिक ऋषि कभी नहीं अघाते साथ साथ शम्बर, वर्चिन इन दोनों असुरों का वध, कुत्स को अपने साथ रथ पर बैठाकर शुष्ण का निर्दलन सुविदित दाश राज्ञ युद्ध में वशिष्ठों की पुकार सुनकर दौड़ते हुए आकर अभय प्राप्त भरत कुल के योद्धाओं एवं उनके राजा सुदास की सुरक्षा करना, गर्बीली उषा का गर्वहरण करना आदि ऋषियों द्वारा वर्णित कई कार्य इन्द्र ने पराक्रम एवम् भक्त वात्सल्यता की दुहाई देते हैं । क्या 'मघवा' ‡उदार उपहार देने वाला‡ क्या "शतक्रतु" ‡सौ गुने बुद्धि सामर्थ्य से युक्त‡ क्या पुरन्दर ‡शत्रु के दुर्ग का भेदन करने वाला‡ सभी इन्द्र की उपाधियाँ चरितार्थ मालूम होती हैं ।

प्राचीन परम्परा के अनुसार इन्द्र उन ऋत्विजों के सामने अपना रूप प्रकट कर रहा है जिन्होंने लता पक्षी का रूप धारण करके सोमपान करते हुए देखा था "पक्ष" शब्द संभवत: इसकी तह में रहा होगा[3] लेकिन कुल मिलाकर इसमें इन्द्र स्वयं मद से जनित अपनी इस अनुपम सामर्थ्य का वर्णन करता हुआ प्रतीत होता है । जो याजक द्वारा समर्पित सोमरस के पान से उत्पन्न हुआ था। इन्द्र को इसी तरह मद से संयुक्त कराने के लिए ऋग्वेदीय कवि बार-बार प्रार्थना करते हुए पाये जाते हैं ।[4] याजक द्वारा सोम का इन्द्र आकण्ड पान करने पर उसे उचित पारितोषिक प्रदान करता था ।[5] फिर सोमरस को पीने के बाद याजक को कुछ न कुछ देने की प्रेरणा देता रहता था[6] याजक की मांग की इच्छित वस्तु को कहीं से भी बलात् ले आ सकता था इसका मतलब वह किसी भी याजक की इच्छित को वह पूरा करता था ।[7]

---

1. ऋग्वेद, 2/11/18, 6/34/3, 3/44/1, 9/43/3, 3/39/1-8/2/19.
2. वही, 1/41/8, 4/27/1, 4/18/13.
3. वही, 6/7.
4. वही, 1/174/2, 6/32/1, 8/12/1, 3 आदि
5. वही
6. वही, 3, 4.
7. वही, 6/12.

प्रस्तुत सूक्तों में वृत्त अथवा अहि के वध का भावनापूर्ण वर्णन है । इसमें विशेषत: वृत्त द्वारा किये गये अत्यान्तिक प्रतिकार[1] का उनके द्वारा विविध अस्त्रों का[2] उनके शस्त्रास्त्रों के निवारण के लिए इन्द्र के द्वारा धारण किये गये अश्वपुच्छ के रूप का[3] उसकी सुरक्षा के कारण उसकी माता दानु के द्वारा दिये गये आत्मसमर्पण का[4] तथा युद्धों में धराशायी होने के उपरान्त उसकी मृत देह को अपने पादतल के नीचे रखकर आगे बढ़ने वाली बन्धयुक्त नदियों को[5] कर्महीन किन्तु नितान्त सुन्दर वर्णन है ।

वृत्त हनन् में इन्द्र ने विष्णु की सहायता आवश्यक समझा इस बारे में आदान प्रदान की सर्वतप रखी ।[6] इसमें इन्द्र ने विष्णु को सोम में बराबर का हिस्सा तय किया । सोम की तरह स्तोम भी इन्द्र की सामर्थ्य को बढ़ाने में सहायक है । इसका प्रतिपादन ऋग्वेद में कई बार हुआ है ।[7]

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरणों में अनेक धर्मग्रन्थों में इन्द्र के अनेक प्रकार की विशेषताओं का व्यापक वर्णन किया है । इन्द्र की समालोचनात्मक व्याख्या तथा उसके किये गये वीरतापूर्ण कार्यों का निरूपण करने से साफ साफ यह मालूम पड़ता है कि वास्तव में

---

1. ऋग्वेद 1/32/6-7.
2. वही, 1/32/13.
3. वही, 1/32/12.
4. वही, 1/32/9.
5. वही, 1/32/8-9.
6. वही, 1/2.
7. वही, 2/12/14 एवं 6/23/4.

इन्द्र देवताओं में सर्वश्रेष्ठ देव थे और सभी देवता उनके अधीन थे और यथासमय पर अपने साथ सबको रखते थे । इन्द्र अपने स्वार्थ तथा अपने प्रेमीजनों (याजकों) की भलाई के हर नैतिक और अनैतिक कर्म कर डालते थे । इन्द्र की इस विशेषता का वर्णन ऋग्वेद के अनेक सूक्तों में कई बार वर्णन हैं । इन्द्र को सोमरस का विशेष प्रेम था और सोमरस के दाताओं के ऊपर उसका वरदहस्त सदैव रहता था ।

इन्द्र के नैतिक धरातल के बारे में वैदिक मैथलाजी[1] में यह बताया गया है कि इन्द्र नैतिक धरातल पर उतना मजबूत नहीं जितना उनके बलशाली होने का है । इन्द्र के द्वारा इसके बल और सामर्थ्य से अनेक वृत्त, बल, चुमुरि, शम्बर आदि अनेक राक्षसों के वध का उल्लेख अनेक बार ऋग्वेद में अनेक सूक्तों में किया गया है ।

यह सच है कि समूचे ऋग्वेद का समीक्षात्मक अध्ययन करना साधारण जिज्ञासु अनुसंधानकर्ता के लिए दूभर है । मैकडानलकृत "वैदिक रीडर" तो आजकल भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्नातक के साथ-साथ स्नातकोत्तर परीक्षाओं में भी पाठ्यक्रम के रूप में नियुक्त हो रहा है । विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को सुविधा को ध्यान देने के साथ साथ वैदिक साहित्य के अध्ययन को प्रेरणा प्रदान करेने के उद्देश्य से भी कतिपय अन्य विद्वानों ने इस दिशा में अग्रसर होकर वेदों के सूक्तों के संग्रह प्रकाशित किये हैं । प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध "ऋग्वेद द्वितीय मण्डल के इन्द्रसूक्तों का समालोचनात्मक अध्ययन" इस तरह का एक नवीन अनुसन्धानिक प्रयास है ।

---

1. वैदिक माइथालॉजी, अनुवादक, मैकडानल ।

अधीत पुस्तकों की सूची

संहिताएँ

1. ऋग्वेद संहिता, वैदिक संशोधन मण्डलेन प्रकाशिता श्रीमद्सायणाचार्य विरचितभाष्य समेता प्रथम भाग, 1972, द्वितीय भाग 1936, तृतीय भाग 1941, चतुर्थ भाग 1946 पंचम भाग ।

2. ऋग्वेद, वेङ्कट, स्कन्दस्वामी, मुद्गल, उद्गीथ भाष्यसहित 8 भाग सं० विश्वबन्धुः विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थानम्, प्र०सं० 1954.

3. काठक संहिता, श्रोदर लिपविंग सन् 1910.

4. तैत्तिरीय संहिता - सायण भाष्य सहित, आनन्दाश्रम, संस्कृत ग्रन्थावली, पूना 1956.

5. तैत्तिरीय संहिता, मूलपाठ स्वाध्याय मण्डल, पारडी ।

6. मैत्रायणी संहिता, मूलपाठ, स्वाध्यायमण्डल, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, बाम्बे, सम्वत् 2013.

7. वाजसनेयि माध्यन्दिन शुक्ल-यजुर्वेद-संहिता, उव्वट महीधर भाष्य सहित, निर्णय सागर प्रेस, बम्बई ।

8. सामवेद संहिता, सनातन धर्म प्रेस, मुरादाबाद, 1927.

9. अथर्ववेद संहिता-सायण भाष्य 4 भाग, सम्पा० विश्वबन्धु विश्वेश्वरानन्द शास्त्री, वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर, 1960-62.

ब्राह्मण ग्रन्थ

1. अथर्ववेद एवं गोपथ ब्राह्मण (अनुवादक) डॉ० सूर्यकान्त, चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 1964.

2. ऐतरेय ब्राह्मण-सायणभाष्यसहित आनन्दाश्रम संस्कृत सिरीज, पूना, 1896.

3. ऐतरेय ब्राह्मण सायणभाष्यसहित, हिन्दी अनुवाद, डॉ० सुधाकर मालवीय, तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी, 1964.

4. कौषीतकि ब्राह्मण मूलपाठ आनन्दाश्रम संस्कृत सिरीज-पूना ।

5. गोपथ ब्राह्मण मूलपाठ - डॉ० विजयपालो विद्यावारिधि प्रकाशक-सावित्री देवी बागड़िया ट्रस्ट, 2 नं० चौरंगी एप्रोच, कलकत्ता, प्र०सं० 1980.

6. जैमिनीय ब्राह्मण, आचार्य-रघुवीरेण च श्री व लोकेशचन्द्रेण च परिष्कृतम् , सरस्वती विहार नागपुर, विक्रमाब्दा: 2011, सन् 1954.

7. ताण्ड्य ब्राह्मण-भाष्य सहित, जयकृष्णदास, हरिदासगुप्त, चौखम्भा सीरीज कार्यालय सं० 2008.

8. तैत्तिरीय ब्राह्मण : आनन्दाश्रम संस्कृत सिरीज ग्रन्थाङ्क 37, आनन्दाश्रम प्रेस, 1934.

9. शतपथ ब्राह्मण : सायण भाष्य सहित 5 भाग, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, 1940-41, बम्बई ।

10. शतपथ ब्राह्मण : एक सांस्कृतिक अध्ययन, श्रीमती उर्मिलादेवी शर्मा, मेहरचन्द, लक्ष्मणदास पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1982, प्रथम संस्करण ।

आरण्यक एवं उपनिषद्

1. तैत्तिरीय आरण्यक : आनन्दाश्रम संस्कृत सिरीज 90, आनन्दाश्रम 1922.

2. वृहदारण्यक - गीता धर्म प्रेस, बनारस, 1950.

3. शाङ्खायन आरण्यक आनन्दाश्रम संस्कृत सिरीज-90, आनन्दाश्रम 1922.

4. ईशोपनिषद्, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, पारडी, जिला-बलसाड़, सं0 2025.

5. उपनिषत्संग्रह:, जगदीश शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पटना, वाराणसी, 1970.

6. केनोपनिषद् अनुवादक व संग्रहकर्त्ता अहिताग्नि यमुनाप्रसाद त्रिपाठी, प्रकाशक - मोतीलाल, दिल्ली, प्र0सं0 1963.

7. कठोपनिषद् सानुवाद शाङ्करभाष्यसहित, घनश्याम जालान, गीता प्रेस गोरखपुर, सं0 2008.

8. श्रीमच्छंकराचार्यकृतं तैत्तिरीयोपनिषद् भाष्यम् दिनकर विष्णु गोखले मुंबय्यां कोट सातुना विल्डिंग नं0 8, मणिलाल, इच्छाराम देशाई इत्यनेन स्वीये गुजराती सं0 1970.

9.

निघण्टु तथा निरुक्त

1. निघण्टु तथा निरुक्त, डॉ0 लक्ष्मणस्वरूप आक्सफोर्ड द्वारा सम्पादित, प्रथम बार भाष्यन्तरीकृत-हिन्दी भावान्तर सत्यभूषण योगी तथा शशिकुमार, मोतीलाल, बनारसीदास, प्रथम संस्करण, 1967.

2. निघण्टु तथा निरुक्त (मूल हिन्दी अनुवाद) श्री छज्जूराम तथा पं0 देव शर्मा शास्त्री, भारत भारतीयप्रेस, दरियागंज, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1963.

3. वृहद्देवता-दो भाग, ए0ए0 मैकडोनेल, हा0ओ0सी0, जिल्द 5-6, 1904.

4. शौनकीय वृहद्देवता (अनुवादक) रामकुमार राय, चौखम्भा संस्कृत सिरीज आफिस, वाराणसी, सं0 1963.

5. अमरकोश, डॉ0 सत्यदेव मिश्रा, सं0 1972.

6. पाणिनीय सूत्रपाठस्य तत्परिशिष्टग्रन्थानां च ।

7. शब्दकोशाः, महामहोपाध्यायवेदान्तवागीश-पाठकोपाह्वश्रीधरशास्त्रिणा तथा च विद्यानिधिचित्रावोपाह्व सिद्धेश्वरशास्त्रिणा संगृहीता, भाण्डार-प्राच्यविद्यासंशोधनमंदिराधिकृतैः, 1935.

8. भाषा-विज्ञान-डॉ0 भोलानाथ तिवारी, किताबमहल, 15 थार्नहिल रोड, इलाहाबाद, 1986.

9. वैदिक इण्डेक्स आफ नेम्स एण्ड सब्जेक्ट्स ‌‌(हिन्दी अनुवाद) रामकुमार राय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1962.

10. वैदिक कोश, डॉ0 सूर्यकान्त, वैदिक रिसर्च समिति, बनारस हिन्दू यूनि-वर्सिटी, 1963.

11. वैदिक पादानुक्रमकोश, पी0वी0आर0आई0 इन्स्टीट्यूट होशियारपुर, 1979.

12. शब्दकल्पद्रुमः, स्यार-राजा-राधाकान्तदेव-बहादुरेण विरचित, (1-5 भाग) (चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, 1961.

13. संस्कृत-हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी ।

14. सैंट पीटर्सबर्ग संस्कृत जर्मन कोश राथ तथा वायलिंग सेन्ट पीटर्सबर्ग, 1961.

15. हलायुधकोशः (अभिधानरत्नमाला) सम्पादक जयशंकर जोशी, (हिन्दी समिति सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, द्वि0सं0 1967.

9. बृहदारण्यकोपनिषद्, पं0 सखारामात्मज पं0 रामचन्द्र शास्त्रिणा, वाणी विलास पुस्तकालय, कचौड़ी गली, काशी, वि0सं0 2011.

10. श्वेताश्वतरोपनिषद् दार्शनिक अध्ययन, डॉ0 वेदवती, वैदिक नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्र0सं0 1984.

11. श्रीमद् बाल्मीकीय रामायण, महर्षि बाल्मीकि प्रणीत, प्रो0 गीता प्रेस, मोतीलाल जालान गीताप्रेस गोरखपुर, सं0 2033.

12. महाभारत 18 पर्वों का, डॉ0 पं0 श्रीपाद दामोदर सातवलेकर स्वाध्याय मण्डल पारडी, बलसाड, गुजरात, सन् 1968-1978.

13. अग्निपुराण-12 खण्ड, श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब वेदनगर, बरेली, प्र0सं0 1968.

14. आचार्य गुणभद्रकृत-उत्तर पुराण, भाग 1, 2 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन द्वितीय संस्करण, 1963-1965.

15. कालिका पुराण प्रथम एवं द्वितीय खण्ड, विश्वनाथ शास्त्री चौखम्भा संस्कृत सीरीज, आफिस, वाराणसी, सं0 2029.

16. गरुणपुराण, प्रथम एवं द्वितीय खण्ड, श्रीराम शर्मा, आचार्य संस्कृति संस्थान, बरेली, 1968.

17. पद्मपुराण, (3 भाग) पं0 पन्नालाल जैन साहित्याचार्य भारतीय ज्ञान-पीठ, काशी, 1958.

18. भविष्य महापुराण, खेमराज श्रीकृष्णदास, खेतवाड़ी बंबई, सं0 1967.

19. मत्स्यपुराण, श्रीमन् महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास, नन्दलाल, कलकत्ता, 1954.

20. मार्कण्डेय पुराण, प्रथम एवं द्वितीय खण्ड, श्रीराम शर्मा, संस्कृति संस्थान, बरेली, 1968.

21. वायुपुराण, मनसुखराय मोर कलकत्ता, 1959.

अन्य सहायक ग्रन्थ

1. आनन्द वेद, अरविन्द, अरविन्दो आश्रम, पाण्डिचेरी, 1964.

2. उत्तर वैदिक समाज एवं संस्कृति - एक अध्ययन, डॉ० विजय बहादुर राय, भारतीय विद्याप्रकाशन, वाराणसी, प्र०सं० 1966.

3. ऋग्वेद पर एक ऐतिहासिक दृष्टि - पं० विश्वेश्वरानन्द, मोतीलाल - बनारसीदास ।

4. ऋग्वेद प्रातिशाख्यम् - डॉ० वीरेन्द्र कुमार शर्मा, बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालय, वाराणसी, प्र०सं० 1970.

5. ऋग्वेद सर्वानुक्रमणी-शौनक कृता नुवाकानुक्रमणीय : उमेश चन्द्र शर्मा, वीणा शर्मा, विवेक, पब्लिकेशन्स, संसदरोड, अलीगढ़, प्र०सं० 1977.

6. ऋक्-सूक्त रत्नाकर : डॉ० रामकृष्ण आचार्य, विनोद पुस्तक मन्दिर, हास्पिटल रोड, आगरा, प्र०सं० 1963.

7. ऋक् सूक्त संग्रह, डॉ० हरिदत्त शास्त्री, डॉ० कृष्ण कुमार साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ, 1980.

8. ऋग्वेदप्रातिशाख्य-डॉ० वीरेन्द्र कुमार वर्मा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, प्र०सं० 1970.

9. ऋगर्थदीपिका, श्री लक्ष्मणस्वरूप, काशीय संस्कृत पुस्तकालयाध्यक्षैः मोती-लाल बनारसीदास, 1919.

10. ओरिजिनल संस्कृत टेक्स्ट (पाँचवा भाग) जे० म्योर अनुवादक रामकुमार राय, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1970.

11. द ऋग्वेद, ए0 वेंगी, अमरको बुक एजेन्सी, बी0 42, अमर कालोनी, नई दिल्ली, द्वि0सं0 1975.

12. द यास्क, एटिमालाजी आफ यास्क, सिद्धेश्वर वर्मा, विश्वेश्वरानन्द, वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर, 1953, द वेदास, मैक्समूलर, वाराणसी, 1969.

13. धर्मशास्त्र का इतिहास, मूल लेखक वी0पी0 काणे, अनुवादक अर्जुन चौबे, हिन्दी समिति ग्रन्थमाला, 132, प्र0सं0 1966.

14. पाणिनि सूत्राज, धातुपाठ, द पाणिनि आफिस बहादुरगंज, इलाहाबाद, 1909.

15. मनुस्मृति - सम्पादक - ज0ह0 दबे, भारतीय विद्याभवन, मुम्बई, 1972.

16. वेदचयनम्- विश्वम्भरनाथ शास्त्री, सं0 गुरुप्रसाद शास्त्री विश्वविद्यालय, प्रकाशन, चौक, वाराणसी, 1980.

17. वेदरहस्य-श्री अरविन्द (अनुवादक एवं सम्पादक) आचार्य अभयदेव विद्यालंकार, श्री अरविन्दाश्रम प्रेस पाण्डिचेरी ।

18. वेदमीमांसा, सूत्रकार एवं भाष्यकार, मा0 लक्ष्मीदत्त दीक्षित ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, भारत, प्र0सं0 1980.

19. वेद मीमांसा, डॉ0 हरिशङ्कर त्रिपाठी, वेदपीठ प्रकाशन, इलाहाबाद ।

20. वेद रश्मि, डॉ0 वासुदेवशरण अग्रवाल, वसन्त श्रीपादसातवलेकर स्वाध्याय मण्डल, पारडी ।

21. वेदलावण्यम्, डॉ0 सुधीर कुमार गुप्त, भारतीय मंदिर, गोरखपुर ।

22. वेदार्थविचार, म0 श्री सीताराम शास्त्री द प्रिंसिपल संस्कृत कालेज वंकिम चन्द्र चटर्जी, कलकत्ता, 12.

23. वैदिक देवता उद्भव और विकास-प्रथम एवं द्वितीय खण्ड, डॉ० गयाचरण त्रिपाठी, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, वाराणसी, प्र०सं० 1982.

24. वैदिक देवशास्त्र, डॉ० सूर्यकान्त, श्री भारत भारती, प्राइवेट लिमिटेड, अन्सारी रोड, नया दरियागंज, दिल्ली 1961.

25. वैदिक ग्रामर-डॉ० उमेश चन्द्र पाण्डेय, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1964.

26. वैदिक माइथालोजी, वैदिक पुराकथाशास्त्र, अनुवादक रामकुमार राय, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1961.

27. वैदिक माइथालाजिकल टेक्स्ट, आर०एन० दण्डेकर, एस० बलवन्त ।

28. वैदिक व्याकरण-डॉ० रामगोपाल, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली, प्र०सं० 1965.

29. वैदिक व्याकरण {मूल, लेखक, आर्थर अन्थोनी, अनुवादक सत्यव्रत शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, प्र०सं० 1971.

30. वैदिक व्याख्या विवेचन, डॉ० रामगोपाल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23 दरियागंज, नई दिल्ली, 1976.

31. भारतीय साहित्य एवं संस्कृति, आ० बलदेव उपाध्याय शारदा संस्थान, 37 बी रवीन्द्र पुरी, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी, 1980.

32. वैदिक साहित्य की रूपरेखा, प्रो० सत्यनारायण पाण्डेय तथा रसिक बिहारी जोशी, साहित्य निकेतन, कानपुर ।

33. वैदिक सिद्धान्त कौमुदी-श्री भट्टोजिदीक्षित, प्रणीता पं० श्री गोपाल शास्त्री, हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला-11, चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 1977.

34. वैदिक सिद्धान्तमीमांसा, युधिष्ठिर मीमांसक, युधिष्ठिर मीमांसक, बहालगढ़, सोनीपत, हरियाणा ।

35. वैदिक साहित्य में मरुद्गण : एक अनुशीलन, डॉ0 चन्द्रभूषण मिश्र, वेदपीठ प्रकाशन, इलाहाबाद ।

36. व्याकरण चन्द्रोदय-श्री चारुदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, प्रथम संस्करण, 1970.

ENGLISH GRANTH

1. Rigved Samhita First Astaka Vol. II, English Translation by M.M. Dutt, Parimal Publication, Delhi.

2. Vedic Religion, Translation of Religion Vedique by A Bergaine, Tr. V.G. Paranjpe, Aryasamskriti Publication, Poona, 1971.

3. Vedic Mythology by A.A. Macdonell, Reprint by Motilal Banarasi Das, Varanasi.

4. Religion in Vedic Literature, by P.S. Deshmukh Oxford University Press, London, 1933.

5. Religion and Philosophy of the Veda and Upanishads by A.B. Keith, Trans. Vadic Dharm and Darshan, Pub. Motilal Banarasidas, Varanasi, 1963.

——————::O::——————